प्रबन्ध-सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया, बी० कॉम०, बी० एल०

संकलक :
आदर्श साहित्य संघ
चूरू (राजस्थान)

आर्थिक-सहायक :
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

दिसम्बर, १९६७
प्रति-संख्या
१०००

पृष्ठांक :
६३२

मुद्रक :
न्यू रोशन प्रिण्टिंग वर्क्स
३१/१, लोअर चितपुर रोड
कलकत्ता-१

मूल्य : रु० १३)

AYARO
Taha
AYAR-CULA

[THE ACARANGA AND THE ACARANGA-CULA]

Vacana Pramukha
ACARYA TULASI

Edited with

Original text, Variant readings, Alphabetical index of words, Appendices, etc.

Editor
Muni Nathmal
(Nikaya Saciva)

Publisher
Jain Swetambar Terapanthi Mahasabha
(Agam-Sahitya Prakashan Samiti)
3, Portuguese Church Street
CALCUTTA-1 (INDIA)

First Edition 1967] **[Price : Rs. 13**

Managing Editor :
Shreechand Rampuria, B. Com , B. L.

Manuscript Compiled by
Adarsha Sahitya Sangh
Churu (Rajasthan)

Financial Assistance :
Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

Copies :
1000

Pages .
632

Printer :
New Roshan Printing Works
31/1, Lower chitpur Road.
Calcutta-1

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्वं॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन मे।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन मे,
कालुगणी को विमल भाव से॥

विनयावनतः
आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथो से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुञ्ज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नो से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमो का शोधपूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगें। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे है। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक		: मुनि नथमल (निकाय-सचिव)
	सहयोगी	: मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन	"	: मुनि सुदर्शन
	"	: मुनि मधुकर
	"	: मुनि हीरालाल
शब्द-सूची	"	: मुनि श्रीचन्द्र
	"	: मुनि हनुमानमल (सरदारशहर)

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

ग्रन्थानुक्रम

प्रकाशकीय

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला का यह द्वितीय ग्रन्थ पाठको के सम्मुख रखते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इस ग्रन्थमाला का प्रथम ग्रन्थ 'दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि' प्रकाशित हो चुका है, जिसमें दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनो आगम एक साथ है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रथम अङ्ग आचारांग के दो श्रुतस्कंध क्रमश 'आयारो' और 'आयार-चूला' के नाम से प्रकाशित हो रहे है।

पाठ सशोधन और निर्धारण मे जो परिश्रम किया गया है, वह ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ से सहज ही समझा जा सकता है। 'जाव' और अन्य पूर्त्य स्थलों की वड़ी खोज के साथ पूर्ति कर दी गई है। इस तरह मूल-पाठ पाठको के लिए सरल, सुवाच्य और बोधगम्य बन गया है। 'जाव' और संक्षिप्त पाठ-पूर्ति का कार्य अद्यावधि प्रकाशित संस्करणो मे उपेक्षित रहा और वह अति कठिन कार्य इस प्रकाशन में अत्यन्त अन्वीक्षा और अनुसधान पूर्वक सम्पन्न हुआ है।

पाद-टिप्पणियों में पाठान्तरो का बोध करा दिया गया है। अन्त मे तीन परिशिष्ट और 'आयारो' तथा 'आयार-चूला' दोनो की सम्पूर्ण शब्द-सूची दे दी गई है, जो अन्वेषक विद्वानो के लिए अनेक दृष्टियो से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शब्द-सूची आज तक के प्रकाशित किसी संस्करण मे नही है और इसी प्रकाशन में सर्व प्रथम उपलब्ध होती है।

आरम्भ मे सम्पादकीय के बाद आचार्य श्री तुलसी द्वारा लिखित पाण्डित्यपूर्ण भूमिका है, जो अनेक विषयों पर नया प्रकाश डालती है। भूमिका की विषय-सूची से उसमें चर्चित विशेष पहलुओं का आभास पाठको को हो सकेगा।

इस तरह दो श्रुतस्कन्ध व्याप्त सारा आचारांग आधुनिकतम प्रणाली से सम्पादित हो कर अभिनव रूप में सामने आया है।

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला का मूल उद्देश्य है विद्वानों के सम्मुख जैन-आगमो के सुन्दर और प्रामाणिक संस्करण उपस्थित करना, जिससे भावी शोध-खोज का मार्ग प्रशस्त हो। इसी दृष्टि से उक्त ग्रन्थमाला का यह द्वितीय ग्रन्थ अवश्य ही विद्वानो का आदर प्राप्त करेगा।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन-जिन विद्वानो एवं प्रकाशन संस्थाओं के ग्रन्थ तथा प्रकाशनो का उपयोग हुआ है, उन सबके प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते है।

पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि

आचार्य श्री के तत्त्वावधान में सन्तो द्वारा प्रस्तुत पाण्डुलिपि को नियमानुसार अवधार कर उसकी प्रतिलिपि करने का कार्य आदर्श साहित्य संघ, चुरू द्वारा सम्पन्न हुआ है, जिसके लिए हम संघ के संचालको के प्रति कृतज्ञ है।

अर्थ-व्यवस्था

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का व्यय विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा द्वारा श्री हंसराजजी हुलासचन्दजी गोलछा की स्वर्गीया माता श्री धापीदेवी (धर्म-पत्नी श्री रामलालजी गोलछा) की स्मृति में प्रदत्त निधि से हुआ है। एतदर्थ इस अनुकरणीय अनुदान के लिए गोलछा-परिवार हार्दिक धन्यवाद का पात्र है।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति की ओर से उक्त निधि से होने वाले प्रकाशन कार्य की देख-रेख के लिए निम्न सज्जनो की एक उपसमिति गठित की गई है :

(१) श्रीमान् हुलासचन्दजी गोलछा
(२) " मोहनलालजी बाँठिया
(३) " श्रीचन्दजी रामपुरिया
(४) " गोपीचन्दजी चोपड़ा
(५) " केवलचन्दजी नाहटा

सर्व श्री श्रीचन्द रामपुरिया एवं केवलचन्दजी नाहटा उक्त उपसमिति के संयोजक चुने गये है।

आगम-साहित्य प्रकाशन-कार्य

महासभा के अन्तर्गत गठित आगम-साहित्य प्रकाशन समिति का प्रकाशन-कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ रहा है, त्यो-त्यों हृदय मे आनन्द का पारावार नही। मैं तो अपने जीवन की एक साध ही पूरी होते देख रहा हूँ। इस अवसर पर मैं अपने अनन्य बन्धु और साथी सर्व श्री गोविन्दरामजी सरावगी, मोहनलालजी बाँठिया एवं खेमचन्दजी सेठिया को उनकी मुक्त सेवाओ के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

आभार

आचार्य श्री की सुदीर्घ-दृष्टि अत्यन्त भेदिनी है। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक नैतिक आन्दोलनो में उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे है, वहाँ दूसरी ओर आगम-साहित्य-गत जैन-संस्कृति के मूल-सन्देश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य और स्तुत्य है। जैन-आगमों को अभिलषित रूप मे भारतीय एवं विदेशी विद्वानो के सम्मुख ला देने की आकाक्षा मे वाचना प्रमुख के रूप मे जो अथक परिश्रम आचार्य श्री तुलसी ने अपने कन्धो पर लिया है उसके लिए जैनी ही नही अपितु सारी भारतीय जनता उनके प्रति कृतज्ञ रहेगी।

निकाय सचिव मुनि श्री नथमलजी का सम्पादन-कार्य एवं तेरापन्थ संघ के अन्य विद्वान् मुनिवृन्द के सक्रिय-सहयोग भी वस्तुत अभिनन्दनीय है।

हम आचार्य श्री और उनके परिवार के प्रति इस जनहितकारी पवित्र प्रवृति के लिए नतमस्तक है।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१
१ दिसम्बर, १९६७

श्रीचन्द रामपुरिया
संयोजक
आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

सम्पादकीय

नाम-परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ आगम-ग्रन्थ-माला का द्वितीय ग्रन्थ है। इस माला के प्रथम ग्रन्थ में दो मूल सूत्र सम्पादित हुए थे। इसमे पहला अंग सम्पादित है। शताब्दियो पूर्व जो स्थान आचारांग का था, वह स्थान वर्तमान में मूलसूत्रों का है। इसलिए मूलसूत्र और आचारांग निकट सम्बन्धी है।

आचाराग के दो श्रुतस्कन्ध है। प्रथम श्रुतस्कन्ध मे मूल आचाराग और दूसरे श्रुतस्कन्ध में आचारांग की चार चूलिकाओं का समावेश है। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'आयारो' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'आयार-चूला' है। इसीलिए प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम 'आयारो तह आयार-चूला' रखा गया है।

ग्रन्थ-बोध

प्रस्तुत ग्रन्थ में पाठान्तर सहित मूलपाठ है। प्रारम्भ में भूमिका और अंत में पाँच परिशिष्ट हैं—

(१) आयारो संक्षिप्त पूर्ति-स्थल और उसका निर्देश।
(२) आयार-चूला संक्षिप्त पूर्ति-स्थल और उसका निर्देश।
(३) आयारो शब्द-सूची।
(४) आयार-चूला शब्द-सूची और
(५) शुद्धि-पत्रम्।

नामानुक्रम

आयार-चूला और निशीथ में प्रयुक्त विशेष नाम प्रायः सदृश हैं, इसलिए आयार-चूला के विशेष नामो का अनुक्रम निशीथ के नामानुक्रम के साथ ही किया जाएगा।

पाठ-सम्पादन में हमने अनेक संकेत-चिन्हो का प्रयोग किया है, उनका स्पष्टीकरण 'संकेत-निर्देशिका' में किया गया है।

प्रस्तुत पाठ और पाठ-सम्पादन की पद्धति

आचाराग का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका आधार कोई एक आदर्श नही है। हमने पाठ का स्वीकार प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि और वृत्ति के संदर्भ में समीक्षा-पूर्वक किया है। 'आयारो' के प्रथम अध्ययन के दूसरे उद्देशक के तीन सूत्र (२७-२९)

शेष पाँच उद्देशकों में भी प्राप्त होते है। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों तथा आचारांग वृत्ति में यह प्राप्त नही है। आचारांग चूर्णि में 'लज्जमाणा पुढोपास' (आयारो, सूत्र १६, पृ० ४) सूत्र से लेकर 'अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए' (आयारो, सूत्र २६, पृ० ६) तक ध्रुवकण्डिका (एक समान पाठ) मानी गई है।[1]

चूर्णि में प्राप्त संकेत के आधार पर हमने द्वितीय उद्देशक में प्राप्त तीन सूत्र (२७-२६) शेष पॉचों उद्देशकों में स्वीकृत किए है।

आठवे अध्ययन के दूसरे उद्देशक (सू० २१) की चूर्णि[2] में 'कुंभारायतणंसि वा' के स्थान पर अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं, जैसे—'उवट्टणगिहे वा, गामदेउलिए वा, कम्मगारसालाए वा, तन्तुवायगसालाए वा, लोहगारसालाए वा।' चूर्णिकार ने आगे लिखा है—'जच्चियाओ साला सव्वाओ भाणियव्वाओ।'[3]

यहाँ प्रतीत होता है कि 'कुभारायतणंसि वा' शब्द अन्य अनेक शाला या गृहवाची शब्दो से युक्त था, किन्तु लिपि-दोष के कारण कालक्रम से शेष शब्द छूट गए। चूर्णि के आधार पर पाठ-पद्धति का निश्चय करना संभव नही, इसलिए उसे मूलपाठ मे स्वीकृत नही किया गया।

हमने संक्षिप्त पाठ की पूर्ति भी की है। पाठ संक्षेप की परम्परा श्रुत को कंठाग्र करने की पद्धति और लिपि की सुविधा के कारण प्रचलित हुई। पं० बेचरदास दोशी ने ८-१२-६६ को आचार्यश्री तुलसी के पास एक लेख भेजा था। उसमें इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होने लिखा है—"प्राचीन जैन-श्रमण लिखने-लिखाने की प्रवृत्ति को आरंभ-रूप समझते थे, फिर भी शास्त्रों की रक्षा के लिए उन्होंने लिखने-लिखाने के आरम्भ-रूप मार्ग को भी अपवाद समझ कर स्वीकार किया। पर जितना कम लिखना पडे उतना अच्छा, ऐसा समझ कर उन्होंने शास्त्र की रक्षा के लिए ही, हो सके वहाँ तक कम आरंभ करना पडे, ऐसा रास्ता शोधने का जरूर प्रयास किया। इस रास्ते की शोध से 'वण्णओ' और 'जाव' दो नए शब्द उनको मिले। इन दो शब्दो की सहायता से हजारो श्लोक वा सैकडो वाक्य कम लिखने से उनका आरंभ कम हो गया और शास्त्र के आशय में भी किसी प्रकार की न्यूनता नही हुई।"

---

१. देखे—आयारो, पृ० ८ पादटिप्पण सख्याक २; पृ० ११ पादटिप्पण सख्याक २; पृ० १४ पादटिप्पण सख्याक १, पृ० १६ पादटिप्पण सख्याक ३. पृ० १६ पादटिप्पण सख्याक ४।

२. आचारांग चूर्णि, पृ० २६०-२६१।

३ वही, पृ० २६१।

श्रुत को कण्ठस्थ करने की पद्धति, लिपि की सुविधा और कम लिखने की मनोवृत्ति—पाठ-संक्षेप के ये तीनों कारण संभाव्य है। इनसे भले ही आशय की न्यूनता न हुई हो, किन्तु ग्रन्थ-सौन्दर्य अवश्य न्यून हुआ है। पाठक की कठिनाइयाँ भी बढ़ी है। जिन मुनियों के समग्र आगम-साहित्य कण्ठस्थ था, वे 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ का अनुसंधान कर पूर्वापर की सम्बन्ध-योजना कर सकते हैं। किन्तु प्रतिलिपियों के आधार पर पढ़ने वाला मुनि-वर्ग ऐसा नहीं कर सकता। उसके लिए 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ बहुत लाभदायी सिद्ध नहीं हुआ है। इसका हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे है। इसी कठिनाई तथा ग्रन्थ-सौन्दर्य की दृष्टि से हमारे वाचना प्रमुख आचार्यश्री तुलसी ने चाहा की संक्षेपीकृत पाठ की पुनः पूर्ति की जाए। हमने अधिकांश स्थलों में संक्षिप्त पाठ की पूर्ति की है। उसकी सूचना के लिए बिन्दु-संकेत दिया गया है। आयारो तथा आयार-चूला के पूर्ति-स्थलों के निर्देश की सूचना प्रथम और द्वितीय परिशिष्ट में दी गई है।

पं० बेचरदास दोशी के अनुसार पाठ का संक्षेपीकरण देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने किया था। उन्होंने लिखा है—"देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने आगमो को ग्रन्थ-बद्ध करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान मे रखीं। जहाँ-जहाँ शास्त्रों मे समान पाठ आए वहाँ-वहाँ उनकी पुनरावृत्ति न करते हुए उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ अथवा स्थान का निर्देश कर दिया। जैसे—'जहा उववाइए' 'जहा पण्णवणाए' इत्यादि। एक ही ग्रन्थ मे वही बात बार-बार आने पर उसे पुनः-पुनः न लिखते हुए 'जाव' शब्द का प्रयोग करते हुए उसका अन्तिम शब्द लिख दिया। जैसे—'णाग कुमारा जाव विहरंति', 'तेणं कालेणं जाव परिसा णिग्गया' इत्यादि।"[1]

इस परम्परा का प्रारम्भ भले ही देवर्द्धिगणि ने किया हो, किन्तु इसका विकास उनके उत्तरवर्ती-काल मे भी होता रहा है। वर्तमान मे उपलब्ध आदर्शों मे संक्षेपीकृत पाठ की एकरूपता नहीं है। एक आदर्श में कोई सूत्र संक्षिप्त है तो दूसरे मे वह समग्र रूप से लिखित है। टीकाकारो ने स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए औपपातिक सूत्र में "अयपायाणि वा जाव अण्णयराइं वा" तथा 'अयबंधणाणि वा जाव अण्णयराइं वा'—ये दो पाठांश मिलते है। वृत्तिकार के सामने जो मुख्य आदर्श थे, उनमे ये दोनों संक्षिप्त रूप में थे, किन्तु दूसरे आदर्शों में ये समग्र रूप मे भी प्राप्त थे। वृत्तिकार ने इसका उल्लेख किया है।[2] लिपिकर्त्ता

---

१. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ० ८१।
२ औपपातिक वृत्ति, पत्र १७७
पुस्तकान्तरे समग्रमिद सूत्रद्वयमस्त्येवेति।

अनेक स्थलों में अपनी सुविधानुसार पूर्वागत पाठ को दूसरी बार नहीं लिखते और उत्तरवर्ती आदर्शों में उनका अनुसरण होता चला जाता । उदाहरण स्वरूप—रायपसेणइय सूत्र में 'सव्विड्ढीय अकालपरिहीणा' (स्वीकृत पाठ—हीणं) ऐसा पाठ मिलता है।[1] इस पाठ मे अपूर्णता सूचक संकेत भी नही है। 'सव्विड्ढीए' और 'अकालपरिहीणं' के मध्यवर्ती पाठ की पूर्ति[2] करने पर समग्र पाठ इस प्रकार बनता है—'सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूसाए सव्व-विभूइए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकरेणं सव्वदिव्वतुडियसद्दसन्निनाएणं महया इड्ढीए महया जुइए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडियजमगसमय-पडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुभि-निग्घोस-नाइयरवेणं णियग परिवाल सद्धिं संपरिवुडा साइं-साइं जाणविमाणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं।'

आचार-चूला ५।१४ में 'महद्धणमोल्लाइं' तथा १५।५६ में 'महव्वए' के आगे भी अपूर्णता सूचक संकेत नही है।

प्रमादवश कहीं-कहीं अपूर्णता सूचक 'जाव' का विपर्यय भी हुआ है, यथा—
फासुयं............लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा। (१।१०१)
बहुकंटगं... . ...लाभे संते जाव णो...... । (१।१३४)

समर्पण-सूत्र

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार आचारांग में समर्पण के अनेक रूप मिलते है—

जाव— अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं (४।११)
तहेव— अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदग वियडादि णिगिणाइ य (७।१६-२०)
अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव (७।३४,३५)
एवं— एवं णायव्वं जहा सद्दपडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूवपडियाए वि (१२।२-१७)
जहा— पाणाइं जहा पिंडेसणाए (५।५)
संख्या— थूणंसि वा (४) (७।११)
असणं वा (४) (१।१२)
से भिक्खू वा २।

---

१. देखें—प० बेचरदास दोशी द्वारा संपादित 'रायपसेणइयं', पृ० ७३।
२. पूर्ति-स्थल के लिए देखें—वही, पृ० ६६, विवरण और पादटिप्पण।

तं चेव— तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं (१।१४९-१५४) सेसं तं चेव एवं ससरक्खे (१।६५)

हेट्ठिमो— एवं हेट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो (१३।४०-७५)

आचारांग का वाचना-भेद

समवायाग में आचारांग की अनेक वाचनाओ का उल्लेख मिलता है।[1] वाचना का अर्थ है—अध्यापन या सूत्र और अर्थ का प्रदान। संक्षिप्त वाचना-भेद अनेक मिलते है, किन्तु वर्तमान मे मुख्य दो वाचनाएँ प्राप्त है—एक प्रस्तुत-वाचना और दूसरी नागार्जुनीय-वाचना। चूर्णि और टीका में नागार्जुनीय वाचना-सम्मत पाठो का उल्लेख किया गया है। देखें—'आयारो' पृष्ठ २८ पादटिप्पण संख्यांक ४ और ७, पृष्ठ ४१ पादटिप्पण संख्याक २, पृष्ठ ४३ पादटिप्पण संख्यांक ३, पृष्ठ ४८ पादटिप्पण संख्याक ६, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक ५४, पृष्ठ ५५ पादटिप्पण संख्याक १, पृष्ठ ६८ पादटिप्पण संख्याक २, पृष्ठ ७१ पादटिप्पण संख्यांक ६ और ७, पृष्ठ ७४ पादटिप्पण संख्याक ७, पृष्ठ ७५ पादटिप्पण संख्याक ८, पृष्ठ ६४ पादटिप्पण संख्याक १, पृष्ठ ९९ पादटिप्पण संख्याक १, पृष्ठ १०१ पादटिप्पण संख्यांक ११।

आचारांग के उद्धृत पाठ

उत्तरवर्ती अनेक ग्रन्थो मे आचाराग के पाठ उद्धृत किए गए है। अपराजित-सूरि ने मूलाराधना की टीका में आचाराग के कुछ पाठ उद्धृत किए है।[2]

शोध करने पर ऐसा ज्ञात हुआ है कि कई पाठ आचारांग में नही है, कई पाठ शब्द-भेद से और कई पाठ आशिक रूप मे मिलते है। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से दोनो पाठ नीचे दिए जा रहे है—

मूलाराधना	आचारांग
तथा चोक्तमाचाराङ्गे :— सुदं मे आउस्सन्तो भगवदा एव मक्खादं। इह खलु संयमाभिमुखा दुविहा इत्थी पुरिसा जादा भवंति। तंजहा—सव्व समण्णा गदे णो सव्व समागदे चेव। तत्थ जे सव्व	× ×

१ समवायाग समवाय १३६, परित्ता वायणा।

२ मूलाराधना ४।४२१, टीका पत्र ६१२।

समण्णागदे थिरांग हत्थ पाणि -पादे सव्विंदिय समण्णागदे तस्स णं णो कप्पदि एगमवि वत्थं धारिउं एवं परिहिउं एवं अण्णत्थ एगेण पडिलेहगेण ।

अह पुण एवं जाणिज्जा—उपातिकंते हेमंते गिम्हे सुपडिवण्णे से अथ पडिजुण्ण मुवधिं पदिट्ठावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवण्णे अहापरिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा ।

—१।८, सू०५०,६६,९२

पडिलेहणं, पादपुंछणं, उग्गहं कडासणं अण्णदरं उवधिं पावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

वत्थं पडिग्गहं कंबलं, पायपुंछणं उग्गहं च कडासणं एतेसु चेव जाणेज्जा ।

—१।२ सू० । ११२

तंथावत्थेसणाए—वुक्तं तत्थ एसे हिरिमणे सेगं वत्थं वा धारेज्ज पडिलेहणगं विदियं, तत्थ एसे जुग्गिदे देसे दुवे वत्थाणि धारिज्ज पडिलेहणगं तदियं । तत्थ एसे परिसाइं अणधिहासस्स तथो वत्थाणि धारेज्ज पडिलेहणं चउत्थं । —४।४२१ टीका, पत्र ६११

जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे से एगं वत्थं धारेज्जा णो बितियं

—२।५ सू० २

तथा पाएसणाए कथितं—

हिरिमणे वा जुग्गिदे चाविअण्णगे वा तस्सण कप्पदि वत्थादिकं पुनश्चोक्तं तत्रैव—पाद चरित्तए ।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा पायं एसित्तए,

आलावु पत्तं वा दारुग पत्तं वा मट्टिगपत्तं वा, अप्पाणं अप्पबीज अप्पसरिदं तथा अप्पकारं पात्र लाभे सति पडिग्गहिस्सामि ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

तंजहा—अलाउ पायं वा दारु पायं वा, मट्टिया पायं वा तहप्पगार पायं । —२।६ सू० १

फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

—२।६ सू० १०

भावनायां चोक्तं—

चरिमं चीवरधारी तेण परम चेलके तु जिणे

—४।४२१ टीका पत्र ६११

× ×

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

आयारो

अध्ययन	१	सूत्र	१	सन्ना	सण्णा (च,छ)।
,,	१	,,	१३	दुस्संबोहे	दुस्सबोधे (क,च,घ)।
,,	१	,,	३४	णियाग०	णियाय० (क,ख,च,घ)।
,,	१	,,	४०	पवय०	पवद० (ख,च,ग)।
,,	१	,,	४७	०मेगेसिं	०मेकेसिं (क, घ)।
,,	१	,,	५६	पवेइयं	पवेदितं (क), पवेतिय (घ)।
,,	१	,,	६७	सया	सता (क, च)।
,,	१	,,	७३	पवेदिता	पवेदिदा (क)।
,,	१	,,	६०	त णं	तन्नो (क, घ)।
,,	१	,,	६४	पाईणं	पावीणं (घ); पादीणं (घ)।
,,	१	,,	६५	आवि	यावि (ख,घ,); संसेतया (क); संसेदया (च)।
,,	१	,,	११८	संसेयया	संसेयमा (ख,), ससेतया(क); संसेदया(च)।
,,	१	,,	१२२	०णिव्वाणं	०णेव्वाणं (क)।
,,	१	,,	१३०	०पडिघाय	०पडिग्घाय (क,ख,ग,घ)।
,,	२	,,	६	विभूसाए	विहूसाए (क)।
,,	२	,,	४१	मित्त०	मीत० (क)।
,,	२	,,	६३	०सावा	०साता (क,च,छ)।
,,	२	,,	७२	खेयन्ने	खेतन्ने (घ,छ)।
,,	२	,,	८६	०पाउडा	०वाउडा (क)।
,,	२	,,	१०६	अदिस्समाणे	आदिस्समाणे (क,छ)।
,,	२	,,	१३३	भावातए	भावादए (च)।
,,	२	,,	१३४	बहुमाई	बहुमादी (छ,चू)।
,,	२	,,	१६०	सहते	सहई (ग,घ,च)।
,,	२	,,	१६१	अहियासमाणे	अधियासमाणे (क,च)।
,,	२	,,	१७१	इह	इध (क)।
,,	२	,,	१७५	अणाढियमाणे	अणातियमाणे

„	३	„	१७	खेयन्ने	खेदन्ने (च) ।
„	३	„	४२	पुरइत्तए	पूरतित्तए (छ) ।
„	३	„	६०	तहा०	तधा० (क,ग) ।
„	४	„	११	सया	सता (क,छ,चू) ।
„	४	„	२०	तिरियं	तिरितं (छ) ।
„	४	„	२५	असायं	आसायं (ख); अस्सायं (चू) ।
„	४	„	४८	पासह	पासहा (च) ।
„	४	„	५०	पलिछिंदिय	परिछिंदिय (क) ।
„	४	„	५२	जयाणं	जदाणं (छ) ।
„	५	„	६	परिजाणतो	परिजाणओ (क,ख,ग); परियाणओ (घ) ; परियाणतो (च,छ) ।
„	५	„	१०	सेवए	सेवे (घ,चू); सेवते (च) ।
„	५	„	१७	पलिउच्छन्ने	पलियच्छन्ने (घ) ।
„	५	„	२६	विपरिणाम०	विप्परिणाम० (क,घ,च) ।
„	५	„	३०	समुप्पेह०	समुवेह० (क,ख,ग) ।
„	५	„	४४	णियाय	निदाय (क,च,चू) ।
„	५	„	५०	०पहे	०पधे (च) ।
„	५	„	५०	अण्णहा	अन्नधा (च,छ) ।
„	५	„	७२	०वेयण०	०वेतण० (छ) ।
„	५	„	८७	काहिए	काधिते (क, च, छ) ।
„	५	„	९२	परिव्वयंति	परिव्वतंति (छ) ।
„	६	„	१६	कामेहिं	कामेसु (च) ।
„	६	„	३०	लाय	लोत (क) ।
„	६	„	३०	मायाए	माताए (छ) ।
„	६	„	६०	जाइस्सामि	जातिस्सामि (ख,ग,च,छ) ।
„	८	„	१	वेयावडियं	वेयापडियं (ग) ।
„	८	„	४	०माइयंति	०मादितंति (ख,ग);०मातितंति (छ) ।
„	८	„	३१	निसामिया	निसामित्ता (क), निसामेत्ता (छ) ।
„	८	„	८१	अहा	आहा (ख,घ); आधा (च,छ) ।
„	८	„	१०७	कहं कहे	कधं कधे (ख,ग,घ,) ।
„	९।१	„	४	वोसज्ज	वोसिज्ज (ख,ग)

अध्ययन ९।१ सूत्र १९ पर-पाए पर-वादे (छ)।
„ ९।४ „ ६ अविसाहिए अविसाधिते (क,ख,ग)।
„ ९।४ „ ९ आयत्त० आतय० (क,छ)।

आयार-चूला

„ १ „ २ आयाय आताए (अ); आयात (क,घ); आदाय (च)।
„ १ „ २ अप्पुदए अप्पोदए (क,व)।
„ १ „ १२ अणिसट्ठं अणिसिट्ठं (क, व)।
„ १ „ १५ पुरिसंतरकडं पुरिसंतरगडं (छ)।
„ १ „ २९ अणिसिट्ठं अणिसट्ठं (अ,च,व)।
„ १ „ ३१ आसित्ता असित्ता (अ,क,च,छ)।
„ १ „ ५७ विगं वगं (अ,छ)।
„ १ „ ८३ विल विडं (घ)।
„ १ „ ८६ पिहुणेण पेहुणेण (अ,क,घ)।
„ १ „ ८६ अफासुयं अप्फासुयं (घ)।
„ १ „ १०१ दिज्जा दज्जा (अ,च)।
„ १ „ १०४ दाडिम० दालिम० (अ,व,घ)।
„ १ „ १०५ अहो० अधो० (क,व,छ)।
„ १ „ ११८ तिंदुगं तेंदुगं (च,छ)।
„ १ „ १४६ पाय० पाद० (छ,व)।
„ २ „ ६ पुरिसंतरकडे पुरिसंतरगडे (छ,व)।
„ ३ „ ३६ ०वडियाए ०पडियाए (क,च,छ)।
„ ३ „ ३६ विउसेज्जा वितोसेज्जा (अ)।
„ ३ „ ४८ पोक्खरणीओ पुकरिणीओ (अ); पुक्खरिणीओ (व)।
„ ४ „ २५ पमेइले पमेतिले (अ), पमेदिले (क,च,घ)।
„ ७ „ १ परदत्तभोई परदत्तभोगी (अ,च), परदत्तभोति (व), परदत्तभोतो (व)।
„ १३ „ ६ उल्लोलेज्ज उल्लोडेज्ज (क,घ,च,छ,व)।
„ १० „ १९ गिद्धपिट्ठ० गद्धपट्ठ० (घ,व)।
„ १३ „ ६ उल्लोलेज्ज उल्लोडेज्ज (क,घ,च,छ,व)।
„ १५ „ २६ सावेज्जं सावएज्जं (घ,च); सावतेज्जं (व)।
„ १५ „ ५८ जाई जाती (अ,छ,व)।
„ १५ „ ६८ ०भोई भोजी (क), ०भोती (छ)।

प्रति परिचय

(अ) **आचारांग (दोनों श्रुतस्कन्ध)—**

यह प्रति जैन-भवन, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७ की श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १८५ है। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौडा है। प्रत्येक पत्र में १-१७ तक पक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४०-४५ तक अक्षर है। पत्र के चारो ओर वृत्ति लिखी हुई है। प्रति सुन्दर व कलात्मक है। सम्वत् वगैरह नही है।

(क) **दोनों श्रुतस्कन्ध मूलपाठ—**

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६७ है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौडा है। पंक्तियाँ १३ है। प्रत्येक पंक्ति में ५०-५२ तक अक्षर है। प्रति के अंत में लिखा है—

> सम्वत् १६७९ वर्षे आषाढ़ सुदि द्वितीय ४ भौम। श्री मालान्वये राकयाण गोत्रे सं० जटमल पुत्र सं० वेणीदास पुस्तक प्रदत्तं श्रीमद् नागपुरीय तपागच्छ सं० श्री मान कीर्ति सूरि शिष्य माघव ज्योतिविद्=।

अंत के अक्षर किसी अन्य व्यक्ति के मालूम होते है। प्रति के बीच में बावडी तथा तीन बडे-बडे लाल टीके है।

(ख) **आचारांग टब्बा (प्रथम श्रुतस्कन्ध)—**

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ४६ पत्र है। पंक्तियाँ पाठ की ७ तथा टब्वे की १४ है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौडा है। प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक पाठ के अक्षर है। अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

> सम्वत् १७३२ वर्षे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे पंचमी तिथौ गुरु वासरे। लिखितं पूज्य ऋषि श्री ५ अमराजी तत् शिष्येण लिपि कृतं मुनि विका॥ आत्मार्थों शुभं भवतु कल्याण मस्तु। सेहुरीया ग्रामे संपूर्ण मस्ति॥

(ग) **आचा० (प्रथम श्रुतस्कन्ध) पंच पाठी** (बालावबोध)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से श्री गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ९० पत्र हैं। प्रथम ३ तथा छठा पत्र नही है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौडा है। मूलपाठ की पंक्तियाँ ५ से १० तक है। अक्षर ३० से ३३ तक है। अंतिम प्रशस्ति नही है।

(घ) **दोनों श्रुतस्कन्ध, (जीर्ण)—**

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मंदिर, अहमदाबाद से श्री गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ३७ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १३॥ इंच लम्बा, ५ इंच

चौड़ा है। पंक्तियाँ १७ तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं। अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

शुभं भवतु। कल्याण मस्तु ॥ छ ॥ संवत् १५७३ वर्षे १० मंगलवार समत्तं ॥छ॥ ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥

प्रति के दीमक लगने से अनेक स्थानों पर छिद्र हो गए है।

(च) **दोनों श्रुतस्कन्ध, मूलपाठ—**

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदावाद के लालभाई दलपतभाई ज्ञान भण्डार से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ७८ पत्र है। प्रत्येक पत्र मे १३ पंक्तियाँ तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४७ तक अक्षर है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौडा है। बीच में बावडी है।

(छ) **दोनों श्रुतस्कन्ध, वृत्ति सहित (त्रिपाठी)—**

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके २९० पत्र है। प्रत्येक पत्र ११ इंच लम्बा तथा ४॥ इच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियाँ १ से १७ तथा ४५ से ४७ तक अक्षर हैं। अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १८९९ वर्षे श्रावण शुक्ल पक्षे सप्तम्या तिथौ श्री विक्रमपुर मध्ये लिपिकृतं ॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। शुभं भूयादिति ॥

(ब) **(द्वितीय श्रुतस्कन्ध) टब्बा (पंचपाठी)—**

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ८४ पत्र है। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौडा है। मूलपाठ की पंक्तियाँ ४ से १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति मे २८ से ३३ तक अक्षर हैं। बीच-बीच में बावडियाँ हैं। अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

सम्वत् १७५२ वर्षे भाद्रपद मासे पचभ्या तिथौ ओरस गच्छे भट्टारक श्री कक्कसूरि तत्पट्टे वर्तमान भट्टारक देवगुप्तसूरिभिर्गृहीता नागोरी तपागच्छीय पं० श्रीदयालदास पार्श्वात् पचचत्वरिंशत् ४५ वर्षोंतरात् महतोद्यमेन।

(वृ), (वृपा) मुद्रित, प्रकाशिका—श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति विक्रम सम्वत् १९९१।

(चू), (चूपा) मुद्रित—श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी, रतलाम, वि० १९९८।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा मे वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नही हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस

लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धान पूर्ण, गवेषणा पूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूँ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है। पाठ-सम्पादन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है।

शब्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्तता से लगे रहे है। मुनि हनुमानमलजी (सरदारशहर) का भी उसमे सहयोग रहा है।

इसका शुद्धि-पत्र तैयार करने मे मुनि सागरमलजी 'श्रमण' का सहयोग रहा है।

इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलालजी (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति मे इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया, आदर्श साहित्य संघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनूतमलजी सुराना और श्री जयचन्दलालजी दफ्तरी का भी अविरल योग रहा है। आदर्श साहित्य संघ की सहयुक्त सामग्री ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालो की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

सागर-सदन, शाहीबाग,
अहमदाबाद-४
२६ अगस्त, १६६७

मुनि नथमल

भूमिका

विषय-सूची

१-आगमों का वर्गीकरण

जैन-साहित्य का प्राचीनतम भाग आगम है। समवायांग में आगम के दो रूप प्राप्त होते हैं—(१) द्वादशांग गणिपिटक[1] और (२) चतुर्दश पूर्व[2]। नन्दी में श्रुत-ज्ञान (आगम) के दो विभाग मिलते है—(१) अङ्ग-प्रविष्ट और (२) अङ्ग-बाह्य।[3] आगम-साहित्य में साधु-साध्वियों के अध्ययन-विषयक [illegible]जतने उल्लेख प्राप्त होते हैं, वे सब अङ्गों और पूर्व[illegible] [illegible]अवतार हो[illegible] [illegible]मेधा पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए [illegible] [illegible]थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती [illegible] करते थे। आगम-विच्छेद [illegible]

(१ [illegible]ने वाले—

[illegible]अंगाई अहिज्जइ (अन्तगड, प्रथम वर्ग)। यह [illegible] भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य गौतम के विषय में प्राप्त है।

सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड, पंचम वर्ग, प्रथम [illegible]यन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि की शिष्या पद्मावती के विषय में प्राप्त है।

सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड, अष्टम वर्ग, प्रथम अध्ययन। यह उल्लेख भगवान् महावीर की शिष्या काली के विषय में प्राप्त है।

सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड, षष्ठ वर्ग, १५ वाँ अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर के शिष्य अतिमुक्तकुमार के विषय में प्राप्त है।

(२) बारह अङ्गों को पढ़ने वाले—

बारसंगी (अन्तगड, चतुर्थ वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य जालीकुमार के विषय में प्राप्त है।

(३) चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—

चौद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ (अंतगड, तृतीय वर्ग, नवम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य सुमुखकुमार के विषय में प्राप्त है।

सामाइयमाइयाइं चौद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ (अंतगड, तृतीय वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य अणीयसकुमार के विषय में प्राप्त है।

---

१. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८८।

२ वही, समवाय १४, सू० २।

३. नन्दी, सू० ४३।

भगवान् पार्श्व के साढे तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी मुनि थे ।[1]
भगवान् महावीर के तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी मुनि थे ।[2]

समवायाग और अनुयोगद्वार में अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य का विभाग नही है। सर्व प्रथम यह विभाग नन्दी में मिलता है। अङ्ग-बाह्य की रचना अर्वाचीन स्थविरो ने की है। नन्दी की रचना से पूर्व अनेक अङ्ग-बाह्य ग्रन्थ रचे जा चुके थे और वे चतुर्दश-पूर्वी या दश-पूर्वी स्थविरो द्वारा रचे गए थे। इसलिए उन्हे आगम की कोटि में रखा गया। उसके फलस्वरूप [illegible] विभाग [illegible] —(१) अङ्ग-प्रविष्ट और (२) अङ्ग-बाह्य। यह विभाग [illegible]) तक नही हुआ था। यह सबसे पहले नन्दी (वीर-[illegible]

नन्दी की रचना तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जात [illegible] —(१) [illegible] प्रविष्ट और (३) अङ्ग-बाह्य। आज 'अङ्ग-प्रविष्ट' और 'अङ्ग-बाह्य' उपलब्ध होते हैं, किन्तु पूर्व उपलब्ध नहीं है। उनकी अनुपलब्धि ऐतिहासिक दृष्टि से विमर्शनीय है।

२-पूर्व

जैन-परम्परा के अनुसार श्रुत-ज्ञान (शाब्द-ज्ञान) का अक्षयकोष 'पूर्व' है। इसके अर्थ और रचना के विषय में सब एकमत नही हैं। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'पूर्व' द्वादशांगी से पहले रचे गए थे, इसलिए इनका नाम 'पूर्व' रखा गया।[3] आधुनिक विद्वानो का अभिमत यह है कि 'पूर्व' भगवान् पार्श्व की परम्परा की श्रुत-राशि है। यह भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती है, इसलिए इसे 'पूर्व' कहा गया है।[4] दोनों अभिमतों में से किसी को भी मान्य किया जाए, किन्तु इस फलित में कोई अन्तर नहीं आता कि पूर्वो की रचना द्वादशांगी से पहले हुई थी या द्वादशागी पूर्वों की उत्तरकालीन रचना है।

वर्तमान में जो द्वादशांगी का रूप प्राप्त है, उसमें 'पूर्व' समाए हुए है। बारहवाँ अङ्ग

---

१. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सू० १४।
२. वही, सू० १२।
३. समवायांग वृत्ति, पत्र १०१ :
प्रथमं पूर्वं तस्य सर्वप्रवचनात् पूर्वं क्रियमाणत्वात्।
४. नन्दी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४० :
अन्ये तु व्याचक्षते पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं मर्हन् भाषते, गणधरा अपि पूर्वं पूर्वगतसूत्रं विरचयन्ति, पश्चादाचारादिकम्।

दृष्टिवाद है। उसका एक विभाग है पूर्वगत। चौदह पूर्व इसी 'पूर्व' के अन्तर्गत किए गए है। भगवान् महावीर ने प्रारम्भ में पूर्वगत का अर्थ 'प्रतिपादित' किया था और गौतम आदि गणधरो ने भी प्रारम्भ में पूर्वगत-श्रुत की रचना की थी। इस अभिमत से यह फलित होता है कि चौदह पूर्व और बारहवाँ अङ्ग—ये दोनो भिन्न नही है। पूर्वगत-श्रुत बहुत गहन था। सर्व साधारण के लिए वह सुलभ नही था। अङ्गो की रचना अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए की गई। जिनभद्र गणि क्षमाश्रमण ने बताया है कि 'दृष्टिवाद मे समस्त शब्द-ज्ञान का अवतार हो जाता है। फिर भी ग्यारह अङ्गो की रचना अल्पमेधा पुरुषो तथा स्त्रियो के लिए की गई।'[1] ग्यारह अङ्गो को वे ही साधु पढ़ते थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नही होती थी। प्रतिभा सम्पन्न मुनि पूर्वों का अध्ययन करते थे। आगम-विच्छेद के क्रम से भी यही फलित होता है कि ग्यारह अङ्ग दृष्टिवाद या पूर्वों से सरल या भिन्न-क्रम मे रहे है। दिगम्बर-परम्परा के अनुसार वीर-निर्वाण के बासठ वर्ष बाद केवली नही रहे। उसके बाद सौ वर्ष तक श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) रहे। उसके पश्चात् एक सौ तिरासी वर्ष तक दशपूर्वी रहे। इनके पश्चात् दो सौ बीस वर्ष तक ग्यारह अङ्गधर रहे।[2]

उक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि जब तक आचार आदि अङ्गो की रचना नही हुई थी, तब तक महावीर की श्रुत-राशि 'चौदह पूर्व' या 'दृष्टिवाद' के नाम से अभिहित होती थी और जब आचार आदि ग्यारह अङ्गो की रचना हो गई, तब दृष्टिवाद को बारहवे अङ्ग के रूप में स्थापित किया गया।

यद्यपि बारह अङ्गो को पढ़ने वाले और चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—ये भिन्न-भिन्न उल्लेख मिलते है,[3] फिर भी यह नही कहा जा सकता कि चौदह पूर्वों के अध्येता बारह अङ्गो के अध्येता नही थे और बारह अङ्गो के अध्येता चतुर्दश-पूर्वी नहीं थे। गौतम स्वामी को 'द्वादशांगवित्' कहा गया है।[4] वे चतुर्दश-पूर्वी और अङ्गधर दोनो थे। यह कहने का प्रकार-भेद रहा है कि श्रुत-केवली को कहीं 'द्वादशागवित्' और कही 'चतुर्दश-पूर्वी' कहा गया।

ग्यारह अङ्ग पूर्वों से उद्धृत या संकलित हैं। इसलिए जो चतुर्दश-पूर्वी होता है,

---

१. विशेषावश्यक भाष्य, गाथा ५५४ :
   जइवि य भूतावाए, सव्वस्स वओगयस्स ओयारो।
   निज्जूहणा तहावि हु, दुम्मेहे पप्प इत्थी य॥
२. जयधवला, प्रस्तावना पृ० ४९।
३. देखिए—भूमिका का प्रारम्भिक भाग।
४. उत्तराध्ययन, २३।७।

वह स्वाभाविक रूप से ही द्वादशांगवित् होता है। बारहवे अङ्ग में चौदह पूर्व समाविष्ट है। इसलिए जो द्वादशांगवित् होता है, वह स्वभावतः ही चतुर्दश-पूर्वी होता है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि आगम के प्राचीन वर्गीकरण दो ही है—(१) चौदह पूर्व और (२) ग्यारह अङ्ग। द्वादशांगी का स्वतंत्र स्थान नही है। यह पूर्वों और अङ्गो का संयुक्त नाम है।

कुछ आधुनिक विद्वानो ने पूर्वों को भगवान् पार्श्व-कालीन और अङ्गों को भगवान् महावीर-कालीन माना है, पर यह अभिमत संगत नही है। पूर्वों और अङ्गों की परम्परा भगवान् अरिष्टनेमि और भगवान् पार्श्व के युग में भी रही है। अङ्ग अल्पमेधा व्यक्तियो के लिए रचे गए, यह पहले बताया जा चुका है। भगवान् पार्श्व के युग मे सब मुनियो का प्रतिभा-स्तर समान था, यह कैसे माना जा सकता है? प्रतिभा का तारतम्य अपने-अपने युग में सदा रहा है। मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक-दृष्टि से विचार करने पर भी हम इसी बिन्दु पर पहुँचते है कि अङ्गो की अपेक्षा भगवान् पार्श्व के शासन में भी रही है। इसलिए इस अभिमत की पुष्टि में कोई साक्ष्य प्राप्त नही है कि भगवान् पार्श्व के युग में केवल पूर्व ही थे, अङ्ग नही। सामान्य-ज्ञान से यही तथ्य निष्पन्न होता है कि भगवान् महावीर के शासन में पूर्वों और अङ्गों का युग की भाव, भाषा, शैली और अपेक्षा के अनुसार नवीनीकरण हुआ। 'पूर्व' पार्श्व की परम्परा से लिए गए और 'अङ्ग' महावीर की परम्परा में रचे गए, इस अभिमत के समर्थन में संभवतः कल्पना ही प्रधान रही है।

३-अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य

भगवान् महावीर के अस्तित्व-काल में गौतम आदि गणधरो ने पूर्वों और अङ्गो की रचना की, यह सर्व-विश्रुत है। क्या अन्य मुनियो ने आगम-ग्रन्थो की रचना नही की—यह प्रश्न सहज ही उठता है। भगवान् महावीर के चौदह हजार शिष्य थे।[1] उनमें सात सौ केवली थे, चार सौ वादी थे। उन्होंने ग्रन्थो की रचना नही की, ऐसा सम्भव नही लगता। नन्दी में बताया गया है कि भगवान् महावीर के शिष्यो ने चौदह हजार प्रकीर्णक बनाए थे।[2] ये पूर्वो और अङ्गो से अतिरिक्त थे। उस समय अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य ऐसा वर्गीकरण हुआ, यह प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य प्राप्त नही है। भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् अर्वाचीन आचार्यों ने

---

१. समवायांग, समवाय १४, सू० ४।

२. नन्दी, सू० ७८.

चोद्दसपइन्नगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणस्स।

ग्रन्थ रचे, तव संभव है उन्हें आगम की कोटि में रखने या न रखने की चर्चा चली और उनके प्रमाण्य और अप्रमाण्य का प्रश्न भी उठा। चर्चा के बाद चतुर्दश-पूर्वी और दस-पूर्वी स्थविरो द्वारा रचित ग्रन्थों को आगम की कोटि में रखने का निर्णय हुआ किन्तु उन्हें स्वतः प्रमाण नही माना गया। उनका प्रमाण्य परतः था। वे द्वादशांगी से अविरुद्ध है, इस कसौटी से कसकर उन्हें आगम की संज्ञा दी गई। उनका परतः प्रमाण्य था, इसीलिए उन्हे अङ्ग-प्रविष्ट की कोटि से भिन्न रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्थिति के संदर्भ में आगम की अङ्ग-बाह्य कोटि का उद्भव हुआ।

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य के भेद-निरूपण में तीन हेतु प्रस्तुत किए है—

(१) जो गणधर-कृत होता है।

(२) जो गणधर द्वारा प्रश्न किए जाने पर तीर्थङ्कर द्वारा प्रतिपादित होता है।

(३) जो ध्रुव—शाश्वत सत्यों से सम्बन्धित होता है, सुदीर्घकालीन होता है—वही श्रुत अङ्ग-प्रविष्ट होता है।[1]

इसके विपरीत (१) जो स्थविर-कृत होता है, (२) जो प्रश्न पूछे विना तीर्थङ्कर द्वारा प्रतिपादित होता है, (३) जो चल होता है—तात्कालिक या सामयिक होता है—उस श्रुत का नाम अङ्ग-बाह्य है।

अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य में भेद करने का मुख्य हेतु वक्ता का भेद है।[2] जिस आगम के वक्ता भगवान् महावीर है और जिसके संकलयिता गणधर हैं, वह श्रुत-पुरुष के मूल अङ्गो के रूप में स्वीकृत होता है, इसलिए उसे अङ्ग-प्रविष्ट कहा गया है। सर्वार्थसिद्धि के अनुसार वक्ता तीन प्रकार के होते हैं—(१) तीर्थङ्कर, (२) श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) और (३) आरातीय।[3] आरातीय आचार्यों के द्वारा रचित आगम ही अङ्ग-बाह्य माने गए है। आचार्य अकलंक के शब्दों में आरातीय आचार्य-कृत आगम अङ्ग-प्रतिपादित अर्थ से प्रतिबिम्बित होते हैं इसीलिए वे अङ्ग-बाह्य कहलाते है।[4] अङ्ग-बाह्य आगम श्रुत-पुरुष के प्रत्यंग या उपांग स्थानीय है।

---

१. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५२ :
गणहर-थेरकयं वा, आएसा मुक्क-वागरणओ वा।
धुव-चल विसेसओ वा, अगाणगेसु नाणत्तं॥

२. तत्त्वार्थ भाष्य, १।२० :
वक्तृ-विशेषाद् द्वैविध्यम्।

३. सर्वार्थसिद्धि, १।२० :
त्रयो वक्तारः—सर्वज्ञस्तीर्थकरः, इतरो वा श्रुतकेवली आरातीयश्चेति।

४. तत्त्वार्थ-राजवार्तिक, १।२० :
आरातीयाचार्यकृताङ्गार्थप्रत्यासन्नरूपमङ्गबाह्यम्।

४-अङ्ग

द्वादशांगी में संगभित बारह आगमों को अङ्ग कहा गया है। अङ्ग शब्द संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य में वेदाध्ययन के सहायक-ग्रन्थों को अङ्ग कहा गया है। उनकी संख्या छह है—

(१) शिक्षा— शब्दों के उच्चारण-विधान का प्रतिपादक ग्रन्थ।
(२) कल्प— वेद-विहित कर्मों का क्रमपूर्वक व्यवस्थित प्रतिपादन करने वाला शास्त्र।
(३) व्याकरण— पद-स्वरूप और पदार्थ-निश्चय का निमित्त-शास्त्र।
(४) निरुक्त— पदों की व्युत्पत्ति का निरूपण करने वाला शास्त्र।
(५) छन्द— मंत्रोच्चारण के लिए स्वर-विज्ञान का प्रतिपादक शास्त्र।
(६) ज्योतिष— यज्ञ-याग आदि कार्यों के लिए समय-शुद्धि का प्रतिपादक शास्त्र।

वैदिक साहित्य मे वेद-पुरुष की कल्पना की गई है। उसके अनुसार शिक्षा वेद की नासिका है, कल्प हाथ, व्याकरण मुख, निरुक्त श्रोत्र, छन्द पैर और ज्योतिष नेत्र है। इसीलिए ये वेद-शरीर के अङ्ग कहलाते है।[1]

पालि-साहित्य में भी 'अङ्ग' शब्द का उपयोग किया गया है। एक स्थान में बुद्ध-वचनों को नवांग और दूसरे स्थान में द्वादशांग कहा गया है।

नवांग—

(१) सुत्त— भगवान् बुद्ध के गद्यमय उपदेश।
(२) गेय्य— गद्य-पद्य मिश्रित अंश।
(३) वेय्याकरण— व्याख्यापरक ग्रन्थ।
(४) गाथा— पद्य में रचित ग्रन्थ।
(५) उदान— बुद्ध के मुख से निकले हुए भावमय प्रीति-उद्‌गार।
(६) इतिवुत्तक— छोटे-छोटे व्याख्यान जिनका प्रारम्भ 'बुद्ध ने ऐसे कहा' से होता है।
(७) जातक— बुद्ध की पूर्व-जन्म-सम्बन्धी कथाएँ।
(८) अब्भुतधम्म— अद्‌भुत वस्तुओं या योगज-विभूतियों का निरूपण करने वाले ग्रन्थ।
(९) वेदल्ल— वे उपदेश जो प्रश्नोत्तर की शैली मे लिखे गए हैं।[2]

---

१. पाणिनीय शिक्षा, ४१,४२।
२. सद्धर्मपुंडरीक सूत्र, पृ० ३४।

द्वादशांग—

(१) सूत्र, (२) गेय, (३) व्याकरण, (४) गाथा, (५) उदान, (६) अवदान, (७) इतिवृत्तक, (८) निदान, (९) वैपुल्य, (१०) जातक, (११) उपदेश-धर्म और (१२) अद्भुत-धर्म ।[1]

जैनागम बारह अंगो में विभक्त है—(१) आचार, (२) सूत्रकृत, (३) स्थान, (४) समवाय, (५) भगवती, (६) ज्ञाता धर्मकथा, (७) उपासकदशा, (८) अन्तकृद्, (९) अनुत्तरोपपातिक, (१०) प्रश्नव्याकरण, (११) विपाक और (१२) दृष्टिवाद ।

'अङ्ग' शब्द का प्रयोग भारतीय दर्शन की तीनों प्रमुख धाराओं में प्रयुक्त हुआ है । वैदिक और बौद्ध साहित्य में मुख्य ग्रन्थ वेद और पिटक हैं । उनके साथ 'अङ्ग' शब्द का कोई योग नहीं है । जैन साहित्य मे मुख्य ग्रन्थो का वर्गीकरण गणिपिटक है । उसके साथ 'अङ्ग' शब्द का योग हुआ है । गणिपिटक के बारह अङ्ग हैं—'दुवालसंगे गणिपिडगे ।'[2]

जैन-परम्परा मे श्रुत-पुरुष की कल्पना भी प्राप्त होती है । आचार आदि बारह आगम श्रुत-पुरुष के अङ्गस्थानीय हैं । संभवतः इसीलिए उन्हें बारह अङ्ग कहा गया ।[3] इस प्रकार द्वादशांग गणिपिटक और श्रुत-पुरुष दोनो का विशेषण बनता है ।

५-प्रथम अङ्ग

द्वादशागी मे आचारांग का पहला स्थान है ।[4] इस विषय में दो विचारधाराएँ प्राप्त होती हैं । एक धारा के अनुसार आचाराग पहला अङ्ग स्थापनाक्रम की दृष्टि से है, रचना-क्रम की दृष्टि से वह बारहवाँ अङ्ग है । दूसरी धारा के अनुसार रचना-क्रम

---

१ बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ 'अभिसमयालंकार' की टीका, पृ० ३५ -
सूत्रं गेय व्याकरणं, गाथोदानावदानकम् ।
इतिवृत्तक निदान, वैपुल्यं च सजातकम् ।
उपदेशाद्भुतौ धर्मौ, द्वादशांगमिदं वच ॥

२. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८८ ।

३. मूलाराधना, ४/५९९ विजयोदया :
श्रुत पुरुष मुखचरणाद्यङ्गस्थानीयत्वादगशब्देनोच्यते ।

४. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८९ :
से णं अङ्गट्ठयाए पढमे ।
(क) नदी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २११ :
स्थापनामधिकृत्य प्रथममङ्गम् ।
(ख) वही, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४० :
(ग) तणधराः पुन सूत्ररचना विदधत आचारादिक्रमेण विदधतिस्थापयन्ति वा (च ?) ।

और स्थापना-क्रम दोनो दृष्टियो से आचारांग पहला अङ्ग है। आचार्य मलयगिरि[1] तथा अभयदेवसूरि[1] दोनो ने ही उक्त दोनों विचारधाराओ का उल्लेख किया है। ये धाराएँ उनसे पहले ही प्रचलित थी। अङ्ग पूर्वो से निर्यूढ हैं, इस अभिमत के आलोक में देखा जाए तो यही धारा संगत लगती है कि आचारांग स्थापना-क्रम की दृष्टि से पहला अङ्ग है, किन्तु रचना-क्रम की दृष्टि से नहीं। निर्युक्तिकार ने 'आचार' को प्रथम अङ्ग माना है। उनके अनुसार तीर्थङ्कर सर्वप्रथम 'आचार' का और फिर क्रमशः शेष अङ्गो का प्रतिपादन करते है।[2] गणधर भी उसी क्रम से अङ्गो की रचना करते हैं।[3] निर्युक्तिकार ने आचारांग की प्रथमता का कारण भी प्रस्तुत किया है। उन्होने लिखा है—आचारांग में मोक्ष के उपाय (चरण-करण या आचार) का प्रतिपादन किया गया है और यही प्रवचन का सार है। इसलिए द्वादशांगी मे आचारांग का प्रथम स्थान है।[4]

इससे प्रतीत होता है कि निर्युक्तिकार इस धारा के समर्थक रहे है कि रचना की दृष्टि से आचारांग का प्रथम स्थान है। किन्तु ग्यारह अङ्गो को पूर्वों से निर्यूढ माना जाए, उस स्थिति में निर्युक्ति-सम्मत धारा की संगति नही बैठती। संभव है, निर्युक्तिकार ने अङ्गो के निर्यूहण की प्रक्रिया का यह क्रम मान्य किया हो कि सर्व प्रथम आचारांग का निर्यूहण और स्थापन होता है तथा तत्पश्चात् सूत्रकृत आदि अङ्गो का। इस सम्भावना को स्वीकार कर लेने पर दोनों धाराओ की बाह्य दूरी रहने पर भी आन्तरिक दूरी समाप्त हो जाती है।

---

१. (क) समवायांग वृत्ति, पत्र १०१: प्रथममङ्गं स्थापनामधिकृत्य, रचनापेक्षया तु द्वादशमङ्गम्।

(ख) वही, पत्र १२१: गणधरा. पुन. श्रुतरचनां विदधाना आचादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्ति च।

२ आचारांग निर्युक्ति, गाथा ८

सव्वेसि आयारो, तित्थस्स पवत्तणे पढमय.ए।
सेसाइं अंगाइ, एक्कारस आणुपुव्वीए।

३. वही, गाथा ८ वृत्ति:

गणधरा अप्यनयैवानुपूर्व्या सूत्रतया ग्रन्थन्ति।

४. वही, गाथा ९:

आयारो अङ्गाणं, पढम अङ्गं दुवालसण्हपि।
इत्थ य मोक्खो वाओ, एस य सारो पवयणस्स॥

६-श्रुतस्कंध

समवायांग में आचारांग के दो श्रुतस्कन्ध वतलाए गए है।[1] इससे यह प्रमाणित होता है कि समवायांग में प्राप्त द्वादशागी का विवरण भी आयार-चूला की रचना का उत्तरवर्ती है। प्रारम्भ में आचारांग के दो स्कन्ध नही थे। आचार्य भद्रबाहु ने आयार-चूला की रचना की, उसके पश्चात् दो स्कन्धो की व्यवस्था की गई। मूलभूत प्रथम अंग का नाम आचाराग अथवा 'ब्रह्मचर्याध्ययन' है। समवायाग में इसके अध्ययनो को 'नव ब्रह्मचर्य' कहा गया है।[2] आचारांग निर्युक्ति में इसे 'नव ब्रह्मचर्याध्ययनात्मक' कहा गया है।[3] द्वितीय श्रुतस्कन्ध के दो नाम है—आयारग्ग (आचाराग्र) और आयार-चूला (आचार-चूला)।

निर्युक्तिकार ने आचाराग के दस पर्यायवाची नाम वतलाए है—

(१) आयार— यह आचरणीय का प्रतिपादक है, इसलिए आचार है।

(२) आचाल— यह निविड वंधन को आचालित करता है, इसलिए आचाल है।

(३) आगाल— यह चेतना को सम धरातल में अवस्थित करता है, इसलिए आगाल है।

(४) आगर— यह आत्मिक-शुद्धि के रत्नो का उत्पादक है, इसलिए आगर है।

(५) आसास— यह सत्रस्त चेतना को आश्वासन देने मे क्षम है, इसलिए आश्वास है।

(६) आयरिस— इसमे 'इति कर्त्तव्यता' देखी जा सकती है, इसलिए यह आदर्श है।

(७) अङ्ग— यह अन्तस्तल मे स्थित अहिंसा आदि को व्यक्त करता है, इसलिए अङ्ग है।

(८) आईण्ण— इसमे आचीर्ण-धर्म का भी प्रतिपादन है, इसलिए यह आचीर्ण है।

---

१ समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८९
दो सुयक्खधा।

२. वही, समवाय ९, सूत्र ३
णव बभचेर पण्णत्ता।

३ आचाराग निर्युक्ति, गाथा ११ ·
णव वंभचेर मइओ।

(९) आजाइ— इससे ज्ञान आदि आचारों की प्रसूति होती है, इसलिए आजाति है।

(१०) आमोक्ख[1]— यह बंधन-मुक्ति का साधन है, इसलिए आमोक्ष है।

७-मुख्य-विभाग

आचारांग के नौ अध्ययन हैं। समवायांग[2] और आचारांग नियुक्ति[3] में इन अध्ययनों के जो नाम प्राप्त होते हैं, उनमें थोड़ा भेद है—

समवायांग	आचारांग निर्युक्ति
सत्थपरिण्णा	सत्थपरिण्णा
लोगविजय	लोगविजय
सीओसणिज्ज	सीओसणिज्ज
सम्मत्त	सम्मत्त
आवंती	लोगसार
धुत	धुय
विमोहायण	महापरिण्णा
उवहाणसुय	विमोक्ख
महपरिण्णा	उवहाणसुय

इनमें नाम-भेद और क्रम-भेद दोनों हैं। पाँचवें अध्ययन का मूल नाम 'लोगसार' ही है। आवंती नाम आदि-पद के कारण हुआ है। अनुयोगद्वार में यह उदाहरण रूप में उल्लिखित है।[4] नियुक्तिकार ने भी आवंती को आदान-पद नाम और लोकसार को गौण नाम माना है।[5]

---

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ७:
आयारो आचालो, आगालो आगरो य आसासो।
आयरिसो अंगंति य, आईण्णाऽजाइ आमोक्खा॥

२. समवायांग, समवाय ९, सू० ३।

३. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ३१-३२।

४. अनुयोगद्वार, सू० १३० : (वृत्ति पत्र १३०) :
से किं तं आयाण पएणं? (धम्मो मंगलं, चूलिया) आवंती'। तत्र आवतीत्याचारस्य पंचमाध्ययनं, तत्र ह्यादावेव—'आवन्ती केयावन्ती'त्यालापको विद्यत इत्यादानपदेनैतन्नाम।

५. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २३८ :
आयाणपएणावंति, गोण्णनामेण लोगसारुत्ति।

८-आयार-चूला

आचारांग के साथ पाँच चूलाएँ जुडी हुई है।[1] उनमे से प्रथम चार चूलाओं की द्वितीय श्रुतस्कन्ध के रूप में स्थापना की गई है। पाँचवी चूला 'निशीथाध्ययन' की स्थापना स्वतंत्र रूप से की गई है। द्वितीय श्रुतस्कंध के प्रथम सात अध्ययन—यह प्रथम चूला है। सात सप्तैकक—द्वितीय चूला है। भावना—तृतीय चूला है। विमुक्ति—चतुर्थ चूला है।[2] इस प्रकार चार चूलाओं के सोलह अध्ययन है। उनके नाम इस प्रकार हैं—

समवायांग[3]	आचारांग निर्युक्ति[4]
(१) पिण्डेषणा	पिण्डेसणा
(२) सिज्जा	सेज्जा
(३) इरिया	इरिया
(४) भासज्झयण	भासाजात
(५) वत्थेसणा	वत्थेसणा
(६) पायेसणा	पायेसणा
(७) ओग्गहपडिमा सत्तिक्कसत्तय	ओग्गहपडिमा सत्तिक्कग सत्त
(८) ठाण सत्तिक्कग	
(९) निसीहिया सत्तिक्कग	
(१०) उच्चारपासवण सत्तिक्कग	
(११) सद्द सत्तिक्कग	
(१२) रूव सत्तिक्कग	
(१३) परकिरिया सत्तिक्कग	
(१४) अन्नमन्नकिरिया सत्तिक्कग	

---

१. आचाराग निर्युक्ति, गाथा ११ :
हवइ य सपचचूलो।

२. वही, गाथा २९७ :
जावोग्गहपडिमाओ, पढमा सत्तिक्कगा बिइअ चूला।
भावण विमुत्ति आयारपकप्पा तिन्नि इअ पंच॥

३ समवायांग समवाय २५, सूत्र ५।

४. आचाराग निर्युक्ति, गाथा २८८-२९०।

(१५) भावणा भावणा
(१६) विमुत्ती विमुत्ती

दोनो श्रुतस्कन्धो के अध्ययनो की संयुक्त संख्या पच्चीस होती है।[1]

९-अवान्तर-विभाग

समवायांग में आचारांग के ८५ उद्देशन-काल बतलाए गए हैं।[2] एक अध्ययन का उद्देशन-काल एक होता है, वैसे ही एक उद्देशक का भी उद्देशन-काल एक ही होता है। उद्देशक अध्ययन का अवान्तर-विभाग होता है। आचार और आचार-चूला दोनो के उद्देशको की संख्या इस प्रकार है—

अध्ययन	उद्देशक	अध्ययन	उद्देशक
१	७	९	४
२	६	१०	१
३	४	११	३
४	४	१२	३
५	६	१३	२
६	५	१४	२
७	७	१५	२
८	८	१६	२

अंतिम नौ अध्ययनो में उद्देशक नही है। इस प्रकार पच्चीस मे से सोलह अध्ययनो के ७६ उद्देशक होते हैं।

१०-पद्-परिमाण और वर्तमान आकार

आचारांग निर्युक्ति के अनुसार आचाराग की पद-संख्या अट्ठारह हजार है। समवायांग तथा नन्दी मे आचाराग के दो श्रुतस्कन्ध बतला कर फिर अट्ठारह हजार पदो की संख्या बतलाई गई है। किन्तु यह पद-संख्या नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों की है। निर्युक्तिकार ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है।[3]

---

१. समवायाग, समवाय २५, सू० ५ :
आयारस्स णं भगवओ सचूलिआयस्स पणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता।

२. वही, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८९।

३. आचाराग निर्युक्ति, गाथा ११ :
णववम्भचेरमइओ, अट्ठारसपयसहस्सिओ वेओ।

अभयदेव सूरि ने समवायांग के संश्लिष्ट पाठ का विश्लेषण किया है। उन्होने लिखा है—"दो श्रुतस्कन्ध है, यह आचार-चूला सहित आचार का प्रतिपादन है। उसके अट्टारह हजार पद है। यह पद परिमाण केवल नव ब्रह्मचर्याध्ययनात्मक आचार का है।"[1] सम्प्रति उपलब्ध आचाराग मे अट्ठारह हजार पद प्राप्त नहीं है। परम्परा से ऐसा माना जाता है कि रचना-काल में आचाराग का पद-परिमाण इतना था, किन्तु काल-क्रम से उसके ग्रन्थभाग का विच्छेद हो गया, इसलिए वर्तमान मे पद-परिमाण भी कम हो गया है। दिगम्बर-परम्परा के अनुसार नक्षत्राचार्य, जयपाल, पाण्डुस्वामी, ध्रुवसेन और कंसाचार्य—ये पॉच आचार्य एकादशागधर और चौदह पूर्वों के एक देश के धारक हुए है। सुभद्र, यशोभद्र, यशोबाहु और लोहार्य—ये चार आचार्य आचाराग के धारक तथा शेष अंगो और पूर्वों के एक देश के धारक हुए है।[2] इनके पश्चात् अर्थात् वीर-निर्वाण ६८३ के पश्चात् आचारांगधर का विच्छेद हो गया। फलतः आचाराग का विच्छेद हो गया। आचाराग का विच्छेद मान लेने पर भी इस तथ्य की स्वीकृति की गई है कि उत्तरवर्ती आचार्य सभी अंगो और पूर्वों के एक देश (अवशिष्ट-भाग) के धारक हुए हैं।[3]

श्वेताम्बर-परम्परा मे भी विष्णु मुनि के देहावसान के साथ आचाराग का विच्छेद माना गया है।[4] तित्थोगाली मे भी आगम-विच्छेद की चर्चा प्राप्त है। उसके अनुसार आचाराग का विच्छेद वीर-निर्वाण २३०० (ई० १७७३) में बताया गया है। इन परम्पराओं से इतना ही साराश प्राप्त किया जा सकता है कि आचाराग निर्माण-काल मे जितना था, उतना आज नही है तथा वह सर्वथा विच्छिन्न भी नहीं। उसका कुछ विच्छेद आचारागधर आचार्यों के अभाव मे हुआ है तथा कुछ विच्छेद विस्मृतिवश व प्रतियो के प्रामाणिक सस्करणो के नष्ट होने से भी हुआ है। इतना सुनिश्चित है कि शीलाक सूरि (अस्तित्व-काल ई० ८वी शती) को आचाराग का जो अश प्राप्त था, उसका विच्छेद नही हुआ है। अत॰ तित्थोगाली का विवरण प्रामाणिक नहीं लगता।

---

1 समवायाग वृत्ति, पत्र १०१
यद् द्वौ श्रुतस्कन्धावित्यादि तदाचारस्य प्रमाण भणितं, यत् पुनरष्टादश पदसहस्राणि तन्नवब्रह्मचर्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाणम्।

2 धवला (षट्खण्डागम) भाग १, पृ० ६६।

3 वही, भाग १, पृ० ६७:
तदो सव्वेसि मग पुव्वाण मेग-देसो आइरिय-परपराए आगच्छमाणो धरसेणाइरियं सपत्तो।

4. अभिधान राजेन्द्र, भाग २, पृ० ३४६।

आचारांग का 'महापरिज्ञा' अध्ययन विच्छिन्न हो चुका है—यह श्वेताम्बर-आचार्यों का अभिमत है। उस अध्ययन का विच्छेद वज्रस्वामी (वि० पहली शताब्दी) के पश्चात् तथा शीलांक सूरि (वि० आठवीं शताब्दी) से पर्व हुआ है। वज्रस्वामी ने महापरिज्ञा अध्ययन से गगनगामिनी-विद्या उद्धृत की थी।[1] इससे स्पष्ट है कि उनके समय में वह अध्ययन प्राप्त था। शीलांक सूरि ने उसके विच्छेद होने का उल्लेख किया है।[2] निर्युक्तिकार ने महापरिज्ञा अध्ययन के विषय का उल्लेख किया है[3] तथा उसकी निर्युक्ति भी की है।[4] इससे लगता है कि चर्चित अध्ययन उनके सामने था। चूर्णिकार के सामने भी महापरिज्ञा अध्ययन रहा है। उन्होंने वृत्तिकार शीलांक सूरि की तरह इसके विच्छेद होने का उल्लेख नहीं किया है। उन्होंने चर्चित अध्ययन के असमनुज्ञात होने का उल्लेख किया है।[5]

यह अध्ययन असमानुज्ञात क्यों और कब हुआ, इसकी चूर्णिकार ने कोई चर्चा नहीं की है। एक अनुश्रुति यह है कि 'महापरिज्ञा' अध्ययन में अनेक मंत्र और विद्याओं का वर्णन था। काल-लब्धि के संदर्भ में उसे पढ़ाने का परिणाम अच्छा नहीं लगा। इसलिए तात्कालिक आचार्यों ने उसे असमनुज्ञात ठहरा दिया—उसका पढ़ना-पढ़ाना निषिद्ध कर दिया। किन्तु निर्युक्तकार के संदर्भ में हम इस विषय पर विचार करते हैं तो उक्त अनुश्रुति का उससे समर्थन नहीं होता। निर्युक्तिकार के अनुसार आचार-चूला के सात अध्ययन (सप्तैकक) महापरिज्ञा के सात उद्देशकों से

---

१ (क) आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा ७६६, मलयगिरि वृत्ति, पत्र ३६० :

जेणुद्धरिया विज्जा, आगासगमा महापरिन्नाओ।
वदामि अज्जवइरं, अपच्छिमो जो सुयधराण॥

(ख) प्रभावक चरित, वज्रप्रबन्ध, श्लोक १४८ :

महापरिज्ञाध्ययनाद्, आचारागान्तरस्थितात्।
श्री वज्रेणोद्धृता विद्या, तदा गगनगामिनी॥

२. आचारांग वृत्ति, पत्र २३५ :

अधुना सप्तमाध्ययनस्य महापरिज्ञाख्यस्यावसर, तच्च व्यवच्छिन्नमितिकृत्वाऽतिलङ्घ्याष्टमस्य सम्बन्धो वाच्यः।

३. वही, निर्युक्ति, गाथा ३४।

४. वही, निर्युक्ति, गाथा २५२-२५८ :

देखिए—आचाराग वृत्ति, द्वितीय श्रुतस्कन्ध का अतिम पत्र।

५. वही, चूर्णि, पृ० २४४ :

महापरिण्णा ण पढिज्जइ असमणुण्णाया।

निर्यूढ़ किए गए है ।[1] इस उल्लेख के आधार पर सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि जो विषय महापरिज्ञा से उद्धृत सात अध्ययनो (सप्तैकको) में है, वही विषय महापरिज्ञा अध्ययन में रहा है। ऐसी संभावना भी की जा सकती है कि महापरिज्ञा से उद्धत सात अध्ययनो के प्रचलन के बाद उसकी आवश्यकता न रही हो, फलतः वह असमनुज्ञात हो गया हो और क्रमशः विच्छिन्न हो गया हो। अभी तक हमें अनुश्रुति और अनुमान के अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन के विच्छेद का पुष्ट प्रमाण प्राप्त नही है।

११-विषय-वस्तु

समवायांग और नन्दी में आचारांग का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उसके अनुसार प्रस्तुत सूत्र आचार, गोचर, विनय, वैनयिक (विनय-फल), स्थान (उत्थितासन, निषण्णासन और शयितासन), गमन, चंक्रमण, भोजन आदि की मात्रा, स्वाध्याय आदि में योग-नियुजन, भाषा, समिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, भक्त-पान, उद्गम-उत्थान, एषणा आदि की विशुद्धि, शुद्धाशुद्ध-ग्रहण का विवेक, व्रत, नियम, तप, उपधान आदि का प्रतिपादक है।[2]

आचार्य उमास्वाति ने आचारांग के प्रत्येक अध्ययन का विषय संक्षेप में प्रतिपादित किया है। वह क्रमशः इस प्रकार है[3]—

(१) षड्जीवकाय यतना
(२) लौकिक संतान का गौरव-त्याग
(३) शीत-ऊष्ण आदि परीषहो पर विजय
(४) अप्रकम्पनीय-सम्यक्त्व
(५) संसार से उद्वेग
(६) कर्मों को क्षीण करने का उपाय
(७) वैयावृत्त्य का उद्योग
(८) तपस्या की विधि
(९) स्त्री-संग-त्याग
(१०) विधि-पूर्वक भिक्षा का ग्रहण
(११) स्त्री, पशु, क्लीव आदि से रहित शय्या

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २९० .
सत्तिक्कगाणि सत्तवि, निज्जूढाइं महापरिन्नाओ।
२. (क) समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८९।
(ख) नदी, सू० ८०।
३. प्रशमरति प्रकरण, ११४-११७।

(१२) गति-शुद्धि
(१३) भाषा-शुद्धि
(१४) वस्त्र की एपणा-पद्धति
(१५) पात्र की एपणा-पद्धति
(१६) अवग्रह-शुद्धि
(१७) स्थान-शुद्धि
(१८) निपद्या-शुद्धि
(१९) व्युत्सर्ग-शुद्धि
(२०) शब्दासक्ति-परित्याग
(२१) रूपासक्ति-परित्याग
(२२) परक्रिया-वर्जन
(२३) अन्योन्यक्रिया-वर्जन
(२४) पंच महाव्रतों की दृढ़ता
(२५) सर्वसंगों से विमुक्तता

निर्युक्तिकार ने नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों के विषय इस प्रकार बतलाए हैं—

(१) सत्थ परिण्णा— जीव संयम।
(२) लोग विजय— बंध और मुक्ति का प्रबोध।
(३) सीओसणिज्ज— सुख-दुःख-तितिक्षा।
(४) सम्मत्त— सम्यक्-दृष्टिकोण।
(५) लोगसार— असार का परित्याग और लोक में सारभूत रत्नत्रयी की आराधना।
(६) धुय— अनासक्ति।
(७) महापरिण्णा— मोह से उत्पन्न परीषहों और उपसर्गों का सम्यक् सहन।
(८) विमोक्ख— निर्याण (अंतक्रिया) की सम्यक्-अराधना।
(९) उवहाणसुय— भगवान् महावीर द्वारा आचरित आचार का प्रतिपादन।[१]

---

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ३३-३४ :
जिअसंजमो अ लोगो जह बज्झइ जह य तं पजहियव्वं।
सुहदुक्खतितिक्खाविय सम्मत्त लोगसारो य॥
निस्संगया य छट्ठे मोहसमुत्था परीसहुवसग्गा।
निज्जाणं अट्ठमए नवमे य जिणेण एवंति॥

आचार्य अकलङ्क के अनुसार आचारांग का समग्र विषय चर्या-विधान[1] तथा अपराजित सूरि के अनुसार रत्नत्रयी के आचरण का प्रतिपादन है।[2]

जैन-परम्परा मे 'आचार' शब्द व्यापक अर्थ में व्यवहृत होता है। आचारांग की व्याख्या के प्रसंग में आचार के पॉच प्रकार बतलाए गए हैं—(१) ज्ञानाचार, (२) दर्शनाचार, (३) चरित्राचार, (४) तपाचार और (५) वीर्याचार।[3] प्रस्तुत सूत्र मे इन पॉचों आचारों का निरूपण है।

दार्शनिक-तथ्य

तत्त्व-दर्शन की दृष्टि से आचारांग एक महत्त्वपूर्ण आगम है। आचार्य सिद्धसेन ने जैन-दर्शन के मूलभूत छह सत्य गिनाए हैं—

(१) आत्मा है।
(२) वह अविनाशी है।
(३) कर्त्ता है।
(४) भोक्ता है।
(५) निर्वाण है।
(६) निर्वाण के उपाय हैं।[4]

इनका आचारांग में पूर्ण विस्तार मिलता है। 'आत्मा है'—यह पहला सत्य है। आचारांग का प्रारम्भ इसी सत्य की व्याख्या से हुआ है।[5] इसी व्याख्या के साथ आत्मा के अविनाशित्व का उल्लेख हुआ है।[6] 'पुरुष तू ही तेरा मित्र है'[7], 'यह शल्य तू ने ही किया है'[8]—ये वाक्य आत्मा के कर्तृत्व के उद्बोधक हैं। 'अनुसंवेदन' का प्रयोग हुआ है।[9] यह क्रिया की प्रतिक्रिया (भोक्तृत्व) का सूचक

---

१ तत्त्वार्थ राजवार्तिक, १।२० :
आचारे चर्याविधानं शुद्धयष्टकपचसमितित्रिगुप्तिविकल्प कथ्यते।

२. मूलाराधना, आश्वास २, श्लोक १३०, विजयोदया :
रत्नत्रयाचरणनिरूपणपरतया प्रथमभगमाचारं शब्देनोच्यते।

३ समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८९
से समासओ पचविहे प० तं० णाणायारे दसणायारे चरित्तायारे तवायारे विरियायारे।

४. सम्मति प्रकरण, ३।५५
अत्थि अविणास-धम्मी, करेइ वेएइ अत्थि निव्वाणं।
अत्थि य मोक्खोवाओ, छ सम्मत्तस्स ठाणाइं॥

५ आचाराग, १।२।

६ वही, १।४।

७. वही, ३।६२
पुरिसा! तुममेव तुम मित्तं।

८ वही, २।८७
तुम चेव त सल्लमाहट्टु।

९ वही, ५।१०३।

है। आचारांग में निर्वाण को 'अनन्य-परम' कहा गया है। वहाँ सब उपाधियाँ समाप्त हो जाती हैं, इसलिए उससे अन्य कोई परम नहीं है। निर्वाण के उपायभूत सम्यग्-दर्शन, सम्यग्-ज्ञान और सम्यग्-चारित्र का स्थान-स्थान पर प्रतिपादन हुआ है। इन दृष्टियों से आचारांग को जैन-दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ कहा जा सकता है।

श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि

आचारांग श्रद्धा का समुद्र है। 'सिड्ढी आणाए मेहावी'[१], 'आणाए मामगं धम्मं'[२] आदि वाक्यों में अपने आराध्य के प्रति आत्मार्पण की भावना प्रस्फुटित होती है। आचाराग की श्रद्धा में स्वतंत्र-दृष्टिकोण का स्थान असुरक्षित नही है। सत्य की उपलब्धि के तीन साधन बतलाए गए हैं—

१—सहसम्मति,

२—परव्याकरण और

३—श्रुतानुश्रुत[३]।

इन तीन साधनो मे पहला साधन है—अपनी बुद्धि के द्वारा सत्य का अवबोध करना। 'मइमं पास'[४]—इस शब्द का प्रयोग भी दृष्टि की स्वतंत्रता को अवकाश देता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ किया है 'न केवलं अहमेव कथयामि त्वमेव पश्य'—केवल मैं ही नही करता हूँ, तू स्वयं भी देख। इस प्रकार आचारांग में श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि का सुन्दर संगम हुआ है। केवल श्रद्धा और केवल स्वतंत्र-दृष्टि—ये दोनों अतियाँ हैं। इनसे अच्छे परिणाम की उपलब्धि नही हो सकती। श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि का समन्वय ही सत्य-संधान का समुचित मार्ग है।

कषोपल

आचारांग सबसे प्राचीन सूत्र है, इसलिए यह उत्तरवर्ती सूत्रों के लिए 'कषोपल' के समान है। इसमे वर्णित आचार मूलभूत हैं। वे भगवान् महावीर के मौलिक आचार के सर्वाधिक निकट हैं। उत्तरवर्ती सूत्रों में वर्णित आचार उसका परिवर्धन या विकास है। आचारांग-चूला में भी आचार का परिवर्धन या विकास हुआ है। जो तथ्य मूल आचारांग में नही हैं, वे आचार-चूला में प्राप्त होते हैं, तब सहज ही प्रश्न खड़ा

१. आचारांग, ३।८०।
२. वही, ६।४८।
३. वही, १।३ :
सह-सम्मइयाए, पर-वागरणेण, अण्णेसि वा अंतिए सोच्चा।
४. वही, ३।१२।

होता है कि उनका आधार क्या है? दो शताब्दी से-पूर्ववर्ती साहित्य में जो तथ्य नही है, वे दो शताब्दी बाद लिखे गए साहित्य में कहाँ से आए? इसका समाधान देने के लिए हमारे पास पर्याप्त साधन सामग्री नहीं है, फिर भी इस विषय मे इतना कहा जा सकता है कि सामयिक परिस्थितियो को ध्यान में रख कर वर्तमान आचार्यों ने उत्सर्ग और अपवाद के सिद्धान्त की स्थापना और उसके आधार पर विधि-विधानो का निर्माण किया था। आचार-चूला उसी शृङ्खला की प्रथम कडी है। जैन-आचार की समीक्षा करते समय इस तथ्य की विस्मृति नहीं होनी चाहिए कि आचारांग मे वर्णित आचार मौलिक है और महावीर-कालीन है तथा जो आचार आचारांग में वर्णित नहीं है, वह उत्तरवर्ती है तथा उसकी प्रारम्भ-तिथि अन्वेषणीय है।

समसामयिक विचार

आचारांग में वैदिक, औपनिषदिक और बौद्ध विचारधाराओं के संदर्भ में अनेक तथ्यों का प्रतिपादन हुआ है। वैदिक-साधना को हम अरण्य-साधना कह सकते है। वैदिक-धारणा के अनुसार धर्म की साधना के लिए मनुष्य को अरण्य मे रहना आवश्यक है। वैदिक ऋषि तत्त्वचिन्ता के लिए भी अरण्य मे रहते थे। आरण्यक-साहित्य उसी अरण्यवास की निष्पत्ति है। भगवान् महावीर ने अरण्यवास की अनिवार्यता मान्य नहीं की। उन्होने कहा—"साधना गाँव में भी हो सकती है और अरण्य में भी हो सकती है।"[1]

"धर्म का उपदेश जैसे बडे लोगो को दिया जा सकता है, वैसे ही छोटे लोगो को दिया जा सकता है।"[2] उच्च-वर्ग को ही धर्म सुनने का अधिकार है, शूद्र को धर्म सुनने का अधिकार नहीं है, इस सिद्धान्त के प्रतिवाद मे ही भगवान् महावीर ने उक्त विचार का प्रतिपादन किया था।

"न कोई व्यक्ति हीन है और न कोई व्यक्ति उच्च है"[3]—इस विचार का प्रतिपादन जातिवाद के विरुद्ध किया गया था।

इस प्रकार उपनिषद्, गीता और बौद्ध-साहित्य के संदर्भ मे आचारांग का तुलनात्मक अध्ययन करने पर विचारधारा के अनेक मौलिक स्रोत हमें प्राप्त हो सकते हैं।

---

१. आचारांग, ८।१४
गामे वा अदुवा रण्णे, 'धम्ममायाणह'—पवेदितं माहणेण मईमया।

२ वही, २।१७४
जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ।
जहा तुच्छस्स कत्थइ, तहा पुण्णस्स कत्थइ॥

३. वही, २।४९
णो हीणे, णो अइरित्ते।

१२—रचनाकार और रचना-काल

परम्परा से यह जाना जाता है कि आचारांग की रचना गणधर सुधर्मा स्वामी ने की और तीर्थ-प्रवर्तन के समय में ही की। ऐतिहासिक तथा भाषाशास्त्रीय दृष्टि से विचार करने पर भी ऐसा प्रतीत होता है कि आचारांग उपलब्ध आगमों में सबसे प्राचीन है। इसकी रचना-शैली अन्य आगमों से भिन्न है। डॉ० हर्मन जेकोबी ने इसकी तुलना ब्राह्मण सूत्रों की शैली से की है। उनके अनुसार ब्राह्मण सूत्रों के वाक्य परस्पर सम्बन्धित हैं, किन्तु आचारांग के वाक्य परस्पर सम्बन्धित नहीं हैं। उन्होंने लिखा है—"आचारांग के वाक्य उस समय के प्रसिद्ध धार्मिक-ग्रन्थों से उद्धृत किए गए हैं, ऐसा लगता है। मेरा यह अनुमान गद्य के मध्य आने वाले पद्यों या पदों के संदर्भ में पूर्ण सत्य है। क्योंकि उन पद्यों या पदों की सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन तथा दशवैकालिक के पदों से तुलना होती है।"[१]

डॉ० जेकोबी का अभिमत निराधार नहीं है। द्वादशांगी पूर्वों से निर्यूढ है तथा दशवैकालिक का निर्यूहण भी पूर्वों से किया गया है। इसलिए बहुत संभव है कि इन सबके समान पदों का निर्यूहण-स्थल एक है।

आचारांग के वाक्य परस्पर सम्बन्धित नहीं हैं, इस अभिमत में आंशिक सच्चाई भी है और वह इसलिए है कि वर्तमान में आचारांग का खण्डित रूप प्राप्त है। अखण्ड रूप में जो सम्बन्ध-शृङ्खला प्राप्त हो सकती है, वह खण्डित रूप में नहीं हो सकती।

इसका तीसरा कारण व्याख्या-पद्धति का भेद भी है। आगम-साहित्य के व्याख्यान की दो पद्धतियाँ हैं—

(१) छिन्नच्छेदनयिक और

(२) अच्छिन्नच्छेदनयिक।

प्रथम पद्धति के अनुसार प्रत्येक वाक्य तथा श्लोक अपने आपमें परिपूर्ण होता है। पूर्व या अग्रिम वाक्य तथा श्लोक से उसकी सम्बन्ध-योजना नहीं की जाती।

---

१ *The Sacred Books of the East, Vol. XXII, Introduction, Page 48:* They do not read like a logical discussion, but like a Sermon made up by quotations from some then well-known sacred books. In fact the fragments of verses and whole verses which are liberally interspersed in the prose texts go far to prove the correctness of my conjecture; for many of these '*disjecta membra*' are very similar to verses or Pādas of verses occuring in the *Sūtrakritānga*, Uttarādhyayana and Dasavaikālika Sutras.

द्वितीय पद्धति के अनुसार प्रत्येक वाक्य तथा श्लोक की पूर्व या अग्रिम वाक्य तथा श्लोक के साथ सम्बन्ध-योजना की जाती है।

आचारांग की व्याख्या छिन्नच्छेदनयिक-पद्धति से करने पर वाक्यों की विसम्बद्धता प्रतीत होती है। यदि अच्छिन्नच्छेदनयिक-पद्धति से उसकी व्याख्या की जाए तो उसमें सर्वत्र विसम्बद्धता प्रतीत नहीं होगी।

आचार-चूला की रचना-शैली आचारांग से सर्वथा भिन्न है। उसकी रचना भी आचारांग के उत्तर-काल में हुई है। निर्युक्तिकार ने आचार-चूला को स्थविर-कर्तृक माना है।[1] चूर्णिकार ने स्थविर का अर्थ 'गणधर'[2] और वृत्तिकार ने 'चतुर्दश पूर्ववित्'[3] किया है। इन सब में स्थविर का नाम उल्लिखित नहीं है। अन्यत्र उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर यहाँ 'स्थविर' शब्द चतुर्दशपूर्वी भद्रबाहु के लिए प्रयुक्त हुआ जान पड़ता है। इसकी चर्चा 'दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन' (पृष्ठ ५३-५७) में की जा चुकी है।

आचारांग का गूढ़ अर्थ आचाराग्र (आचार-चूला) में स्पष्ट हो जाए, इस दृष्टि से भद्रबाहु स्वामी ने आचारांग का अर्थ 'आचाराग्र में प्रविभक्त' किया। निर्युक्तिकार ने पाँचों चूलाओं के निर्यूहण-स्थलों का निर्देश किया है।[4]

---

१ आचारांग निर्युक्ति, गाथा २८७
थेरेहिऽणुग्गहट्ठा, सीसहिअं होउ पागडत्थं च।
आयाराओ अत्थो, आयारग्गेसु पविभत्तो॥

२ आचारांग चूर्णि, पृ० ३२६
थेरा गणधरा।

३ आचारांग वृत्ति, पत्र २९०
'स्थविरैः' श्रुतवृद्धैश्चतुर्दशपूर्वविद्भिः।

४ आचारांग निर्युक्ति, गाथा २८८-२९१
बिइअस्स य पंचमए अट्ठमगस्स बिइयंमि उद्देसे।
भणिओ पिंडो सिज्जा, वत्थं पाउग्गहो चेव॥
पंचमगस्स चउत्थे इरिया, वण्णिज्जई समासेणं।
छट्ठस्स य पंचमए, भासज्जायं वियाणाहि॥
सत्तिक्कगाणि सत्तवि, निज्जूढाइं महापरिन्नाओ।
सत्थपरिन्ना भावण, निज्जूढाओ धुयविमुत्ती॥
आयारपकप्पो पुण, पच्चक्खाणस्स तइयवत्थूओ।
आयारनामधिज्जा, वीसइमा पाहुडच्छेया॥

निर्यूहण-स्थल : आचारांग		निर्यूढ-अध्ययन : अचार-चूला
अध्ययन	उद्देशक	अध्ययन
२	५	१, २, ५, ६, ७
८	२	१, २, ५, ६, ७
५	४	३
६	५	४
७	१-७	८-१४
१		१५
६	२-४	१६
प्रत्याख्यान पूर्व के तृतीय वस्तु का आचार नामक वीसवाँ प्राभृत		आचार-प्रकल्प—निशीथ

निर्युक्तिकार ने केवल निर्यूहण-स्थल के अध्ययनों और उद्देशकों का निर्देश किया है। चूर्णिकार और वृत्तिकार ने कहीं-कहीं उनके सूत्रों का भी निर्देश किया है।

चूर्णि के अनुसार आचार-चूला के १, २, ५, ६ और ७ अध्ययनों के निर्यूहण-सूत्र ये है—

१—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं लोगस्स कम्मसमारंभा कज्जंति तंजहा—अप्पणो से पुत्ताणं धूयाणं······

(अध्ययन २, उ० ५, सू० १०४, पृ० ३३)।

सव्वामगंधं वा परिण्णाय

(अ० २, उ० ५, सू० १०८, पृ० ३३)।

वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुछणं उग्गहं च कडासणं

(अ० २, उ० ५, सू० ११२, पृ० ३३)।

त भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावई बूया—आवसंतो! समणा अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा (४) वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं आच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेमि आवसहं वा समुस्सिणोमि

(अ० ८, उ० २, सू० २१, पृ० ८०-८१)।

वृत्तिकार के अनुसार—

सव्वामगंधं परिण्णाय णिरामगंधो परिव्वए अदिस्समाणे कय-विक्कएसु

(अ० २, उ० ५, सू० १०८, पृ० ३३)।

भिक्खु परक्कमेज्जा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्टिज्ज वा सुसाणंसि वा······(यावद् वहिया विहरिज्जा)[1] तं भिक्खु उवसंकमित्तु गाहावती बूया— आउसंतो समणा! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्चं—

(अ०८,उ०२,सू०२१,पृ०८०-८१)।

वत्थं पडिग्गहं कंवलं पायपुंछणं उग्गहं च कडासणं

(अ०२उ०५,सू०११२,पृ०३३)।

चूर्णि के अनुसार आयार-चूला के तीसरे अध्ययन के निर्यूहण-सूत्र ये हैं—

२—गामाणुगामं दूइज्ज माणस्स—

(अ०५,उ० ४, सू०६२, पृ०५६)।

तद्दिट्ठीए······

(अ०५,उ०४,सू०६८,पृ०६०)।

···पलीवाहरे पासिय पाणे गच्छेज्जा—

(अ०५,उ०४,सू०६९,पृ०६०)।

से अभिक्कममाणे······

(अ०५,उ०४,सू०७०,पृ०६०)।

वृत्तिकार के अनुसार—

गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जातं दुप्परक्कंत—

(अ०५,उ०४,सूत्र६२,पृ०५६)।

चूर्णि के अनुसार आयार-चूला के चौथे अध्ययन के निर्यूहण-सूत्र यह है—

३—पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं आइक्खे विभए किट्टे—

(अ०६,उ०५,सूत्र१०१,पृ०७५)।

वृत्ति के अनुसार—

'आइक्खे विभए किट्टे वेयवी'[2]—

(अ०६,उ०५,सू०१०१,पृ०७५)।

निर्युक्ति, चूर्णि और वृत्ति में प्राप्त निर्देशों के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आचार-चूला आचारांग से उद्धृत नहीं है, किन्तु आचारांग के संक्षिप्त

---

१. यह वृत्तिगत पाठ है तथा अग्रिम पंक्तियों में भी वृत्तिगत पाठ कुछ भिन्न है।

२. वृत्ति में पाठ इस प्रकार है—आइक्खइ विहयइ किट्टइ धम्मकामी।

पाठ का विस्तार है। निर्युक्तिकार ने इस ओर संकेत भी किया है।[1] आचाराग्र (आचार-चूला) मे जो 'अग्र' शब्द है, वह यहाँ 'उपकाराग्र' के अर्थ में प्रकृत है। चूर्णिकार ने उपकाराग्र का अर्थ किया है 'पूर्वोक्त का विस्तार और अनुक्त का प्रतिपादन करने वाला'। 'आचाराग्र' आचारांग में प्रतिपादित अर्थ का विस्तार और अप्रतिपादित अर्थ का प्रतिपादन करता है, इसीलिए उसे आचार का अग्र-स्थान दिया गया।[2]

आचार-चूला में उक्त का प्रतिपादन और अनुक्त का विस्तार—ये दोनों मिलते है। इसके प्रथम सात अध्ययनो मे उक्त का विशदीकरण है। पन्द्रहवें अध्ययन में भगवान् महावीर का जीवन-वृत्त है, वह अनुक्त का प्रतिपादन है। प्रस्तुत अध्ययन आचार के प्रथम अध्ययन (शस्त्र-परिज्ञा) से निर्यूढ है। उसमें महावीर का जीवन-वृत्त नही है। महाव्रतो की भावना प्रथम अध्ययन की पूरक है।

निर्यूहण के विषय में यह अनुमान भी किया जा सकता है कि आचाराग में पिण्ड, शय्या आदि से सम्बन्धित सूत्रो का अर्थागम विस्तृत था। भद्रबाहु स्वामी ने उस अर्थागम को सूत्रागम का रूप देकर उसको चूला के रूप में स्थापित कर दिया। आचारकल्प (निशीथ) आचार से निर्यूढ नहीं है, किन्तु पूर्वगत आचार-वस्तु से निर्यूढ है। दोनों में नाम साम्य है, इसीलिए आचाराग्र को आयार से निर्यूढ कहा गया है। प्रथम दो चूलाओ में सात-सात अध्ययन रखे गए, तीसरी और चौथी चूला में एक-एक अध्ययन रखा गया। इस व्यवस्था के पीछे क्या रहस्य है, सहज ही यह जिज्ञासा उभरती है। आचारप्रकल्प के बीस उद्देशक हैं और उसे एक (पाँचवी) चूला माना गया, यह उपयुक्त है। क्योंकि वे सब एक विषय से सम्बन्धित है। दूसरी चूला के सात अध्ययन भी आचार के एक अध्ययन से निर्यूढ हैं तथा पन्द्रहवाँ और सोलहवाँ भी एक-एक अध्ययन से निर्यूढ हैं, इसलिए इन्हें एक-एक चूला मानना उचित है। प्रथम सात अध्ययनों में पाँच अध्ययनो का निर्यूहण-स्थल समान है। पाँचवे और छठे का निर्यूहण-स्थल भिन्न-भिन्न है। फिर भी उन्हें एक चूला मे रखा गया, उसका कारण विषय-साम्य प्रतीत होता है। प्रथम चूला के सातो अध्ययन ईर्या, भाषा और एषणा समिति से सम्बन्धित है, इसीलिए उन्हे एक प्रकरण में वर्गीकृत किया गया।

---

१. आचाराग निर्युक्ति, गाथा २८६
उवयारेण उ पगय, आयारस्सेव उवरिमाइ तु।
रुक्खस्स म पव्वयस्स य, जह अग्गाइ तहेयाइ ॥

२. आचाराग चूर्णि, पृ० २८९ -
उपकाराग्रं तु यत् पूर्वोक्तस्स विस्तरतोऽनुक्तस्य च प्रतिपादनादुपकारे वर्त्तते तद् यथा दशवैकालिकस्य चूडे, अयमेव वा श्रुतस्कन्ध आचारस्येत्यतोऽत्रोपकाराग्रेणाधिकार।

पाँचो चूलाएँ एक ही व्यक्ति द्वारा कृत है या भिन्न-भिन्न व्यक्तियो द्वारा, यह प्रश्न भी उपस्थित होता है। नियुक्तिकार ने 'स्थविर' शब्द का प्रयोग वहुवचन में किया है।[1] उसके आधार पर आयार-चूला के अनेक-कर्तृत्व होने की कल्पना की जा सकती है। यदि स्थविर शब्द का वहुवचन सम्मान-सूचक हो, तो अनेक-कर्तृत्व की कल्पना आधारहीन हो जाती है। स्थविर शब्द का वहुवचन में प्रयोग अनेक व्यक्तियों के लिए है अथवा सम्मान-सूचन के लिए इसका निर्णय करना वड़ा कठिन है। आचारांग के विशेष उपयोगी स्थलो का विस्तार किसी एक ही व्यक्ति ने विशेष प्रयोजन की पूर्ति के लिए किया, ऐसा प्रतीत होता है।

आचारांग में पिण्डैषणा आदि के नियम विखरे हुए थे तथा अर्थागम के द्वारा प्रतिपादित थे। उनका सूत्रागम के रूप में एकत्र संकलन करने की कल्पना आचार्य के मन में हुई और उन्होंने वैसा किया। आचार-चूला एक विषय के विखरे हुए अर्थों का संकलन है, इसकी सूचना चूर्णिकार ने भी दी है।[2] आचार-चूला में जिन विषयों का निषेध किया गया है, उन्हीं की प्रायश्चित्त-विधि निशीथ में निर्दिष्ट है। आचार सम्बन्धी नियमों का संकलन और उनके अतिक्रमण का प्रायश्चित्त—इन दोनों को व्यवस्थित रूप देने की कल्पना किसी एक ही मस्तिष्क की है और वह छेदसूत्र के कर्त्ता चतुर्दशपूर्वी भद्रवाहु की ही होनी चाहिए।

श्वेताम्बर-साहित्य में निशीथ को 'कालिक सूत्र' माना है। वह अनंग-प्रविष्ट की कोटि में आता है।[3] चार चूलाओं को आचारांग के द्वितीय श्रुतस्कंध के रूप में मान्यता दी गई है।[4] वे अंग-प्रविष्ट की कोटि में मान्य हैं।

दिगम्बर-साहित्य में निशीथ की गणना आरातीय आचार्य कृत चौदह अंग-वाह्य सूत्रों में की है।[5] समवायांग तथा नंदी में आचारांग के पच्चीस अध्ययन वतलाए गए हैं।[6] यह संख्या आचारांग के नौ अध्ययनो के साथ चार आचार-चूलाओं के सोलह अध्ययनों का योग करने से निष्पन्न हो जाती है।

---

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २८७।

२. आचारांग चूर्णि, पृ० ३२६

पिंडीकृतो पृथक्-पृथक्, पिंडस्स पिंडेसणासु कतो, सेज्जत्थो सेज्जासु, एवं सेसाणवि।

३. नंदी- सूत्र ७७।

४. वही, सूत्र ८०।

५. गोम्मटसार, ३६६-३६७।

६. (क) समवायांग, समवाय २५, सूत्र ५.

आयारस्स ण भगवओ सचूलियायस्स पणवीस अज्झयणा पन्नत्ता।

(ख) नंदी, सूत्र ८०:

पणवीसं अज्झयणा।

उक्त साक्ष्यों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि निशीथ की रचना एक स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में की गई तथा नंदी सूत्र की रचना (आगम संकलना-काल) तक उसका स्थान स्वतंत्र रहा फिर उसे आचारांग की एक चूला के रूप में मान्य किया गया। यह मान्यता नियुक्ति की रचना से पूर्व स्थिर हो चुकी थी। इसीलिए निर्युक्तिकार ने पद-परिमाण की दृष्टि से आचारांग को वहु और वहुतर माना है।[1] शीलांक सूरि के अनुसार चार चूलाओं का योग करने पर आचारांग का पद-परिमाण 'वहु' होता है और निशीथ नामक पाँचवी चूला का योग करने पर उसका पद-परिमाण 'वहुतर' हो जाता है।[2] वर्तमान में निशीथ का समावेश छेद-सूत्रों के वर्ग में किया जाता है, यह भी नंदी की रचना के उत्तरकाल में हुआ है। उपयोगिता की दृष्टि से भले उसे स्वतंत्र ग्रन्थ माना जाए या छेद-सूत्रों के वर्ग में समाविष्ट किया जाए, किन्तु उसकी रचना के पीछे जो परिकल्पना है, वह शेष चार चूलाओं की परिकल्पना से भिन्न नहीं है। अतः पाँचों चूलाओं को अनेक-कर्तृक मानने की अपेक्षा एक कर्तृक मानने में अधिक संगति है।

समवायांग सूत्र में चूलिका वर्जित आचारांग, सूत्रकृतांग और स्थानांग के सत्तावन अध्ययन बतलाए गए हैं। इनमें सूत्रकृतांग के तेईस अध्ययन और स्थानांग के दस अध्ययन (स्थान) हैं। आचारांग के ६ अध्ययन, आचार-चूला के १५ अध्ययन (चौथी चूला—१६वें अध्ययन को छोड़ कर शेष तीन चूलाओं के पन्द्रह अध्ययन) इस प्रकार सत्तावन अध्ययन होते हैं।[3]

वृत्तिकार अभयदेव सूरि[4] ने विमुक्ति (चौथी चूला) का वर्जन किस आधार पर किया, यह ज्ञात नहीं है और सूत्रकार ने केवल सत्तावन की संख्या पूरी करने के लिए विमुक्ति अध्ययन का वर्जन किया या इसके पीछे कोई दूसरा दृष्टिकोण था, इसका निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता।

---

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११ :
हवइ य सपंचचूलो बहुबहुतरओ पयग्गेण।

२. आचारांग वृत्ति, पत्र ६ :
तत्र चतुश्चूलिकात्मकद्वितीयश्रुतस्कन्धप्रक्षेपाद्बहुः, निशीथाख्यपञ्चमचूलिकाप्रक्षेपाद्बहुतरः।

३. समवायांग, समवाय ५७, सूत्र १ :
तिण्हं गणिपिडगाणं आयारचूलियावज्जाणं सत्तावन्नं अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा—आयारे, सूयगडे, ठाणे।

४. वहीं, वृत्ति, पत्र ६६ :
आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमाङ्गस्य चूलिका—सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यभिधानमाचारचूलिका तद् वर्जानाम्... ।

आचाराग से सीधा सम्बन्ध प्रथम तीन चूलिकाओ (१५ अध्ययनो) का है। प्रथम दो चूलिकाओ का सम्बन्ध आचार से है तथा तीसरी चूलिका (पन्द्रहवें अध्ययन) का सम्बन्ध नौवे अध्ययन में वर्णित महावीर की साधना से है। 'विमुक्ति' का आचारांग से सीधा सम्बन्ध नही है। इसी तथ्य की सूचना इस गणना में दी है—ऐसी कल्पना की जा सकती है।

आवश्यक चूर्णि मे एक नई चर्चा प्राप्त होती है। उसके अनुसार स्थूलिभद्र की बहन यक्षा महाविदेह क्षेत्र में गई थी। जब वह वापस आ रही थी, तब सीमंधर भगवान् ने उसे दो अध्ययन दिए—(१) भावना और (२) विमुक्ति।[1]

आचार्य हेमचन्द्र ने परिशिष्ट पर्व मे इस घटना में दो अध्ययनो का सम्वर्धन किया है। उनके अनुसार साध्वी यक्षा ने भगवान् सीमंधर से चार अध्ययन प्राप्त किए थे—(१) भावना, (२) विमुक्ति, (३) रतिवाक्या (रतिकल्प) और (४) विविक्त-चर्या। संघ ने प्रथम दो अध्ययन आचाराग की तीसरी और चौथी चूलिकाओ के रूप मे और अंतिम दो अध्ययन दशवैकालिक की चूलिकाओ के रूप में स्थापित किये।[2]

आचारांग निर्युक्ति और दशवैकालिक निर्युक्ति मे उक्त घटना का उल्लेख नही है। आवश्यक चूर्णि में इस घटना का समावेश कैसे हुआ और आचार्य हेमचन्द्र ने उसमें सम्वर्धन कैसे किया, इसका प्रामाण्य प्राप्त किए विना इस बारे में कुछ कहना कठिन है। आचाराग निर्युक्ति के आधार पर इतना ही कहा जा सकता है कि ये चूलिकाएँ स्थविर कृत हैं।

१३-आचारांग का महत्त्व

आचारांग आचार का प्रतिपादक सूत्र है, इसलिए यह सब अंगो का सार माना गया है। निर्युक्तिकार ने निर्युक्ति गाथा १६ में स्वयं जिज्ञासा की—'अंगाणं किं सारो?' अंगो का सार क्या है? इसके उत्तर की भाषा में उन्होने लिखा है—'आयारो' अर्थात् अंगो का सार आचार है।

आचारांग मे मोक्ष का उपाय बताया गया है, इसलिए यह समूचे प्रवचन का सार है।[3]

---

१. आवश्यक चूर्णि. पृ० १८८ :
सिरिओ पव्वइतो अब्भत्तट्ठेणं कालगतो महाविदेहे य पुच्छिका गता अज्जा दो वि अज्झयणाणि भावणा विमोत्ती य आणिताणि।

२. परिशिष्ट पर्व, ९।९।८३-१००।

३. आचाराग निर्युक्ति, गाथा ९।

आचारांग के अध्ययन से श्रमण-धर्म ज्ञात होता है, इसलिए आचारधर पहला गणिस्थान (आचार्य होने का प्रथम कारण) कहलाता है।[1]

आचारांग मुनि-जीवन का आधारभूत आगम है, इसलिए इसका अध्ययन सर्व प्रथम किया जाता था। नौ ब्रह्मचर्य अध्ययनों का वाचन किए बिना उत्तम या ऊपर के आगमों का वाचन करने पर चातुर्मासिक प्रायश्चित्त का विधान किया गया है।[2]

आचारांग पढ़ने के बाद ही धर्मानुयोग, गणितानुयोग और द्रव्यानुयोग पढ़े जाते थे।[3] नव दीक्षित मुनि की उपस्थापना आचारांग के शस्त्र-परिज्ञा अध्ययन द्वारा की जाती थी। वह पिण्डकल्पी (भिक्षा लाने योग्य) भी आचारांग के अध्ययन से होता था।[4] आचारांग का अध्ययन किए बिना सूत्रकृत आदि अङ्गों का अध्ययन विहित नहीं था।[5] उक्त उद्धरणों से आचारांग का महत्त्व-स्थापन होता है और साथ-साथ उसके प्रतिपाद्य विषय—आचार का भी महत्त्व-स्थापन होता है।

१४-रचना-शैली

सूत्रकृतांग चूर्णि में सूत्र-रचना की चार शैलियों का निर्देश मिलता है—(१) गद्य, (२) पद्य, (३) कथ्य और (४) गेय।[6]

---

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा १० :
आयारम्मि अहीए, जं नाओ होइ समणधम्मो उ।
तम्हा आयारधरो, भण्णइ पढमं गणिट्ठाणं॥

२. निशीथ, १९।१ :
जे भिक्खु णव बंभचेराइं अवाएत्ता उत्तम सुयं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति।

३. निशीथ चूर्णि (निशीथ सूत्रं, चतुर्थ विभाग), पृ० २५३ :
अहवा—बंभचेरादी आयारं अवाएत्ता धम्माणुओगं इसिभासियादि वाएति, अहवा—सूरपण्णत्तियाइगणियाणुओगं वाएति, अहवा—दिट्ठिवातं दवियाणुओगं वाएति, अहवा—जदा चरणाणुओगो वातित्तो तदा धम्माणुयोगं अवाएत्ता गणियाणुयोग वाएति, एवं उक्कमो चारणियाए सव्वो वि भासियव्वो।

४. व्यवहारभाष्य, ३।१७४-१७५।

५. निशीथ चूर्णि (निशीथ सूत्र, चतुर्थ विभाग), पृ० २५२ :
अंगं जहा आयारो तं अवाएत्ता सुयगडंगं वाएति।

६. सूत्रकृतांग चूर्णि, पृ० ७ :
तं चउव्विधं, तजहा—गद्यं पद्यं कथ्यं गेयं। गद्यं—चूर्णिग्रन्थः ब्रह्मचर्यादि, पद्यं गाथासोलसगादि, कथनीयं कथ्यं जहा उत्तरज्झयणाणि इसिभासिताणि णायाणि य, गेयं णाम सरसंचारेण जधा काविलिज्जे 'अधुवे असासयम्मि संसारम्मि दुक्खपउराए।'

(१) गद्य— चूर्णि ग्रन्थ, जैसे—ब्रह्मचर्य अध्ययन।

(२) पद्य— जैसे—गाथाषोडशक (सूत्रकृतांग के प्रथम श्रुतस्कंध का १६वाँ अध्ययन)

(३) कथ्य— कथनीय, जैसे—उत्तराध्ययन, ऋषिभाषित, ज्ञाता।

(४) गेय— स्वरयुक्त, जैसे—कापिलीय (उत्तराध्ययन का ८वाँ अध्ययन)।

दशवैकालिक निर्युक्ति में ग्रथित और प्रकीर्णक—इन दो शैलियो की चर्चा मिलती है।[1] ग्रथित शैली का अर्थ है 'रचनाशैली' और प्रकीर्णक का अर्थ है 'कथा-शैली'।[2] ग्रथित शैली के चार प्रकार बतलाए गए हैं—(१) गद्य, (२) पद्य, (३) गेय और (४) चौर्ण।[3]

दशवैकालिक निर्युक्ति में जो प्रकीर्णक है, वही सूत्रकृतांग चूर्णि में कथ्य है। सूत्रकृतांग चूर्णि में ब्रह्मचर्याध्ययन (प्रथम आचारांग) को गद्य की कोटि में रखा है और उसे चूर्णि ग्रन्थ माना है। किन्तु दशवैकालिक चूर्णि में ब्रह्मचर्याध्ययन को चौर्ण पद माना है।[4] हरिभद्र का भी यही अभिमत है।[5] आचारांग की रचना गद्य-शैली की नही है, इसलिए दशवैकालिक चूर्णि का अभिमत संगत लगता है।

निर्युक्तिकार ने चौर्ण-पद की व्याख्या इस प्रकार की है—"जो अर्थ-बहुल, महार्थ हेतु, निपात और उपसर्ग से गंभीर, बहुपाद, अव्यवच्छिन्न (विराम रहित), गम और नय से विशुद्ध होता है, वह चौर्णपद है।"[6] चौर्ण की परिभाषा में आया हुआ 'बहुपाद'

---

१. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १६६ :
नोमाउगपि दुविहं, गहियं च पइन्नयं च बोद्धव्वं।
गहिय चउप्पयारं, पइन्नग होइ णेगविहं॥

२. दशवैकालिक हारिभद्रीय वृत्ति, पत्र ८७ :
ग्रथित रचित बद्धमित्यनर्थान्तरम्, अतोऽन्यत्प्रकीर्णकं—प्रकीर्णककथोपयोगिज्ञान-पदमित्यर्थ.।

३. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १७० :
गज्ज पज्ज गेयं, चुण्ण च चउव्विहं तु गहियपयं।
तिसमुट्ठाण सव्वं, इइ बेंति सलक्खणा कइणो॥

४. दशवैकालिक चूर्णि, पृ० ७८ :
इदाणिं चुण्णपद भण्णइ, जहा बमचेराणि।

५. दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र ८८ :
चौर्णं पदं ब्रह्मचर्याध्ययनपदवत्।

६. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १७४ :
अत्थबहुलं महत्थं, हेउनिवाओवसग्गगंभीरं।
बहुपायमवोच्छिन्नं, गमणयसुद्धं च चण्णपयं॥

शब्द यहाँ बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिस रचना में कोई पाद नहीं होता, वह गद्य और जिसमें गद्य भाग के साथ-साथ बहुतपाद (चरण) होते हैं, वह चौर्ण है। संक्षेप में गद्य को 'अपाद' और चौर्ण को 'बहुपाद' कहा जा सकता है। आचारांग में सैकड़ों पाद हैं, इसलिए वह चौर्णशैली की रचना है।

यह आश्चर्य की बात है कि समवायांग[1] तथा नन्दी[2] में आचारांग के संख्येय वेष्टकों और संख्येय श्लोकों का उल्लेख है तथा चूर्णि और वृत्ति साहित्य में इसे चौर्णपद की कोटि में रखा गया है, फिर भी इसके प्रकीर्ण पादों की ओर जैन विद्वानों ने ध्यान नहीं दिया। आचारांग में गद्य भाग के साथ-साथ विपुल मात्रा में पद्य भाग है—इस रहस्य के उद्‌घाटन का श्रेय डॉ० शुब्रिंग को है। उन्होंने स्व-संपादित आचारांग में पद्य भाग का पृथक् अंकन किया है।

आचारांग के ८ वें अध्ययन के ७ वें उद्देशक तक की रचना चौर्णशैली में है और ८ वाँ उद्देशक तथा ६ वाँ अध्ययन पद्यात्मक है। आचार-चूला के १५ अध्ययन मुख्यतया गद्यात्मक हैं, कहीं-कहीं पद या संग्रह-गाथाएँ प्राप्त हैं। १६ वाँ अध्ययन पद्यात्मक है।

१५-व्याख्या-ग्रन्थ

आचारांग के उपलब्ध व्याख्या ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन निर्युक्ति है। इसके कर्त्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० पाँचवीं छठी शताब्दी) हैं।

दूसरा स्थान चूर्णि का है। निर्युक्ति पद्यमय है और चूर्णि गद्यमय। परम्परा से इसके कर्त्ता जिनदास महत्तर माने जाते हैं। किन्तु ऐतिहासिक शोध के आधार पर इसकी पुष्टि नहीं हुई है। अंग शब्द का निक्षेप करते हुए चूर्णिकार ने द्रव्य-अंग की व्याख्या के लिए चउरंगिज्ज (उत्तराध्ययन का तृतीय अध्ययन) की भाँति—ऐसा उल्लेख किया है।[3] इस वाक्यांश से उत्तराध्ययन और आचारांग की चूर्णि के एक कर्त्ता होने की कल्पना की जा सकती है। यदि आचारांग और उत्तराध्ययन के चूर्णिकार एक हों तो उनका परिचय उत्तराध्ययन चूर्णि के अनुसार 'गोपालिक महत्तर शिष्य' के रूप में मिलता है।[4]

---

१. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८९।

२. नंदी, सूत्र ८०:
संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा।

३. आचारांग चूर्णि, पृ० ४
दव्वंगं जहा चउरंगिज्जे।

४. उत्तराध्ययन चूर्णि, पृ० २८३।

आचारांग का तीसरा व्याख्या-ग्रन्थ 'टीका' है। चूर्णि और वृत्ति—ये दोनों निर्युक्ति के आधार पर चलते हैं। निर्युक्ति का शब्द-शरीर संक्षिप्त है, किन्तु दिशा-सूचन व ऐतिहासिक दृष्टि से वह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चूर्णि का शब्द-शरीर टीका की अपेक्षा संक्षिप्त है, किन्तु अर्थाभिव्यक्ति व ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत मूल्यवान् है। टीका का शब्द-शरीर उपलब्ध व्याख्या-ग्रन्थों में सबसे बड़ा है। इसके कर्त्ता शीलाङ्क सूरि हैं। उन्होंने अपना दूसरा नाम 'तत्त्वादित्य' बतलाया है।[1] आचारांग की पुष्पिका के अनुसार उन्होंने आचारांग (प्रथम श्रुतस्कन्ध) की टीका गुप्त सम्वत् ७७२, भाद्र शुक्ला-पंचमी के दिन 'गम्भूता' (उत्तर गुजरात में पाटण का पार्श्ववर्ती 'गांभू' नामक गाँव) में पूर्ण की थी।[2]

शीलाङ्क सूरि का अस्तित्व-काल ई० ८ वी शती माना जाता है।[3]

दीपिका : रचयिता—अंचल गच्छ के मेरुतंग सूरि के शिष्य माणिक्यशेखर सूरि।

दीपिका : रचयिता—खरतर गच्छ के जिनसमुद्र सूरि के पट्टधर जिनहंस सूरि।

अवचूरि : रचयिता—हर्षकल्लोल के शिष्य लक्ष्मीकल्लोल। रचना वि० सं० १६०६ (?)।

बालावबोध : रचयिता—पार्श्वचन्द्र सूरि।

पद्यानुवाद और वार्तिक : इन दोनों के कर्त्ता श्रीमज्जयाचार्य (विक्रम की २० वीं शती) हैं। पद्यानुवाद—आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध की राजस्थानी में पद्यात्मक व्याख्या है। वार्तिक आचार-चूला पर लिखा गया है। उसके चर्चास्पद विषयों के स्पष्टीकरण के लिए प्रस्तुत वार्तिक बहुत महत्त्वपूर्ण है।

ऊपर की पंक्तियों में हमने व्याख्या-ग्रन्थों की चर्चा की है। प्रस्तुत शीर्षक में अनुपलब्ध व्याख्या-ग्रन्थों पर दृष्टि डाल लेना आवश्यक है। आर्य गन्धहस्ती ने

---

१ आचारांग वृत्ति, पत्र २८७ :
ब्रह्मचर्याख्यश्रुतस्कन्धस्य निर्वृ ति कुलीनशीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना वाहरिसाधुसहायेन कृता टीका परिसमाप्ता।

२ वही, पत्र २८७ :
द्वासप्तत्यधिकेषु हि शतेषु, सप्तसु गतेषु गुप्तानाम्।
संवत्सरेषु मासि च, भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम्॥
शीलाचार्येणकृता, गम्भूतायां स्थितेन टीकैषा।
सम्यगुपयुज्य शोध्य, मात्सर्यविनाकृतैरार्यैः॥

३ जीतकल्पसूत्र, प्रस्तावना, पृ० ११-१५ :
पुष्पिकागत रचना-संवत् भिन्न-भिन्न आदर्शों में भिन्न-भिन्न प्रकार का मिलता है। देखिए—'जैन आगम साहित्य मां गुजरात', पृ० १७६।

आचारांग के प्रथम अध्ययन 'शस्त्र-परिज्ञा' की टीका में उसी का संक्षिप्त सार संकलन किया है। आचारांग टीका में उन्होंने लिखा है—

शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिबहुगहनं च गन्धहस्तिकृतम्।
तस्मात् सुखबोधार्थं गृह्णाम्यहमञ्जसा सारम् ॥३॥
(आचारांग वृत्ति, पत्र १)

शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिगहनमितीव किल वृतं पूज्यैः।
श्रीगन्धहस्तिमिश्रैर्विवृणोमि ततोऽहमवशिष्टम् ॥२॥
(आचारांग वृत्ति, पत्र ७४)

हिमवंत थेरावली के अनुसार आर्य गन्धहस्ती ने बारह अङ्गों पर विवरण लिखा था। आचारांग सूत्र का विवरण विक्रम सम्वत् के दो सौ वर्ष बाद लिखा गया।[1] ऊपर उद्धृत आचारांग वृत्ति के श्लोकों से इस अभिमत की पुष्टि नहीं होती कि आर्य गन्धहस्ती ने समग्र आचारांग पर विवरण लिखा था।

१६—उपसंहार

प्रस्तुत भूमिका में आचार और आचार-चूला का संक्षिप्त पर्यालोचन किया गया है। भाषाशास्त्रीय अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन, छन्द-विमर्श, व्याकरण-विमर्श आदि-आदि विषयों की विशद समीक्षा अपेक्षित है। इसकी सम्पूर्ति 'आचारांग : एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की जाएगी।

आचार्य तुलसी

सागर-सदन
अहमदाबाद
१५ अगस्त, १९६७

---

१. प्राकृत साहित्य का इतिहास, पृ० १९८।

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थ-सूची

अनुयोगद्वार

अभिधानराजेन्द्र कोष

अभियसमयालंकार की टीका (बौद्ध संस्कृत-ग्रन्थ)

आचारांग ('आयारो तह आयार-चूला' में मुद्रित)

आचारांग चूर्णि

आचारांग निर्युक्ति

आचारांग वृत्ति

आवश्यक चूर्णि

आवश्यक निर्युक्ति

उत्तराध्ययन ('दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि' मे मुद्रित)

उत्तराध्ययन चूर्णि

गोम्मटसार

जयधवला

जितकल्पसूत्र

तत्त्वार्थ भाष्य

तित्थोगाली

तत्त्वार्थ राजवार्तिक

दशवैकालिक चूर्णि

दशवैकालिक निर्युक्ति

दशवैकालिक, हारिभद्रीय टीका

धवला (षट्खण्डागम)

निशीथ

निशीथ चूर्णि

नंदी

नंदी, मलयगिरि वृत्ति

परिशिष्ट पर्व
पाणिनीय शिक्षा
प्रभावक चरित
प्रशमरति प्रकरण
प्राकृत साहित्य का इतिहास
मूलाराधना
विशेपावश्यक भाष्य
व्यवहार भाष्य
सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र (डॉ० नलिनाक्ष दत्त का देवनागरी संस्करण, रायल एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, सन् १९५३)
सम्मति तर्क प्रकरण
समवायांग (संशोधित प्रति)
समवायांग वृत्ति
सर्वार्थसिद्धि
सूत्रकृतांग चूर्णि
सेक्रेड बुक्स ऑफ दी ईस्ट, दी खं० २२,४५
हिमवंत थेरावली

आयारो

तह

आयार-चूला

आयारो : विसय-सूची

आयार-चूला : विसय-सूची

संकेत-निर्देशिका

● ०	ये दोनो बिन्दु पाठ-पूर्ति के द्योतक है। पाठ-पूर्ति के प्रारम्भ में भरे बिन्दु (●) और उसके समापन में रिक्त बिन्दु (०) का संकेत किया गया है।
(?)	कोष्ठकवर्ती प्रश्न-चिन्ह आदर्शों मे अप्राप्त किन्तु पूर्व पद्धति के अनुसार आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें, पृष्ठ १७४, सूत्र १४
( )	क—पूर्व पद्धति के अनुसार आदर्शों मे प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण मे अनावश्यक पाठ को कोष्ठक मे रखा गया है। देखें, पृष्ठ १७१, सूत्र ५।
( )	ख—संग्रह गाथाएँ भी कोष्ठक के अन्तर्गत रखी गई है। देखे, पृष्ठ १५, सूत्र २४
( )	ग—तेरहवे और चौदहवे अध्ययन मे भेद करने वाले शब्द कोष्ठक मे रखे गए है।
( )	कोष्ठकवर्ती संख्यांक पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक है। देखे, पृष्ठ १६६, सूत्र ५१
(जाव २।३६)	कोष्ठक में जाव के आगे जो सूत्रांक है, वे पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक है। देखे, पृष्ठ १८४, सूत्र ३७
(जाव)	एक ही सूत्र मे समान पाठ-पद्धति के सूचक जाव शब्दो में से एक की पूर्ति की गई है तथा पुनरागत जाव शब्द के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया गया हे। देखे, पृष्ठ १६७, सूत्र १४४।
' '	यह दो या उससे अधिक शब्दो के स्थान पर पाठान्तर होने का सूचक है। देखे, पृष्ठ १, सू० २८।
	गहरे अक्षर पद्य-भाग के सूचक है। देखे, पृष्ठ ७, सूत्र ३५
०	पाठ के संलग्न दिया गया एक बिन्दु अपूर्ण पाठ का द्योतक है।
×	क्रास पाठ नही होने का द्योतक है।
वृपा०	वृत्ति सम्मत पाठान्तर।
चूपा०	चूर्णि सम्मत पाठान्तर।
असण वा ४ असण वा (४)	असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा

आयारो

पढमं अज्झयणं

सत्थ-परिण्णा

पढमो उद्देसो

१–सुयं मे आउसं । तेणं भगवया एवमक्खायं[1]—

इहमेगेसिं नो सन्ना भवइ, तंजहा—

पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

'अहे वा दिसाओ'[2] आगओ अहमंसि,

'अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अणुदिसाओ वा'[3] आगओ अहमंसि ।

२–एवमेगेसिं णो णातं भवति[4]—

अत्थि मे आया उववाइए,[5]

णत्थि मे आया उववाइए,

के अहं आसी ?

के वा इओ चुओ[6] इह पेच्चा भविस्सामि ?

१—० मखाय (ख) ।

२—अहे दिसाओ वा (क, ख, ग, घ, च), अहो दिसाओ वा (छ) ।

३—अण्णयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ (क, ग, छ) ; अन्नयरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (घ) ; अन्नत्तराए दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (च) ।

४—भवति, त जहा (चू) ।

५—ओववातिते (क) ; उववादिए (च) ।

६—चते (घ) ।

३—सेज्जं पुण जाणेज्जा—

सह-सम्मइयाए,[1]

पर-वागरणेणं,

अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा, तंजहा—

पुरत्थिमाओ[2] वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

*दक्खिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अहे वा दिसाओ आगओ अहमंसि,*

अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि।

४—एवमेगेसिं जं णातं[3] भवइ—अत्थि मे आया उववाइए।
जो इमाओ 'दिसाओ अणुदिसाओ वा'[4] अणुसंचरइ,[5]
सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ 'जो आगओ अणुसंचरइ'[6]—सोहं।

५—से आयावाई, लोगावाई, कम्मावाई, किरियावाई।

६—अकरिस्सं च'ऽहं, कारवेसुं[7] च'ऽहं, करओ यावि समणुन्ने भविस्सामि।

१—सम्मुतियाए (चू), समदियाए (क), सहसमुइयाओ (घ); सहस्समुइए (च)।
२—पुरित्थि ° (ख, च)।
३—णाण (ख), णाय (घ)।
४—दिसाओ वा अणुदिसाओ (ख, छ), दिसाओ वा अणुदिसाओ य (चू, वृ)।
५—अणुसमरइ, अणुसमरति (चूपा); अणसमरइ (वृपा)।
—X (क, ख, ग, च)।
७—काराविस्स (क, ख, ग,), कारावेस्म (च); कारावेस्सं (घ)।

७–एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ।

८–अपरिण्णाय-कम्मे[1] खलु अयं पुरिसे,
जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ,
सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सहेति ।
अणेगरूवाओ जोणीओ संधेइ,[2]
विरूवरूवे फासे य[3] पडिसंवेदेइ[4] ।

९–तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१०–इमस्स चेव जीवियस्स—
परिवंदण-माणण-पूयणाए,
जाई-मरण-मोयणाए,[5]
दुक्ख-पडिघायहेउं ।

११–एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ।

१२–जस्सेते लोगंसि कम्म-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

बीओ उद्देसो

१३–अट्टे लोए परिजुण्णे, दुस्संबोहे अविजाणए ।

१—° कम्मा (क, घ) ।
२—संधावति (चू), संधेइ (चूपा), सधावइ (वृपा) ।
३—× (क, ख, ग, घ, च) ।
४—° संवेतेइ (क); ° संवेयइ (घ, च) ।
५—° मोयणाए (वृपा) ।

१४–अस्सिं लोए पव्वहिए[1],
तत्थ तत्थ पुढो पास[2],
आतुरा[3] परितावेंति ।

१५–संति पाणा पुढोसिया ।

१६–लज्जमाणा पुढो पास ।

१७–अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।

१८–जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहिं पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-सत्थं समारंभेमाणे[4] अण्णे व'णेगरूवे[5] पाणे विहिंसति ।

१९–तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

२०–इमस्स चेव जीवियस्स—
परिवंदण-माणण-पूयणाए,
जाई-मरण-मोयणाए,
दुक्ख-पडिघायहेउं ।

२१–से सयमेव पुढवि-सत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा पुढवि-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा पुढवि-सत्थं समारंभंते[6] समणुजाणइ ।

२२–तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

२३–से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

२४–सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा[7] अंतिए इहमेगेसिं णातं भवति–
एस खलु गंथे,

१—पच्चविए (च) ।
२—° पासे (क, घ) ।
३—आतुरा अंसि (वृ) ।
४—समारंभमाणा (ख, ग, छ) ।
५—अणेग ° (घ, च) ।
६—समारभमाणे (घ) ।
७—× (घ) ।

एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णरए[1] ।

२५—इच्चत्थं गढिए लोए ।

२६—जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्थेहिं'[2] पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-सत्थं संमारंभमाणे[3] अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसइ ।

२७—से बेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे[4], अप्पेगे अंधमच्छे[5] ।

२८—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे,
अप्पेगे 'गुप्फमब्भे अप्पेगे गुप्फमच्छे,
अप्पेगे जंघमब्भे, अप्पेगे जंघमच्छे,
अप्पेगे जाणुमब्भे'[6] अप्पेगे जाणुमच्छे,
अप्पेगे ऊरुमब्भे, अप्पेगे ऊरुमच्छे,
अप्पेगे कडिमब्भे, अप्पेगे कडिमच्छे,
अप्पेगे णाभिमब्भे, अप्पेगे णाभिमच्छे,
अप्पेगे उयरमब्भे, अप्पेगे उयरमच्छे,
अप्पेगे पासमब्भे, अप्पेगे पासमच्छे,
अप्पेगे पिट्ठमब्भे[7], अप्पेगे पिट्ठमच्छे,
अप्पेगे उरमब्भे, अप्पेगे उरमच्छे,

१—निरए (क, ख, घ, च) ।
२—° रूवेसु सत्थेसु (क, च, छ) ।
३—समारंभेमाणे (घ) ।
४—अत्त ° (च) ।
५— ° मच्चे (घ) ।
६—पुप्फमब्भे अप्पेगे एवं जंघापुप्फगमब्भे अप्पेगे जाणुमब्भे (च) ।
७—पुट्ठि ° (क) ; पिट्ठि ° (ख, ग, च) ; पट्ठि ° (घ) ।

अप्पेगे हिययमब्भे, अप्पेगे हिययमच्छे,
अप्पेगे थणमब्भे, अप्पेगे थणमच्छे,
अप्पेगे खंधमब्भे, अप्पेगे खंधमच्छे,
अप्पेगे बाहुमब्भे, अप्पेगे बाहुमच्छे,
अप्पेगे हत्थमब्भे, अप्पेगे हत्थमच्छे,
अप्पेगे अंगुलिमब्भे, अप्पेगे अंगुलिमच्छे,
अप्पेगे णहमब्भे, अप्पेगे णहमच्छे,
अप्पेगे गीवमब्भे, अप्पेगे गीवमच्छे,
अप्पेगे हणुयमब्भे[1], अप्पेगे हणुयमच्छे,
अप्पेगे होट्ठमब्भे[2], अप्पेगे होट्ठमच्छे,
अप्पेगे दंतमब्भे, अप्पेगे दंतमच्छे,
अप्पेगे जिब्भमब्भे, अप्पेगे जिब्भमच्छे,
अप्पेगे तालुमब्भे, अप्पेगे तालुमच्छे,
अप्पेगे गलमब्भे, अप्पेगे गलमच्छे,
अप्पेगे गंडमब्भे, अप्पेगे गंडमच्छे,
अप्पेगे कण्णमब्भे, अप्पेगे कण्णमच्छे,
अप्पेगे णासमब्भे[3], अप्पेगे णासमच्छे,
अप्पेगे अच्छिमब्भे, अप्पेगे अच्छिमच्छे,
अप्पेगे भमुहमब्भे, अप्पेगे भमुहमच्छे,
अप्पेगे णिडालमब्भे, अप्पेगे णिडालमच्छे,
अप्पेगे सीसमब्भे[4], अप्पेगे सीसमच्छे।

२९–अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए।

१—हणु° (क, घ, च, छ)।
२—उट्ठ° (घ)।
३—नक्क° (घ, च)।
४—सिर° (च)।

३०–एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाता भवंति ।

३१–एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाता भवंति ।

३२–तं परिण्णाय मेहावी—

नेव सयं पुढवि-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं पुढवि-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे पुढवि-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

३३–जस्सेते पुढवि-कम्म-समारंभा[1] परिण्णाता भवंति, से हु मुणी परिण्णात-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

तइओ उद्देसो

३४–से बेमि—

से[2] जहावि अणगारे उज्जुकडे, णियागपडिवण्णे[3], अमायं कुव्वमाणे वियाहिए ।

३५–जाए सद्धाए णिक्खन्तो ।

तमेवअणुपालिया[4] ।

'विजहित्तु विसोत्तियं'[5] ।

३६–पणया वीरा महावीहिं ।

१— °काय° (च) ।
२—× (क, छ) ।
३—निकाय° (चू, वृपा) ।
४—तामेव° (घ, च), °अणुपालेज्जा (वृ) ।
५—तिन्नोहूऽसि विसोत्तिय (चू) ; विजहित्ता पुव्व सजोग (वृपा) ;
विजहित्ता ° (ख, ग, घ, च) ।

३७—लोगं च आणाए अभिसमेच्चा[1] अकुतोभयं।

३८—से बेमि—

णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा।

जे लोयं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ।

जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोयं अब्भाइक्खइ।

३९—लज्जमाणा[2] पुढो पास।

४०—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा।

४१—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं उदय-कम्म-समारंभेणं उदय-सत्थं-समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे[3] पाणे विहिंसति।

४२—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता।

४३—इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिघायहेउं।

४४—से सयमेव उदय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा उदय-सत्थं समारंभावेति, अन्ने वा[4] उदय-सत्थं समारंभंते समणुजाणति।

४५—तं से अहियाए, तं से अबोहीए।

४६—से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए।

१—°समिच्चा (ख, घ)।

२—एस आढत्त पुढविक्काइय उद्देसयगमेण श्रुवगडिया सुत्तत्थतो भाणियव्वा, अप्पेरो अधमव्भे (च)।

३—अणेग° (ग, घ)।

४—× (ख, ग)।

४७–सोच्चा खलु[1] भगवओ अणगाराणं वा[2] अंतिए इहमेगेसिं
णायं भवति—
एस खलु गंथे,
एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णरए ।

४८–इच्चत्थं गढिए लोए ।

४९–जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्थेहिं'[3] उदय-कम्म-समारंभेणं उदय-
सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे[4] पाणे विहिंसति ।

५०–से बेमि–
अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

५१–अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

५२–अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।

५३–से बेमि—
संति पाणा उदय-निस्सिया जीवा अणेगा ।

५४–इहं[5] च खलु भो ! अणगाराणं उदय-जीवा वियाहिया ।

५५–सत्थं चेत्थ[6] अणुवीइ पास[7] ।

५६–'पुढो सत्थं'[8] पवेइयं ।

५७–अदुवा अदिन्नादाणं ।

१—× (घ, च) ।
२—× (क, ख, ग) ।
३— °रूवेसु सत्थेसु (च) ।
४—अणेग° (घ, च) ।
५—इह (छ) ।
६—चेत्थ (क, ख, छ) ।
७—पास (घ, च) ।
८—पुढोऽपास (वपा) ।

५८—कप्पइ णे,[1]

कप्पइ णे पाउं,

अदुवा विभूसाए ।

५९—पुढो सत्थेहिं विउट्टति ।

६०—एत्थऽवि तेसिं णो णिकरणाए ।

६१—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति।

६२—एत्थ सत्थं असमारभमाणस्स इच्चेते आरभा परिण्णाया भवंति।

६३—तं परिण्णाय मेहावी—

णेव सय उदय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहिं उदय-सत्थं समारंभावेज्जा, उदय-सत्थं समारंभंतेऽवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा ।

६४—जस्से ते उदय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णात-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

चउत्थो उद्देसो

६५—से[2] बेमि—

णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताण अब्भाइक्खेज्जा ।

जे लोगं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ,

जे अत्ताण अब्भाइक्खइ, से लोग अब्भाइक्खइ ।

६६—जे दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ने, से असत्थस्स खेयन्ने ।

जे असत्थस्स खेयन्ने, से दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ने ।

६७—वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं ।

संजतेहि, सया जतेहिं, सया अप्पमत्तेहिं ।

१—णो (घ) ।

२—सेय मिण (च) ।

६८–जे पमत्ते गुणट्ठिए,[1] से हु दंडे पवुच्चति ।

६९–तं परिण्णाय मेहावी—

इयाणि णो जमहं पुव्वमकासी पमाएणं ।

७०–लज्जमाणा पुढो पास[2] ।

७१–अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।

७२–जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहिं अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-सत्थं समारंभमाणे, अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

७३–तत्थ खलु[3] भगवया परिण्णा पवेइत्ता ।

७४–इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

७५–से सयमेव अगणि-सत्थ समारभइ, अण्णेहिं वा अगणि-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा अगणि-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ।

७६–तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

७७–से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

७८–सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेहि णायं भवति—

एस खलु गथे,

एस खलु मोहे,

एस खलु मारे,

एस खलु णरए ।

१—गुणट्ठी (क, वृ) , गुणट्ठीए (ख, ग) ।
२—धुवगडिय भणिऊण जाव से वेमि (चू) ।
३—× (च) ।

७९—इच्चत्थं गढिए लोए।

८०—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति।

८१—से बेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे।

८२—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे। (१।२८)

८३—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए।

८४—से बेमि—

संति पाणा पुढवि-णिस्सिया, तण-णिस्सिया, पत्त-णिस्सिया, कट्ठ-णिस्सिया, गोमय-णिस्सिया, कयवर-णिस्सिया :

संति संपातिमा पाणा, आहच्च संपयंति य[1]।
अगणिं च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति॥

८५—जे तत्थ संघायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति[2]।
जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति।

८६—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति।

८७—एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति।

८८—तं परिण्णाय मेहावी—

नेव सयं अगणि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवन्नेहिं अगणि-सत्थं समारंभावेज्जा अगणि-सत्थं समारंभमाणे अन्ने न समणुजाणेज्जा।

१—× (क, ख, ग, च)।
२—° विज्जंति (क, ख, छ)।

८९–जस्से ते अगणि-कम्म-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

पंचमो उद्देसो

९०–'तं णो'[1] करिस्सामि समुट्ठाए ।

९१–मंता[2] मइमं अभयं विदित्ता ।

९२–त जे णो करए, एसोवरए, एत्थोवरए, एस— अणगारे'त्ति पवुच्चइ ।

९३–जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे ।

९४–उड्ढं अहं[3] तिरियं पाईणं' पासमाणे रूवाइं पासति'[4], 'सुणमाणे सद्दाइं सुणेति'[5] ।

९५–उड्ढं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणे रूवेसु मुच्छति, सद्देसु आवि ।

९६–एस लोए वियाहिए ।

९७–एत्थ अगुत्ते अणाणाए ।

९८–पुणो-पुणो गुणासाए,
वंकसमायारे,
पमत्ते गारमावसे ।

१—ते णो (च) ।
२—मत्ता (क, घ, च) ।
३—अव (वृ) ; अहे य (ख) ।
४—पासियाइं दरिसेति (चू) ; पस्समाणो रूवाइं पासइ (चूपा) ।
५—सुणिमाणि सुणेति (चू), सुणमाणो सद्दाइं सुणेति । एवं गंधरसफासेहि वि भाणियव्व (चूपा) ।

६६—लज्जमाणा पुढो पास[1] ।

१००—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।

१०१—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे[2] पाणे विहिंसति ।

१०२—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ।

१०३—इमस्स चेव जीवियस्स—
परिवंदण-माणण-पूयणाए,
जाती-मरण-मोयणाए,
दुक्ख-पडिघायहेउं ।

१०४—से सयमेव वणस्सइ-सत्थं समारंभइ, अण्णेहि वा वणस्सइ-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ।

१०५—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

१०६—से तं संबुज्झमाणे,
आयाणीयं समुट्ठाए ।

१०७—सोच्चा भगवओ, अणगाराण वा अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति—
एस खलु गंथे,
एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णिरए ।

१—वुंव गडिया (चू) ।
२—अणेग° (ख, ग, च) ।

१०८—इच्चत्थं गढिए लोए।

१०९—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं वणस्सइ-सत्थं समारंभेमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति[1]।

११०—से बेमि—

अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अधमच्छे।

१११—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे। (१।२८)

११२—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए।

११३—से वेमि—

इमपि जाइ-धम्मय, एयंपि जाइ-धम्मय।
इमपि बुड्ढि-धम्मय, एयंपि बुड्ढि-धम्मयं।
इमंपि चित्तमतयं, एयंपि चित्तमतयं।
इमपि छिन्न मिलाति, एयंपि छिन्न मिलाति।
इमपि आहारग, एयपि आहारगं।
इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं।
इमंपि असासय, एयंपि असासयं।
इमपि चयावचइयं, एयंपि चयावचइयं,[2]।
इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं।

११४—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाता भवंति।

११५—एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति।

१—विहंसति (ख, ग)। अशुद्धः प्रतिभाति।
२—चओवचइय (चू, क, घ, च, छ), चयावचय (ख, ग)।

११६—तं परिण्णाय मेहावी—

णेव सयं वणस्सइ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइ-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे वणस्सइ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा।

११७—जस्सेते वणस्सइ-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे।

—त्ति बेमि।

छट्ठो उद्देसो

११८—से बेमि—संतिमे तसा पाणा, तंजहा—अंडया, पोयया, जराउया, रसया, संसेयया, संमुच्छिमा, उब्भिया, उववाइया।

११९—एस—संसारेत्ति[1] पवुच्चति।

१२०—मंदस्स अवियाणओ।

१२१—णिज्झाइत्ता पडिलेहित्ता पत्तेयं परिणिव्वाणं।

१२२—सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, अस्सायं[2] अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं—त्ति बेमि।

१२३—तसंति पाणा पदिसोदिसासु य।

१२४—तत्थ तत्थ पुढो पास, आउरा परितावेंति[3]।

१—ससारित्ती (क, ख)।

२—असायं (क्वचित्)।

३—अट्टा 'ते जाव परितावेति' वुवगडिया (चू)।

१२५–संति पाणा पुढोसिया ।

१२६–लज्जमाणा पुढो पास ।

१२७–अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।

१२८–जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

१२९–तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१३०–इमस्स चेव जीवियस्स–
परिवंदण-माणण-पूयणाए,
जाई-मरण-मोयणाए,
दुक्खपडिघायहेउं ।

१३१–से सयमेव तसकाय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा तसकाय-सत्थं समारभावेइ, अण्णे वा[1] तसकाय-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ।

१३२–तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

१३३–से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१३४–सोच्चा भगवओ, अणगाराणं 'वा अंतिए'[2] इहमेगेसिं णायं भवइ—
एस खलु गंथे,
एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णरए ।

१३५–इच्चत्थं गढिए लोए ।

१—वि (घ) ।
२—× (क) । सर्वत्र नास्ति ।

१३६—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

१३७—से बेमि—

अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

१३८—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

१३९—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।

१४०—से बेमि—

अप्पेगे अच्चाए वहंति, अप्पेगे अजिणाए वहंति,[1]
अप्पेगे मंसाए वहंति, अप्पेगे सोणियाए वहंति,
° अप्पेगे हिययाए[2] वहंति, अप्पेगे पित्ताए वहंति,
अप्पेगे वसाए वहंति, अप्पेगे पिच्छाए वहंति,
अप्पेगे पुच्छाए वहंति, अप्पेगे बालाए वहंति,
अप्पेगे सिंगाए वहंति, अप्पेगे विसाणाए वहंति,
अप्पेगे दंताए वहंति, अप्पेगे दाढाए वहंति,
अप्पेगे नहाए वहंति, अप्पेगे ण्हारुणीए वहंति,
अप्पेगे अट्ठीए वहंति, अप्पेगे अट्ठिमिंजाए वहंति,
अप्पेगे अट्ठाए वहंति, अप्पेगे अणट्ठाए ° वहंति,
अप्पेगे 'हिंसिसु मेत्ति वा'[3] वहंति,
अप्पेगे हिंसंति मेत्ति वा वहंति,
अप्पेगे हिंसिस्संति मेत्ति वा वहंति ।

१४१—एत्थ सत्थं समारभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।

१—हणति (च), वधति (क), हिंसति (घ)।
२—हितयाए (क, च)।
३—हिंसिसु इति वा (ख, ग)।

१४२–एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।

१४३–तं परिण्णाय मेहावी—

णेवसयं तसकाय-सत्थं समारंभेज्जा; णेवण्णेहिं तसकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे तसकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१४४–जस्से ते तसकाय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

सत्तमो उद्देसो

१४५–'पहू एजस्स'[1] दुगंछणाए ।

१४६–आयंक-दंसी 'अहियं'ति नच्चा ।

१४७–जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ ।

जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थं जाणइ ।

१४८–एयं तुलमन्नेसिं ।

१४९–इह[2] संति-गया दविया, णावकंखन्ति जीविउं[3] ।

१५०–लज्जमाणा[4] पुढो पास ।

१५१–अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।

१५२–जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

१—पहू य एगस्स (वृ), पभू एयस्स (क) ।

२—इति (चूपा) ।

३—जीविय (क, छ) ।

४—अट्टा परिजुण्णा आकंपिता जाव आतुरा परिताविता वुव गढिया (चू) ।

१५३–तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१५४–इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

१५५–से सयमेव वाउ-सत्थं समारंभति, अन्नेहिं वा वाउ-सत्थं समारंभावेति, अन्ने वा वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणइ ।

१५६–तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

१५७–से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१५८–सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसि णायं भवइ—

एस खलु गंथे,

एस खलु मोहे,

एस खलु मारे,

एस खलु णिरए ।

१५९–इच्चत्थं गढिए लोए ।

१६०–जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहि वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

१६१–से बेमि–

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

१६२–अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

१६३–अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।

१६४–से बेमि—

संति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयंति य ।

फरिसं च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति ।

१६५–जे तत्थ संघायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति,
जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति ।

१६६–एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।

१६७–एत्थ सत्थ असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।

१६८–तं परिण्णाय मेहावी—

णेव सयं वाउ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वाउ-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवन्ने वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१६९–जस्से ते वाउ-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

१७०–एत्थं पि जाणे उवादीयमाणा ।

१७१–जे आयारे न रमंति ।

१७२–आरंभमाणा विणयं वयंति ।

१७३–छंदोवणीया अज्झोववण्णा ।

१७४–'आरंभसत्ता पकरेंति संगं'[1] ।

१७५–से वसुमं सव्व-समन्नागय-पन्नाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावं कम्मं ।

१७६–तं[2] णो अन्नेसि ।

१—'आरंभसत्ता पकरेंति संगं', अस्य पाठस्यानन्तरं चूर्ण्यां निम्न- पाठ उपलभ्यते—'एत्थ वि जाण अणुवाइयमाणा, जे आयरे रमंति, अणारंभमाणा विणयं वदंति, पसत्थ छंदोवणीता, तत्थेव अज्झोववण्णा आरंभे असत्ता णो पगरेंति संगं' ।

२—× (ख, ग, छ) ।

१७७–तं परिण्णाय मेहावी—

णेव सयं छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहिं छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवन्ने छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१७८–जस्से ते छज्जीव-णिकाय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

--त्ति बेमि ।

*

बीअं अज्झयण

लोगविजओ

पढमो उद्देसो

१–जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे ।

२–इति से गुणट्ठी महता परियावेणं 'पुणो पुणो'[1] वसे पमत्ते[2]—
माया मे, पिया मे, भाया में, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूया मे, 'सुण्हा मे'[3], सहि-सयण-संगथ-संथुया मे, [4]विवि(चि?)त्तोवगरण-परियट्टण-भोयण-अच्छायणं[5] मे, इच्चत्थं[6] गढिए लोए—वसे पमत्ते ।

३–अहो य[7] राओ य परितप्पमाणे, कालाकाल-समुट्ठाई,
संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुंपे सहसक्कारे[8],
विणिविट्ठचित्ते[9],
एत्थ सत्थे[10] पुणो पुणो ।

१—× (क, ख, ग, घ, च)।
२—पमत्ते, त-जहा (क,ख,ग,घ,च) ।
३—सुण्हा मे, सहाया मे (घ) ।
४—विचित्तो° (ख,च) ।
५—च्छायण (क) , अच्छादयण (चू) ।
६—इच्चत्थ से (क) , इच्चत्थ इत्थ से (ग) , इच्चत्थ एत्थ से (च) ।
७—× (क,ख,ग,घ) ।
८—सहसाकारे (क,ख,ग,छ) , सहस्सकारे (च) ।
९—° चिट्ठे (चू, वृ, च) ।
१०—सत्ते (चू, वृपा) ।

४–अप्पं च खलु आउं इहमेगेसिं[1] माणवाणं, तंजहा–
सोय-परिण्णाणेहिं[2] परिहायमाणेहिं,
चक्खु-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं,
घाण-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं,
रस-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं,
फास-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं ।

५–अभिक्कंत[3] च खलु वयं स पेहाए[4] ।

६–तओ से एगया मूढ-भावं जणयंति[5] ।

७–जेहिं वा सद्धिं संवसति[6] 'ते वा ण'[7] एगया णियगा तं पुव्विं परिवयंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ।

८–नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।
तुमं पि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

९–से ण हस्साए[8], ण किड्डाए, ण रतीए, ण विभूसाए ।

१०–इच्चेवं समुट्ठिए 'अहोविहाराए' ।

११–अंतरं च खलु इमं सपेहाए[9]–"धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए" ।

१२–वयो[10] अच्चेइ जोव्वणं व ।

१३–जीविए इह जे पमत्ता ।

१–इधम्मेकेसिं चि (च) ।
२–° पण्णाणेण (चू, क) ।
३–अहिक्कत (क), अहिकत (घ), अतिकतं (च) ।
४–'संपेहाए' (ख, ग, च) अशुद्धमिदम् ।
५–जणयति (वृ), जणयति (वृपा) ।
६–सवसति (घ, छ) ।
७–ते वण (क, छ); ते विण (घ); त एव ण (वृ) ।
८–हासाए (क, ख, ग, छ) ।
९–सपेहाए (ग, घ, छ) ।
१०–वओ (क, ख, ग) ।

१४–से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपित्ता, उद्दवित्ता, उत्तासइत्ता।

१५–अकडं 'करिस्सामि'त्ति मण्णमाणे।

१६–जेहिं वा सद्धिं संवसति 'ते वाण'[1] एगया णियगा त पुव्विं पोसेंति,
सो वा ते नियगे पच्छा पोसेज्जा।

१७–नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा।
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा।

१८–उवाइय[2]-सेसेण[3] वा सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ,[4] इहमेगेसिं असंजयाणं[5] भोयणाए।

१९–तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति।

२०–जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा ण एगया णियगा तं[6] पुव्विं परिहरंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिहरेज्जा।

२१–नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा।
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा।

२२–जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं[7] सायं।

२३–अणभिक्कंतं[8] च खलु वयं 'स पेहाए'[9]।

२४–खणं जाणाहि पंडिए!

१—त एव वा ण (वृ), ते व ण (ख)।
२—उवादीत° (क, च)।
३—सेस तेण (क, ख, घ, च, छ)।
४—किज्जइ (ख, ग, छ)।
५—माणवाण (च)।
६—× (क, ख, ग, घ)।
७—पत्तेय (क, ख, ग, घ, च)।
८—अणतिक्कतं (क)।
९—सपेहाए (छ)। १३२ सूत्र वृत्तौ 'स प्रेक्ष्य' अत्र च 'सप्रेक्ष्य' कथमिदम् ?

२५–जाव सोय-'पण्णाणा अपरिहीणा',[1]
जाव णेत्त-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव घाण-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव जीह-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव फास-पण्णाणा अपरिहीणा।

२६–इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं पन्नाणेहि अपरिहीणेहि[2] आयट्ठं सम्मं समणुवासिज्जासि।

—त्ति बेमि।

बीओ उद्देसो

२७–अरइं आउट्टे से मेहावी।

२८–खणंसि मुक्के।

२९–अणाणाए 'पुट्ठा वि'[3] एगे[4] णियट्टंति।

३०–मंदा मोहेण पाउडा।

३१–"अपरिग्गहा भविस्सामो" समुट्ठाए,
लद्धे कामे ऽहिगाहंति[5]।

३२–अणाणाए मुणिणो पडिलेहंति।

३३–एत्थ मोहे पुणो पुणो सन्ना।

३४–णो हव्वाए णो पाराए।

१—परिण्णाणेहिं अपरिहायमाणेहिं (क, ख, ग, घ, छ) सर्वत्र।
२—अपरिहीयमाणेहिं (क, ख, ग, घ, छ, वृ)।
३—पुट्ठा (चू)।
४—× (चू)।
५—अभिगाहति (क); अभिग्गहति (ख, छ), अभिगाहति (ग)।

३५—विमुक्का[1] हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो।

३६—लोभं अलोभेण दुगंछमाणे, लद्धे कामे नाभिगाहइ[2]।

३७—विणावि[3] लोभं निक्खम्म,
'एस अकम्मे'[4] जाणति पासति।

३८—पडिलेहाए णावकंखति।

३९—एस—अणगारे'त्ति पवुच्चति।

४०—अहो य[5] राओ य परितप्पमाणे, कालाकालसमुट्ठाई,
संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुंपे सहसक्कारे,[6]
विणिविट्ठचित्ते,
एत्थ सत्थे पुणो पुणो।

४१—से आय-बले, 'से णाइ-बले'[7], से मित्त-बले, से पेच्च-बले,
से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अतिहि-बले,
से किवण-बले,[8] से समण-बले।

४२—इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहिं 'दंड-समायाणं'[9]।

४३—सपेहाए भया कज्जति,[10]।

४४—'पाव-मोक्खो' त्ति मण्णमाणे।

४५—अदु वा आसंसाए।

१—विमुत्ता (क, ख, ग, घ, छ)।
२—णोभिगाहइ (क, च)।
३—विणइत्तु (क, घ, च, वृपा)।
४—एसऽकम्मे (घ, छ)।
५—X (क, ख)।
६—सहसाकारे (क, ख, ग)।
७—से णाइ-बले, से सयण-बले (क, ख, ग, घ, च)।
८—किविण-० (क, ख, ग)।
९—दड समारभति (चू)।
१०—दंड-समायाण कज्जइ (चूपा)।

४६—तं परिण्णाय मेहावी—

णेव सयं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभेज्जा, णेव'ण्णं[1] एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभावेज्जा, 'णेव'ण्णं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभंतं समणुजाणेज्जा'[2] ।

४७—एस मग्गे—आरिएहिं[3] पवेइए ।

४८—जहेत्थ कुसले णोवलिंपिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

तइओ उद्देसो

४९—'से असइं उच्चा-गोए, असइं णीया-गोए ।
णो हीणे, णो अइरित्ते'[4],
णो पीहए[5] ।

५०—इति[6] संखाय के गोया-वादी ? के माणा-वादी ?
कंसि वा एगे गिज्झे ?

५१—तम्हा पंडिए णो हरिसे, णो कुज्झे ।

५२—भूएहिं[7] जाण पडिलेह सातं ।

१—णेव अन्नेहिं (छ) ।
२—एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभते वि अण्णे ण समणुजाणिज्जा (क, ख, ग, घ, च) ।
३—आयरिएहिं (क, ख, घ) ।
४—नागार्जुनीया :—एगमेगे खलु जीवे अईअद्धाए असइं उच्चा-गोए असइं णीया-गोए कंडगट्ठयाए णो हीणे नो अइरित्ते (चू, वृ) ।
५—पीहेइ (ख, ग) ।
६—एय (चू) ।
७—नागार्जुनीया :—पुरिसेणं खलु दुक्खविवागगवेसएणं । पुव्विं ताव जीवाभिगमे कायव्वे, जाइं च इच्छिताणिच्छे- तं साता-सातं वियाणिया हिंसोवरती कायव्वा (चू) ।
नागार्जुनीया :—पुरिसेणं खलु दुक्खुव्वेये सुहेसए (वृ) ।

५३—समिते एयाणुपस्सी ।

५४—तंजहा—अंधत्तं, बहिरत्तं, मूयत्तं, काणत्तं, कुंटत्तं, खुज्जत्तं, वडभत्तं, सामत्तं, सबलत्तं ।

५५—सहपमाएणं अणेग-रूवाओ जोणीओ संधाति[1], विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ[2] ।

५६—से अबुज्झमाणे 'हतोवहते जाइ-मरणं अणुपरियट्टमाणे'[3] ।

५७—जीवियं पुढो पियं इहमेगेसिं माणवाणं, खेत्त-वत्थु ममायमाणाणं ।

५८—आरत्तं विरत्तं मणिकुंडलं सह हिरण्णेण इत्थियाओ, परिगिज्झ तत्थेव रत्ता ।

५९—ण एत्थ तवो वा, दमो वा, णियमो वा दिस्सति ।

६०—संपुण्णं बाले जीविउ-कामे, लालप्पमाणे मूढे विप्परियासु'वेइ[4] ।

६१—इणमेव णावकंखंति, जे जणा धुव-चारिणो ।
जाती-मरणं परिन्नाय, चरे संकमणे दढे ॥

६२—णत्थि कालस्स णागमो ।

६३—सव्वे पाणा पियाउया[5], सुह-साया दुक्ख-पडिकूला, अप्पिय-वहा, पिय-जीविणो जीविउ-कामा ।

६४—सव्वेसिं जीवियं पियं ।

६५—तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं अभिजुंजियाणं, संसिंचियाणं, तिविहेणं जा वि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ।

१—संधाएति (ख, ग, च) ।
२—परि० (घ, वृ) ।
३—हतोवहते विणिविट्ठचित्ते एत्थ सत्ते पुणो-पुणो (चू) ।
४—विप्परियासमुवेइ (ख, ग, घ, छ) ।
५—पियायया (वृपा) ।

६६—से तत्थ गढिए चिट्ठइ भोयणाए।

६७—तओ से एगया विपरिसिट्ठं[1] संभूयं महोवगरणं भवइ।

६८—तं पि से एगया दायाया विभयंति,
अदत्तहारो[2] वा से अवहरति,[3]
रायाणो वा से विलुंपंति,
णस्सति वा से, विणस्सति वा से,
अगार-दाहेण वा से डज्झइ।

६९—इति से परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे,
तेण दुक्खेण मूढे[4] विप्परियासु'वेइ[5]।

७०—मुणिणा हु एयं पवेइयं।

७१—अणोहंतरा एते, नो य ओहं तरित्तए।
अतीरंगमा एते, नो य तीरं गमित्तए।
अपारंगमा एते, नो य पारं गमित्तए॥

७२—आयाणिज्जं च आयाय, तम्मि ठाणे ण चिट्ठइ।
वितहं पप्प'ऽखेयन्ने, तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ॥

७३—उद्देसो पासगस्स णत्थि।

७४—बाले पुण णिहे काम-समणुन्ने असमिय-दुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ।

—त्ति बेमि।

१—विविह परिसिट्ठं (क, ख, ग, घ, च)।
२—अदत्ताहारा (ख, ग)।
३—अवहर ति (ख, ग)।
४—समूढे (क, घ)।
५—विप्परियासमुवेति (ख, ग, घ, च, छ)।

चउत्थो उद्देसो

७५–तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।

७६–जेहिं वा सद्धिं सवसति ते वा णं एगया णियया पुव्विं परिवयंति,
सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ।

७७–नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

७८–जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं ।

७९–भोगामेव अणुसोयंति ।

८०–इहमेगेसिं माणवाणं ।

८१–तिविहेण जावि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ।

८२–से तत्थ गढिए चिट्ठति, भोयणाए ।

८३–ततो से एगया विपरिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवति ।

८४–तं पि से एगया दायाया विभयंति,
अदत्तहारो वा से अवहरति,[1]
रायाणो वा से विलुंपंति,
णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से,
अगार-डाहेण वा डज्झइ ।

८५–इति से बाले परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं पकुव्वमाणे,
तेण दुक्खेण मूढे[2] विप्परियासुवेइ ।

१—हरति (क, छ) ।
२—समूढे (क, घ, च) ।

८६–आसं च छंदं च विगिंच[1] धीरे।

८७–तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु।

८८–जेण सिया तेण णो सिया।

८९–इणमेव णावबुज्झंति, जे जणा मोह-पाउडा।

९०–थीभि लोए पव्वहिए।

९१–ते भो वयंति "एयाइं आयतणाइं"।

९२–से दुक्खाए, मोहाए, माराए, णरगाए, णरग-तिरिक्खाए[2]।

९३–सततं मूढे धम्मं णाभिजाणइ[3]।

९४–उदाहु वीरे—अप्पमादो महा-मोहे।

९५–अलं कुसलस्स पमाएणं।

९६–संति मरणं संपेहाए,[4] भेउर-धम्मं संपेहाए।

९७–"णालं पास"।

९८–अलं ते एएहिं।

९९–एयं पास मुणी! महब्भयं।

१००–णाइवाएज्ज कंचणं।

१०१–एस वीरे पसंसिए[5]—

जे ण णिविज्जति आदाणाए।

१०२–"ण मे देति" ण कुप्पिज्जा, थोवं लद्धुं न खिंसए।

पडिसेहिओ[6] परिणमिज्जा।

१०३–एयं मोणं समणुवासेज्जासि। —त्ति बेमि।

१—विविच्च (क)।

२—°तिरियाए (घ)।

३—ण जानाति (वृ)।

४—सपेहाए (क, च)।

५—नमसिते (चू)।

६—पडिलाभिओ (वपा); पडिलाभितो परिणमे, ण वो वास चेव कुज्जा (चूपा)।

पंचमो उद्देसो

१०४–जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहिं[1] लोगस्स कम्म-समारंभा कज्जंति, तंजहा—अप्पणो से पुत्ताणं, धूयाणं, सुण्हाणं, णातीणं, धातीणं, राईणं, दासाणं, दासीणं, कम्म-कराणं, कम्म-करीणं,
आएसाए, पुढो पहेणाए, सामासाए, पायरासाए ।

१०५–सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ, इहमेगेसिं माणवाणं भोयणाए ।

१०६–समुट्ठिए अणगारे आरिए आरिय-पण्णे आरिय-दंसी 'अयं संधी'ति अदक्खु'[2] ।

१०७–से णाइए, णाइआवए, ण समणुजाणइ ।

१०८–सव्वामगंधं[3] परिण्णाय, णिरामगन्धो परिव्वए ।

१०९–अदिस्समाणे कय-विक्कएसु ।
से ण किणे ण किणावए,
किणंतं ण समणुजाणइ ।

११०–से भिक्खू कालण्णे, बलण्णे[4], मायण्णे, खेयन्ने, खणयन्ने[5], विणयन्ने, समयन्ने[6], भावण्णे, परिग्गह अममायमाणे, काले'णुट्ठाई, अपडिन्ने ।

१११–दुहओ छेत्ता नियाइ ।

११२–वत्थं पडिग्गहं, कंबलं पाय-पुंछणं, उग्गहं च कडासणं, एतेसु चेव जाणेज्जा ।

१—सत्थेहिं विरूवरूवाणं अट्ठाए (चूपा) ।
२—अय सधिमदक्खु (वृपा) ; अद्दक्खु (क, ख, ग) ।
३—°गधे (घ, च) ।
४—बालण्णे (क, घ, च, वृ) ।
५—खणण्णो (चू) ।
६—समयण्णे परसमयण्णे (घ, च), स समयण्णे परसमयण्णे (छ) ।

११३–लद्धे आहारे अणगारे मायं जाणेज्जा,
से जेह'यं भगवया पवेइयं।

११४–'लाभो'त्ति न मज्जेज्जा।

११५–'आलाभो'त्ति ण सोयए[1]।

११६–बहुं पि लद्धुं ण णिहे।

११७–परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा।

११८–'अण्णहा णं पासए परिहरेज्जा'[2]।

११९–एस मग्गे-आरिएहिं पवेइए।

१२०–जहे'त्थ कुसले णोवलिंपिज्जासि—त्ति बेमि।

१२१–कामा दुरतिक्कमा।

१२२–जीवियं दुप्पडिवूहणं[3]।

१२३–काम-कामी खलु अयं पुरिसे।

१२४–से सोयति, जूरति, तिप्पति[4], पिड्डति[5], परितप्पति।

१२५–आयतचक्खू लोग-विपस्सी—
लोगस्स अहो-भागं जाणइ, उड्ढं भागं जाणइ, तिरियं भागं जाणइ।

१२६–गढिए[6] अणुपरियट्टमाणे।

१२७–संधिं विदित्ता इह मच्चिएहिं।

१२८–एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए।

१२९–जहा अन्तो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अन्तो।

१—सोएज्जा (ख, ग, च, छ)।
२—अण्णतरेण पासाएण परिहरिज्जा (चूपा)।
३—°वूहगं (छ चू)।
४—तप्पति (चू)।
५—पिट्टइ (क, ख, ग); × (च, चू)।
६—गढिए लोए (ख, ग, घ)।

१३०–अन्तो अन्तो पूति-देहं तराणि, पासति पुढोवि सवंताइं ।

१३१–पंडिए पडिलेहाए ।

१३२–से मइमं परिण्णाय, मा य हु लालं पच्चासी ।

१३३–मा तेसु तिरिच्छमप्पाणमावातए ।

१३४–'कासं कसे'[1] खलु अयं पुरिसे, बहु-माई,
कडेण मूढे पुणो तं करेइ-लोभं ।

१३५–वेरं वड्ढेति अप्पणो ।

१३६–जमिणं परिकहिज्जइ, इमस्स चेव पडिवूहणयाए[2] ।

१३७–अमरायइ[3] महा-सड्ढी ।

१३८–'अट्टमेतं पेहाए'[4] ।

१३९–अपरिन्नाए कंदति ।

१४०–"से तं जाणह जमहं बेमि"[5] ।

१४१–'तेइच्छं पंडिते'[6] पवयमाणे ।

१४२–से[7] हंता, 'छेत्ता, भेत्ता'[8], 'लुंपइत्ता, विलुंपइत्ता'[9], उद्दवइत्ता ।

१४३–'अकडं करिस्सामि'त्ति मण्णमाणे ।

१४४–जस्स वि य णं करेइ ।

१४५–अलं बालस्स संगेणं ।

१४६–जे वा से कारेइ बाले ।

१४७–'ण एवं'[10] अणगारस्स जायति । —त्ति बेमि ।

१—काम कामे (चू) ; कास कसे य (घ) ।
२—पडिवूहणट्ठाए (वृ, छ) ।
३—अमराइ (घ, च) ।
४— उपेहाए (चू) , अट्टमेत्त (क, घ, च, छ) ।
५—से एव मायाणह ज बेमि (चू) , से एव मायाणह जमह बेमि (क, ख, ग) ।
६—तेइच्छ पडितो (चू) ।
७—× (चू) ।
८—भेत्ता, छेत्ता (ख, ग, घ, च, छ) ।
९—लुपित्ता, विलपित्ता (ख, ग, च, छ) ।
१०—ण हु एव (चू) ।

छट्ठो उद्देसो

१४८—से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१४९—तम्हा पावं कम्मं, णेव कुज्जा न कारवे ।

१५०—सिया तत्थ[1] एगयरं विप्परामुसइ[2], छसु अण्णयरंसि कप्पति ।

१५१—सुहट्ठी लालप्पमाणे सएण दुक्खेण मूढेविप्परियासमुवेति ।

१५२—सएण विप्पमाएण, पुढो वयं पकुव्वति ।

१५३—जंसि'मे पाणा पव्वहिया । पडिलेहाए—णो णिकरणाए[3] ।

१५४—एस परिण्णा पवुच्चइ ।

१५५—कम्मोवसंती ।

१५६—जे ममाइय-मतिं जहाति, से जहाति[4] ममाइयं ।

१५७—से हु दिट्ठ-पहे[5] मुणी, जस्स णत्थि ममाइयं ।

१५८—तं परिण्णाय मेहावी ।

१५९—विदित्ता लोगं, वंता लोग-सण्णं, 'से मतिमं'[6] परक्कमेजासि[7]

—त्ति बेमि ।

१६०—णारतिं[8] सहते वीरे, वीरे णो सहते रतिं ।

जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे ण रज्जति ॥

१६१—सद्दे य[9] फासे अहियासमाणे ।

१६२—णिव्विंद णंदिं इह जीवियस्स ।

१—से (च) ।

२—विपरामुसति (क) ।

३—णिकरणयाए (ख, ग) ।

४—चयइ (क, ख, ग, च) ।

५—दिट्ठ-भये (घ, च, चपा, वृपा) ।

६—स मइमं (ख), स इति मुनि (वृ) ।

७—परक्कमेज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८—णो रइ (क, च) ।

९—× (ख, ग, च, छ) ।

१६३–मुणी मोणं समादाय, धुणे[1] कम्म-सरीरगं ।

१६४–पंतं लूहं सेवंति, वीरा सम्मत्त-दंसिणो ।

१६५–एस ओघंतरे मुणी, तिन्ने मुत्ते विरते,
वियाहिते—त्ति बेमि ।

१६६–दुव्वसु मुणी अणाणाए ।

१६७–तुच्छए गिलाइ वत्तए ।

१६८–एस वीरे पसंसिए ।

१६९–अच्चेइ लोय-संजोयं ।

१७०–एस णाए पवुच्चइ[2] ।

१७१–जं दुक्खं पवेदितं इह माणवाण,
तस्स दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति[3] ।

१७२–इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ।

१७३–जे अणण्ण-दंसी, से अणण्णारामे,
जे अणण्णारामे, से अणण्ण-दंसी ।

१७४–जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ ।
जहा तुच्छस्स कत्थइ, तहा पुण्णस्स कत्थइ ॥

१७५–अवि य हणे अणादियमाणे[4] ।

१७६–एत्थंपि जाण, सेयंति णत्थि ।

१७७–के यं पुरिसे कं च णए ?

१७८–एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए ।

१७९–उड्ढं अहं तिरियं दिसासु, से सव्वतो सव्व-परिण्ण-चारी ।

१—धूण (चू) ।
२—स वुच्चइ (च) ।
३—पतिण्ण° (छ) ।
४—× (चू) ।

१८०—ण लिप्पई छण-पएण वीरे ।

१८१—से मेहावी, अणुग्घायणस्स खेयन्ने,
जे य—बंधप्पमोक्खमन्नेसी ।

१८२—कुसले पुण णो बद्धे, णो मुक्के ।

१८३—से जं च आरभे जं च णारभे ।
अणारद्धं च णारभे ।

१८४—छणं-छणं परिण्णाय, लोग-सन्नं च सव्वसो ।

१८५—उद्देसो पासगस्स णत्थि ।

१८६—बाले पुण णिहे काम-समणुन्ने असमिय-दुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ ।

—त्ति बेमि ।

तइय अज्झयण

सीओसणिज्जं

पढमो उद्देसो

१–सुत्ता अमुणी सया[1], मुणिणो सया[2] जागरंति ।

२–लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं ।

३–समयं लोगस्स जाणित्ता, एत्थ सत्थोवरए ।

४–जस्सि'मे सद्दा य रूवा य गंधा य रसा य फासा य अभिसमन्नागया भवंति, से 'आयवं नाणवं वेयवं धम्मवं बंभवं'[3] ।

५–पन्नाणेहिं परियाणइ लोयं, 'मुणी'ति वच्चे'[4], धम्मविउ'त्ति अजू[5] ।

६–आवट्ट-सोए संगमभिजाणति ।

७–सीउसिणच्चाइ से निग्गंथे अरइ-रइ-सहे फरुसियं[6] णो वेदेति।

८–जागर-वेरोवरए वीरे[7] ।

९–एवं दुक्खा पमोक्खसि[8] ।

१०–जरा-मच्चु-वसोवणीए णरे, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणति ।

१–× (चू, च) ।

२–सततमनवरतम् (वृ) ।

३–आतवि, वेदवि, धम्मवि, वभवि (चू) , आतव ..(चपा) : आयवी, णाणवी, वेदवी, धम्मवी, बमवी (वृपा) ।

४–मुणी वच्चे (वृ, छ) ।

५–उजू (क, च, छ) ।

६–फरुसय (चू) ।

७–धीरे (छ) ।

८–पमुच्चसि (क ख ग घ, छ) ।

११—पासिय आउरे[1] पाणे, अप्पमत्तो परिव्वए।

१२—मंता एयं मइमं ! पास।

१३—आरंभजं दुक्खमिणं ति णच्चा।

१४—माई पमाई[2] पुणरेइ गब्भं।

१५—उवेहमाणो सद्द-रूवेसु अंजू, माराभिसंकी[3] मरणा पमुच्चति।

१६—अप्पमत्तो कामेहिं, उवरतो पाव-कम्मेहि, वीरे आय-गुत्ते जे खेयन्ने।

१७—जे पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ने, से असत्थस्स खेयन्ने, जे असत्थस्स खेयन्ने, से पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ने।

१८—अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ।

१९—कम्मुणा[4] उवाही[5] जायइ।

२०—कम्मं च पडिलेहाए।

२१—'कम्म-मूलं च'[6] जं छणं।

२२—पडिलेहिय सव्वं समायाय।

२३—दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणे।

२४—तं परिण्णाय मेहावी।

२५—विदित्ता लोगं, वंता लोगसन्नं, से मइमं[7] परक्कमेज्जासि।

—त्ति बेमि।

१—आतुरे मो (चू)।
२—पमाया (च)।
३—माराबसङ्की (चूपा)।
४—कम्मणा (क, ख, ग)।
५—उवही (चू)।
६—कम्ममाहूय (चूपा, वृपा)।
७—मेहावी (ख, ग, च)।

बीओ उद्देसो

२६—जातिं च वुड्ढिं च इहज्ज पासे।

२७—भूतेहिं जाणे पडिलेह सातं।

२८—तम्हाऽति विज्जो परमंति णच्चा,
सम्मत्त-दंसी ण करेति पावं।

२९—उम्मुंच पासं इह मच्चिएहिं।

३०—आरंभ-जीवी उभयाणुपस्सी।

३१—कामेसु गिद्धा णिचयं करेंति,
संसिच्चमाणा पुणरेंति गब्भं।

३२—अवि से हासमासज्ज, हंता णंदीति मन्नति।
अलं बालस्स संगेणं, वेरं वड्ढति[1] अप्पणो॥

३३—तम्हाऽति विज्जो परमंति णच्चा,
आयंक-दंसी ण करेति पावं।

३४—'अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे'[2]।

३५—पलिच्छिन्दियाणं णिकम्म-दंसी।

३६—एस मरणा पमुच्चइ।

३७—से हु दिट्ठ-भए[3] मुणी।

३८—लोयंसी परम-दंसी विवित्त-जीवी उवसंते,
समिते[4] सहिते सयाजए कालकंखी परिव्वए।

३९—बहुं च खलु पाव-कम्म पगडं।

४०—सच्चंसि धितिं कुव्वह।

१–वड्ढेति (छ)।

२– वीरे ×(क, ग, च, चू), मूल च अग्ग च विइत्तु वीरो (चूपा)। नागार्जुनीया.—
मूल च अग्गा च विएत्तु वीरे, कम्मासव चेड विमोक्खण च (चू)।

३–दिट्ठ-पहे, अहवा दिट्ठ-भए (चू)।

४–समिते अप्पमाई(ती) (घ, छ)।

६०–णातीतमट्ठं[1] ण य आगमिस्सं, अट्ठं नियच्छंति तहागया उ ।
विधूत-कप्पे एयाणुपस्सी, णिज्झोसइत्ता 'खवगे महेसी'[2] ॥

६१–का अरई ? के आणंदे ? एत्थंपि अग्गहे चरे ।
सव्वं हासं परिच्चज्ज, आलीण-गुत्तो परिव्वए ॥

६२–पुरिसा ! "तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि ?"

६३–जं जाणेज्जा उच्चालइयं, तं जाणेज्जा दूरालइयं ।
जं जाणेज्जा दूरालइयं, तं जाणेज्जा उच्चालइयं ॥

६४–पुरिसा ! "अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ, एवं दुक्खा पमोक्खसि" ।

६५–पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि[3] ।

६६–सच्चस्स आणाए 'उवट्ठिए से'[4] मेहावी मारं तरति ।

६७–सहिए धम्ममादाय, सेयं समणुपस्सति ।

६८–दुहओ जीवियस्स परिवंदण-माणण-पूयणाए, जंसि एगे पमादेति ।

६९–'सहिए दुक्खमत्ताए'[5] पुट्ठो णो झंझाए ।

७०–पासिमं दविए[6] लोयालोय-पवंचाओ मुच्चइ ।

—त्ति बेमि ।

१—° मद्ध (च) ।
२—× (क, घ, च) ।
न व्याख्यातं (चू, वृ) ।
३—° जाणहि (क) ; ° जाणेहि (च) ।
४—से उवट्ठिए से (क, ख, ग); से समुट्ठिए (घ) ; से उवट्ठिए (च) ।
५—सहिते धम्ममादाय (चू); सहिते दुक्खमत्ताते (चूपा); . ° मेत्ताते (क); . ° माताते (च) ।
६—दविए लोए (छ) ।

चउत्थो उद्देसो

७१—से वंता कोहं च, माणं च, मायं च, लोभं च ।

७२—एयं पासगस्स दंसणं, 'उवरय-सत्थस्स पलियंतकरस्स'[1] ।

७३—आयाणं (णिसिद्धा[2] ?) सगडब्भि'[3] ।

७४—जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ ।
जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ ॥

७५—सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अप्पमत्तस्स नत्थि भयं ।

७६—जे एगं नामे, से बहुं नामे,
जे बहुं नामे, से एगं नामे ।

७७—दुक्खं लोयस्स जाणित्ता ।

७८—वंता लोगस्स संजोगं, जंति वीरा[4] महाजाणं ।
परेण परं जंति, नावकंखंति जीवियं ॥

७९—एगं विगिंचमाणे पुढो विगिंचइ ।
पुढोविगिंचमाणे एगं विगिंचइ ।

८०—सड्ढी आणाए मेहावी ।

८१—लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं ।

८२—अत्थि सत्थं परेण परं, णत्थि असत्थं परेण परं ।

१—° कडस्स (क) ।
२—द्रष्टव्यम् सू० ८६ (पृ० ४६) ।
३—× (चू) ।
४—धीरा (क) ।

८३–जे कोह-दंसी से माण-दंसी
जे माण-दंसी से माय-दंसी
जे माय-दंसी से लोभ-दंसी
जे लोभ-दंसी से पेज्ज-दंसी
जे पेज्ज-दंसी से दोस-दंसी
जे दोस-दंसी से मोह-दंसी
जे मोह-दंसी से गब्भ-दंसी
जे गब्भ-दंसी से जम्म-दंसी
जे जम्म-दंसी से मार-दंसी
जे मार-दंसी से निरय-दंसी
जे निरय-दंसी से तिरिय-दंसी
जे तिरिय-दंसी से दुक्ख-दंसी ।

८४–से मेहावी अभिनिवट्टेज्जा[1]—कोहं च, माणं च, मायं च, लोहं च, पेज्जं च, दोसं च, मोहं च, गब्भं च, जम्मं च, मारं[2] च, नरगं च, तिरियं च, दुक्खं च ।

८५–एयं पासगस्स दंसणं उवरय-सत्थस्स पलियंतकरस्स ।

८६–आयाणं 'णिसिद्धा सगडिब्भि ।

८७–किमत्थि उवाही[3] पासगस्स ण विज्जइ ?'[4]
णत्थि ।

—त्ति बेमि ।

१—° निव्वट्टेज्जा (क, घ, छ) ।
२—मरण (ख, ग) ।
३—उवही (धी) (क, घ, छ) ।
४—× (च) ।

चउत्थं अज्झयणं

सम्मत्तं

पढमो उद्देसो

१–से बेमि—जे[1] अईया, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमेस्सा अरहंता[2] भगवन्तो[3] ते सव्वे एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति :

सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा ।

२–एस धम्मे सुद्धे[4], णिइए, सासए, समिच्च लोयं—खेयन्नेहिं[5] पवेइए ।

३–तंजहा—उट्ठिएसु वा, अणुट्ठिएसु वा
उवट्ठिएसु वा, अणुवट्ठिएसु वा
उवरय-दंडेसु वा, अणुवरय-दंडेसु वा
सोवहिएसु वा, अणोवहिएसु वा
संजोग-रएसु वा, असंजोग-रएसु वा ।

४–तच्चं चेयं तहा चेयं, अस्सिं चेयं पवुच्चइ ।

१—जे य (ख, ग, घ, छ) ।
२—अरिहता (ख, घ) ।
३—भगवता (घ, च) ।
४—सुद्धे धुवे (घ) ।
५—खेत्तन्नेहिं (च) ।

५–तं आइइत्तु[1] ण णिहे ण णिक्खिवे, जाणित्तु धम्मं जहा[2] तहा ।

६–दिट्ठेहिं णिव्वेयं गच्छेज्जा ।

७–णो लोगस्सेसणं चरे ।

८–जस्स णत्थि इमा णाई, अन्ना तस्स कओ[3] सिया ?

९–दिट्ठं सुयं मयं विन्नायं, जमेयं[4] परिकहिज्जइ ।

१०–समेमाणा पलेमाणा[5], पुणो-पुणो जातिं पकप्पेंति ।

११–अहो य राओ य[6] 'जयमाणे, वीर'[7][8] सया आगय-पन्नाणे ।
पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते सया परक्कमेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

बीओ उद्देसो

१२–जे आसवा, ते परिस्सवा,
जे परिस्सवा, ते आसवा,
जे अणासवा, ते अपरिस्सवा,
जे अपरिस्सवा, ते अणासवा –
एए पए संबुज्झमाणे, लोयं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो पवेइयं ।

१३–आघाइ[9] णाणी इह माणवाणं,
संसार-पडिवन्नाणं संबुज्झमाणाणं विन्नाणं-पत्ताणं ।

१—आइत्तु (ख,ग,च,छ,वृ) ।
२—अहा (घ) ।
३—कुतो (च) ।
४—ज लोए (चू) ।
५—पालेमाणा (क, च), चलेमाणा (शु०) ।
६—× (ख,ग,छ) ।
७—धीरे (ख,ग,घ,वृ) ।
८—जताहि एव वीरे (चू) ।
९—अक्खाइ (घ); नागार्जुनीया —आत्राइ धम्म खलु से जीवाण, तंजहा—संसारपडिवन्नाण मणुस्सवभत्थाण आरंभविणईण दुक्खुव्वेअसुहेसगाणं धम्म-सवणगवेसगा - निक्खित्त-सत्थाणं सूरसूसमाणाण पडिपुच्छमाणाण विन्नाणपत्ताणं (च, व) ।

१४—अट्टा वि सन्ता अदुवा पमत्ता ।

१५—अहासच्चमिणं ति बेमि ।

१६—नाणागमो मच्चु-मुहस्स अत्थि,
इच्छापणीया वंका-णिकेया ।
काल-ग्गहीआ णिचए णिविट्ठा,
'पुढो-पुढो जाइं पकप्पयंति'[1] ।

१७—'इहमेगेसिं तत्थ-तत्थ संथवो भवति ।
अहोववाइए फासे पडिसंवेदयंति ।

१८—चिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं, चिट्ठं परिचिट्ठति[2] ।
अचिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं, णो चिट्ठं परिचिट्ठति[3] ।'[4]

१९—एगे वयंति अदुवा वि णाणी,
णाणी वयंति अदुवा वि एगे ।

२०—आवंती केआवंती लोयंसि समणा य माहणा य पुढो
विवादं वदंति—
से दिट्ठं च णे, सुयं च णे,
मयं च णे, विण्णायं च णे—

१—पुढो पुढो जाइ पकरेति (चू),
एत्थ मोहे पुणो पुणो, पुढो पुढो जाइ पगप्पेति (चूपा);
" पकप्पेति (क) ; पकप्पन्ति (ख, ग, च) ; " पकुप्पंति (च, छ) ।
'पुढो पुढो जाइ पकप्पयन्ति' पंक्तिस्थाने शुब्रिग सपादिते पुस्तके एतादृशं पाठान्तरम्—
एत्थ मोहे पुणो पुणो, इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसवेययन्ति ;
चित्त कूरेहिं कम्मेहिं, चित्त परिविचिट्ठइ ,
अचित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, नो चित्त परिविचिट्ठइ ।

२—परिविचिट्ठई (क, चू)।

३—परिविचिट्ठई (क) ।

४—× (शु)।

उड्ढं अहं[1] तिरियं दिसासु, सव्वतो सुपडिलेहियं च णे—
सव्वे पाणा, 'सव्वे भूया, सव्वे जीवा'[2] सव्वे सत्ता,
हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परियावेयव्वा[3] उद्दवेयव्वा।
एत्थ[4] वि जाणह णत्थित्थ दोसो।

२१–अणारिय-वयणमेयं।

२२–तत्थ जे ते आरिया, ते एवं वयासी–
से दुद्दिट्ठं च भे, दुस्सुयं च भे,
दुम्मयं च भे, दुव्विन्नायं च भे,
उड्ढं अहं तिरियं दिसासु, सव्वतो दुप्पडिलेहियं च भे,
जन्नं तुब्भे एवमाइक्खह, एवं भासह, एवं 'परूवेह, एवं पन्नवेह'[5]—
सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता,
हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परियावेयव्वा उद्दवेयव्वा।
एत्थ वि जाणह 'णत्थित्थ दोसो'[6]।

२३–वयं पुण एवमाइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं पन्नवेमो–
सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता,
ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परियावेयव्वा,
ण उद्दवेयव्वा।
एत्थ वि जाणह णत्थित्थ दोसो।

२४–आरिय-वयणमेयं।

१—अहे य (क)।
२—सव्वे जीवा सव्वे भूया (वृ, क, घ, छ)।
३—परियावेयव्वा किलामेयव्वा (क, ख, ग)।
४—एत्थं पि (ख, ग, घ)।
५—पन्नवेह, एवं परूवेह (चू, क)।
६—नत्थित्थ दोसो। अणारिय वयणमेय (क, ख, ग, घ, च, छ)।

२५—पुव्वं निकाय समयं पत्तेयं[1] पुच्छिस्सामो—
हं भो पावादुया[2] ! किं भे सायं दुक्खं उदाहु असायं ?
२६—समिया पडिवन्ने यावि एवं बूया—
सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, असायं अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं ।
—त्ति बेमि ।

तइओ उद्देसो

२७—उवेह[3] एणं बहिया य लोयं, से सव्व-लोगंसि जे केइ विन्नू ।
अणुवीइ[4] पास णिक्खित्त-दंडा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति[5]॥
२८—नरे[6] मुयच्चा धम्मविदु त्ति अंजू ।
२९—आरंभजं दुक्खमिणंत्ति णच्चा, एवमाहु सम्मत्त-दंसिणो ।
३०—ते सव्वे पावाइया दुक्खस्स कुसला परिन्नमुदाहरंति ।
३१—इति कम्म परिन्नाय सव्वसो ।
३२—इह आणाकंखी पंडिए अणिहे 'एगमप्पाणं संपेहाए' ।
धुणे सरीरं[7], कसेहि[8] अप्पाणं, जरेहि अप्पाणं ।
३३—जहा जुन्नाइं कट्ठाइं, हव्ववाहो[9] पमत्थति,
एवं अत्त-समाहिए अणिहे ।
३४—विगिंच कोहं अविकंपमाणे, इमं णिरुद्धाउयं संपेहाए ।

१—पत्तेय-पत्तेय (ख, ग, च, छ) ।
२—पवादिया (छ), समणा माहणा (चू) ।
३—उवेहेण (क, घ), उवेहेण (ख, ग) ; उव्वेहेण (च, छ) ।
४—अणुवितिय (क, च) ; (छ) अणुचिंतिय ।
५—जहति (चू, छ) ।
६—नरा (छ) ।
७—सरीरग (वृ) ।
८—किसेहि (चू) . कम्मेहिं जरेहि (ख) ।
९—हव्ववाहू (घ, च, छ) ।

३५—दुक्खं च जाण अदु[1] वा'गमेस्सं ।

३६—पुढो फासाइं च फासे[2] ।

३७—लोयं च पास विप्फंदमाणं ।

३८—जे णिव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं, अणिदाणा ते वियाहिया ।

३९—तम्हाऽतिविज्जो णो पडिसंजलिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

चउत्थो उद्देसो

४०—आवीलए पवीलए निप्पीलए,[3]
जहिता पुव्व-संजोगं, हिच्चा उवसमं ।

४१—तम्हा अविमणे वीरे, सारए समिए सहिते सया जए ।

४२—दुरणुचरो मग्गो वीराणं, अणियट्ट-गामीणं ।

४३—विगिंच मंस-सोणियं ।

४४—एस पुरिसे दवीए वीरे, आयाणिज्जे वियाहिए ।
जे धुणाइ समुस्सयं, वसित्ता बंभचेरंसि ॥

४५—णेत्तेहिं पलिछिन्नेहिं, आयाण-सोय-गढिए बाले ।
अव्वोच्छिन्न-बंधणे, अणभिक्कंत-संजोए,
तमंसि[4] अविजाणओ, आणाए लंभो णत्थि—त्ति बेमि ।

४६—जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्झे तस्स कओ[5] सिया ?

४७—से हु पन्नाणमंते बुद्धे आरंभोवरए ।

१—बहु (क) ।
२—फासए (क, छ) ।
३—निप्फीलए (क, घ) ।
४—अधंस्स तमस्स (चू); तमसि (चूपा) ।
५—कुओ (क, च, छ) ।

४८–सम्मसेयंति पासह।

४९–जेण बन्धं वहं घोरं, परितावं च दारुणं।

५०–पलिछिंदिय बाहिरगं च सोयं,
णिक्कम्म-दंसी इह मच्चिएहिं।

५१–'कम्मुणा सफलं'[1] दट्ठुं, तओ णिज्जाइ वेयवी।

५२–जे खलु भो वीरा समिता सहिता सदा जया संघड-दंसिणो[2] आतोवरया, अहा-तहा[3] लोग मुवेहमाणा, पाईणं पडीणं दाहीणं उदीणं इति सच्चंसि परिचिट्ठिंसु[4], साहिस्सामो[5] णाण वीराणं समिताण सहिताणं सदा जयाणं संघड-दंसिणं आतोवरयाणं अहा-तहा लोगमुवेहमाणाणं।

५३–किमत्थि उवाधी[6] पासगस्स ? 'ण विज्जति ?'[7]
णत्थि।

—त्ति बेमि।

१—कम्माण सफलत्त (वृ)।
२—सत्थड ० (च), संथड ० (चू)।
३—अहातह (क)।
४—परिविचिट्ठिंसु (क, ख, ग, च, छ), विपरिचिट्ठिंसु (चू)।
५—अग्घातिस्सामो (च)।
६—उवही (क, घ, च, छ)।
७—अह णत्थि ? ण विज्जति त्ति बेमि (चू); णत्थि वा ण विज्जति त्ति बेमि (छ)।

पचम अज्झयणं

लोग-सारो

पढमो उद्देसो

१–'आवंती केआवंती लोयंसि विप्परामुसंति, अट्ठाए अणट्ठाए वा[1],'[2] एएसु चेव विप्परामुसंति।

२–गुरू से कामा।

३–तओ से मारस्स अंतो,
जओ से मारस्स अंतो, तओ से दूरे।

४–णेव से अंतो, णेव से दूरे[3]।

५–से पासति फुसियमिव, कुसग्गे पणुन्नं णिवतितं वातेरितं।
एवं बालस्स जीवियं, मंदस्स अविजाणओ॥

६–कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे,
तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासुवेइ[4]।

७–मोहेण गब्भं 'मरणाति एति'[5]।

८–एत्थ मोहे पुणो-पुणो।

९–संसयं परिजाणतो, संसारे परिण्णाते भवति,
संसयं अपरिजाणतो, संसारे अपरिण्णाते भवति।

१—नागार्जुनीया :—जावंति केइ लोए छक्काय-वह समारभंति अट्ठाए अणट्ठाए वा।
२—× (ख, ग, घ, च, छ)।
३—बाहिं (चू)।
४—विप्परियासमुवेति (क, ख, ग, छ) ; °समेति (च, च)।
५—मरणा दुवेति (चपा)।

१०–जे छेए से सागारियं ण सेवए ।

११–'कट्टु एवं अविजाणओ, वितिया मंदस्स बालया'[1] ।

१२–लद्धा हुरत्था पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणयाए—त्ति बेमि ।

१३–पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे ।

१४–'एत्थ फासे'[2] पुणो-पुणो ।

१५–आवंती केआवंती लोयंसि आरंभजीवी, एएसु चेव आरंभजीवी ।

१६–एत्थ वि बाले परिपच्चमाणे[3] रमति पावेहिं कम्मेहिं, असरणे सरणं'ति मण्णमाणे ।

१७–इह मेगेसि एगचरिया भवति—

से बहु-कोहे बहु-माणे बहु-माए बहु-लोहे बहु-रए बहु-नडे बहु-सढे बहु-संकप्पे,

आसवसक्की पलिउच्छन्ने,

उट्ठियवायं पवयमाणे "मा मे केइ अदक्खू"

अण्णाण-पमाय-दोसेण, सयय मूढे धम्मं णाभिजाणइ ।

१८–अट्टा पया माणव ! कम्म-कोविया, जे अणुवरया, अविज्जाए पलिमोक्खमाहु, आवट्टं[4] अणुपरियट्टंति ।

—त्ति बेमि ।

१—नागार्जुनीया —जे खलु विसए सेवई सेवित्ता वा णालोएइ, परेण वा पुट्ठो निण्हवइ अहवा तं पर सएण वा दोसेण उवलिपिज्जत्ति । तमेवा वियाणतो "(चू)।

२—एत्थ मोहे (चू, वृपा), तत्थ फासे (चूपा)।

३—परिवच्चमाणे (च), परितप्पमाणे (छ, चू, वृ)- परिच्चमाणे (चूपा, वृपा)।

४—आवट्टमेव (ख, ग, च)।

बीओ उद्देसो

१९—आवंती केआवंती लोयंसि अणारंभ-जीवी एतेसु[1] चेव मणारंभ-जीवी[2] ।

२०—एत्थोवरए तं झोसमाणे 'अयं संधी' ति अदक्खु ।

२१—जे 'इमस्स विग्गहस्स अयं खणे'त्ति मन्नेसी[3] ।

२२—एस मग्गे—आरिएहिं पवेदिते ।

२३—उट्ठिए णो पमायए ।

२४—जाणित्तु दुक्खं 'पत्तेयं सायं'[4] ।

२५—पुढो-छंदा इह माणवा, पुढो दुक्खं पवेदितं ।

२६—से अविहिंसमाणे अणवयमाणे, पुट्ठो[5] फासे विप्पणोल्लए ।

२७—एस समिया-परियाए वियाहिते ।

२८—जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं, उदाहु ते आयंका फुसंति । इति उदाहु वीरे[6] 'ते फासे पुट्ठो हियासए' ।

२९—से पुव्वं पेयं पच्छा पेयं भेउर-धम्मं, विद्धंसण-धम्मं, अधुवं, अणितियं, असासयं, चयावचइयं[7], विपरिणाम-धम्मं, पासह एयं 'रूवं ।

३०—संधिं'[8] समुप्पेहमाणस्स एगायतण-रयस्स[9] इह विप्पमुक्कस्स, णत्थि मग्गे विरयस्स—त्ति बेमि ।

१—तेसु (वृ) ।
२—अणारभ-० (ग,च) ।
३—अन्नेसि (ख, ग, च) ।
४—पत्तेय-साय (क, च, छ) ।
५—पुढो (ख, ग, घ) (अशुद्धम्) ।
६—धीरे (क, ख, ग, छ) ।
७—चयो ० (क, ग, घ, च, छ)
८—रूव-संधि (क, च, छ) ।
९—एगायण ० (घ) ।

३१—आवंती केआवंती लोगंसि परिग्गहावंती—

से अप्पं वा, बहुं[1] वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा,

एतेसु चेव परिग्गहावंती।

३२—एतदेवेगेसिं[2] महब्भयं भवति, लोगवित्तं[3] च णं उवेहाए।

३३—एए संगे अविजाणतो।

३४—से 'सुपडिबुद्धं सूवणीयं'ति णच्चा'[4], पुरिसा! परमचक्खू! विपरक्कमा[5]।

३५—एतेसु चेव बंभचेरं—ति बेमि।

३६—से सुयं च मे, अज्झत्थियं[6] च मे—"बंध-पमोक्खो तुज्झ[7] अज्झत्थेव"।

३७—एत्थ विरते अणगारे, दीहरायं तितिक्खए।
पमत्ते बहिया पास, 'अप्पमत्तो परिव्वए'[8]॥

३८—एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि।

—त्ति बेमि।

तइओ उद्देसो

३९—आवंती केआवंती लोयंसि अपरिग्गहावंती,

एएसु चेव अपरिग्गहावंती।

१—बहुय (क, घ, च, छ)।
२—एयमेगेसिं (ख, ग), एयमेवेगेसिं (घ)।
३—लोग वित्त (ख, ग, छ)।
४—सुपडिबद्धय (क, घ, छ, वृ), सुत अणुविचिंतेति णच्चा, (चूपा)।
५—विपरक्कम (ख, ग, च)।
६—अज्झत्य, (क, ख, ग, घ, च) ; अज्झत्थय (क्वचित्)
७—× (ख, ग, घ, छ)।
८—अप्पमाय सुसिक्खेज्जा (चू)।

४०–सोच्चा वई[1] मेहावी, पंडियाणं णिसामिया।
समियाए[2] धम्मे, आरिएहिं पवेदिते॥

४१–जहेत्थ मए संधी झोसिए, एवमण्णत्थ संधी दुज्झोसिए भवति।
तम्हा बेमि णो णिहेज्ज[3] वीरियं।

४२–जे पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई।
जे पुव्वुट्ठाई, पच्छा-णिवाई
जे णो पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई।

४३–सेऽवि तारिसए सिया[4], जे परिण्णाय लोग मणुस्सिओ[5]।

४४–एयं णियाय मुणिणा पवेदितं–इह आणाकंखी पंडिए अणिहे,
पुव्वावररायं जयमाणे, सया-सीलं संपेहाए,
सुणिया भवे अकामे अझंझे।

४५–इमेणं चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ ?

४६–'जुद्धारिहं खलु दुल्लहं'[6]।

४७–जहेत्थ कुसलेहिं परिन्ना-विवेगे भासिए।

४८–चुए हु बाले 'गब्भाइसु रज्जइ'[7]।

४९–अस्सिं चेयं पव्वुच्चति, रूवंसि वा छणंसि वा।

५०–से हु एगे संविद्धपहे[8] मुणी, अण्णहा लोगमुवेहमाणे।

१—वंति (क, ख, ग,) ; वात (छ)।
२—समया (घ, च)।
३—णिहणिज्ज, (ख, ग) निण्हवेज्ज (शु)।
४—चेव (चू)।
५—मण्णेसति (चू, क); मण्णुसिया (ख, ग, छ); मण्णेसिति (च); मणुस्सिते (चूपा)।
६—जुद्धारिय च दुल्लह (वृपा)।
७—गब्भाइ रज्जइ (चूपा); गब्भाइसु रिज्जइ (वृ)।
८—संविद्धमए (चू, वृपा); सविद्ध पहे (चूपा)।

६३—वयसा वि एगे बुइया कुप्पंति माणवा ।

६४—उन्नयमाणे य णरे, महता मोहेण मुज्झति ।

६५—संबाहा बहवे भुज्जो-भुज्जो दुरतिक्कमा अजाणतो अपासतो।

६६—एयं ते मा होउ ।

६७—एयं कुसलस्स दंसणं ।

६८—तद्दिट्ठीए तम्मोत्तीए[1] तप्पुरक्कारे, तस्सन्नी तन्निवेसणे ।

६९—जयं-विहारी चित्तणिवाती[2] पंथ-णिज्झाती पलीवाहरे,[3] पासिय पाणे गच्छेज्जा ।

७०—से अभिक्कममाणे पडिक्कममाणे संकुचेमाणे[4] पसारेमाणे विणियट्टमाणे संपलिमज्जमाणे[5] ।

७१—एगया गुण-समियस्स रीयतो काय-संफास मणुचिन्ना एगतिया पाणा उद्दायंति ।

७२— इहलोग-वेयण-वेज्जावडियं ।

७३—जं 'आउट्टि-कयं कम्मं'[6], तं परिन्नाय विवेगमेति ।

७४—एवं से अप्पमाएणं, विवेगं किट्टति वेयवी ।

७५—से पभूय-दंसी पभूय-परिन्नाणे उवसंते समिए सहिते सयाजए दट्ठुं विप्पडिवेदेति अप्पाणं—

७६—किमेस जणो करिस्सति ?

७७—'एस से परमारामो'[7], जाओ लोगंमि इत्थीओ ।

१—तम्मुत्तिए (क, च) ।

२—चित्तणिधायी (चूपा) ।

३—पलिबहिरे (क ग) ; पलिवाहरे (च) ; वलि-बाहिरे (शु) ; पलिवाहिरे (ख, घ, छ, वृ) ।

४—संकुच० (च) ।

५—संपलिज्ज० (चू, ख) ।

६—आउट्टीकम्म (क, च) : आवट्टीकम्मं (घ) ।

७—एसे(सो) परमारामो (क, घ, च) ।

७८—मुणिणा हु एतं पवेदितं, उब्बाहिज्जमाणे गाम-धम्मेहिं:—

७९—अवि णिब्बलासए।

८०—अवि ओमोयरियं कुज्जा।

८१—अवि उड्ढं ठाणं ठाइज्जा।

८२—अवि गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

८३—अवि आहारं वोच्छिंदेज्जा।

८४—अवि चए इत्थीसु मणं।

८५—पुव्वं[1] दंडा पच्छा फासा, पुव्वं फासा पच्छा दंडा।

८६—इच्चेते कलहा संगकरा भवंति।

पडिलेहाए आगमेत्ता

आणवेज्जा अणासेवणाए—त्ति बेमि।

८७—से णो काहिए णो पासणिए णो संपसारए णो ममाए[2] णो कय-किरिए वइ-गुत्ते अज्झप्प-संवुडे परिवज्जए सदा पावं।

८८—एतं मोणं समणुवासिज्जासि।

—त्ति बेमि।

पंचमो उद्देसो

८९—से बेमि—तंजहा

अवि हरए पडिपुन्ने, 'चिट्ठइ समंसि भोमे'[3]।

उवसंतरए सारक्खमाणे, से चिट्ठति सोयमज्झगए॥

९०—से पास सव्वतो गुत्ते, पास लोए महेसिणो,

जे य पन्नाणमंता पबुद्धा आरंभोवरया।

१—पुव्वि (घ)।

२—ममायए (छ); मामए (शु)।

३—समसि भोमे चिट्ठइ (च)।

९१—सम्ममेयंति पासह[1] ।

९२—'कालस्स कंखाए परिव्वयंति'—त्ति बेमि ।

९३—वितिगिच्छ[2]-समावन्नेणं अप्पाणेणं णो लभति समाधिं ।

९४—सिया वेगे अणुगच्छंति, असिया वेगे अणुगच्छंति,
अणुगच्छमाणेहिं अणणुगच्छमाणे कहं ण णिव्विज्जे ? ।

९५—तमेव सच्चं णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ।

९६—सड्ढिस्स णं समणुन्नस्स संपव्वयमाणस्स—
समियंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ
समियंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ
असमयंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ
असमयंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ
समियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, समिया होइ उवेहाए ।
असमयंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, असमिया होइ उवेहाए ।

९७—उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया—उवेहाहि समियाए,

९८—इच्चेवं तत्थ संधी झोसितो भवति ।

९९—उट्ठियस्स ठियस्स गतिं समणुपासह ।

१००—एत्थवि बाल-भावे अप्पाणं णो उवदंसेज्जा ।

१०१—तुमंसि नाम सच्चेव[3], जं 'हंतव्वं' ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव, जं 'अज्जावेयव्वं' ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव, जं 'परितावेयव्वं' ति मन्नसि,

१—पासहा (क, च, छ) ।
२—वितिगिंछ (छ) ; विगिंछ° (वृ) ।
३—तं चेव (क, घ, च) ।

० तुमंसि नाम सच्चेव, जं 'परिघेतव्वं' ०[1] त्ति मन्नसि,

तुमंसि नाम सच्चेव, जं 'उद्दवेयव्वं' त्ति मन्नसि।

१०२—अंजू चेय[2] पडिबुद्ध-जीवी[3], तम्हा ण हंता ण विघायए।

१०३—अणुसंवेयणमप्पाणेणं, जं 'हंतव्वं' ति[4] णाभिपत्थए।

१०४—जे आया से विन्नाया, जे विन्नाया से आया।

जेण विजाणति से आया, तं पडुच्च पडिसंखाए।

१०५—एस आया-वादी समियाए-परियाए वियाहिते।

— [illegible]

छट्ठो उद्देसो

१०६—अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए [illegible]

१०७—एतं ते मा होउ।

१०८—एयं कुसलस्स दंसणं।

१०९—तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए, तप्पुरक्कारे [illegible]

११०—अभिभूय अदक्खू, अणभिभूते [illegible]

१११—जे महं[5] अबहिमणे।

११२—पवाएणं पवायं जाणेज्जा

११३—सह-सम्मइयाए[6], [illegible]

११४—णिद्देसं णातिवट्टेज्जा, [illegible]

१—एवं जं 'परिघेतव्वं' ति [illegible]
जं 'उद्दवेयव्वं' ति [illegible] ([illegible])

२—चेय (क, ख, ग, च चू, छ)

३—पडिबुज्झ० (क, च चू)

४—X (ख, ग, घ, च छ)।

५—अह (चू)।

६—सम्मुइ(ति)याए ([illegible] छ)।

११५–सुपडिलेहिय[1] सव्वतो सव्वयाए[2] सम्ममेव[3] समभिजाणिया[4]।

११६–इहारामं परिण्णाय, अल्लीण-गुत्तो परिव्वए।
णिट्ठियट्ठी वीरे, आगमेण सदा परक्कमेज्जासि–त्ति बेमि।

११७–उड्ढं सोता अहे सोता, तिरियं सोता वियाहिया,
एते सोया वियक्खाया, जेहिं संगंति पासहा॥

११८–'आवट्टं तु उवेहाए'[5], 'एत्थ विरमेज्ज वेयवी'[6]।

११९–विणएत्तु[7] सोयं णिक्खम्म[8], एसमहं अकम्मा जाणति पासति।

१२०–पडिलेहाए णावकंखति, इह आगतिं परिण्णाय

१२१–अच्चेइ जाइ-मरणस्स वट्टमग्गं[9] वक्खाय-रए[10]।

१२२–सव्वे सरा णियट्टंति।

१२३–तक्का जत्थ ण विज्जइ।

१२४–मई तत्थ ण गाहिया।

१२५–ओए अप्पतिट्ठाणस्स खेयन्ने।

१२६–से ण दीहे, ण हस्से[11],
ण वट्टे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण परिमण्डले।

१—° लेहिय (चू)।
२—सव्वत्ताए (चू), सर्वात्मना (वृ)।
३—° मेत (चू)।
४—° ज्जा (घ)।
५—आवट्टमेय तु पेहाए (ख, ग, घ), अट्टमेय उवेहाए (चू)।
६—विवेग किट्टइ वेदवी (चू, वृपा); एत्थ विरमेज्ज वेयवी (चूपा)।
७—विणएत्ता (चूपा)।
८—णिक्कम्म(म्मा) (घ, छ)।
९—वट्टमग्गं (क): वड्डमग्गं (च, छ)।
१०—विक्खाय° (क, ख, ग, घ, च, छ)।
११—हुस्से (क, घ, च); रहस्से (ख); हरस्से (छ)।

१२७–ण किण्हे, न नीले, ण लोहिए, ण हालिद्दे, ण सुक्किल्ले।

१२८–ण सुब्भिगंधे[1], ण दुरभिगंधे।

१२९–ण तित्ते, ण कडुए, ण कसाए, ण अंबिले, ण महुरे।

१३०–ण कक्खडे[2], ण मउए, ण गरुए, ण लहुए,
ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण लुक्खे।

१३१–ण काऊ।

१३२–ण रुहे।

१३३–ण संगे।

१३४–ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अन्नहा।

१३५–परिण्णे सण्णे[3]।

१३६–उवमा ण विज्जए।

१३७–अरूवी सत्ता।

१३८–अपयस्स पयं णत्थि।

१३९–से ण सद्दे, ण रूवे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे, इच्चेताव।

—त्ति बेमि।

१—सुरहि (मि) (क, ख, ग)।
२—कक्कडे (घ, छ)।
३—सव्वओ (चू); × (घ)।

छट्ठं अज्झयणं

धुयं

पढमो उद्देसो

१—ओबुज्झमाणे इह माणवेसु, आघाइ[1] से णरे।

२—जस्सिमाओ जाईओ सव्वओ सुपडिलेहियाओ भवंति।
अक्खाइ से णाणमणेलिसं।

३—से किट्टति तेसि समुट्ठियाणं णिक्खित्त-दंडाणं समाहियाणं पन्नाणमंताणं इह मुत्ति-मग्गं।

४—एवं पेगे महावीरा विप्परक्कमंति।

५—पासह एगे ऽवसीयमाणे[2] अणत्त-पन्ने।

६—से बेमि—से जहा वि कुम्मे हरए विणिविट्ठ-चित्ते, पच्छन्न-पलासे, उम्मग्गं[3] से णो लहइ।

७—भंजगा इव सन्निवेसं णो चयंति,
एवं पेगे[4]—
'अणेग-रूवेहिं कुलेहिं'[5] जाया,
'रूवेहिं सत्ता'[6] कलुणं थणंति,
णियाणओ ते ण लभंति मोक्खं।

१—अक्खाति (क, ख, ग, घ); अग्घाति (चू)।
२—विसीय° (क, ख, ग, घ, चू)।
३—उम्मुग्ग (क, घ, छ)।
४—वेगे (च)।
५—अणेग गोतेसु कुलेसु (चू)।
६—रूवेसु गिद्धा (चू)।

८—अह पास तेहिं[1], कुलेहिं[2] आयत्ताए जाया—

गंडी अदुवा कोढी[3], रायंसी अवमारियं।
काणियं झिमियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा॥
उदरिं पास मूयं[4] च, सूणिअं च गिलासिणिं।
वेवइं[5] पीढ-सप्पिं च, सिलिवयं[6] महु-महणिं[7]॥
सोलस एते रोगा, अक्खाया अणुपुव्वसो।
अह णं फुसंति आयंका, फासा य असमंजसा॥
मरणं तेसिं संपेहाए[8], उववायं चयणं च णच्चा।
परिपागं[9] च संपेहाए, तं सुणेह जहा-तहा॥

९—संति पाणा अधा तमंसि[10] वियाहिया।

१०—तामेव सइं असइं अतिअच्च[11] उच्चावय-फासे पडिसंवेदेंति[12]।

११—बुद्धेहिं एयं पवेदितं।

१२—संति पाणा वासगा, रसगा, उदए उदय-चरा, आगास-गामिणो।

१३—पाणा पाणे किलेसंति।

१४—पास लोए महब्भयं।

१—तेहिं तेहिं (चू)।
२—× (चू)।
३—कोट्ठी (ग, छ)।
४—मूइ (क, घ, चू)।
५—वेवय (क, ख, ग, च), वेवइयं (घ)।
६—सिलेवइं (घ, च)।
७—मधुमेहुण (छ)।
८—सपेहाए (क, घ, च); पेहाए (ख, ज)।
९—परियाग (ख, ग, घ) (अशुद्ध); पलिपाग (चू)।
१०—तमसि (क, घ)।
११—अतिगच्च (क)।
१२—° वेदेति (क, ख, घ, च, छ)।

१५—बहु-दुक्खा हु जंतवो।

१६—सत्ता कामेहिं[1] माणवा।

१७—अबलेण वहं गच्छंति, सरीरेण पभंगुरेण।

१८—अट्टे से बहु-दुक्खे, इति बाले पकुव्वइ।

१९—एते रोगे बहू णच्चा, आउरा परितावए।

२०—"णालं पास"।

२१—"अलं तवेएहिं"।

२२—एयं पास मुणी! महब्भयं।

२३—णातिवाएज्ज कंचणं।

२४—आयाण भो! सुस्सूस भो! 'धूय-वादं पवेदइस्सामि'[2]।

२५—इह खलु अत्तत्ताए तेहिं-तेहिं कुलेहिं अभिसेएण[3] अभिसंभूता, अभिसंजाता, अभिणिव्वट्टा, अभिसंवुड्ढा[4], अभिसंबुद्धा अभिणिक्खंता, अणुपुव्वेण महामुणी।

२६—तं परक्कमंतं परिदेवमाणा, "मा णे चयाहि[5]" इति ते वदंति। छंदोवणीया अज्झोववन्ना, अक्कंद-कारी जणगा रुवंति॥

२७—अतारिसे मुणी णो[6] ओहंतरए, जणगा जेण विप्पजढा।

२८—सरणं तत्थ णो समेति। किह णाम से तत्थ रमति?

२९—एयं[7] णाणं सया समणुवासिज्जासि।

—त्ति बेमि।

१—कामेसु (च)।

२—नागार्जुनीया:—धूयो वाय पवेयइस्सामि· (चू); धूतोवायं पवेयति (वृ)।

३—× (घ, च)।

४—× (क, छ); ° सवड्ढा (ख, ग); अभिबुद्धा (घ)।

५—जहाहि (चू)।

६—× (क, घ, च, छ)।

७—एवं (च) (अशुद्धं)।

बीओ उद्देसो

३०—आतुरं लोयं मायाए, 'चइत्ता पुव्व-संजोगं'[1]
हिच्चा[2] उवसमं वसित्ता बंभचेरम्मि, वसु वा अणुवसु वा
जाणित्तु धम्मं अहा[3]-तहा, 'अहेगे तमचाइ कुसीला।

३१—वत्थं पडिग्गहं कंबलं पाय-पुंछणं विउसिज्जा[4]।

३२—अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुरहियासए।

३३—कामे ममायमाणस्स, इयाणिं वा मुहुत्ते[5] वा
अपरि-माणाए भेदे।

३४—एवं से अंतराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं अवितिण्णा[6] चेए'[7]।

३५—'अहेगे धम्म मादाय'[8] 'आयाण-प्पभिइं सुपणिहिए'[9] चरे[10]।

३६—अपलीयमाणे[11] दढे।

३७—सव्वं गेहिं[12] परिण्णाय, एस पणए महा-मुणी।

३८—अइअच्च सव्वतो संगं, "ण महं अत्थित्ति इति एगोहमंसि।"

१—जहित्ता पुव्वमायतणं (चू)।
२—हिच्चा इह (चू)।
३—जहा (ख)।
४—विओ° (छ)।
५—मुहुत्तेण (ख, ग, च, छ, वृ)।
६—अवतिन्ना (ग, छ)।
७—एताणि विवज्जतेण पढिज्जति अत्थआसावातो—अहेगे त चाई सुसीला, वत्थ पडिग्गहं कंवल पाय-पुछण अविउसिज्जा, अणुपुव्वेण अहियासमाणा परीसहे दुरहियासओ, कामे अममायमाणस्स इदाणिं वा मुहुत्ते वा अपरिमाणाए भेदे। एव से अंतराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं वितिन्ना चेए (चू)।
८—सहिए धम्ममायाय (चूपा)।
९—°पमितिमु पणि° (क, ख, ग, च, छ, वृ)।
१०—उवदेसमेव चर (चू)।
११—अप्प° (क, ग, घ, छ)।
१२—गिहिं (ख, घ); गध (थ) (च)।

३९—जयमाणे एत्थ विरते अणगारे सव्वओ मुंडे रीयंते[1] ।
४०—जे अचेले परिवुसिए[2] संचिक्खति[3] ओमोयरियाए ।
४१—से अक्कुट्ठे व[4] हए व लूसिए[5] वा ।
४२—पलियं पगंथे अदुवा पगंथे[6] ।
४३—अतहेहि सद्द-फासेहि, इति संखाए ।
४४—एगतरे अन्नयरे अभिन्नाय, तितिक्खमाणे परिव्वए ।
४५—जे य हिरी, जे य अहिरीमणा[7] ।
४६—चिच्चा सव्वं विसोत्तियं, 'फासे-फासे'[8] समिय-दंसणे ।
४७—एते भो ! णगिणा वुत्ता, जे लोगंसि अणागमण-धम्मिणो ।
४८—"अणाए मामगं धम्मं" ।
४९—एस उत्तर-वादे, इह माणवाणं वियाहिते ।
५०—एत्थोवरए तं झोसमाणे
५१—आयाणिज्जं परिण्णाय, परियाएण विगिंचइ ।
५२—इहमेगेसिं एग-चरिया होति ।
५३—तत्थि'यरा इयरेहि कुलेहिं सुद्धेसणाए सव्वेसणाए ।
५४—से मेहावी परिव्वए ।
५५—सुब्भि अदुवा दुब्भि ।
५६—अदुवा तत्थ भेरवा ।

१—रीयते (क, घ, च) ।
२—° वुसिते (छ) ; × (चू) ।
३—° चिट्ठ° (छ) ।
४—वा (ख, च, छ) ।
५—लुंचिए (ख, ग, छ, वृ) ।
६—पकत्थ (क) : पकथे (ख, ग, च) : पगत्थ (छ) ।
७—° माणे (णा) (ख, घ, च, छ) ।
८—फासे (ख, घ) ; सफासे फासे (च) ।

५७—पाणा पाणे किलेसंति ।

५८—ते फासे पुट्ठो धीरो[1] अहियासेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

तइओ उद्देसो

५९—'एयं खु मुणी'[2] आयाणं सया सुअक्खाय-धम्मे विधूत-कप्पे णिज्झोसइता[3] ।

६०—जे अचेले परिवुसिए, तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवइ—परिजुण्णे[4] मे वत्थे वत्थं जाइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं जाइस्सामि, संधिस्सामि, सीवीस्सामि, उक्कसिस्सामि, वोक्कसिस्सामि, परिहिस्सामि[5], पाउणिस्सामि ।

६१—अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसंति, सीय-फासा फुसंति, तेउ-फासा फुसंति, दंस-मसग-फासा फुंसति ।

६२—एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेति अचेले ।

६३—'लाघवं आगममाणे'[6] ।

६४—तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

६५—जहे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा 'सव्वतो सव्वत्ताए'[7] सम्मत्तमेव समभिजाणिया[8] ।

१—वीरो (रे) (क, च) ।
२—एस मुणी (चू) ।
३—° सइत्ता (क, ख, ग, छ) ।
४—° जिण्णे (घ, छ) ।
५—× (क, घ, चू) ।
६—नागार्जुनीया :—एवं खलु से उवगरण-लाववियं तवं कम्मक्खयकारणं करेइ (चू, वृ)
७—नागार्जुनीया :—सव्वं सव्वत्ताए ।
८—° जाणित्ता (ख, ग, च) ।

६६—एवं तेसिं महावीराणं चिरराइं पुव्वाइं वासाणि रीयमाणाणं दवियाणं पास अहियासियं।

६७—आगय-पन्नाणाणं किसा बाहा[1] भवंति, पयणुए य मंस-सोणिए।

६८—विस्सेणिं कट्टु, परिण्णाए[2]।

६९—एस तिन्ने मुत्ते विरए वियाहिए—त्ति बेमि।

७०—विरयं भिक्खुं रीयंतं, चिर-रातोसियं, अरती तत्थ किं विधारए ?

७१—संधेमाणे[3] समुट्ठिए[4]।

७२—जहा से दीवे असंदीणे, एवं से धम्मे आयरिय-पदेसिए[5]।

७३—'ते अणवकंखमाणा'[6] अणतिवाएमाणा[7] दइया[8] मेहाविणो पंडिया।

७४—एवं तेसिं भगवओ अणुट्ठाणे जहा से दिया-पोय[9]।

७५—एवं ते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइय।

—त्ति बेमि।

१–बाधा (क, च); वाहवो (छ)।
२–° ण्णाय (ख, ग, छ)।
३–संधणाए (चू); सधेमाणे (चूपा)।
४–° ट्ठाय (ख, ग, घ, च, छ)।
५–आरिय-देसिए (क, च, चू)।
६–ते अवयमाणा भावसोया (चू);
ते अणवकखेमाणा (चूपा)।
७–पाणे अणति ° (ख, ग, छ, वृ);
अणतिवरतेमाणा जाव अपरिगिण्हेमाणा (चू)।
८–वियत्ता (चू)।
९–दिय ° (ग)।

चउत्थो उद्देसो

७६—एवं ते 'सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइया' तेहिं[1] महावीरेहिं पण्णाणमंतेहिं ।

७७—तेसिंतिए[2] पण्णाण मुवलब्भ[3] हिच्चा उवसमं 'फारुसिय[4] समादियंति' ।

७८—वसित्ता बंभचेरंसि आणं'तं णो' त्ति मण्णमाणा,

७९—अग्घायं[5] नु सोच्चा णिसम्म 'समणुन्ना जीविस्सामो' एगे णिक्खम्म ते—

असंभवंता विडज्झमाणा, कामेहिं गिद्धा अज्झोववण्णा ।
समाहि माघाय मझोसयंता, सत्थारमेउ फरुसं वदंति ॥

८०—सीलमंता उवसंता, संखाए रीयमाणा ।
"असीला" अणुवयमाणा ।

८१—वितिया मंदस्स बालया ।

८२—णियट्टमाणा वेगे आयार-गोयरमाइक्खंति, णाण-भट्ठा । दंसण-लूसिणो ।

८३—णममाणा एगे जीवितं विप्परिणामेति ।

८४—पुट्ठा वेगे णियट्टंति, जीवियस्सेव कारणा[6] ।

८५—णिक्खंतं पि तेसिं दुन्निक्खंतं भवति ।

८६—बाल-वयणिज्जा हु ते नरा, पुणो-पुणो जातिं[7] पकप्पेंति ।

१—तेसिं महावीराण (चू) ।
२—तेसतिए (क, च), तेमिमतिए (छ) ।
३—° पइलब्भ (चू) ।
४—अहेगे फारुसिय समारुभति (चूपा) ; अहेगे फारुसिय समारुहति (वृपा) ।
५—आघायं (क, ख, घ, च) ।
६—कारणाए (क, घ, छ) ।
७—गब्भाइ (च) ।

८७—अहे संभवंता विद्दायमाणा ।
अहमंसी[1] विउक्कसे

८८—उदासीणे[2] फरुसं वदंति ।

८९—पलियं पगंथे अदुवा पगंथे, अतहेहि ।

९०—तं मेहावी जाणिज्जा धम्मं ।

९१—अहम्मट्ठी तुमंसि णाम बाले, आरंभट्ठी, अणुवयमाणे, हण[3] पाणे, घायमाणे, हणओयावि समणुजाणमाणे, घोरे धम्मे उदीरिए, उवेहइ णं अणाणाए ।

९२—एस विसण्णे वितद्दे वियाहिते—त्ति बेमि ।

९३—'किमणेण भो ! जणेण करिस्सामि'त्ति मण्णमाणा[4] 'एवं पे'गे वइत्ता'[5],
मातरं पितरं हिच्चा, णातओ य परिग्गहं ।
'वीरायमाणा[6] समुट्ठाए, अविहिंसा सुव्वया दंता'[7] ॥

९४—अहेगे[8] पस्स दीणे उप्पइए पडिवयमाणे[9] ।

९५—वसट्टा कायरा जणा लूसगा भवंति ।

१—° मंसीति (ख, ग, च) ।
२—उदासीणा (छ) ।
३—हयमाणे (छ) ।
४—मण्णमाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५—एवमेगे विदित्ता (क) ; एव एगे विभत्ता (चूपा), ° विदित्ता (छ) ।
६—° माणे (क, घ, च, छ) ;
७—नागार्जुनीया :—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसूया अविहिंसगा सुव्वया दता परदत्तभोइणो पावं कम्म न करिस्सामो समुट्ठाए (चू, वृ) ।
८—× (क, ख, ग, च, छ, वृ) ।
९—पडियमाणे (च, छ) ।

९६–अहमेगेसिं सिलोए[1] पावए भवइ, "से समण-विब्भंते समण-विब्भंते"[2] ।

९७–पासहे'गे[3] समन्नागएहिं असमण्णागए[4], णममाणेहिं अणममाणे,
विरतेहिं अविरते, दविएहिं अदविए ।

९८–अभिसमेच्चा पंडिए मेहावी णिट्ठियट्ठे वीरे आगमेणं सया परक्कमेज्जासि[5] । —त्ति बेमि।

पंचमो उद्देसो

९९–से गिहेसु वा गिहंतरेसु वा, गामेसु वा गामंतरेसु वा, नगरेसु वा नगरंतरेसु वा, जणवएसु वा जणवयंतरेसु[6] वा, संते'गइया जणा लूसगा भवंति, अदुवा—
फासा फुसंति ते फासे, पुट्ठो वीरो[7] ऽहियासए ।

१००–ओए समिय-दंसणे ।

१०१–दयं लोगस्स जाणित्ता, पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं,
आइक्खे[8] विभए किट्टे वेयवी ।

१–लोए (च, छ) ।
२–समण वितते (क, ङ, चू), समण भवित्ता समण विब्भते (ख, ग), समणे भविन्ना विब्भते विब्भते (छ) ।
३–पास एगे, (क), पासवेगे (च) ।
४–सह असमण्णागए (ख, ग, छ) ।
५–सव्वओ परिव्वएज्जासि (चू) ।
६–जणवयतरेसु वा जाव रायहाणी सु वा रायहाणी अतरेसु वा गामणयरंतरे वा गाम जणवयतरे वा णगरजणवयतरे वा जाव गामरायहाणी अंतरे वा उज्जाणे वा उज्जाणतरे वा विहारभूमी गयस्स वा गच्छतस्स वा अद्धाणपडिवन्नस्स अच्छंतस्स वा जाव काउसग्ग ठाणं वा ठियस्स (चू, वृ) ।
७–धीरो (च) ।
८–नागार्जुनीया :—'जे खलु समणे बहुस्सुए बब्भागमे आहरणहेउकुसले धम्मकहालद्धि-संपन्ने खेत्तं कालं पुरिसं समासज्ज केऽयं पुरिसे कं वा दरिसणमभिसपन्नो ? एवं गुण जाइए पभू धम्मस्स आघवितए' ।

१०२–से उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु[1] वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—
संतिं, विरतिं, उवसमं, णिव्वाणं[2], सोयवियं[3], अज्जवियं, मद्दवियं, लाघवियं, अणइवत्तियं[4]।

१०३–सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खेज्जा।

१०४–अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खमाणे—
णो अत्ताणं आसाएज्जा, णो परं आसाएज्जा,
णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाएज्जा।

१०५–से अणासादए अणासादमाणे वज्झमाणाणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं, जहा से दीवे असंदीणे,
एवं से—भवइ सरणं महामुणी।

१०६–एवं से उट्ठिए ठियप्पा[5], अणिहे अचले चले
अबहि-लेस्से परिव्वए।

१०७–संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिणिव्वुडे।

१०८–तम्हा संगं त्ति पासह।

१०९–गंथेहिं गढिया[6] णरा,
विसण्णा काम-विप्पिया[7]।

११०–'तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसेज्जा'[8]।

१—अणुट्ठिएसु वा जाव सोवट्ठिएसु वा (चू)।
२—णेव्वाण (क, च)।
३—सोय (ख, ग)।
४—अणतिवातिय (चू)।
५—उट्ठितप्पा (चू, च)।
६—गहिता (छ)।
७—कामक्कंता (क, ख, ग, च, छ, वृ)।
८—जंसि इमे लूसिणो णो परिवित्तसति (चू), तम्हा लूहाओ णो परिवित्त सिज्जा (चूपा)।

१११–जस्सि'मे आरंभा सव्वतो सव्वत्ताए सुपरिण्णाया भवंति, 'जेसि'मे लूसिणो णो परिवित्तसंति'[1], से वंता कोहं च माणं च मायं च लोभं च।

११२–एस तुट्टे[2] वियाहिते—त्ति बेमि।

११३–कायस्स विओवाए[3], एस संगाम-सीसे वियाहिए।
से हु पारंगमे मुणी, अविहम्ममाणे[4] फलगावयट्ठि[5],
कालोवणीते कंखेज्जकालं, जाव सरीर-भेउ।

—त्ति बेमि।

१—× (चू) ; जस्सि ·(च, छ)।
२—तिउट्टे (चू)।
३—विवाघाए (ख, ग), विघाए (छ), विवायाए (च), व्याघात (विवाघाए) (वृ)।
४—° हन्न ° (क)।
५—° तट्ठि (क, छ)।

अट्ठमं अज्झयणं

विमोक्खो

पढमो उद्देसो

१–से बेमि—समणुन्नस्स वा असमणुन्नस्स[1] वा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-पुंछणं वा, णो पाएज्जा, णो णिमंतेज्जा, णो कुज्जा वेयावडियं-परं आढायमाणे'—त्ति बेमि ।

२–धुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-पुंछणं वा, लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, पंथं विउत्ता[2] विउकम्म विभत्तं धम्मं झोसेमाणे[3] समेमाणे पलेमाणे[4], पाएज्ज वा, णिमंतेज्ज वा, कुज्जा वेयावडियं-परं अणाढायमाणे,—त्ति बेमि ।

३–इहमेगेसिं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवति ।
ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणा 'हण पाणे' घायमाणा, हणतो यावि समणुजाणमाणा ।

४–अदुवा अदिन्नमाइयंति ।

१—अमणु° (क, ख, ग) ।
२—वियत्ता (क, छ) ; विवत्ताण (ख, ग) . विइयत्ता, (च) ;
विवत्तण (शू) (चिन्तनीय) ।
३—जोसे° (च) ।
४—मलेमाणा (घ) ; बलेमाणे (च) ; चलेमाणे (छ) ; मालेमाणा (चू) ।

५—अदुवा वायाओ विउंजंति[1], तंजहा—
अत्थि लोए, णत्थि लोए,
धुवे लोए, अधुवे लोए,
साइए[2] लोए, अणाइए[3] लोए,
स-पज्जवसिते लोए, अपज्जवसिते लोए,
सुकडे'त्ति वा दुक्कडे'त्ति वा,
कल्लाणे'त्ति वा पावे'त्ति[4] वा,
साहु'त्ति वा असाहु'त्ति वा,
सिद्धीति वा, असिद्धीति वा,
णिरए'त्ति वा, अणिरए'त्ति वा ।

६—जमिणं विप्पडिवण्णा मामगं धम्मं पन्नवेमाणा ।

७—एत्थवि जाणह[5] अकस्मात्[6] ।

८—'एवं तेसिं णो सुअक्खाए, णो सुपन्नत्ते धम्मे भवति'[7] ।

९—से जहे'यं भगवया पवेदितं आसु-पण्णेण जाणया पासया ।

१०—अदुवा गुत्ती बओ-गोयरस्स—त्ति बेमि ।

११—सव्वत्थ सम्मयं पावं ।

१२—तमेव उवाइकम्म ।

१३—एस महं विवेगे वियाहिते ।

१४—गामे वा अदुवा रण्णे, णेव गामे णेव रण्णे, धम्ममायाणह—
पवेदितं माहणेण मईमया ।

१—विप्पउजति (क, ख, ग, च, छ) ।
२—साइ (घ) ।
३—अणाइ (घ) ।
४—पावइ (क); पावए (घ, च, छ) ।
५—जाण (क, च), जाणे (घ) ।
६—अकम्मा (चू) ।
७—न एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ (चू) ।

१५–जामा तिण्णि उदाहिया[1], जेसु इमे आरिया[2] संबुज्झमाणा समुट्ठिया।

१६–जे णिव्वुया[3], पावेहिं कम्मेहिं, अणियाणा ते वियाहिया।

१७–उड्ढं अहं तिरियं दिसासु, सव्वतो सव्वावंति च णं पडियक्कं[4] जीवेहिं[5] कम्म-समारभे णं।

१८–तं परिण्णाय मेहावी—णेव सयं एतेहिं काएहि दंडं समारंभेज्जा, णेव'ण्णेहिं एतेहि काएहि दंडं समारंभावेज्जा, ने'वन्ने एतेहिं काएहि दंडं समारंभंते वि समणुजाणेज्जा।

१९–जेवन्ने एतेहि काएहिं दंडं समारंभंति, तेसिं पि वयं लज्जामो।

२०–तं परिण्णाय मेहावी–तं वा दंडं, अण्णं वा दंडं, णो दंड-भी दंडं समारंभेज्जासि।

—त्ति बेमि।

बीओ उद्देसो

२१–से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा, सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरि-गुहंसि वा, रुक्ख-मूलसि वा, कुंभारायाणंसि वा, हुरत्था वा कहिं चि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती बूया—आउसंतो समणा! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-

---

१—उदाहडा (घ, छ, चू), उदाहया (ख, ग)।
२—आयरिया (घ, छ)।
३—निव्वुडा (चू)।
४—पाडेक्क (क) ; पाडियक्क (घ, चू)।
५— दड समारभते (चू)।

पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं[1] अभिहडं आहट्टु[2] `चेतेमि[3], आवसहं[4] वा समुस्सिणोमि ।

से भुंजह वसह ।

२२—आउसंतो समणा भिक्खू तं गाहावतिं समणसं सवयसं पडियाइक्खे—

आउसंतो गाहावती ! णो खलु ते वयणं आढामि, णो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि ।

से विरतो आउसो गाहावती ! एयस्स अकरणाए ।

२३—से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, ° चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा,

सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरि-गुहंसि वा, रुक्ख-मूलंसि वा, कुंभारायतणंसि वा °, हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती आयगयाए पेहाए, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं,

---

१— ° मिट्ठ (ख, ग, घ) ।

२—आफुड (च) ।

३—वेतेमि'त्ति केयि भणति करेमि, त तु ण युज्जति (चू) ।

४—आवसधं (ख, ग) . आवसय (छ) ।

अणिसट्ठं, अभिहडं आहट्टु चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति[1], तं भिक्खुं परिघासेउं।

२४—तं च भिक्खू जाणेज्जा—सह-सम्मइयाए[2], पर-वागरणेणं, अण्णेसिं वा सोच्चा[3]—अयं खलु गाहावई मम अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, °समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु° चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति[4]। तं च भिक्खू संपडिलेहाए[5] आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए[6] —त्ति बेमि।

२५—भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे इमे आहच्च गंथा फुसंति—
"से हंता हणह, खणह, छिंदह, दहह पचह, आलुंपह, विलुंपह, सहसाकारेह[7], विप्परामुसह"—ते फासे 'धीरो पुट्ठो'[8] अहियासए।

२६—अदुवा आयार-गोयरमाइक्खे।
तक्कियाणमणेलिसं।

२७—अदुवा वइ-गुत्तीए[9] गोयरस्स अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए आयगुत्ते।

१—°स्सिणोति (क)।
२—सम्मु° (क, घ, च, छ)।
३—अंतिए सोच्चा (ख)।
४—°स्सिणोति (क)।
५—पडिलेहाए (ख, ग, घ)।
६—°सेवणयाए (घ)।
७—सहसक्कारेह (क)।
८—पुट्ठो धीरो (ख, ग, घ); पुट्ठो वीरो (घ); वीरो पुट्ठो (च)।
९—°गुत्तीओ (ख, ग, घ)।

२८–बुद्धेहिं एयं पवेदितं—

से समणुन्ने असमणुन्नस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, नो पाएज्जा, नो निमंतेज्जा, नो कुज्जा वेयावडियं-परं आढायमाणे[1]—त्ति बेमि।

२९–धम्ममायाणह, पवेइयं माहणेण मतिमया–

समणुन्ने समणुन्नस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाएज्जा, णिमंतेज्जा, कुज्जा वेयावडियं-परं आढायमाणे[2] –त्ति बेमि।

तइओ उद्देसो

३०–मज्झिमेणं[3] वयसा वि[4] एगे, संबुज्झमाणा समुट्ठिता।

३१–'सोच्चा वई मेहावी'[5], पंडियाणं निसामिया।

३२–समियाए[6] धम्मे, आरिएहिं[7] पवेदिते।

३३–ते अणवकंखमाणा अणतिवाएमाणा अपरिग्गहमाणा णो 'परिग्गहावंती सव्वावंती'[8] च णं लोगंसि।

३४–णिहाय दंडं पाणेहिं,

पावं कम्मं अकुव्वमाणे; एस महं अगंथे वियाहिए।

१— °मीणे (क, च)।

२— °मीणे (क, च)।

३—मज्झ०(ख)।

४—मिह एगे (घ)।

५—सोच्चा मेहावी वयण (क, ख ग, घ, छ), सोच्चा मेहावी ण वयणं (चू)।

६—समयाए (क)।

७—आयरिएहिं (घ, छ)।

८— °वति सव्वावति (ख, ग, घ, च, छ)।

३५—ओए जुतिमस्स[1] खेयन्ने उववायं[2] चवणं[3] च णच्चा ।

३६—आहारोवचया देहा, परिसह-पभंगुरा ।

३७—पासहेगे सव्विंदिएहिं परिगिलायमाणेहिं ।

३८—ओए दयं दयइ ।

३९—जे सन्निहाण[4]-सत्थस्स खेयन्ने, से भिक्खू कालण्णे बलण्णे मायण्णे खणण्णे विणयण्णे समयण्णे परिग्गहं अममायमाणे कालेणुट्ठाई अपडिन्ने ।

४०—दुहओ छेत्ता नियाइ ।

४१—तं भिक्खुं सीयफास-परिवेवमाण गायं उवसंकमित्तु गाहावई बूया—

आउसंतो समणा ! णो[5] खलु ते गाम-धम्मा उव्वाहंति ?

आउसंतो गाहावई ! णो[6] खलु मम गाम-धम्मा उव्वाहंति । सीयफासं[7] णो खलु संचाएमि अहियासित्तए ।

णो खलु मे कप्पति-अगणि-कायं उज्जालेत्तए वा पज्जालेत्तए वा, कायं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा अण्णेसिं वा वयणाओ ।

४२—सिया से एवं वदंतस्स परो अगणि-कायं उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,

तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए

—त्ति बेमि ।

१—जुइमंतस्स (ख, ग, च) ; अहवा जुत्तिम (चू) ।
२—ओवाय (क, घ) ।
३—चयणं (घ, च) ।
४—संनिहाणस्स (चू) ।
५—× (चू) ।
६—अप्पं (चू) ।
७—°फासं च (क, ख, च) ।

चउत्थो उद्देसो

४३–जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिते[1] पाय-चउत्थेहिं, तस्स णं णो एवं भवति—चउत्थं वत्थं जाइस्सामि ।

४४–से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा ।

४५–अहा-परिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ।

४६–णो धोएज्जा[2], णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा ।

४७–अपलिउंचमाणे[3], गामंतरेसु ।

४८–ओमचेलिए[4] ।

४९–एयं खु वत्थ-धारिस्स सामग्गियं ।

५०–अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने, अहा-परिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहा-परिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता—

५१–अदुवा संतरुत्तरे (अदुवा ओमचेले ?) ।

५२–अदुवा एग-साडे ।

५३–'अदुवा अचेले'[5] ।

५४–लाघवियं आगममाणे ।

५५–तवे से अभिसमन्नागए भवति ।

५६–जमेयं[6] भगवया पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए[7] सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१—°उसिते (घ, छ) ।
२—धावेज्जा (ग) ; धाएज्जा (घ) ।
३—°ओवमाणे (ख, च, छ) ।
४—अवम° (क, ख, ग) ।
५—× (चू) ।
६—जहेयं (घ) ।
७—सव्वयाए (घ) ; सव्वताए (च) ; आवट्टे (ख, ग) ।

५७–जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति–'पुट्ठो खलु अहमंसि', नालमहमंसि सीय-फासं अहियासित्तए,

से वसुमं सव्व-समन्नागय-पन्नाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणाए आउट्टे।

५८–तवस्सिणो हु तं सेयं, जमेगे[1] विहमाइए[2],

५९–तत्थावि तस्स काल-परियाए,

६०–से वि तत्थ विअंति-कारिए।

६१–इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं[3], आणुगामियं

—त्ति बेमि।

पंचमो उद्देसो

६२–जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं परिवुसिते पायतइएहिं, तस्सणं णो एवं भवति—

तइयं वत्थं जाइस्सामि।

६३–से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा।

६४– ° अहा परिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा।

६५–णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा।

६६–अपलिउंचमाणे गामंतरेसु।

६७–ओमचेलिए °।

६८–एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं।

१—जसेगे (क, घ, च)।
२—वेहसादिए (छ)।
३—निस्सेसं (ख, ग, घ, च); निस्सेसिय (च)।

६९—अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने, अहा परिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहा परिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता।

७०—अदुवा एगसाडे।

७१—अदुवा अचेले।

७२—लाघवियं आगममाणे।

७३—तवे से अभिसमण्णागए भवति।

७४—जमेयं[1] भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया।

७५—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—पुट्ठो अबलो अहमंसि, नालमहमंसि गिहंतर-संकमणं 'भिक्खायरिय-गमणाए'[2] *'से एवं वदंतस्स परो अभिहडं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा,

से पुव्वामेव[3] आलोएज्जा आउसंतो! गाहावती! णो खलु मे कप्पइ 'अभिहडे असणेण'[4] वा पाणेणवा खाइमेण वा साइमेण वा भोत्तए[5] वा, पायए[6] वा, अन्ने वा एयप्पगारे[7]*!'[8]

१—जहेय (घ, छ)।
२—भिक्खायरिय-गमणाए (क, घ, च, छ)।
३—पुव्व ० (ख, ग, घ)।
४—अभिहडं असण (ख, ग, च)।
५—भोइत्तए (ख, ग)।
६—पायत्तए (ख), पित्तए (घ), पातुए (छ); पात्तए (च)।
७—तहप्पगारे (छ)।
८—*. त भिक्खु केइ गाहावई! उवसंकमित्तु बूया—आउसतो समणा! अहन्नं तव अट्ठाए असण वा (४) अभिहड दलामि, से पुव्वामेव जाणेज्जा—आउसंतो-गाहावई! जन्न तुम मम अट्ठाए असणं (४) अभिहडं चेतेसि, णो य खलु मे कप्पइ एयप्पगारं असण वा (४) भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारे। * (वृपा)।

७६–जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे—

अहं च खलु पडिण्णत्तो अपडिण्णत्तेहिं, गिलाणो अगिलाणेहिं, अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं सातिज्जिस्सामि। अहं वा वि खलु अपडिण्णत्तो पडिण्णत्तस्स, अगिलाणो गिलाणस्स, अभिकंख साहम्मिअस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए[1]।

७७–आहट्टु पइण्णं[2] आणक्खेस्सामि,[3] आहडं च सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि,

आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि।

७८–*लाघवियं आगममाणे।

७९–तवे से अभिसमण्णागए भवति।

८०–जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए सम्मत्त मेव समभिजाणिया*।[4]

८१–एवं से अहा—किट्टियमेव धम्मं समहिजाणमाणे, संते विरते सुसमाहित-लेसे।

८२–तत्थावि तस्स काल-परियाए।

८३–से तत्थ विअंति-कारए।

८४–इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं[5]। —त्ति बेमि।

१—करणयाए (क, च)।

२—चूर्णिवृत्त्यनुसारेण स्वीकृतोऽत्र पाठ (सर्वत्र)।

३—आणिक्खि° (ख, ग); अणिक्खि° (चू)।

४—चिन्हान्तर्वर्ती पाठः चूर्णौ वृत्तौ च समस्ति, प्रतीषु नोपलभ्यते। चूर्ण्यनुसारेणाऽयं पाठः स्वीकृतः, वृत्तौ समभिजाणमाणे एतत्पश्चात् स्वीकृतोस्ति।

५—अणु° (क. ख, ग, च, छ)।

छट्ठो उद्देसो

८५—जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिते पायबिइएणं, तस्स णो एवं भवइ—
विइयं वत्थं जाइस्सामि ।
८६—से अहेसणिज्जं वत्थं जाएज्जा ।
८७—अहापरिग्गहियं वत्थं धारेज्जा ।
८८—° णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोयरत्तं वत्थं धारेज्जा ।
८९—अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ।
९०—ओमचेलिए ।
९१—एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं ।
९२—अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते °, गिम्हे पडिवण्णे, अहा-परिजुन्नं वत्थं परिट्ठवेज्जा, अहा-परिजुन्नं वत्थं परिट्ठवेत्ता—
९३—'अदुवा अचेले'[1] ।
९४—लाघवियं आगममाणे ।
९५—° तवे से अभिसमण्णागए भवति ।
९६—जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए ° सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।
९७—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—एगो अहमंसि, न मे अत्थि कोइ, न याऽहमवि कस्सइ[2], एवं से एगागिणमेव[3] अप्पाणं समभिजाणिज्जा ।
९८—लाघवियं आगममाणे ।

१—अदुवा एगसडे अदुवा अचेले (ख, ग, घ, च, छ, ञ्ज) ।
२—कस्सवि (घ) ।
३—एगाणियं ° (च, चू) ।

९९–तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।

१००–जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१०१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेमाणे णो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं संचारेज्जा[1] आसाएमाणे[2],

दाहिणाओ वा हणुयाओ वामं हणुयं णो संचारेज्जा आसाएमाणे, से अणासायमाणे ।

१०२–लाघवियं आगममाणे,

१०३–तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।

१०४–जमेयं भगवता पवेइयं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१०५–जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—

से 'गिलामि च'[3] खलु अहं इमंसि समए[4], इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा, आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेत्ता,

कसाए पयणुए किच्चा, समाहियच्चे फलगावयट्ठी,

उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे ।

१०६–अणुपविसित्ता गामं वा, णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा, मडंबं[5] वा, पट्टणं वा, दोण-मुहं वा, आगरं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहाणिं वा,

---

१—साहरेज्जा (चू) ।

२—आढायमाणे (चूपा, वृपा) ।

३—गिलाणा मिव (ख, ग) ; गिलाणमिव (छ, चू) ।

४—समये णो संचाएमि (ख, ग) ; न शक्नोमि (वृ) ।

५—मडवं (ग) ।

'तणाइं जाएज्जा'[1], तणाइं जाएत्ता, से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा; एगंतमवक्कमेत्ता,
अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए, 'पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता'[2] एत्थ वि समए इत्तरियं कुज्जा।

१०७–तं सच्चं सच्चावादी[3] ओए तिण्णे छिण्ण-कहंकहे आतीतट्ठे[4] अणातीते चेच्चाण भेउरं कायं, संविहूणिय विरूव-रूवे परिसहोवसग्गे अस्सिं विसंभणयाए भेरव मणुचिण्णे।

१०८–तत्थावि तस्स काल-परियाए।

१०९–से[5] तत्थ विअंति-कारए।

११०–इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं।

—त्ति बेमि।

सत्तमो उद्देसो

१११–जे भिक्खू अचेले परिवुसिते, 'तस्स णं'[6] एवं भवति—
चाएमि अहं तण-फासं अहियासित्तए, सीय-फासं अहियासित्तए, तेउ-फासं अहियासित्तए, दंस-मसग-फासं अहियासित्तए, एगतरे अन्नतरे विरूव-रूवे फासे

१–× (क, ग, घ, च)।
२–पडिलेहित्ता संथारगं संथरेइ संथारगं संथरेत्ता (चू)।
३–सच्चवादी (ख, ग, च, छ)।
४–अइअट्ठे (क, घ, च)।
५–से वि (ख, ग, च, छ)।
६–तस्स णं भिक्खुस्स (वृ)।

अहियासित्तए, हिरिपडिच्छादणं 'चऽहं'[1] णो संचाएमि अहियासित्तए, एवं से कप्पति कडि-बंधणं धारित्तए।

११२–अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसंति, सीय-फासा फुसंति, तेउ-फासा फुसंति, दंस-मसग-फासा फुसंति, एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेति अचेले।

११३–लाघवियं आगममाणे।

११४–तवे से अभिसमण्णागए भवति।

११५–जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया।

११६–जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलइस्सामि[2], आहडं च सातिज्जिस्सामि।

११७–जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलइस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि।

११८–जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु 'अन्नेसिं भिक्खूणं'[3] असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु नो दलइस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि।

११९–जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु नो दलइस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि।

१—च (ख, ग, घ, च)।
२—दाहामि (चू)।
३—× (क, ख, ग, घ, च, छ)।

१२०–अहं च खलु तेण अहाइरित्तेणं[1] अहेसणिज्जेणं अहा-परिग्गहिएणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए।

१२१–अहं वावि तेण अहातिरित्तेणं अहेसणिज्जेणं अहा-परिग्गहिएणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं सातिज्जिस्सामि।

१२२–लाघवियं आगममाणे।

१२३–तवे से अभिसमण्णागए भवति।

१२४–जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया।

१२५–जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—से गिलामि[2] च खलु अहं इमम्मि समए, इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए,
से आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा, आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेत्ता,
कसाए पयणुए किच्चा समाहिअच्चे फलगावयट्ठी,
उट्ठाय भिक्खू अभिणिव्वुडच्चे।

१२६–अणुपविसित्ता गामं वा, णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोण-मुहं वा, आगरं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहाणिं वा,
तणाइं जाएज्जा, तणाइं जाएत्ता से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता,
अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए, पडिलेहिय-

---

१–आहा° (क, च, छ)।
२–गिलाएमि (ख, छ)।

पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता एत्थ वि समए कायं च जोगं च, इरियं च, पच्चक्खाएज्जा।

१२७–'तं सच्चं सच्चावादी ओए तिण्णे छिन्न-कहंकहे आतीतट्ठे अणातीते चेच्चाण भेउरं कायं, संविहूणिय विरूव-रूवे परिसहोवसग्गे अस्सिं विसंभणयाए भेरव मणुचिण्णे।

१२८–तत्थावि तस्स काल-परियाए।

१२९–से तत्थ विअंति-कारए।

१३०–इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं'[1]।

—त्ति बेमि।

अट्ठमो उद्देसो

१–अणुपुव्वेण विमोहाइं, जाइं धीरा[2] समासज्ज।
वसुमंतो[3] मइमंतो, सव्वं णच्चा अणेलिसं॥

२–दुविहं पि विदित्ताणं[4], बुद्धा धम्मस्स पारगा।
अणुपुव्वीए[5] संखाए, आरंभाओ[6] तिउट्टति॥

३–कसाए पयणुए किच्चा, अप्पाहारो तितिक्खए।
अह भिक्खू गिलाएज्जा, आहारस्सेव अंतियं[7]॥

१–नागार्जुनीया —कट्ठमिव आतट्ठे तत्थ सचतित सज्जीकरेत्ता उ पतिण्णे छिन्नकह कहेज्जा जाव आणुगामियं (चू)।
२–वीरा (क, च)।
३–वुसिमतो (चू)।
४–विगिंचित्ता (चूपा)।
५–°पुव्वीइ (ग)।
६–कम्मुणाओ (चूपा, वृपा)।
७–कारणा (चू)।

४–जीवियं णाभिकंखेज्जा, मरणं णोवि पत्थए।
दुहतो वि ण सज्जेज्जा, जीविते मरणे तहा ॥

५–मज्झत्थो णिज्जरा-पेही, समाहि मणुपालए।
अंतो बहिं विउसिज्ज, अज्झत्थं सुद्ध मेसए ॥

६–जं किंचुवक्कमं[1] जाणे, आउ-क्खेमस्स अप्पणो।
तस्सेव अंतरद्धाए, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिए ॥

७–गामे वा अदुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया।
अप्पपाणं तु विन्नाय[2], तणाइं संथरे मुणी ॥

८–अणाहारो तुअट्टेज्जा[3], पुट्ठो तत्थ हियासए।
णातिवेलं उवचरे, माणुस्सेहिं विपुट्ठओ[4] ॥

९–संसप्पगा य जे पाणा, जे य उड्ढमहेचरा।
भुंजंति मंस-सोणियं, ण छणे न पमज्जए ॥

१०–पाणा देहं विहिंसंति, ठाणाओ ण विउब्भमे[5]।
'आसवेहिं विवित्तेहिं'[6], तिप्पमाणेऽहियासए[7] ॥

११–गंथेहिं विवित्तेहिं[8], आउ-कालस्स पारए।
पग्गहियतरगं[9] चेयं, दवियस्स वियाणतो[10] ॥

१२–अयं से अवरे धम्मे, णायपुत्तेण साहिए।
आयवज्जं पडीयारं, विजहिज्जा तिहा तिहा ॥

१–किंचिवुवक्कम (च)।
२–वियाणित्ता (चू)।
३–णिवज्जेज्जा (चू, वृ)।
४–°पुट्ठव (क, च, छ), °पुट्ठए (ख, ग)।
५–वि उब्भमे (क, ख, ग, घ, वृ)।
६–अवसव्वेहिं विचित्तेहिं (चू)।
७–तप्प° (घ)।
८–विचित्तेहिं (क, ख, घ, च, छ, चू)।
९–°तराग (क), °तर (चू)।
१०–सुयाहितो (चू)।

१३–हरिएसु ण णिवज्जेज्जा, थंडिलं 'मुणिआ सए'[1] ।
विउसिज्ज[2] अणाहारो, पुट्ठो तत्थ हियासए ॥

१४–इंदिएहिं गिलायंते, समियं साहरे[3] मुणी ।
तहावि से अगरिहे[4], अचले जे समाहिए ॥

१५–अभिक्कमे पडिक्कमे, संकुचए पसारए ।
काय-साहारणट्ठाए[5], एत्थं[6] वावि अचेयणे ॥

१६–परिक्कमे परिकिलंते, अदुवा चिट्ठे अहायते ।
ठाणेण परिकिलंते, णिसिएज्जा य अंतसो ॥

१७–'आसीणे णेलिसं'[7] मरणं, इंदियाणि समीरए ।
कोलावासं समासज्ज, वितहं पाउरेसए ॥

१८–जओ वज्जं समुप्पज्जे, ण तत्थ अवलंबए ।
ततो उक्कसे[8] अप्पाणं, सव्वे फासेऽहियासए ॥

१९–अयं चायततरे[9] सिया, जो एवं अणुपालए ।
सव्व-गायणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे ॥

२०–अयं से उत्तमे धम्मे, पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे ।
अचिरं पडिलेहित्ता, विहरे चिट्ठ माहणे ॥

१—मुणि आसए (च, चू)।
२—वियो° (ख, ग, च, छ)।
३—आहरे (ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
४—अगरहे (क, ख, ग, घ)।
५—साहरण° (क, ग घ); सधारण (चू), सहारण (च)।
६—इत्थ (घ)।
७—आसीण मणेलिस (क, घ, च), उदासीणो अणे लिसो (चू)।
८—उवक्कसे (ग, घ, छ)।
९—चायतरे (ख), चाततरे (चू, क); आयरे द्रढग्गाहतरे धम्मे (चूपा); यदि वा°''आत्ततर· (वृ)।

२१–अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पगं।
वोसिरे सव्वसो कायं, 'ण मे देहे परीसहा'[1] ॥

२२–जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा 'य संखाय'[2] ।
संवुडे देह-भेयाए, इति पण्णे हियासए ॥

२३–भेउरेसु न रज्जेज्जा, कामेसु बहुतरेसु[3] वि।
इच्छा-लोभं[4] ण सेवेज्जा, सुहुमं[5] वन्नं सपेहिया ॥

२४–सासएहिं णिमंतेज्जा, 'दिव्वं मायं'[6] ण सद्दहे।
तं पडिबुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विधूणिया ॥

२५–सव्वट्ठेहिं[7] अमुच्छिए, आउ-कालस्स पारए।
तितिक्खं परमं णच्चा, विमोहन्नतरं हितं ॥

—त्ति बेमि।

*

१—न मे देह परीसहा, यदि वा—न मे देहे परीमहा (चू, वृ)।
२—तिति संखाते (क), इति सखया (ता) (ग, घ, छ) - इति संखाय (च, वृ)।
३—बहुलेसु (चूपा, वृपा)।
४—इच्छ° (क)।
५—धुव (धुव°) (क, ख, ग, घ, च छ, चूपा वृपा)।
६—दिव्वमाय (ख, घ, च)।
७—सव्वत्थेहिं (चू)।

नवमं अज्झयणं

उवहाण-सुयं

पढमो उद्देसो

१—अहासुयं वदिस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाय।
संखाए तंसि हेमंते, अहुणा पव्वइए रीयत्था[1] ॥
२—णो चेविमेण वत्थेण, पिहिस्सामि तंसि हेमंते।
से पारए आवकहाए[2], एयं खु अणुधम्मियं[3] तस्स ॥
३—चत्तारि साहिए मासे, बहवे पाण-जाइया[4] आगम्म।
अभिरुज्झकायं[5] विहरिंसु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु ॥
४—संवच्छरं साहियं मासं, जं ण रिक्कासि वत्थगं भगवं।
अचेलए ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थमणगारे ॥
५—अदु पोरिसिं तिरियं-भित्तिं, चक्खुमासज्ज अंतसो झाइ।
अह चक्खु-भीया[6] सहिया, त "हंता हंता" बहवे कंदिंसु ॥
६—सयणेहिं 'वितिमिस्सेहिं'[7], इत्थीओ तत्थ से परिण्णाय।
सागारियं[8] ण सेवे, इति से सयं पवेसिया झाति ॥

१—रीइत्था (क, चू), रीयित्था (च); रीएत्था (ग)।
२—आवकह (घ)।
३—आणु° (छ)।
४—°जाती (क)।
५—आरुज्झ° (चू)।
६—°भीय (ग, च, छ)।
७—विमिस्सेहिं (घ)।
८—साकारियं (घ, छ)।

७–जे के इमे अगारत्था, मीसी-भावं पहाय से झाति ।
पुट्ठो[1] वि णाभिभासिंसु, गच्छति णाइवत्तई अंजू ॥
८–णो सुगर मेत मेगेसिं, णाभिभासे अभिवायमाणे ।
हयपुव्वो तत्थ दंडेहि, लूसियपुव्वो अप्प-पुन्नेहि ॥
९–फरुसाइं दुत्तितिक्खाइं, अतिअच्च मुणी परक्कममाणे ।
आघाय-णट्ट-गीताइं , दंड-जुद्धाइं मुट्ठि-जुद्धाइं ॥
१०–गढिए मिहो[2]-कहासु[3], समयंमि[4] णायसुए[5] विसोगे अदक्खू ।
एताइं सो उरालाइं, गच्छइ णायपुत्ते[6] असरणाए ॥
११–अविसाहिए दुवे वासे, सीतोदं अभोच्चा णिक्खंते ।
एगत्त-गए[7] पिहियच्चे, से अहिन्नाय-दंसणे संते ॥
१२–पुढविं च आउकायं[8], तेउ-कायं च वाउ-कायं च ।
पणगाइं[9] बीय-हरियाइं, तस-कायं च सव्वसो णच्चा ॥
१३–एयाइं संति पडिलेहे, चित्तमंताइं से अभिन्नाय ।
परिवज्जिया[10] ण विहरित्था, इति संखाए से महावीरे ॥
१४–अदु[11] थावरा तसत्ताए, तस-जीवाय थावरत्ताए ।
अदु सव्व-जोणिया सत्ता, कम्मुणा[12] कप्पिया पुढो बाला ॥

१—नागार्जुनीया —पुट्ठो व मो अपुट्ठो व, णो अणुन्नाइ पावग भगव ।
पुट्ठेव से अपुट्ठे वा ° (चू) ।
२—मिथ्रु ° (च) , मिहु ° (छ) ।
३— ° कहासु (क, घ) ।
४—समतोमि (चू) ।
५— ° पुत्ते (ख, ग, वृ) ।
६—णाइ ° (छ) ।
७—एगत्ति ° (चू) ।
८— ° काय च (क, ग, च, छ) ।
९—पणगाय (ख) ।
१०— ° वज्जिया (ख, ग) ।
११—अदुवा (ख, ग, च, छ) ; अदुव (क) ।
१२—कम्मणा (च) ।

१५–भगवं च एवमन्नेसि[1], सोवहिए हु लुप्पती बाले।
कम्मं च सव्वसो णच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं॥

१६–दुविहं समिच्च मेहावी, किरिय मक्खाय' णेलिसिं[2] णाणी।
आयाण सोय मतिवाय-सोयं, जोगं च सव्वसो णच्चा॥

१७–अइवातियं[3] अणाउट्टिं, सयमन्नेसि अकरणयाए।
जस्सि'त्थिओ परिण्णाया, सव्वकम्मावहाओ से[4] अदक्खू॥

१८–अहाकडं[5] न से सेवे, सव्वसो कम्मुणा 'य अदक्खू'[6]।
जं किंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था॥

१९–णो सेवती य परवत्थं[7], पर-पाए वि से ण भुंजित्था।
परिवज्जियाण ओमाणं, गच्छति संखडिं असरणाए[8]॥

२०–मायन्ने असण-पाणस्स, णाणुगिद्धे रसेसु अपडिण्णे।
अच्छिंपि णो पमज्जिया[9] णोवि य कंडूयये मुणी गायं॥

२१–अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पं पिट्ठओ उपेहाए[10]।
अप्पं वुइएऽपडिभाणी, पंथ-पेही चरे जयमाणे॥

२२–सिसिरंसि अद्ध-पडिवन्ने, तं वोसज्ज[11] वत्थ मणगारे।
पसारित्तु बाहुं परक्कमे, णो अवलंबिया ण कंधंसि[12]॥

१–एवमन्नेसिं (क, घ, च, छ, व), एवमणिसित्ता (चू)।
२–मणेलिसं (ख, ग)।
३–° वत्तिय (छ)।
४–X (क, घ, च, छ)।
५–आहा ° (च, छ)।
६–वध अदक्खू (क); अदक्खु (ख, ग, च), य दक्खु (घ)।
७–परं वत्थं (ख, ग)।
८–असरणयाए (घ, च)।
९–पमज्जिज्जा (ख)।
१०–व पेहाए (घ)।
११–वोसरिज्ज (घ, चू)।
१२–खधंमि (क, च)।

२३—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया।
बहुसो[1] अप्पडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति ॥
—त्ति बेमि।

बीओ उद्देसो

१—चरियासणाइं[2] सेज्जाओ, एगतियाओ जाओ वुइयाओ।
आइक्ख ताइं सयणासणाइं[3], जाइं सेवित्था से महावीरो ॥
२—आवेसण[4]-सभा-पवासु[5], पणिय-सालासु एगदा वासो।
अदुवा पलिय-ट्ठाणेसु, पलाल-पुंजेसु एगदा वासो ॥
३—आगंतारे आरामगारे, गामे[6] णगरे वि[7] एगदा वासो।
सुसाणे सुण्ण-गारे[8] वा, रुक्ख-मूले वि एगदा वासो ॥
४—एतेहिं मुणी सयणेहिं, समणे आसी[9] प-तेरस[10] वासे।
राइं दिवं पि जयमाणे, अप्पमत्ते समाहिए झाति ॥
५—'णिद्दं पि णो पगामाए, सेवइ[11] भगवं उट्ठाए'[12]।
जग्गावती[13] य अप्पाणं, ईसिं 'साई या'[14] सी अपडिन्ने ॥

१—अप्पडिन्नेण वीरेण (चू), बहुसो अप्पडिन्नेण (चूपा)।
२—अयं च श्लोक चिरतन टीकाकारेण न व्याख्यात (वृ)।
३—सयणाइ (क, च)।
४—आएसण° (चू)।
५—°सभप्पवासु (क, घ, छ)।
६—× (क, च); तह य (घ, छ, व)।
७—वा (क)।
८—सुण्णागारे (छ)।
९—वासी (छ)।
१०—प-तेलस (च)।
११—सेवइ य (ख, ग)।
१२—नागार्जुनीया —णिद्दावि ण प्पगामा, आसी तहेव उट्ठाए (चू)।
१३—जगा° (ख, छ)।
१४—साइ य (क, च, छ)।

६—संबुज्झमाणे पुणरवि, आसिसु[1] भगवं उट्ठाए।
णिक्खम्म एगया राओ, बहिं[2] चंकमिया[3] मुहुत्तागं॥

७—सयणेहिं तस्सुवसग्गा[4], भीमा आसी अणेग-रूवा य।
संसप्पगाय जे पाणा, अदुवा जे पक्खिणो उवचरंति॥

८—अदु[5] कुचरा उवचरंति, गाम-रक्खा य सत्ति-हत्था य।
अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगतिया पुरिसा य॥

९—इह-लोइयाइं पर-लोइयाइं, भीमाइं अणेग-रूवाइं।
अवि सुब्भि-दुब्भि-गंधाइं, सद्दाइं अणेग-रूवाइं॥

१०—अहियासए सया समिए[6], फासाइं विरूव-रूवाइं।
अरइं रइं अभिभूय, रीयई माहणे अबहु-वाई॥

११—स जणेहिं तत्थ पुच्छिसु, एग-चरा वि एगदा राओ।
अव्वाहिए कसाइत्था, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने॥

१२—अय मंतरंसि को एत्थ, अहमंसि त्ति भिक्खू आहट्टु।
अय[7] मुत्तमे से धम्मे, तुसिणीए सकसाइए झाति॥

१३—जंसिप्पेगे पवेयंति, सिसिरे मारुए पवायंते।
तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवाय मेसंति॥

१४—संघाडिओ पविसिस्सामो[8], एहा य समादहमाणा।
पिहिया वा सक्खामो[9], अतिदुक्खं हिमग-संफासा॥

१—न चिर जागित्ता ईसिं साइयासि (चू)।
२—बहिं (च)।
३—चंकमित्ता (छ)।
४—तत्थु° (क, ख, ग, घ, छ)।
५—अदुवा (क, छ)।
६—सहिए, इति मता भगव अणगारे (चूपा)।
७—को एत्थ सामी ठितो (चू)।
८—पहिरिस्सामो (चू)।
९—पस्सामो (चू)।

१५—तंसि भगवं अपडिण्णे, अहे वियडे अहियासए दविए।
णिक्खम्म एगदा राओ, चाएइ[1] भगवं समियाए ॥
१६—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया।
बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति ॥
—त्ति बेमि।

तइओ उद्देसो

१—तण-फासे[2] सीय-फासे य, तेउ-फासे य दंस-मसगे य।
अहियासए सया समिए, फासाइं विरूव-रूवाइं ॥
२—'अह दुच्चर'[3]-लाढ मचारी, वज्ज-भूमिं च सुब्भ(म्ह?)-भूमिं च।
पंतं सेज्जं सेविसु, आसणगाणि चेव पंताइं ॥
३—लाढेहिं तस्सुवसग्गा, बहवे जाणवया लूसिंसु।
अह लूह-देसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिंसु णिवतिंसु ॥
४—अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए दसमाणे[4]।
छुछुकारंति आहंसु, समणं कुक्कुरा डसंतु'त्ति ॥
५—एलिक्खए जणा भुज्जो, बहवे वज्ज-भूमि फरुसासी।
लट्ठिं गहाय णालीयं[5], समणा तत्थ एव विहरिंसु ॥
६—एवं पि तत्थ विहरंता, पुट्ठ-पुव्वा अहेसि सुणएहिं।
संलुंचमाणा सुणएहिं, दुच्चरगाणि[6] तत्थ लाढेहिं ॥

१–च ठाएइ (ग)—अशुद्ध प्रतिभाति।
२–फास (क, ख, ग, च)।
३–अवि दुच्चर (चू)।
४–भममाणे (चू). डसमाणे (च)।
५–नालियं (ख, ग, चू)।
६–दुच्चराणि (क, च, छ, वृ)।

७—निधाय दंडं पाणेहिं, तं कायं वोसज्ज मणगारे।
अह[1] गाम-कंटए भगवं, ते अहियासए अभिसमेच्चा॥
८—णाओ संगाम-सीसे वा, पारए तत्थ से महावीरे।
एवं पि तत्थ लाढेहिं, अलद्ध-पुव्वो वि एगया गामो॥
९—उवसंकमंत मपडिन्नं, गामंतियं पि अप्पत्तं।
पडिणिक्खमित्तु लूसिंसु[2], एत्तो[3] परं पलेहित्ति॥
१०—हय-पुव्वो तत्थ दंडेण, अदुवा मुट्ठिणा अदु कुंताइ-फलेणं[4]।
अदु लेलुणा कवालेणं, "हंता हंता" बहवे कंदिंसु॥
११—मंसाणि[5] छिन्न-पुव्वाइं, उट्ठुभंति[6] एगया कायं।
परीसहाइं लुंचिंसु, अहवा पंसुणा अवकिरिंसु[7]॥
१२-उच्चालइय णिहणिंसु, अदुवा आसणाओ खलइंसु।
वोसट्ठ-काए पणयासी, दुक्ख-सहे भगवं अपडिन्ने॥
१३—सूरो संगामसीसे वा, संवुडे तत्थ से महावीरे।
पडिसेवमाणे फरुसाइं, अचले भगवं रीइत्था॥
१४—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया।
बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति॥
—त्ति बेमि।

चउत्थो उद्देसो

१—ओमोदरियं चाएति, अपुट्ठे वि भगवं रोगेहिं।
पुट्ठे वा से अपुट्ठे वा, णो से सातिज्जति तेइच्छं॥

१—अदु (च. छ)।
२—लूसिति (चू)।
३—एताओ (तो) (क. ख, ग घ, च छ)।
४—कूंतेण फलेण (घ)।
५—मसूणि (क, ख, ग, घ, च. छ)।
६—उट्टु भिया (क, ख ग, च छ, वृ); उट्टुभियाए (घ)।
७—उवकरिंसु (क. ख, ग, घ, च, छ)—वृत्तिव्यर्थनुसारेण अशुद्ध प्रतिभाति।

२–संसोहणं च वमणं च, गायब्भंगणं[1] सिणाणं च।
संबाहणं 'ण से कप्पे'[2], दंत-पक्खालणं परिण्णाए॥

३–विरए[3] गाम-धम्मेहिं, रीयति माहणे अबहु-वाई।
सिसिरंमि एगदा भगवं, छायाए झाइ आसी य॥

४–आयावई य गिम्हाणं, अच्छइ उक्कुडुए अभितावे।
अदु जावइत्थ[4] लूहेणं, ओयण-मंथु-कुम्मासेणं॥

५–एयाणि तिन्नि पडिसेवे, अट्ठ-मासे य जावए भगवं।
अपिइत्थ[5] एगया भगवं, अद्ध-मासं अदुवा मासं पि॥

६–अविसाहिए दुवे मासे, छप्पि मासे अदुवा अपिवित्ता[6]।
रायोवरायं अपडिन्ने, अन्न-गिलाय मेगया भुंजे॥

७–छट्ठेणं एगया भुंजे, अदुवा[7] अट्ठमेण दसमेणं।
दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने॥

८–णच्चाणं[8] से महावीरे, णो वि य पावगं सयमकासी।
अन्नेहिं वा ण कारित्था, कीरंतं पि णाणुजाणित्था॥

९–गामं पविसे[9] णयरं वा, घासमेसे[10] कडं परट्ठाए।
सुविसुद्ध मेसिया भगवं, आयत-जोगयाए सेवित्था[11]॥

१–° मब्भगण (घ)।
२–ग सेवित्था (चू)।
३–विरए य (क, घ, च, छ)।
४–जाव्इ (घ)।
५–अपियत्थ (चू)।
६–रीयित्था (चू), विहरित्था (च)।
७–अदु अट्ठ ° (ख), अदुट्ठ ° (ग)।
८–णच्चाण (क, ख, ग, घ, चू)।
९–पविस्स (शु)।
१०–वासमात (चू)।
११–गवेसित्था (चू)।

१०—अदु वायसा दिगिंछत्ता[1], जे अन्ने रसेसिणो सत्ता।
घासेसणाए चिट्ठंति[2], सययं णिवतिते य पेहाए॥

११—अदु माहणं व समणं वा, गाम-पिंडोलगं च अतिहिं वा।
सोवागं मूसियारं वा, कुक्कुरं वा 'विविहं ठियं'[2] पुरतो॥

१२—वित्ति-च्छेदं वज्जंतो, तेस'प्पत्तियं[3] परिहरंतो।
मंदं परक्कमे भगवं, अहिंसमाणो घास मेसित्था॥

१३—अवि सूइयं व[4] सुक्कं वा, सीय-पिंडं पुराण-कुम्मासं।
अदु बक्कसं[5] पुलागं वा, लद्धे पिंडे अलद्धए दविए॥

१४—अवि झाति से महावीरे, आसणत्थे अकुक्कुए झाणं।
उड्ढमहे[6] तिरियं च, 'लोए झायइ'[7] समाहिमपडिन्ने॥

१५—अकसाई विगय-गेही[8], सद्द-रूवेसुऽमुच्छिए[9] झाति।
छउमत्थे वि परक्कममाणे, णो[10] पमायं सइं पि कुव्वित्था॥

१६—सयमेव अभिसमागम्म, आयत-जोग माय-सोहीए।
अभिणिव्वुडे अमाइल्ले, आवकहं भगवं समिआसी॥

१७—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया।
बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति॥

—त्ति बेमि।

१—दिगिंच्छत्ता (ख, ग)।
२—विट्ठिय (क, ख); विचिट्ठिय (घ); उवट्ठियं (चू), चिट्ठिय (च)।
३—तेसिमप्पत्तिय (ख, ग); तेसिं पत्तिय (क, च), 'आममकुर्वन्' (वृ)।
४—वा (क, ख, ग, घ, च, छ)।
५—बुक्कसं (ख)।
६—उड्ढं अहे य (य) (ख, ग, घ, छ)।
७—पेहमाणो (क घ, च, छ); झायइ (चू)।
८—गेही य (क, ख, ग, घ, च)।
९—अमुच्छिए (ख, ग, च)।
१०—ण (च)।

आयार-चूला

पढमं अज्झयणं

पिंडेसणा

पढमो उद्देसो

सचित्तं-संसत्त-असणादि-पदं

१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं[1] पुण जाणेज्जा—
असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—पाणेहिं वा, पणएहिं वा, बीएहि वा, हरिएहि वा—संसत्तं, उम्मिस्सं, सीओदएण वा ओसित्तं[2], रसया वा परिवासियं[3],
तहप्पगारं असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—परहत्थंसि वा परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे वि संते णो पडिग्गाहेज्जा[4]।

२–से य आहच्च पडिग्गाहिए[5] सिया, से त आयाय एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—
अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे, अप्प-पाणे, अप्प-बीए, अप्प-हरिए, अप्पोसे, अप्पुदए, अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए, विगिंचिय-विगिंचिय, उम्मिस्सं[6] विसोहिय-विसोहिय, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा।

१—से ज (क, व)।
२—उस्सित्त (क); अभिमित्त (चू)।
३—° वासिय (अ, क, घ, च, व)।
४—पडिगा ° (घ, छ, व)।
५— ° गाहे (अ, घ, च, छ, व)।
६—उम्मीस (क, च)।

३—जं च णो संचाएज्जा भोत्तए वा पायए वा, से[1] तमायाय एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—
अहे झाम-थंडिलंसि वा, अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट[2]-रासिंसि वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि[3] पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव परिट्ठवेज्जा।

ओसहि-आदि-पदं

४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जाओ[4] पुण ओसहीओ जाणेज्जा—
कसिणाओ, सासिआओ, अविदल-कडाओ, अतिरिच्छ-च्छिन्नाओ, अव्वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडिं, अणभिक्कंताऽभज्जियं[5] पेहाए—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जाओ[6] पुण ओसहीओ जाणेज्जा—
अकसिणाओ, असासियाओ, विदल-कडाओ, तिरिच्छ-च्छिन्नाओ, वोच्छिण्णाओ, तरुणियं वा छिवाडिं, अभिक्कंतं भज्जियं पेहाए—फासुयं एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा।

१—सेत्त° (अ, च, छ)।
२—किट्टि° (छ)।
३—थंडिल्ल (अ, छ)।
४—से जाओ (क, ब, छ)।
५—°क्कत भज्जियं (क, च); °क्कंतम भज्जियं (घ)।
६—से जाओ (क, ग, छ, ब)। (अ, वृत्तौ विपर्ययंति)।

६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पिहुयं वा, बहुरजं वा, भुज्जियं[1] वा, मंथुं वा, चाउलं वा, चाउल-पलवं वा सइं भज्जियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पिहुयं वा, •बहुरजं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलंबं वा असइं भज्जियं, दुक्खुत्तो वा भज्जियं, तिक्खुत्तो वा भज्जियं—फासुयं एसणिज्जं •ति मन्नमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

अण्णउत्थिय-गारत्थिय-सद्धि-पदं

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं •पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे, णो अन्नउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ[2] अपरिहारिएण वा[3], सद्धिं गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमिं वा, विहार-भूमिं वा, णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा—णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा, सद्धिं—बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा—णिक्खमेज्ज[4] वा पविसेज्ज वा ।

१—भुजियं (क, घ, च, छ, ब) , भज्जिय (अ) ।
२—परिहारिओ वा (अ, क, च, ब) ।
३—× (अ, क, च, छ, ब) ।
४—न प्रविशेत् नापि ततो निष्क्रामेत् (वृ) ।

१०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे–णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धिं–गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

११–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे–णो अण्णउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, परिहारिओ अपरिहारिअस्स वा–असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देज्जा वा अणुपदेज्जा वा ।

अस्सिपडियाए-पदं

१२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा–

असणं वा ४ अस्सिंपडियाए[1] एगं साहम्मियं समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, 'समारब्भ समुद्दिस्स'[2] कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं[3] वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, 'परिभुत्तं वा'[4] 'अपरिभुत्तं वा'[5] आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

१३–•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स,

१—अस्सं° (क, च, छ, ब, वृ)।
२—समारंभमुद्दिस्स (च, ब); समारभ° (अ, घ)।
३—अबहिया अणीहड (क, च)।
४—× (चू)।
५—× (क)।

पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतर-कडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

१४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतर-कडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेविय वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा।

१५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं, अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं

वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पद

१६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं °पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स, पाणाइं वा, भूयाइं वा, जीवाइं वा, सत्ताइं वा, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ।

तं तहप्पगारं असण वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं °पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं, अबहिया[1] णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं °ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

१—बहिया अणीहडं (अ)।

१८–अह पुण एवं जाणेज्जा–

पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं–फासुयं एसणिज्जं •ति मन्नमाणे लाभे संते॰ पडिगाहेज्जा।

कुल-पदं

१९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसितुकामे, सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा–

इमेसु खलु कुलेसु णितिए[1] पिंडे दिज्जइ, णितिए अग्ग-पिंडे दिज्जइ, णितिए भाए दिज्जइ, णितिए अवड्ढभाए दिज्जइ–तहप्पगाराइं कुलाइं णितियाइं णितिउमाणाइं, णो भत्ताए वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा।

२०–एयं[2] खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सयाजए।

––त्ति बेमि।

बीओ उद्देसो

अट्ठमी-आदि-पव्व-पदं

२१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा–

असणं वा ४ अट्ठमि-पोसहिएसु वा, अद्धमासिएसु वा, मासिएसु वा, दोमासिएसु वा, तिमासिएसु वा, चाउमासिएसु वा, पंचमासिएसु वा, छमासिएसु वा, उउसु[3] वा, उउसंधीसु वा, उउपरियट्टेसु वा, बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगे, एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे

१–× (क, च)।

२–एव (घ, च, छ)। अशुद्ध प्रतिभाति।

३–उडुसु (च)।

पेहाए, दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए 'तिहि उक्खाहि परिएसिज्जमाणे पेहाए'[1] 'चउहि उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'[2] कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ[3] वा सण्णिहि-'सण्णिचयाओ वा'[4] परिएसिज्जमाणे पेहाए—

तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं, °अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं°, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं °ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

२२–अह पुण एवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, °बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं°, आसेवियं—फासुयं °एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा।

कुल-पदं

२३–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तंजहा—

उग्ग-कुलाणि वा, भोग-कुलाणि वा, राइण्ण-कुलाणि वा, खत्तिय-कुलाणि वा, इक्खाग-कुलाणि वा, हरिवंस-कुलाणि वा, एसिय-कुलाणि वा, वेसिय-कुलाणि वा, गंडाग-कुलाणि वा, कोट्टाग-कुलाणि वा, गामरक्खकुलाणि वा, पोक्कसालिय[5]-कुलाणि वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु

१—× (च)।

२—× (अ, क, घ, च, ब)।

३—कालओ वा ततो (छ) : कालओ वा तिण्णो (ब)।

४—सणिचयाओ वा तओ एवं विहं जावतिय पिंड समणादीण परिएसिज्जमाण पेहाए (वृ)।

५—वोक्क° (अ, छ, ब, चू)।

कुलेसु अदुगुंछिएसु अगरहिएसु, असणं वा ४ फासुयं एसणिज्जं •ति मन्नमाणे लाभे संते॰ पडिगाहेज्जा।

महामह-पदं

२४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ समवाएसु वा, पिंड-णियरेसु वा, इंद-महेसु वा, खंद-महेसु वा, रुद्द-महेसु वा, मुगुंद-महेसु वा, भूय-महेसु वा, जक्ख-महेसु वा, णाग-महेसु वा, थूभ-महेसु वा, चेतिय-महेसु वा, रुक्ख-महेसु वा, गिरि-महेसु वा, दरि-महेसु वा, अगड-महेसु वा, तडाग[1]-महेसु वा, दह-महेसु वा, 'णई-महेसु वा'[2], सर-महेसु वा, सागर-महेसु वा, आगर-महेसु वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूव-रूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु, बहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए[3], एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहि •उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, तिहि उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, चउहि उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ वा॰ सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए—

तहप्पगारं असण वा ४ अपुरिसंतरकडं[4], •अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्त, अणासेवितं–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे सते॰ णो पडिगाहेज्जा।

१—तलाग (घ, च, छ)।

२—णईमहेसु वा असणमहेसु वा (क)।

३—वणीमएसु (अ, क, च, छ, ब) अशुद्ध।

४—° गय (अ, क, च), ° कय (छ)।

२५—अह पुण एवं जाणेज्जा—

दिण्णं जं तेसिं दायव्वं ।

अह तत्थ भुंजमाणे पेहाए—गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं वा, से पुव्वामेव[1] आलोएज्जा[2]—आउसि! त्ति वा, भगिणि! त्ति वा, दाहिसि मे एत्तो अन्नयरं भोयणजायं?

से सेवं वदंतस्स परो असणं वा ४ आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा णं[3] जाएज्जा, परो वा से देज्जा-फासुयं °एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।

संखडि-पदं

२६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणमेराए संखडिं णच्चा संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—

पाईणं संखडिं णच्चा पडीणं गच्छे, अणाढायमाणे,
पडीणं संखडिं णच्चा पाईणं गच्छे, अणाढायमाणे,
दाहिणं संखडिं णच्चा उदीणं गच्छे, अणाढायमाणे,
उदीणं संखडिं णच्चा दाहिणं गच्छे, अणाढायमाणे।

२८—जत्थेव सा संखडी सिया, तं जहा—गामंसि वा, णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि[4] वा, पट्टणंसि वा,

---

१—पुव्व ° (क, च)।
२—आलोएज्जा पभू वा पभूसदिट्ठो (चू), प्रभु प्रभुसंदिष्ट वा ब्रूयात् (वृ)।
३—× (घ, छ)।
४—मंडबसि (ब)।

'आगरंसि वा, दोणमुहंसि वा'[1], णिगमंसि वा, आसमंसि वा 'सण्णिवेसंसि वा रायहाणिंसि वा'[2]—
संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२९—केवली बूया—आयाणमेयं[3]—
संखडिं संखडि-पडियाए अभिसधारेमाणे आहाकम्मियं वा, उद्देसियं वा, मीसजायं[4] वा, कीयगडं वा, पामिच्चं वा, अच्छेज्जं वा, अणिसिट्ठं वा, अभिहडं वा आहट्टु दिज्जमाण भुंजेज्जा ।
असंजए[5] भिक्खु-पडियाए, खुड्डिय-दुवारियाओ महल्लियाओ[6] कुज्जा, महल्लिय-दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा, वहिं वा उवस्सयस्स[7] हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय, संथारगं संथरेज्जा—'एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए ।'[8]

१—दोणमुहंसि वा आगरमि वा (अ, क, घ, च, छ, ब)। १।८।६।१०६ सूत्र क्रम अनुसृत (चू)।
२—रायहाणिंसि वा सण्णिवेससि वा (वृ)।
३—आययण ° (वृपा)।
४—° ज्जाय (च. छ, ब)।
५—अस्स ° (घ, छ, ब)।
६—महाद्वारा (वृ)।
७—कुज्जा उवासयस्स (क, छ), उवस्सयस्स कुज्जा (घ), उपाश्रव सस्कुर्यात् (वृ)।
८—एस विलगयामो सिज्जाए अक्खाए (अ, छ); एस खलु गयामो सेज्जाए अक्खाए (क), एस वि खलु गयामो सिज्जाए अक्खाए (च); एस खल गयामो सिज्जाए (ब)।

तम्हा से संजए णियंट्ठे[1] तहप्पगारं पुरे संखडिं[2] वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

३०–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि।

तइओ उद्देसो

३१–से एगइओ अण्णतरं संखडिं आसित्ता पिबित्ता छड्डेज्ज वा, वमेज्ज वा, भुत्ते वा से णो सम्मं परिणमेज्जा, अण्णतरे वा से दुक्खे रोयातंके समुपज्जेज्जा।

३२–केवली बूया आयाणमेयं—

इह खलु भिक्खू गाहावइहिं वा, गाहावइणीहिं वा, परिवायएहिं वा, परिवाइयाहिं वा, एगज्झ सद्धं[3] सोंडं पाउं भो! वतिमिस्सं[4] हुरत्था वा, उवस्सयं पडिलेहमाणे णो लभेज्जा, तमेव उवस्सयं सम्मिस्सिंभाव[5] मावज्जेज्जा।

अण्णमण्णे वा से मत्ते विप्परियासियभूए इत्थिविग्गहे वा, किलीवे वा, तं भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया—

आउसंतो समणा! अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा,

१—निग्गथे अण्णयरं वा (व)।
२—× (क, घ, च)।
३—सद्धि (व)।
४—विति ° (च, छ)।
५—मिश्रीभावम् (वृ)।

राओ वा, वियाले वा, गामधम्म[1]-णियंतियं कट्टु, रहस्सियं मेहुणधम्म-परियारणाए आउट्टामो ।

तं चेगइओ सातिज्जेज्जा । अकरणिज्जं चेयं संखाए । एते आयाणा[2] संति संचिज्जमाणा, पच्चावाया भवंति[3] ।

तम्हा से संजए णियंठे तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा[4] गमणाए ।

३३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अन्नयरं[5] संखडिं वा सोच्चा णिसम्म संपरिहावइ[6] उस्सुय-भूयेणं अप्पाणेणं ।

धुवा संखडी । णो संचाएइ तत्थ इतरेतरेहि कुलेहि सामुदाणियं[7] एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेत्तए ।

माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थितरेतरेहि कुलेहि सामुदाणियं एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा ।

३४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा, •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा,° रायहाणिं वा ।

१—गाम ° (चू), ग्रामासन्ने वा (वृ) ।
२—आयतणाणि (घ, वृ) ।
३—× (अ, क, घ, च, छ) ।
४— ° धारेज्ज (अ) ।
५—अण्णयरिं (अ, च) ।
६—सप्रधावति (वृ) ।
७—समु ° (अ, क, च, छ) ।

इमंसि खलु गामंसि वा, •णगरंसि वा, खेडंसि वा, कब्बडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोणमुहंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा°, रायहाणिंसि वा, संखडी सिया। तं पि य गामं वा (जाव) रायहाणिं वा, संखडि-पडियाए[1] णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

३५–केवली बूया आयाणमेयं—

आइण्णावमाणं[2] संखडि अणुपविस्समाणस्स—
पाएण वा पाए अक्कंतपुव्वे भवइ,
हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवइ,
पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ,
सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवइ,
काएण वा काए सखोभियपुव्वे भवइ,
दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा अभिहयपुव्वे भवइ,
सीओदएण वा ओसित्तपुव्वे भवइ,
रयसा वा परिघासियपुव्वे[3] भवइ,
अणेसणिज्जे[4] वा परिभुत्तपुव्वे भवइ,
अण्णेसि वा दिज्जमाणे पडिगाहियपुव्वे भवइ।
तम्हा से संजए णिग्गंथे तहप्पगारं आइण्णोमाणं संखडि संखडि-पडियाए नो अभिसंधारेज्ज गमणाए।

१—सखडिं संखडि-पडियाए (ब)।
२—आइण्णो ° (अ, घ, ब) अशुद्ध।
३—परिज्जासित ° (क); परियासित ° (च, छ)।
४— ° णिज्जेण (अ, छ)।

विचिगिच्छा-समावण्ण-पदं

३६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा ४ एसणिज्जे सिया, अणेसणिज्जे सिया—विचिगिच्छ[1]-समावण्णेणं अप्पाणेणं असमाहडाए लेस्साए, तहप्पगारं असणं वा °४ अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

सव्वभंडगमायाए-पदं

३७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं °पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा।

३८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं भंडग मायाए बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।

३९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं भंडग मायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

४०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अह[2] पुण एवं जाणेज्जा—
तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं[3] पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए—

१—वितिगिच्छ (व); वितिगिंछ (अ); विचिगिंछ (छ)।
२—अह य (घ, छ)।
३—° माणं (अ, घ)।

तिरिच्छं[1] संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए,
से एवं णच्चा णो सव्वं भंडग मायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा।
बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा, गामाणुगामं वा[2] दूइज्जेज्जा।

कुल-पदं

४१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तं जहा—खत्तियाण वा, राईण वा, कुराईण वा, रायपेसियाण वा, रायवंसट्ठियाण[3] वा, अंतो वा बहिं[4] वा गच्छंताण वा, सण्णिविट्ठाण वा, णिमंतेमाणाण वा, अणिमंतेमाणाण वा, असणं वा ४ °अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।
(एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, ज सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि।)

चउत्थो उद्देसो

संखडि-पदं

४२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

१—तिरिच्छ (अ, क, घ, च)।
२—× (अ, च, क, छ, ब)।
३—° वंसुट्ठियाण (घ)।
४—बहियं (अ, छ) ; बाहियं (च) ; बहिया (घ)।

मंसादियं[1] वा, मच्छादियं[2] वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं[3] वा, आहेणं[4] वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं[5] वा, हीरमाणं पेहाए,

अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा बहुउदया बहुउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगा,

बहवे तत्थ समण-माहण-अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता उवागमिस्संति, तत्थाइण्णावित्ती[6],

णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह[7]-धम्माणुओगचिंताए,

सेवं[8] णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा; पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए।

४३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

मंसादियं वा, मच्छादियं वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं वा, आहेणं वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं वा, हीरमाणं पेहाए,

अंतरा से मग्गा अप्पंडा °अप्पपाणा अप्पबीया अप्पहरिया अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणगा,

---

१—मस° (घ)।
२—मज्जा° (घ, ब)।
३—मज्ज° (घ)।
४—अहेण (घ, ब)।
५—समीलं (च, ब)।
६—अन्नाइण्णा° (क, च) अच्चाइण्णा° (वृ)।
७—°पेहाए (क, च, ब), पेहा° (व)।
८—स एव (क, च); से एव (अ, घ)।

णो तत्थ[1] बहवे समण-माहण•-अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता॰ उवागमिस्संति, अप्पाइण्णावित्ती,
पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह[2]-धम्माणुओगचिंताए।
सेवं णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए अभिसंधारेज्ज गमणाए।

खीरिणी-गावी-पदं

४४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं •पिंडवाय-पडियाए॰ पविसिउकामे सेज्जं पुण जाणेज्जा—
खीरिणीओ[3] गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए;
असणं वा ४ उवसंखडिज्जमाणं[4] पेहाए,
पुरा अप्पजूहिए,
सेवं णच्चा णो गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।
से त्त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा।

४५–अह पुण एवं जाणेज्जा—
खीरिणीओ गावीओ खीरियाओ पेहाए,
असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए,
पुरा पजूहिए,
से एवं णच्चा तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।

१–जत्थ (अ, क, च, छ, ब)।
२–॰पेहाए (क, ब); पेहा (च)।
३–खीरिणियाओ (क, घ, च, छ, ब)।
४–उक्खडि॰ (अ, घ, क, छ, ब, चू)।

माइट्ठाण-पदं

४६–भिक्खागा णामेगे[1] एवमाहंसु–'समाणे वा, वसमाणे'[2] वा, गामाणुगामं दूइज्जमाणे–"खुड्डाए खलु अयं गामे, संणिरुद्धाए, णो महालए, से हंता! भयंतारो! बाहिरगाणि गामाणि भिक्खायरियाए[3] वयह।"

संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा परिवसति, तं जहा—गाहावई वा, गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा, कम्मकरीओ वा,

तहप्पगाराइं कुलाइं पुरे-संथुयाणि वा, पच्छा-संथुयाणि वा, पुव्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसिस्सामि अविय इत्थ लभिस्सामि—पिंडं वा, लोयं वा, खीरं वा, दधिं वा, णवणीयं वा, घयं वा, गुलं वा, तेल्लं वा, महुं वा, मज्जं वा, मंसं वा, संकुलिं[4] वा, फाणियं वा, 'पूयं वा'[5], सिहरिणिं वा,

तं पुव्वामेव भोच्चा पेच्चा, पडिग्गहं संलिहिय संमज्जिय, तओ पच्छा भिक्खूहिं सद्धिं गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिस्सामि, णिक्खमिस्सामि वा।

माइट्ठाणं संफासे, तं णो एवं करेज्जा।

१—°नाम मेगे (व)।
२—समाणा वा वसमाणा (च)।
३—°पडियाए (घ, व)।
४—सकुलिं (घ, छ), सक्कुलि (क्वचित्)।
५—× (घ, छ, वृ)।

४७–से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता, तत्थितरे-तरेहिं[1] कुलेहिं सामुदाणियं, एसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा ।

४८–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि ।°

पंचमो उद्देसो

४९–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अग्ग-पिंडं उक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं णिक्खिप्पमाणं पेहाए,

अग्ग-पिंडं हीरमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिभाइज्जमाणं पेहाए,

अग्ग-पिंडं परिभुज्जमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिट्ठवेज्जमाणं पेहाए,

पुरा असिणाइ[2] वा, अवहाराइ वा, पुरा जत्थन्ने समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमगा खद्धं-खद्धं उवसंकमंति, से हंता अहमवि खद्धं[3] उवसंकमामि, माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

१–तत्थियराइयरेहिं (घ, ब) ।
२–असणाइ (क, ब) ; असिणेइ (छ) ।
३–खद्धं खद्धं (छ, ब) ।

विसमट्ठाण-परक्कम-पद

५०–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे—

अंतरासे वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि[1] वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा—
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

५१–केवली बूया आयाणमेयं—

से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा, 'पक्खलेज्ज वा'[2], पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा, 'पक्खलमाणे वा'[3], पवडमाणे वा, तत्थ से काये उच्चारेण वा, पासवणेण वा, खेलेण वा, सिंघाणेण वा, वंतेण वा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण वा, सोणिएण वा, उवलित्ते सिया ।

तहप्पगारं कायं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे°सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणए,

णो आमज्जेज्ज वा, णो पमज्जेज्ज वा, णो संलिहेज्ज वा, 'णो णिल्लिहेज्ज वा'[4], णो[5] उव्वलेज्ज वा, णो उवट्टेज्ज वा, णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

१–पोगाराणि (अ), पोग्गलाणि (ब) ।
२–× (अ, क, घ, च, ब) ।
३–× (अ, क, घ, च, ब) ।
४–× (छ) ।
५–× (अ, क, घ, च, ब) सर्वत्र ।

से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, सक्करं वा, जाइज्जा, जाइत्ता से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि वा, •अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट-रासिंसि वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि, पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा; संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

वियाल-परक्कम-पद

५२–से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा–
गोणं वियालं पडिपहे[1] पेहाए,
महिसं वियालं पडिपहे पेहाए,
एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थिं[2], सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं, अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोल-सुणयं, कोकंतियं, चित्ताचिल्लडयं–
वियालं पडिपहे पेहाए,
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

५३–से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे–
अंतरा से ओवाओ वा, खाणू वा, कंटए वा, घसी[3] वा, भिलुगा वा, विसमे वा, विज्जले वा, परियावज्जेज्जा–

१–पडिपह (अ, क, च)।
२–हत्थी (अ, क, च, छ)।
३–वसा (ब)।

संति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जुयं गच्छेज्जा।

कंटक-बोंदिया-पदं

५४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलस्स दुवार-बाहं कंटक-बोंदियाए परिपिहियं पेहाए, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुन्नविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा।

तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय, पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा।

अणावायमसलाय-चिट्ठण-पद

५५–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा–

समणं वा, माहणं वा, गामपिंडोलगं वा, अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए, णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा।

५६–'केवली बूया आयाण मेयं–

पुरा पेहाए तस्सट्ठाए परो असणं वा ४ आहट्टु दलएज्जा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा'[1]।

से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा।

१—× (अ, क, छ, वृ)।

परिभायण-संभुंजण-पदं

५७–से से[1] परो अणावायमसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा ४ आहट्टु दलएज्जा, से यं[2] वदेज्जा—
आउसंतो समणा ! इमे भे असणे वा ४ सव्वजणाए निसिट्ठे, तं भुंजह वा[3] णं परिभाएह वा णं।
तं चेगइओ पडिगाहेत्ता तुसिणीओ उवेहेज्जा, अवियाइं एवं मम मेव सिया, एवं[4] माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, तत्थ गच्छेत्ता, से पुव्वामेव ओलोएज्जा—आउसंतो समणा ! इमे भे असणं वा ४ सव्वजणाए णिसिट्ठे, तं भुंजह वा णं, परिभाएह वा णं। से णेवं[5] वदंतं परो वएज्जा—आउसंतो समणा ! तुमं चेव णं परिभाएहि।
से तत्थ परिभाएमाणे णो अप्पणो खद्धं-खद्धं डायं-डायं ऊसढं-ऊसढं रसियं-रसियं मणुन्नं-मणुन्नं णिद्धं-णिद्धं लुक्खं-लुक्खं। से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बहुसम मेव परिभाएज्जा।
से णं परिभाएमाणं परो वएज्जा—आउसंतो समणा ! मा णं तुमं परिभाएहि, सव्वे वेगतिया भोक्खामो वा, पाहामो वा।
से तत्थ भुंजमाणे णो अप्पणो खद्धं-खद्धं डायं-डायं ऊसढं-ऊसढं रसियं-रसियं मणुन्नं-मणुन्नं णिद्धं-णिद्धं लुक्खं-लुक्खं।

१–× (घ)।
२–एवं (घ)।
३–व (अ, ब)।
४–× (अ, घ, च)।
५–× एवं (घ)।

से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बहुसम मेव भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा ।

पुव्वपविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पदं

५८—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

समणं वा, माहणं वा, गाम-पिंडोलगं वा, अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए, णो ते उवाइक्कम्म पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा ।

से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता अणावाय मसंलोए चिट्ठेज्जा ।

५९—अह पुणेवं जाणेज्जा—

पडिसेहिए व[1] दिन्ने वा, तओ तम्मि णियत्तिए ।
संजयामेव पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा ॥

६०—एयं[2] खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि° ।

छट्ठो उद्देसो

भत्तठ-समुदितपाणाण उज्जुगमग-पद

६१—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

रसेसिणो बहवे पाणा घासेसणाए संथडे सण्णिवइए पेहाए,

१—वा (छ)।
२—एवं (अ, क, छ, वृ)।

तं जहा—कुक्कुड-जाइयं वा, सूयर-जाइयं वा, अग्गपिंडंसि वा वायसा संथडा सण्णिवइया पेहाए—
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छेज्जा।

गाहावइकुल-पविट्ठस्स अकरणिज्ज-पद

६२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे—
नो गाहावइ-कुलस्स दुवार-साहं[1] अवलंबिय-अवलंबिय चिट्ठेज्जा,
नो गाहावइ-कुलस्स दगच्छड्डुणमत्ताए चिट्ठेज्जा,
नो गाहावइ-कुलस्स चंदणिउयए चिट्ठेज्जा,
नो गाहावइ-कुलस्स सिणाणस्स वा, वच्चस्स वा, संलोए सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा,
णो गाहावइ-कुलस्स आलोयं वा, थिग्गलं वा, संधिं वा, दग-भवणं वा बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए वा उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा,
णो गाहावइं अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय जाएज्जा,
णो गाहावइं अंगुलियाए चालिय-चालिय जाएज्जा,
णो गाहावइं अंगुलियाए तज्जिय-तज्जिय जाएज्जा,
णो गाहावइं अंगुलियाए उक्खलुंपिय[2]-उक्खलुंपिय जाएज्जा,
णो गाहावइं वंदिय-वंदिय जाएज्जा,
'णो व णं'[3] फरुसं वएज्जा।

१–दुवार सामग्गिय (अ); दुवारवाह (क, च, चू); वारसाह (घ)।
२–चाउगुलंपिय २ (अ); उक्खलपिय २ (क, च); उक्खुलविय २ (घ, व)।
३–णो चेवण (अ); णो वयणं (च, छ, ब)।

पुरेकम्म-आदि-पद

६३–अह तत्थ कंचि[1] भुंजमाणं पेहाए, तं जहा—गाहावइं[2] वा, °गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा,° कम्मकरिं वा,

से पुव्वामेव आलोएज्जा–आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अन्नयरं भोयणजायं?

से सेवं वयतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा, मा एयं तुमं हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेहि वा, पहोएहि वा,

अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेत्ता पहोइत्ता आहट्टु दलएज्जा–

तहप्पगारेण पुरेकम्मकएण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा, असणं वा ४ अफासुयं अणेसणिज्जं °ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

१–किंचि (क, घ, छ)।
२–गाहावइय (च, छ)।

६४—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो पुरेकम्मकएण, उदउल्लेण। तहप्पगारेण उदउल्लेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा, असणं वा ४ अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते॰ णो पडिगाहेज्जा।

६५—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो उदउल्लेण, ससिणिद्धेण। •तहप्पगारेण ससिणिद्धेण हत्थेण वा (१।६४)।

६६—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो ससिणिद्धेण, ससरक्खेण। तहप्पगारेण ससरक्खेण हत्थेण वा (१।६४)।

६७—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो ससरक्खेण, मट्टिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण मट्टिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

६८—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो मट्टिया-संसट्ठेण, ऊस-संसट्ठेण। तहप्पगारेण ऊस-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

६९—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो ऊस-संसट्ठेण, हरियाल-संसट्ठेण। तहप्पगारेण हरियाल-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

७०—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो हरियाल-संसट्ठेण, हिंगुलय-संसट्ठेण। तहप्पगारेण हिंगुलय-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

७१–अह पुण एवं जाणेज्जा–

णो हिंगुलय-संसट्ठेण, मणोसिला-संसट्ठेण। तहप्पगारेण मणोसिला-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

७२–अह पुण एवं जाणेज्जा–

णो मणोसिला-संसट्ठेण, अंजण-संसट्ठेण। तहप्पगारेण अंजण-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

७३–अह पुण एवं जाणेज्जा–

णो अंजण-संसट्ठेण, लोण-संसट्ठेण। तहप्पगारेण लोण-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

७४–अह पुण एवं जाणेज्जा–

णो लोण-संसट्ठेण, गेरुय-संसट्ठेण। तहप्पगारेण गेरुय-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

७५–अह पुण एवं जाणेज्जा–

णो गेरुय-संसट्ठेण, वण्णिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण वण्णिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

७६–अह पुण एवं जाणेज्जा–

णो वण्णिया-संसट्ठेण, सेडिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण सेडिया[1]-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

७७–अह पुण एवं जाणेज्जा–

णो सेडिया-संसट्ठेण, सोरट्ठिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण सोरट्ठिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

७८–अह पुण एवं जाणेज्जा–

णो सोरट्ठिया-संसट्ठेण, पिट्ठ-संसट्ठेण। तहप्पगारेण पिट्ठ-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

१–सेडिय (क)।

७९—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो पिट्ठ-संसट्ठेण, कुक्कस-संसट्ठेण। तहप्पगारेण कुक्कस-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।

८०—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो कुक्कस-संसट्ठेण, उक्कुट्ठ[1]-संसट्ठेण। तहप्पगारेण उक्कुट्ठ-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४)।°

८१—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो असंसट्ठे, संसट्ठे। तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा, असणं वा४ फासुयं •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा[2]।

पिहुय-आदि-कोट्टण-पदं

८२—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,° सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा, वहुरयं वा, •भज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा,° चाउलपलंबं वा,

अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए, •चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सवीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणाए कोट्टेंसु वा, कोट्टिंति वा, कोट्टिस्संति वा, उप्पणिंसु[3] वा, उप्पणिंति वा, उप्पणिस्संति वा—

१—उक्किट्ठा (क)।

२—अह पुणेवं जाणेज्जा असंसट्ठे तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा४ असणं वा४ फासुयं जाव पडिगाहेज्जा (छ) प्रतौ एतत् सूत्रमधिकमस्ति।

३—उप्फ° (अ क, च)।

तहप्पगारं पिहुयं वा [जाव] चाउलपलंबं वा–अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

लोण-पदं

८३–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा–
बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं,
अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए, °चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणाए भिंदिसु वा, भिंदंति वा, भिंदिस्संति वा, रुचिंसु वा, रुचिंति वा, रुचिस्संति वा–
बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं–अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

अगणि-णिक्खित्त-पदं

८४–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा–
असणं वा ४ अगणि-णिक्खित्तं,
तहप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८५–केवली बूया आयाणमेयं–
अस्संजए[1] भिक्खु-पडियाए उस्सिंचमाणे वा, निस्सिंचमाणे वा, आमज्जमाणे वा, पमज्जमाणे वा, ओयारेमाणे वा, उव्वत्तमाणे[2] वा, अगणिजीवे हिंसेज्जा ।

१–असजए (छ)।
२–ओयत्तेमाणे (अ, क); पवत्तेमाणे (छ)।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एसुवएसे–

तं तहप्पगारं असणं वा४ अगणि-णिक्खित्तं–अफासुयं अणेसणिज्जं •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

८६–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि।

सत्तमो उद्देसो

मालोहड-पदं

८७–से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा–

असणं वा४ खधंसि वा, थंभंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि उवणिक्खित्ते सिया–

तहप्पगारं मालोहडं असणं वा४ अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

८८–केवली बूया आयाण मेयं–

अस्संजए भिक्खु-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा, अवहट्टु उस्सविय आरुहेज्जा[1]।

से तत्थ दुरुहमाणे[2] पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा,

१–दुहेज्जा (अ, ब); दूहिज्जा (घ), दुरुहेज्जा (च)।

२–दूहमाणे (घ)।

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं[1] वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि वा, अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा—

तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा४ •अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८९—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा४ कोट्ठियाओ वा, कोलज्जाओ[2] वा,
अस्संजए भिक्खु-पडियाए उक्कुज्जिय, अवउज्जिय, ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा—

तहप्पगारं असणं वा४ मालोहडं[3] ति णच्चा लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

मट्टिओलित्त-पद

९०—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा४ मट्टिओलित्तं[4],

तहप्पगारं असणं वा४ •अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१—बाहं (अ, क, घ, ब) ।
२—कोलेज्जाओ (क, च); कोलिज्जाओ (घ) ।
३—माला ° (छ) ।
४— ° ओवलित्तं (घ, छ) ।

९१–केवली बूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए मट्टिओलित्तं असणं वा४ उब्भिदमाणे पुढवीकायं समारंभेज्जा,

तह तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तस कायं समारंभेज्जा,

पुणरवि ओलिंपमाणे पच्छाकम्मं करेज्जा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एसुवएसे°,

जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा४ °अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं

९२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु-°पविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा४ पुढविकाय-पइट्ठियं तहप्पगारं असणं वा४ °पुढविकाय-पइट्ठियं°—अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

आउकाय-पइट्ठिय-पदं

९३–°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा४ आउकाय-पइट्ठियं—

तहप्पगारं असणं वा४ आउकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं

९४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा४ अगणिकाय-पइट्ठियं—

तहप्पगारं असणं वा४ अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।°

९५–केवली बूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए अगणिं ओसक्किय[1], णिस्सक्किय[2], ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एसुवएसे,

जं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

अच्चुसिण-वीयण-पदं

९६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अच्चुसिणं,

अस्संजए भिक्खु-पडियाए सूवेण[3] वा, विहुवणेण[4] वा, तालियंटेण वा, 'पत्तेण वा'[5], साहाए वा, साहा-भंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा फुमेज्ज वा, वीएज्ज वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो! त्ति वा, भगिणि! त्ति वा मा एयं तुमं असणं वा ४ अच्चुसिणं सूवेण वा, विहुवणेण वा, तालियटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा,

---

१—उस्सक्किय (क, घ, च) ; उस्सिक्किय (छ) ; ओसिक्किय (अ) ।
२—णिस्सिक्किय (अ, छ, व) ।
३—सुप्पेण (अ, च) ।
४—विहुयणेण (अ, क, घ, च) ।
५—× (घ, वृ) ।

१०२–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं[1] जाणेज्जा–

अणंतरहियाए पुढवीए °ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणए ओद्धट्टु[2] निक्खित्ते सिया।

असंजए भिक्खु-पडियाए उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा, सकसाएण वा, मत्तेण वा, सीओदएण वा संभोएत्ता आहट्टु दलएज्जा–

तहप्पगारं पाणग-जायं–अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

१०३–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

–ति बेमि।°

अट्ठमो उद्देसो

१०४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा–

१–पाणगं (चू, वृ, च)।
२–ओहट्टु (क)।

तं जहा—अंब-पाणगं वा, अंबाडग-पाणगं वा, कविट्ठ-पाणगं वा, मातुलिंग[1]-पाणगं वा, मुद्दिया-पाणगं वा, दाडिम-पाणगं वा, खज्जूर-पाणगं वा, णालिएर-पाणगं वा, करीर-पाणगं वा, कोल-पाणगं वा, आमलग-पाणगं वा, चिंचा-पाणगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए[2] भिक्खु-पडियाए छब्बेण[3] वा, दूसेण[4] वा, वालगेण वा, आवीलियाण वा, परिपीलियाण वा, परिस्साविया[5] आहट्टु दलएज्जा—

तहप्पगारं[6] पाणग-जायं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

गंध-आघायण-पदं

१०५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे,

से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा—अन्न-गंधाणि वा, पाण-गंधाणि वा, सुरभि-गंधाणि वा, अग्घाय[7]-अग्घाय—से तत्थ आसाय-पडियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अहोगंधो-अहोगंधो णो गंध माघाएज्जा ।

१—मातुलुग (अ, घ), मातुलेग (क), मातुलग (च) ।
२—असजए (क, च) ।
३—छप्पेण (अ, च); छट्ठेण (व) ।
४—दूयेण (छ) ।
५—परिसाइयाण (क, छ, ब), परिसावियाण (घ) ।
६—आहप्पगारं (घ) ।
७—आघाय (अ, क, च) ।

सालुय-आदि-पदं

१०६–से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

सालुयं वा, विरालियं वा, सासवणालियं वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

पिप्पलि-आदि-पदं

१०७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिप्पलिं[1] वा, पिप्पलि-चुण्णं वा, मिरियं वा, मिरिय-चुण्णं वा, सिंगबेरं वा, सिंगबेर-चुण्णं वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

पलंब-जाय-पदं

१०८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पलंब[2]-जायं जाणेज्जा—

तं जहा—अंब-पलंबं वा, अंबाडग-पलंबं वा, ताल-पलंबं वा, झिज्झिरि[3]-पलंबं वा, सुरभि[4]-पलंबं वा, सल्लइ-पलंबं वा—

अन्नयरं वा तहप्पगारं पलंब-जायं आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं •ति मन्नमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

१—पिप्पिलि (छ)।

२—पलबग (ब)।

३—झिल्लिर (अ), झिज्झिर (घ, छ)।

४—सुरघु (छ)।

पवाल-जाय-पदं

१०९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पवाल-जायं जाणेज्जा—
तं जहा—आसोत्थ[1]-पवालं वा, णग्गोह[2]-पवालं वा, पिलुंखु-पवालं वा, णीपूर[3]-पवालं वा, सल्लइ-पवालं वा—
अन्नयरं वा तहप्पगारं पवाल-जायं आमगं असत्थ-परिणयं-अफासुयं अणेसणिज्जं °ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

सरडुय-जाय-पदं

११०–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण सरडुय-जायं जाणेज्जा—
तं जहा—अंब-सरडुयं वा, अंबाडग-सरडुयं वा, कविट्ठ-सरडुयं वा, दाडिम-सरडुयं वा, विल्ल[4]-सरडुयं वा[5]—
अण्णयरं वा तहप्पगारं सरडुय-जायं आमगं असत्थ-परिणयं-अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो° पडिगाहेज्जा।

मंथु-जाय-पदं

१११–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण मंथु-जायं जाणेज्जा—
तं जहा—उंबर-मंथुं वा, णग्गोह-मंथुं वा, पिलुंखु[6]-मंथुं वा, आसोत्थ-मंथुं वा—

१—आसोट्ठ (क, घ); आसत्थ (छ)।
२—णिग्गोह (छ)।
३—णीयूर (अ, घ, छ, व)।
४—फिल्ल (क); पिल्ल (घ)।
५—वा पिप्पलिं (च)।
६—पिलक्खु (क, च)।

अण्णयरं वा तहप्पगारं मंथु-जायं आमयं दुरुक्कं साणुबीयं—अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

आमडाग-आदि-पदं

११२–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
आमडागं वा, पूइपिण्णागं वा, महुं वा, 'मज्जं वा'[1], सप्पिं वा, खोलं वा पुराणगं।

एत्थ पाणा अणुप्पसूया, एत्थ पाणा जाया, एत्थ पाणा संवुड्ढा, एत्थ पाणा अवुक्कंता[2], एत्थ पाणा अपरिणया, एत्थ पाणा अविद्धत्था[3]—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

उच्छु-मेरग-आदि-पदं

११३–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
उच्छु-मेरगं वा, अंक-करेलुयं वा, कसेरुगं वा, सिंघाडगं वा, पूति आलगं वा—

अन्नयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—°अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

उप्पल-आदि-पदं

११४–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

१—× (चू)।
२—वक्कंता (क, छ); ऽवक्कंता (च); वुक्कंता (ब)।
३—णो विद्धत्था (घ, छ)।

उप्पलं वा, उप्पल-नालं वा, भिसं वा, भिस-मुणालं वा, पोक्खलं वा, पोक्खल-विभंगं[1] वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं °आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

अग्गबीय-आदि-पदं

११५—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अग्ग-बीयाणि वा, मूल-बीयाणि वा, खंध-बीयाणि वा, पोर-बीयाणि वा,

अग्ग-जायाणि वा, मूल-जायाणि वा, खंध-जायाणि वा, पोर-जायाणि वा,

णण्णत्थ तक्कलि-मत्थएण वा, तक्कलि-सीसेण वा, णालिएरि[2]-मत्थएण वा, खज्जूरि[3]-मत्थएण वा, ताल-मत्थएण वा—

अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—°अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

उच्छु-पदं

११६—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

उच्छुं वा काणगं[4] अंगारियं संमिस्सं विगदूमियं[5], वेत्तग्गं[6] वा, कंदलीऊसुयं[7] वा—

१—°-विभाग (क, च)।

२—णालिएर (अ, च, ब)।

३—खज्जूर (ब)।

४—काणं (घ, व)।

५—वइदूमियं (अ); विगदूसियं (घ, ब) . वियिदूमिय (छ)।

६—वेत्तग (अ), जित्तज्जग (घ), वेत्तगागं (छ)।

७—° उस्सुग (चू); ° ऊसिग (छ); चूर्णौ अन्येपि शब्दा दृश्यन्ते—कलतो सिम्बा-कलो चणगो, ओली सिंगा तस्स चेव, एव मुग्ग मासाणावि ।

अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं •—अफासुं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते॰ णो पडिगाहेज्जा ।

लसुण-पद

११७—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे॰ समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

लसुणं वा, लसुण-पत्तं वा, लसुण-नालं वा, लसुण-कंदं वा, लसुण-चोयगं[1] वा—

अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

अत्थिय-आदि-पदं

११८—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे॰ समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अत्थियं[2] वा, कुंभिपक्कं तिंदुगं वा, वेलुयं[3] वा, कासव-णालियं वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

कण-आदि-पद

११९—से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे॰ समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

कणं वा, कण-कुंडगं वा, कण[4]-पूयलियं वा, चाउलं वा, चाउल-पिट्ठं वा, तिलं वा, तिल-पिट्ठं वा, तिल-पप्पडगं वा—

१—°-चोय (क, घ, च, छ, ब)।
२—अच्छिय (च)।
३—पेल्लुगं (क); पलुगं (च)।
४—°-पूयलि (क, च, छ, ब)।

अन्नतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

१२०–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सयाजए ।

—ति बेमि ।°

नवमो उद्देसो

पच्छाकम्म-पद

१२१–इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवन्ति–

गाहावई वा, •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ–जे इमे भवंति समणा भगवन्तो सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी उवरया मेहुणाओ धम्माओ,

णो खलु एएहिं कप्पइ आहाकम्मिए असणे[1] वा ४ भोत्तए वा, पायत्तए[2] वा ।

सेज्जं पुण इमं अम्हं अप्पणो अट्ठाए[3] णिट्ठियं, तं जहा–असणं वा ४ सव्वमेयं समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वदं पच्छा वि अप्पणो अट्ठाए असणं ४ चेइस्सामो ।

१–असण (क) ।
२–पात्तए (क), पायए (च); पाएत्तए (घ) ।
३–सयट्ठाए (अ, क, च) ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म, तहप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं अणेसणिज्जं •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

पुरापच्छासंथुय-कुल-पदं

१२२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा 'समाणे वा, वसमाणे वा'[1], गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा–

गामं वा, •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा,° रायहाणिं वा।

इमंसि खलु गामंसि वा, •णगरंसि वा, खेडंसि वा कव्वडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोणमुहंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा,° रायहाणिंसि वा—सतेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया[2] वा, पच्छासंथुया वा परिवसंति, तं जहा—

गाहावई वा, •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरीओ वा।

तहप्पगाराइं कुलाइं णो पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।

१२३–केवली बूया—आयाण मेयं। पुरा पेहाए तस्स परो अट्ठाए असणं वा ४ उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो—°

१–समाणे वसमाणे वा (क, च, ब); समाणे (घ, छ)।
२–पुव्व ° (ब)।

जं णो तहप्पगाराइं कुलाइं पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।

से तत्थ कालेणं अणुपविसेज्जा, २त्ता तत्थियरेयरेहि कुलेहिं सामुदाणियं[1], एसियं, वेसियं, पिंडवायं, एसित्ता आहारं आहारेज्जा ।

सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं वा ४ उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चाइक्खिस्सामि । माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा–आउसो ! त्ति वा, भगिणि ! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा ४ भोत्तए वा, पायए वा । मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि ।

से सेवं वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा ४ उवक्खडेत्ता आहट्टु दलएज्जा ।

तहप्पगारं असणं वा४ अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे॰ लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

नन्नत्थ-गिलाणाए-पदं

१२४–से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे॰ समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा–

१–समुदा॰ (क, घ, च, छ, ब)।

मंसं वा, मच्छं वा भज्जिज्जमाणं[1] पेहाए, तेल्लपूयं वा आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए, णो खद्धं-खद्धं उवसंकमित्तु ओभासेज्जा,

णन्नत्थ गिलाणाए[2]।

माइट्ठाण-पदं

१२५–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता सुब्भि-सुब्भि भोच्चा दुब्भि-दुब्भि परिट्ठवेइ।

माइट्ठाणं[3] संफासे। णो एवं करेज्जा।

सुब्भि वा दुब्भि वा, सव्वं भुंजे न छड्डए॥

१२६–से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, अण्णतरं वा पाणग-जायं पडिगाहेत्ता पुप्फं-पुप्फं आविइत्ता[4] कसायं-कसायं परिट्ठवेइ।

माइट्ठाणं संफासे। णो एवं करेज्जा।

पुप्फं-पुप्फेति वा, कसायं कसाए त्ति वा—सव्वमेयं भुंजेज्जा, णो किंचि वि परिट्ठवेज्जा।

१२७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुपरियावण्णं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता[5] साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुण्णा अपरिहारिया अदूरगया। तेसिं अणालोइया[6] अणामंतिया[7] परिट्ठवेइ।

१–भिज्जमाण (अ); मज्जमानमिति (वृ)।
२–गिलाणीए (अ, क, च); गिलाणणीसाए (छ)।
३–साति° (ब)।
४–आवेइत्ता (च); आवीइत्ता (छ)।
५–पडिगाहेत्ता बहवे (अ, छ, ब)।
६–° इय (च, छ)।
७–° मंते (घ)।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसंतो! समणा! इमे मे असणे[1] वा४ बहुपरियावण्णे, तं भुंजह णं[2] ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा—आउसंतो! समणा! आहारमेयं असणं वा४ जावइयं-जावइयं परिसडइ[3], तावइयं-तावइयं भोक्खामो वा, पाहामो वा ।

सव्वमेयं परिसडइ[4], सव्वमेयं भोक्खामो वा, पाहामो वा ।

वहियानीहड-पदं

१२८—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे°, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा४ परं समुद्दिस्स बहिया णीहडं, जं[5] परेहिं असमणुन्नायं अणिसिट्ठं—अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा,

जं[6] परेहिं समणुन्नायं सम्मं[7] णिसिट्ठं-फासुयं °एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

१२९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सयाजए ।

—ति बेमि ।°

१—असणं (क) ।
२—व ण (अ, ब) ।
३— °सरइ (घ, च, छ) ।
४— °सरइ (घ, च) ।
५,६—त्तं (अ, क, घ, च) ।
७—सम (अ, क, घ, ब) ।

दसमो उद्देसो

माइट्ठाण-पदं

१३०–से एगइओ साहारणं वा पिंडवायं पडिगाहेत्ता, ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्धं-खद्धं दलाति[1] ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता[2] वएज्जा[3]–आउसंतो! समणा! संति मम पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा, तं जहा–

आयरिए वा, उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा, गणावच्छेइए वा । अवियाइं एएसिं खद्धं-खद्धं दाहामि ।

'से णेवं वयंतं'[4] परो वएज्जा–कामं खलु आउसो! अहापज्जत्तं णिसिराहि[5] ।

जावइयं-जावइयं परो वयइ, तावइयं-तावइयं णिसिरेज्जा । सव्वमेयं परो वयइ, सव्वमेयं णिसिरेज्जा ॥

१३१–से एगइओ मणुन्नं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता पंतेण भोयणेण[6] पलिच्छाएति—मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए ।

आयरिए वा, °उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी

१—दलयति (अ) ।
२—गच्छेत्ता पुव्वामेव (अ, छ, व) ।
३—आलोएज्जा (ब) ।
४—सेवं (घ) ।
५—णिसराहि (अ, छ) ।
६—भोयणे जाईण (घ) ।

वा, गणहरे वा,° गणावच्छेइए वा। णो खलु मे कस्सइ किंचि वि दायव्वं सिया।

माइट्ठाणं संफासे। णो एवं करेज्जा।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे पडिग्गहं कट्टु—'इमं खलु'[1] इमं खलु त्ति आलोएज्जा, णो किंचि वि णिगूहेज्जा।

१३२—से एगइओ अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता—

भद्दयं-भद्दयं भोच्चा, विवन्नं विरस माहरइ।

माइट्ठाणं संफासे। णो एवं करेज्जा।

बहु-उज्झिय-धम्मिय-पदं

१३३—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,° सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा, उच्छु-गंडियं वा, उच्छु-चोयगं वा, उच्छु-मेरुगं[2] वा, उच्छु-सालगं वा, उच्छु-डगलं[3] वा, सिंबलिं[4] वा, सिंबलि-थालगं[5] वा।

अस्सिं खलु पडिग्गाहियंसि,

अप्पे सिया[6] भोयणजाए, बहुउज्झियधम्मिए।

तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा [जाव] सिंबलि-थालगं वा—

१—× (क, घ, छ, ब)।

२—° मेरगं (अ, व)।

३—आचारङ्गस्य १।१० वृत्तौ—'डालग' ति शाखैकदेश.। ७।२ वृत्तौ—'डालग' ति आम्रश्लक्ष्णा खण्डानि, इति लभ्यते, किन्तु निशीथस्यषोडशोद्देशे 'डगल' पाठो लभ्यते। तद् भाष्य चूर्णौडगलस्यार्थोविहितः। भाष्ये यथा—'डगल' चक्कलिछेदो (५४११); चूर्णौ यथा—चक्कलिछेदे छिण्ण डगलं भण्णति (भा० ४ पृष्ठ ६६)। आचारागे लिपि-दोषतः परिवर्तनमिद जातमिति संभाव्यते।

४—सबलिं (अ, क, च, छ); संपलिं (व)।

५—° थालिय (अ)।

६—× (क, घ, च, छ)।

अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

१३४—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,° सेज्जं पुण जाणेज्जा—

बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं।

अस्सिं खलु पडिगाहियंसि,

अप्पेसिया भोयण-जाएसु, बहुउज्झियधम्मिए।

तहप्पगारं बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

१३५—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सिया णं परो बहु-अट्ठिएण मंसेण[1] उवणिमंतेज्जा—

आउसंतो! समणा! अभिकंखसि बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए?

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म, से पुव्वामेव आलोएज्जा—

आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ से बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए,

अभिकंखसि मे दाउं जावइयं, तावइयं पोग्गलं दलयाहि, मा अट्ठियाइं।

से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्टु अंतो-पडिग्गहगंसि[2] बहु-अट्ठियं मंसं परिभाएत्ता[3] णिहट्टु दलएज्जा।

१—मसेण मच्छेण (अ, ब, छ)।
२—°पडिग्गहंसि (अ)।
३—परिभोउत्ता (अ); परियाभोएत्ता (क, च)।

तहप्पगारं पडिग्गहगं[1] परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं •ति मण्णमाणे° लाभे संते •णो° पडिगाहेज्जा ।

से आहच्च पडिगाहिए सिया, तं णोहि त्ति वएज्जा, णो अणहित्ति[2] वएज्जा ।

से त्त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा एगंतमवक्कमेत्ता, अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, अप्पंडए •अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पु-त्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणए मंसगं मच्छगं[3] भोच्चा अट्ठियाइं कंटए गहाय,

से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, २ त्ता अहे झामथंडिलंसि वा, •अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट-रासिंसि वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय,° पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजया मेव परिट्ठवेज्जा ।

अजाणया लोण-दाण-पदं

१३६–से भिक्खू वा •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे,

सिया से परोअभिहट्टु अंतो-पडिग्गहए विलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा,

तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं •ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

से आहच्च पडिग्गाहिए सिया, तं च णाइदूरगए जाणेज्जा,

१—° ग्गहण (अ) ।
२—अणिहित्ति (छ) ।
३—× (घ) ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, २ त्ता पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा 'इमं ते किं जाणया दिन्नं? उदाहु अजाणया[1]?'

सो य भणेज्जा—णो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया।

कामं[2] खलु आउसो! इदाणिं णिसिरामि। तं भुंजह च णं, परिभाएह च णं।

तं परेहिं समणुन्नायं समणुसिट्ठं, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा, पीएज्ज वा।

जं च णो संचाएति भोत्तए वा, पायए वा। साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया तेसिं अणुपदातव्वं।

सिया णो जत्थ साहम्मिया सिया, जहेव बहुपरियावन्ने कीरति, तहेव कायव्वं सिया।

१३७–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि।°

एगारसमो उद्देसो

माइट्ठाण-पदं

१३८–भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु—समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगामं 'वा दूइज्जमाणे'[3] मणुण्णं भोयण-जायं लभित्ता, से[4] भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह।

१—अजाणया दिन्न (घ)।
२—इमं (अ)।
३—दूइज्जमाणे वा (अ); दूइज्जमाणे (च, छ, व)।
४—से य (अ)।

से य भिक्खू णो भुंजेज्जा । तुमं चेव णं भुंजेज्जासि ।

से एगइओ भोक्खामित्ति कट्टु पलिउंचिय-पलिउंचिय आलोएज्जा, तं जहा–इमे पिंडे, इमे[1] लोए[2], इमे तित्तए, इमे कडुयए, इमे कसाए, इमे अंबिले, इमे महुरे, णो खलु एत्तो किंचि गिलाणस्स सयति त्ति ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

तहाठियं[3] आलोएज्जा, जहाठियं[4] गिलाणस्स सदति—तं तित्तयं तित्तएत्ति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति वा, अंबिलं अंबिलेत्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा ।

मणुण्ण-भोयण-जाय-पदं

१३९–भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु–समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगामं (वा ?) दूइज्जमाणे मणुन्नं भोयण-जायं लभित्ता से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह ।

सेय भिक्खू णो भुंजेज्जा । आहरेज्जासि[5] णं ।

णो खलु मे[6] अंतराए आहरिस्सामि । इच्चेयाइं[7] आयतणाइं उवाइकम्म ।

पिंडेसणा-पाणेसणा-पद

१४०–अह भिक्खू जाणेज्जा सत्त पिंडेसणाओ, सत्त पाणेसणाओ ।

१—× (क, च, छ) ।
२—लुक्खए (छ) ।
३—तहेव तं (अ, च, छ) ।
४—जहेव तं (अ, च, छ) ।
५—आहारेज्जासि (अ, घ, छ, ब) ; आहारेज्जा से (क च) ।
६—इमे (अ, क, च, छ, ब) ।
७—इच्चेइयाइ (क, छ, ब) ।

१४१–तत्थ खलु इमा पढमा पिंडेसणा–असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते।
तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण[1] वा, असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा–फासुयं °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा–पढमा पिंडेसणा।

१४२–अहावरा दोच्चा पिंडेसणा–संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते।
°तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, असणं वा ४ सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा–फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा–दोच्चा पिंडेसणा।°

१४३–अहावरा तच्चा पिंडेसणा–इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति-गाहावई वा, °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरो वा,° कम्मकरीओ वा।
तेसिं च णं अण्णतरेसु विरूव-रूवेसु भायण-जाएसु उवणिक्खित्तपुव्वे सिया, तं जहा—
थालंसि वा, पिढरंसि[2] वा, सरगंसि वा, परगंसि वा, वरगंसि वा।
अह पुणेवं जाणेज्जा–असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे असंसट्ठे[3] मत्ते।
से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहए[4] वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा–आउसो! त्ति वा भगिणि! ति वा एएगं तुमं

१–मत्तएण (अ, छ, ब)।
२–पिढरगंसि (अ, च), पिठरगंसि (घ), पिठरंसि (ब)।
३– °सट्ठे वा (क, च)।
४–° पडिग्गहिए (छ, ब)।

असंसट्ठेण हत्थेण संसट्ठेण मत्तेण, संसट्ठेण वा हत्थेण असंसट्ठेण मत्तेण, अस्सि पडिग्गहगंसि वा पाणिंसि वा णिहट्टु उवित्तु दलयाहि ।

तहप्पगारं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा फासुयं एसणिज्जं °ति मण्णमाणे॰ लाभे संते पडिगाहेज्जा—तच्चा पिंडेसणा ।

१४४–अहावरा चउत्था पिंडेसणा—से भिक्खू वा, °भिक्खुणी वा, गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,° सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा °बहुरजं वा, भुंज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°; चाउल-पलंबं वा ।

अस्सि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा [जाव] चाउल-पलंबं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा °—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते॰ पडिगाहेज्जा—चउत्था पिंडेसणा ।

१४५–अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, उवहितमेव[4] भोयण-जायं जाणेज्जा, तं जहा—सरावंसि वा, डिंडिमंसि वा, कोसगंसि वा ।

अहपुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे ।

तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा णं जाएज्जा °परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पंचमा पिंडेसणा ।

अहावरा छट्ठा पिंडेसणा— से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा

४—उग्गहिय° (घ)।

गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,° पग्गहियमेव[1] भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं च सयट्ठाए पग्गहियं, जं च परट्ठाए पग्गहियं, तं पाय-परियावन्नं, तं पाणि-परियावण्णं—फासुयं °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—छट्ठा पिंडेसणा ।

१४६–अहावरा सत्तमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, बहु-उज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं चऽन्ने बहवे दुपय-चउप्पय-समण-माहण-अतिहि-किवण वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं-भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा °—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—सत्तमा पिंडेसणा । इच्चेयाओ सत्त पिंडेसणाओ ।

१४७–अहावराओ सत्त पाणेसणाओ । तत्थ खलु इमा पढमा पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते—(१।१४१) ।

१४८–°अहावरा दोच्चा पाणेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते—(१।१४२) ।

१४९–अहावरा तच्चा पाणेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति—(१।१४३) ।

१५०–अहावरा चउत्था पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा ।

१—उग्गहिय ° (अ, क, च); उग्गहित पग्गहित (चू) ।

अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे, अप्पे पज्जवजाए। तहप्पगारं तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा।

१५१–अहावरा पंचमा पाणेसणा— से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, उवहित-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(१।१४५)।

१५२–अहावरा छट्ठा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, पग्गहिय-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(१।१४६)।

१५३–अहावरा सत्तमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, बहु उज्झिय-धम्मियं पाणग-जायं जाणेज्जा—० (१।१४७)।

१५४–इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडसेणाणं, सत्तण्हं पाणेसणाणं अण्णतरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छापडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति।

१५५–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि।

बीयं अज्झयणं

सेज्जा

पढमो उद्देसो

उवस्सयएसणा-पदं

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उवस्सयं एसित्तए',
अणुपविसित्ता गामं वा, •णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा,
मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा,
आसमं वा, सण्णिवेसं वा°, रायहाणिं वा,
सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
सअंडं •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-
दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणयं।
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा
चेतेज्जा।

२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अप्पंडं अप्पपाणं •अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-° संताणगं।
तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव
ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा।

अस्सिंपडियाए-उवस्सय-पदं

३—सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, •(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा° अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

४–•सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सिं पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

५–सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सिं पडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

६–सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सिं पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठ अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,

(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।°

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स[1] पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं °समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चएइ ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा, अपुरिसंतरकडे वा (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु° चेएइ ।

तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे °(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए अपरिभुत्ते° अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

९–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, °(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१–समुद्दिस्स तं चेव भाणियव्वं (घ, च) ।

परिकम्मिय-उवस्सय-पदं

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए[1] वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

११—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, •(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा,
•महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा बहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय ।° संथारगं संथारेज्जा[2], बहिया वा णिण्णक्खु ।[3]
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१–उक्कंपिए (क, घ, च, ब)।
२–सथारेज्जा (अ, क, घ, च, ब)।
३–णिणक्खु (क, छ)।

१३–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, •(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं

१४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा (तयाणि वा?)[1], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु ।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते° णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१५–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, •(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।

१६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खू-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ, बहिया वा णिण्णक्खु ।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, •(अबहिया णीहडे) अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविए° णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१७–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे •(बहिया णीहडे) अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।

१–यद्यप्ययमत्र प्रतिषु नोपलभ्यते, तथापि ३।३।५५ सूत्रमनुसृत्यासावत्र युज्यते ।

अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं

१८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—तंजहा—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नतरंसि वा तहप्पगारंसि वा अंतलिक्खजायंसि, णण्णत्थ आगाढाणागाढेहिं[1] कारणेहिं ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

से य आहच्च चेतिते सिया, णो तत्थ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा, मुहं वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा।

णो तत्थ ऊसढं पगरेज्जा, तंजहा—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा, पूतिं वा, सोणियं वा, अन्नयरं वा सरीरावयवं।

१९–केवली बूया—आयाण मेयं। से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,

से तत्थ पयलमाणे[2] वा पवडमाणे[3] वा हत्थं वा, •पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा,॰ सीसं वा, अन्नतरं वा कायंसि इंदिय-जातं लूसेज्ज वा।

पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि अभिहणेज्ज वा, •वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ॰ ववरोवेज्ज वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, •एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,॰

१–गाढा॰ (क, च, व); आगाढावगाढेहिं (घ): आगाढादीहिं (छ)।
२–पयले॰ (क, च, छ)।
३–पवडे॰ (क, च, छ)।

जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

सागारिय-उवस्सय-पदं

२०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
सइत्थियं, सखुड्डं, सपसुभत्तपाणं,
तहप्पगारे सागारिए[1] उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२१–आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावइ-कुलेण सद्धिं संवसमाणस्स अलसगे वा, विसूइया वा, छड्डी वा उव्वाहेज्जा,[2]
अन्नतरे वा से दुक्खे रोगातंके[3] समुप्पज्जेज्जा,
अस्संजए कलुण-पडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा,
सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण[4] वा, वण्णेण वा, चुन्नेण वा, पउमेण वा, आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा,
सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा 'उच्छोलेज्ज वा'[5], पहोएज्ज वा, सिणावेज्ज वा, सिंचेज्ज वा,
दारुणा वा दारुपरिणामं[6] कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,

१–साकारिए (छ, व)।
२–उप्पा° (क, च, व)।
३–रोगे आयके (घ)।
४–लोट्टेण (अ, व)।
५–उच्छोलेज्ज पच्छोलेज्ज वा (व)।
६–दारुणं परि° (अ, च); दारुण° (क)।

पज्जालेज्ज वा, उज्जालेत्ता-पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,

ज तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२२–आयाण मेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स[1],

इह खलु गाहावई वा, °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा, बंधंति[2] वा, रुंभंति वा, उद्दवेति[3] वा ।

अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अन्नमन्नं अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु, बंधंतु, वा मा वा बंधंतु, रुंभंतु वा मा वा रुंभंतु, उद्दवेतु वा मा वा उद्दवेतु ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, °एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२३–आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स[4],

इह खलु गाहावई अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा, विज्झावेज्ज वा ।

१—वसमाणस्स (व) ।

२—पहृति (क) ; × (च, व) ; वहृति (अ) ।

३—उद्दति वा उद्दवेति (घ) ; उद्दवंति वा उद्दवेति (छ) ।

४—वस ° (अ, घ, च, छ, व) ।

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अगणिकायं उज्जालेंतु वा मा वा उज्जालेंतु, पज्जालेंतु वा मा वा पज्जालेंतु, विज्झावेंतु वा मा वा विज्झावेंतु ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा °एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे (सागारिए?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२४–आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,

इह खलु गाहावइस्स कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, मोत्तिए वा, 'हिरण्णे वा'[1], 'सुवण्णे वा'[2], कडगाणि वा, तुडियाणि वा, तिसरगाणि[3] वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा, तरुणियं वा कुमारिं अलंकिय-विभूसियं पेहाए,

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एरिसिया वा सा णो वा एरिसिया—इति वा णं बूया, इति वा णं मणं साएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा °एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे (सागारिए?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

२५–आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,

इह खलु गाहावइणीओ वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-

१—× (अ)।
२—× (छ)।
३—तिसराणि (च)।

सुण्हाओ वा, गाहावइ-धाईओ वा, गाहावइ-दासीओ वा, गाहावइ-कम्मकरीओ वा।

तासिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ, जे इमे भवंति समणा भगवंतो °सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी° उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एतेसिं कप्पइ मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टित्तए।

जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टेज्जा, पुत्तं खलु सा लभेज्जा—ओयस्सिं तेयस्सिं वच्चस्सिं जसस्सिं संपराइयं[1] आलोयण-दरिसणिज्जं।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तासिं च णं अण्णयरी सड्ढी[2] त तवस्सि भिक्खुं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टा-वेज्जा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा °एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

२६—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि।°

१—सपहारियं (अ)।

२—सहियं (अ) ; सहित (ब)।

बीओ उद्देसो

२७—गाहावई णामेगे सुइ-समायारा भवंति, भिक्खू य असिणाणए[1] मोयसमायारे, 'से तग्गंधे'[2] दुग्गंधे पडिकूले पडिलोभे यावि भवइ ।

जं पुव्वकम्मं तं पच्छाकम्मं, जं पच्छाकम्मं तं पुव्वकम्मं ।

तं भिक्खु-पडियाए वट्टमाणे करेज्जा वा, नो 'वा करेज्जा ।'[3]

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।

२८—आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,

इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सअट्ठाए विरूव-रूवे भोयण-जाए उवक्खडिए सिया,

अह पच्छा भिक्खु-पडियाए असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा उवक्खडेज्ज वा, उवकरेज्ज वा,

तं च भिक्खू अभिकंखेज्जा भोत्तए वा, पायए वा, वियट्टित्तए वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।

१—असिणाणाए (अ)।
२—से से गंधे (अ, ब, क, घ, च, छ, चू)।
३—करेज्जा (अ); करेज्जा वा (छ, ब)।

२९–आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धिं संवसमाणस्स,
इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूव-रूवाइं दारुयाइं भिन्न-पुव्वाइं भवंति,
अह पच्छा भिक्खु-पडियाए विरूव-रूवाइं दारुयाइं भिंदेज्ज वा, किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा,
दारुणा वा दारुपरिणामं[1] कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा।
तत्थ भिक्खू अभिकंखेज्जा आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, वियट्टित्तए वा।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,
जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाण वा, •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा।

३०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चार-पासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे राओ वा विआले वा गाहावइ-कुलस्स दुवारवाहं अवंगुणेज्जा,
तेणे य तस्संधिचारी अणुपविसेज्जा।
तस्स भिक्खुस्स णो कप्पइ एवं वदित्तए—
अयं तेणे पविसइ वा णो वा पविसइ,
उवल्लियइ[2] वा णो वा उवल्लियइ,
अइपतति[3] वा णो वा अइपतति,
वदति वा णो वा वदति,
तेण हडं अण्णेण हडं,
तस्स हडं अण्णस्स हडं,

१–दारुण° (घ, च)।
२–उव्वलियति (च) ; उवलियत्ति (छ)।
३–आवयति (घ, च)।

अयं तेणे अयं उवचरए,
अयं हंता अयं एत्थमकासी,
तं तवस्सिं भिक्खुं[1] अतेणं तेणं ति संकति,
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,
जं तहप्पगारे उवस्सए। णो ठाणं वा, सेज्जं, णिसीहियं वा° चेतेज्जा।

तण-पलाला-च्छाइय-उवस्सय-पदं

३१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–
तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, सअंडे,[2] •सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय मक्कडा-° संताणए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

३२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–
तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, अप्पंडे[3] •अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए,
तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा।

ज्जियव्व-उवस्सय-पदं

३३–से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अभिक्खणं-अभिक्खणं साहम्मिएहिं ओवयमाणेहिं णोवएज्जा[4]।

१–भिक्खुय (अ, छ)।
२–चूर्णावत्र बहुवचन लभ्यते–'सडेहिं'।
३–चूर्णावत्र बहुवचनं लभ्यते–'अप्पडेहिं'।
४–गोयवएज्जा (अ); णो उवएज्जा (क, घ, च)।

३४–से आगंतारेसु वा, °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°, परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावित्ता[1] तत्थेव भुज्जो[2] संवसंति,

अयमाउसो! कालाइक्कंत-किरिया वि भवइ।

उवट्ठाण-किरिया-पदं

३५–से आगंतारेसु वा, °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°, परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावित्ता तं दुगुणा तिगुणेण[3] अपरिहरित्ता तत्थेव भुज्जो संवसंति,

अयमाउसो![4] उवट्ठाण-किरिया वि[5] भवइ।

अभिक्कंत-किरिया-पदं

३६–इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया,

सड्ढा भवंति, तंजहा—गाहावई वा, °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा।

तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति,

तंजहा—आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा,

१—° तिणिता (अ, क, च, घ, ब)।
२—भुज्जो मुज्जो (घ)।
३—दुगुणेण (अ, क, घ, च, ब)। स्वीकृत पाठ वृत्त्यनुसारी वर्तते।
४—अयमाउसो! इतरा (अ, च, ब)।
५—या वि (अ, ब)।

सहाओ[1] वा, पवाओ[2] वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध[3]-कम्मंताणि वा, वक्क[4]-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, 'संति-कम्मंताणि वा'[5], गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर[6]-कम्मंताणि वा, 'सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा'[7], भवणगिहाणि वा,

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव) भवण-गिहाणि वा तेहिं ओवयमाणेहिं ओवयंति,

अयमाउसो! अभिक्कंत-किरिया वि[8] भवइ ।

अणभिक्कंत-किरिया-पदं

३७–इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति,

तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिआइं भवंति,

---

१—सहाणि (क, घ, छ, ब)।
२—पवाणि (अ, क, घ, छ, ब)।
३—वत्थ° (छ)।
४—वल्कज° (वृ)।
५—संतिकम्मंताणि वा सुण्णागारकम्मंताणि वा (अ)।
६—कंदरा° (अ)।
७—सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा सयण-गिहाणि वा (छ)।
८—या वि (अ, क, घ, च, ब)।

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं ओवयंति,

अयमाउसो! अणभिक्कंत-किरिया वि भवति ।

वज्ज-किरिया-पदं

३८—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति,

तंजहा गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—

जे इमे भवंति समणा भगवंतो सीलमंता °वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी° उवरया मेहुणाओधम्माओ ।

णो खलु एएसि भयंताराणं कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए वत्थए । सेज्जाणिमाणि[1] अम्हं अप्पणो सअट्ठाए[2] चेतिताइं भवंति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा । सव्वाणि ताणि समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो सअट्ठाए चेतिस्सामो, तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

एयप्पगारं णिग्घोस सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३५) भवणगिहाणि वा । उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं[3] पाहुडेहिं वट्टंति ।

१— ° इमाणि (च) ।

२—अट्ठाए (अ, छ, ब) ।

३—इतरातिरेहिं (क, घ); इयरातरेहिं (अ, च) ।

अयमाउसो ! वज्ज-किरिया वि भवइ।

महावज्ज-किरिया-पद

३९—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति,
तंजहा— गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा,
तेसिं च णं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवइ,
तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहि बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति,
तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा।
जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा उवगच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं[1] पाहुडेहिं वट्टंति,
अयमाउसो! महावज्ज-किरिया वि भवइ ।

सावज्ज-किरिया-पदं

४०—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति,
तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।
तेसिं च ण आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,
तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिआइं भवंति,
तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा।

१—इतरातरेहिं (अ); इयराइयरेहिं (घ)।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहि पाहुडेहिं वट्टंति,

अयमाउसो! सावज्ज-किरिया वि भवइ ।

महासावज्ज-किरिया-पदं

४१–इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति,

तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवइ,

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमोहिं एगं समण-जायं समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

महया पुढविकाय-समारंभेणं, °महया आउकाय-समारंभेणं, महया तेउकाय-समारंभेणं, महया वाउकाय-समारंभेणं, महया वणस्सइकाय-समारंभेणं°, महया तसकाय-समारंभेणं, महया संरंभेणं, महया आरंभेणं, महया विरूव-रूवेहि पावकम्म-किच्चेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथार-दुवार-पिहणओ ।

सीतोदए वा परिट्ठवियपुव्वे भवइ,

अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ,

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, २ त्ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं दुपक्खं ते कम्मं सेवंति,

अयमाउसो! महासावज्ज-किरिया वि भवइ ।

अप्पसावज्ज-किरिया-पदं

४२—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति,
तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा।
तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,
तं सद्दहमाणेहि तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहि अप्पणो सअट्ठाए तत्थ-तत्थ अगारीहि अगाराइं चेतिताइं भवंति,
तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा।
महया पुढविकाय-समारंभेणं (जाव २।४१) अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ।
जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, २ त्ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं एगपक्खं ते कम्मं सेवंति,
अयमाउसो! अप्पासावज्ज-किरिया वि भवइ।

४३—एयं खलु तस्स भिक्खूस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, •जं सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि।°

तइओ उद्देसो

उवस्सय-छलण-पदं

४४—सिय[1] णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो य खलु सुद्धे इमेहिं पाहुडेहिं, तंजहा—छायणओ, लेवणओ, संथार-दुवार-पिहाणओ[2], पिंडवाएसणाओ।

१—से य (क, घ, च, छ, ब)।
२—° पिहुणाओ (अ); ° पिहणओ (घ)।

से[1] भिक्खू चरिया-रए, ठाण-रए, निसीहिया-रए, सेज्जा-संथार-पिंडवाएसणारए।

संति भिक्खुणो एव मक्खाइणो उज्जुया[2] णियाग-पडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा वियाहिया।

संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं णिक्खित्तपुव्वा भवइ, परिभाइयपुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ, परिट्ठवियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे समियाए[3] वियागरेति ? हंता भवइ।

उवस्सय-जयण-पदं

४५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—खुड्डियाओ, खुड्डुदुवारियाओ[4], निइयाओ[5] (नीयाओ?) संनिरुद्धाओ[6] भवंति।

तहप्पगारे उवस्सए राओ वा, विआले वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा पुरा हत्थेण पच्छा पाएण, तओ संजयामेव णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।

४६–केवली बूया—आयाण मेयं—जे तत्थ समणाण वा, माहणाण वा, छत्तए वा, मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, 'नालिया वा, चेलं वा'[7], चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा, चम्म-छेदणए वा—दुब्बद्धे दुण्णिक्खित्ते

१—से य (अ)।
२—उज्जुमडा (अ, छ)।
३—समिय (घ); समिया (छ)।
४— ° दुवाराओ (घ)।
५—नेरइयाओ (अ); नियइयाओ (घ)।
६—सनिरुद्धिओ (अ)।
७—नालिया वा चेले वा (अ); चेल वा नालिया वा (घ, त्र); नालिया वा (छ)।

अणिकंपे-चलाचले-भिक्खू य राओ वा, वियाले वा, णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा, पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा,

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा हत्थं वा, पायं वा, •बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा अन्नयरं वा कायंसि॰ इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, •वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ॰ ववरोवेज्ज वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,

जं तहप्पगारे उवस्सए पुरा हत्थेणं पच्छा पाएणं, तओ संजयामेव णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।

उवस्सय-जायणा-पदं

४७–से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ उवस्सयं जाएज्जा।

जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए[1], ते उवस्सयं अणुण्णवेज्जा—कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णातं वसिस्सामो जाव आउसंतो, जाव आउसंतस्स उवस्सए, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[2] उवस्सयं गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो।

१–समाहिट्ठाए (अ, क, घ, छ); समाहिट्ठए (ब)।
२–एवावता (अ); इत्ता त्ता (क); इत्ता वा (च); इं ताव (छ)।

सेज्जायर-णाम-गोय-पदं

४८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, तस्स पुव्वमेव णाम-गोयं जाणेज्जा। तओ पच्छा तस्स गिहे णिमंतेमाणस्स अणिमंतेमाणस्स वा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—अफासुयं °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

उवस्सय-विसुद्धि-पदं

४९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—ससागारियं सागणियं स-उदयं, णो पण्णस्स निक्खमणपवेसाए, णो पण्णस्स वायण-°पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए,

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा।

५०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—गाहावइ-कुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथं पडिबद्ध वा[1], णो पण्णस्स °णिक्खमणपवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए,

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

५१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ

१–× (अ)।

वा अण्णमण्ण मक्कोसंति वा, •बंधंति वा, रुंभंति वा°, उद्दवेंति वा, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिंताए,
सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा।

५२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगे(गें?) ति वा, मक्खे(खें?) ति वा, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा।

५३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा, अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण[1] वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आघंसंति वा, पघंसंति वा, उव्वलेति वा, उव्वट्टेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण (जाव २।४९) चिंताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, •सेज्जं वा, णिसीहियं वा°, चेतेज्जा।

५४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेति वा, पधोवेंति वा, सिचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिताए,

१–लोद्धेण (अ)।

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।

५५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सय जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ, णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेति, रहस्सियं वा मंतं मेतेति, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिंताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ।

५६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
आइण्णसलेक्खं[1], णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिंताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

संथारग-पदं

५७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं एसित्तए ।
सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—
सअंडं •सपाणं सबीअं सहरियं सउस सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-सताणगं—
तहप्पगारं संथारगं—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—
अप्पंडं •अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं, गरुयं,

१–° सलिखे (घ). ° सलेखे (छ) ।

तहप्पगारं संथारगं—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे॰ लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लहुयं अप्पडिहारियं, तहप्पगारं संथारगं[1]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे॰ लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लहुयं पाडिहारियं णो अहाबद्धं,
तहप्पगारं संथारगं—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे॰ लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, लहुयं पाडिहारियं अहाबद्धं, तहप्पगारं संथारयं—•फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे॰ लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

संथारग-पडिमा-पदं

६२–इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम्म अह भिक्खू जाणेज्जा, इमाहिं चउहिं पडिमाहिं संथारगं एसित्तए ।

६३–तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय संथारगं जाएज्जा, तंजहा—इक्कडं वा, कढिणं[2] वा, जंतुयं वा, परगं

१–क्वचित् 'सेज्जा संथारगं' इति पाठोऽस्ति । तत्र 'सेज्जा' लिपिदोषेण प्रक्षिप्त इति संभाव्यते ।

२–कढिणगं (घ) ।

वा, मोरगं[1] वा, तणं[2] वा, कुसं वा, 'कुच्चगं वा'[3], पिप्पलगं वा, पलालगं वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भगिणि! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं?

तहप्पगारं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं °ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ।

६४–अहावरा दोच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए संथारगं जाएज्जा, तंजहा—गाहावइं वा, गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं[4] वा,

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भगिणि! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं?

तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं °ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।

६५–अहावरा तच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, जे तत्थ अहासमण्णागए, तंजहा—इक्कडे वा, °कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा,

१–पोरग (घ) ।
२–तणगं (क, च, छ, ब) ।
३–कुच्चग वा वच्चग वा (चू) ।
४–कम्मकरी (अ, घ, ब), कम्मकरीय (च, छ) ।

पिप्पले वा°, पलाले वा। तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—तच्चा पडिमा।

६६—अहावरा चउत्था पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंथड मेव संथारगं जाएज्जा, तंजहा—पुढविसिलं वा, कट्ठसिलं वा अहासंथड मेव। तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—चउत्था पडिमा।

६७—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे •णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने,

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया° अन्नोन्नसमाहीए एवं च ण विहरंति।

संथारग-पच्चप्पण-पदं

६८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए।

सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं (जाव २।५७) संताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा।

६९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए।

सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, तहप्पगारं संथारगं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धुणिय[1]-विणिद्धुणिय, तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा।

१—विहुणिय २ (क, च); विद्धुणिय २ (घ, ब)।

उच्चारपासवण-भूमि-पदं

७०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा, वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं[1] पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ।

७१–केवली बूया–आयाण मेयं अपडिलेहियाए उच्चार-पासवण भूमिए, भिक्खू[2] वा भिक्खुणी वा राओ वा विआले वा उच्चार-पासवणं परिठ्ठवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,

से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा पायं वा •बाहुं वा, ऊरु वा, उदरं वा, सीसं वा, अन्नयरं वा कायंसि इंदिय-जायं॰ लूसेज्ज वा पाणाणि वा, •भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं सकामेज्ज वा, जीविआओ॰ ववरोवेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ।

सयण-विहि-पदं

७२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमि पडिलेहित्तए, णण्णत्थ आयरिएण वा उवज्झाएण वा, •पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा॰, गणावच्छेइएण[3] वा, बालेण वा, वुड्ढेण वा, सेहेण वा, गिलाणेण वा, आएसेण वा,

---

१—× (क, घ, च) ।
२—से भिक्खू (छ, ब) ।
३—गणावच्छेएण (च) ।

अंतेण वा, मज्झेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा, 'तओ संजयामेव'[1] पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय[2] बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेज्जा ।

७३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेत्ता अभिकंखेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहित्तए, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा संथारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव, बहु-फासुएं सेज्जा-संथारगे दुरुहेज्जा, २ त्ता तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए सएज्जा ।

७४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए सयमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा ।

से अणासायमाणे, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए सएज्जा ।

७५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए[3] वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसयं वा, पोसयं वा, पाणिणा परिपिहित्ता, तओ संजयामेव ऊससेज्ज[4] वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा, वायणिसग्गं वा करेज्जा ।

१—× (क, घ, च, ब) ।

२—पमज्जिय तओ संजयामेव (क, घ, च, छ, ब) ।

३—उड्डोए (घ, च, छ) ।

४—ऊसासेज्ज (क, घ, च, छ) ।

७६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—

समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा,

सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा,

सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा,

तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं संविज्जमाणाहिं पग्गहिततरागं विहारं विहरेज्जा, णो किंचिवि गिलाएज्जा।

७७–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—ति बेमि।

तइयं अज्झयणं

इरिया

पढमो उद्देसो

वासावास-पदं

१—अब्भुवगए खलु वासावासे अभिपवुट्ठे बहवे पाणा अभिसंभूया, बहवे बीया अहुणुब्भिन्ना[1], अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया •बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-°संताणगा, अणभिक्कंता पंथा, णो विण्णाया मग्गा, सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा।

२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा, •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा°, रायहाणिं वा,

इमंसि खलु गामंसि वा, •णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोणमुहंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा°, रायहाणिंसि वा—

णो महती विहारभूमी, णो महती वियारभूमी, णो सुलभे पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए, णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, बहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य, अच्चाइण्णा वित्ती—

१—अहुणुब्भिया (अ); अहुणोब्भिन्ना (घ); अहुणाभिन्ना (च, व),

णो पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, °णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह°-धम्माणुओग-चिंताए,

सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा, णगरं वा, (जाव) रायहाणि वा णो वासावासं उवल्लिएज्जा ।

३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा (जाव ३।२) रायहाणि वा,

इमंसि खलु गामंसि वा (जाव ३।२) रायहाणिंसि वा—

महती विहारभूमी, महती वियारभूमी, सुलभे जत्थ पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए, सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो जत्थ बहवे समण-°माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा° उवागया उवागमिस्संति य, अप्पाइण्णा वित्ती—

°पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए,

सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा (जाव ३।२)° रायहाणिं वा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ।

गामाणुगाम-विहार-पद

४–अह पुणेवं जाणेज्जा—

चत्तारि मासा वासाण वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा °बहुबीया बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय°-मक्कडा-संताणगा, णो जत्थ बहवे समण-°माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा° उवागया उवागमिस्संति य,

सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५—अह पुणेवं जाणेज्जा—

चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-रायकप्पे परिवुसिए,

अंतरा से मग्गा अप्पंडा °अप्पपाणा अप्पबीआ अप्पहरिया अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगा, बहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य,

सेवं णच्चा तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ जुगमायं पेहमाणे, दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पायं रीएज्जा, साहट्टु पायं रीएज्जा, उक्खिप्प पायं रीएज्जा, तिरिच्छं[1] वा कट्टु पायं रीएज्जा। सति परक्कमे संजता मेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा। तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा, उदए वा, मट्टिया वा अविद्धत्था। सति परक्कमे °संजता मेव परक्कमेज्जा°, णो उज्जुयं गच्छेज्जा। तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से विरूव-रूवाणि पच्चंतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि अकालपडि-बोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहाराए,

---

१—वितिरिच्छ (अ, घ, च, ब)।

सथरमाणेहि जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए ।

९–केवली बूया— आयाण मेयं ते णं बाला 'अयं तेणे' 'अयं उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्टु तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा, •बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा°, उद्दवेज्ज[1] वा,
वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुछणं 'अच्छिदेज्ज वा'[2], अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज[3] वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,
जं णो तहप्पगाराणि विरुव-रूवाणि पच्चंतियाणि दस्सुगायतणाणि •मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं°. विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए, तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहि, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज गमणाए ।

११–केवली बूया—आयाण मेय ते णं बाला 'अयं तेणे' •'अय उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्टु तं भिक्खं अक्कोसेज्ज वा, बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा,

---

१—उवद्दवेज्ज (अ, क, च, ब) ।
२—अच्छिदेज्ज वा भिंदेज्ज वा (च, छ, ब), अच्छिदेज्ज वा अभिदेज्ज वा (अ) ।
३—परिद्दवेज्ज (घ, च, ब) ।

वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा—एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तहप्पगाराणि अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहि जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज॰ गमणाए। तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

१२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा पाउणेज्ज वा, नो पाउणेज्ज वा,

तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं। सति लाढे •विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं॰, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए।

१३—केवली बूया—आयाण मेयं। अंतरा से वासे सिया, पाणेसु वा, पणएसु वा, बीएसु वा, हरिएसु वा, उदएसु वा, मट्टियासु[1] वा अविद्धत्थाए।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो॰, जं तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं •सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा॰ णो गमणाए, तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

१—मट्टिएसु (क, च); मट्टियाएसु (घ, छ)।

नावा-विहार-पदं

१४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे[1]—अंतरा से णावासंतारिमे उदए सिया। सेज्जं पुण णावं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा, णावाए वा णाव[2]-परिणामं कट्टु थलाओ वा णावं जलंसि ओगाहेज्जा, जलाओ वा णावं थलंसि उक्कसेज्जा, पुण्णं वा णावं उस्सिंचेज्जा, सण्णं वा णावं उप्पीलावेज्जा,
तहप्पगारं णावं उड्ढगामिणिं वा, अहेगामिणिं वा, तिरिय-गामिणिं वा, परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए वा अप्पतरो वा भुज्जतरो वा णो दुरुहेज्ज गमणाए।

१५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुव्वामेव तिरिच्छ-संपातिमं णावं जाणेज्जा, २ त्ता, से त्त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा, २ त्ता, भंडगं पडिलेहेज्जा[3] २ त्ता, एगाभोयं[4] भंडगं करेज्जा, २ त्ता, ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जेज्जा, २ त्ता, सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, २ त्ता, एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजया मेव णावं दुरुहेज्जा।

१६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावं दुरूहमाणे णो णावाए पुरओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मग्गओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मज्झतो दुरुहेज्जा, णो वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलिए[5] उवदंसिय-उवदंसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा।

१—दूइज्जेज्जा (क, घ, च, छ, ब)।
२—णाव (क, घ, च, छ, ब)।
३—पडिगाहेज्जा (घ, छ, ब)।
४—°भाय (अ); °भोयण (छ)।
५—अगुलियाए (च, छ, ब)।

१७–से णं परो णावा-गतो णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एयं ता[1] तुमं णावं उक्कसाहि वा, वोक्कसाहि वा, खिवाहि वा, रज्जुयाए[2] वा गहाय आकसाहि।

णो से तं परिन्नं परिजाणेज्जा[3], तुसिणीओ उवेहेज्जा।

१८–से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! णो संचाएसि तुमं णावं उक्कसित्तए वा, वोक्कसित्तए वा, खिवित्तए वा, रज्जुयाए वा गहाय आकसित्तए।

आहर एतं णावाए रज्जूयं, सयं चेव णं वयं णावं उक्कसिस्सामो वा, वोक्कसिस्सामो वा, खिविस्सामो वा, रज्जुयाए[4] वा गहाय आकसिस्सामो।

णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा।

१९–से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एयं ता[5] तुमं णावं अलित्तेण[6] वा, पिहएण[7] वा, वंसेण वा, वलएण वा, अवल्लएण[8] वा वाहेहि।

णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा।

१—× (अ, छ)।
२—रज्जूए (अ, क, घ, ब)।
३—जाणेज्जा (घ, ब)।
४—रज्जूए (च)।
५—× (छ)।
६—आलित्तेण (अ, क, घ, च, छ, ब)।
७—पीढेण (अ,क,घ,च,छ,ब)। अयं पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्यानुसारेण स्वीकृत।
८—अवल्लेण (च)।

२०—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो! समणा! एयं ता तुमं णावाए उदयं हत्थेण वा, पाएण वा, मत्तेण वा, पडिग्गहेण वा, णावा-उस्सिचणेण वा उस्सिचाहि।

णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा।

२१—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एतं ता तुमं णावाए उत्तिगं हत्थेण वा, पाएण वा, बाहुणा वा, ऊरुणा[1] वा, उदरेण वा, सीसेण वा, काएण वा, णावा-उस्सिचणेण वा, चेलेण वा, 'मट्टियाए वा, कुसपत्तएण वा'[2], कुविंदेण[3] वा पिहेहि।

णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसीणिओ उवेहेज्जा।

२२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावाए उत्तिगेणं उदयं आसवमाणं पेहाए, उवरुवरिं[4] णावं कज्जलावेमाणं पेहाए णो परं उवसंकमित्तु एवं बूया—आउसंतो! गाहावइ! एयं ते णावाए उदयं उत्तिगेणं आसवति, उवरुवरि वा णावा कज्जलावेति।

एतप्पगारं मणं वा वायं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से, एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज[5] समाहीए, तओ संजयामेव णावा-संतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा।

१—उरुणा (घ, च, छ, ब)।

२—निशीथ-चूर्णि, भाग ४, पृष्ठ २०९ : 'मट्टियाए वा कुसपत्तेण वा' इत्यस्य स्थाने 'कुसुमट्टियाए वा' इति पाठोऽस्ति।

३—कुरुविंदेण (अ,क,घ,च,छ,ब)—अयं पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्यानुसारेण स्वीकृत।

४—उवरुवरिं (घ)।

५—विउसज्ज (क)।

२३–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सदा जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

बीओ उद्देसो

२४–से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो! समणा! एयं ता तुमं छत्तगं वा, °मत्तगं वा, दंडगं वा, लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेलं वा, चिलिमिलिं वा, चम्मगं वा, चम्म-कोसगं वा°, चम्म-छेयणगं वा गेण्हाहि, एयाणि तुमं विरूव-रूवाणि सत्थ-जायाणि धारेहि, एयं ता तुमं दारगं वा 'दारिगं वा'[1] पज्जेहि,
णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

२५–से णं परो णावा-गए णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो! एस णं समणे णावाए भंडभारिए भवइ । से णं बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह[2] ।
एतप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से य चीवरधारी सिया, खिप्पामेव चीवराणि उव्वेढ्ढिज्ज वा, णिव्वेढ्ढिज्ज वा, उप्फेसं वा करेज्जा ।

२६–अह पुणेवं जाणेज्जा—अभिक्कंत-कूरकम्मा खलु बाला बाहाहिं गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा ।
से पुव्वामेव वएज्जा—आउसंतो! गाहावइ! मा मेत्तो बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह, सयं चेव णं अहं णावातो उदगंसि ओगाहिस्सामि ।

१—× (क, घ, च) ।
२—पक्खिवेज्जा (क, घ, च, छ, ब) ।

से णेवं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा, तं णो सुमणे सिया, णो दुम्मणे[1] सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसि बालाणं घाताए वहाए समुट्ठेज्जा ।

अप्पुस्सुए °अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा ।
'से अणासायमाणे'[2], तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो उम्मग्ग[3]-णिमग्गियं[4] करेज्जा,
मामेयं उदगं कण्णेसु वा, अच्छीसु वा, णक्कंसि वा, मुहंसि वा परियावज्जेज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे दोब्बलियं पाउणेज्जा,
खिप्पामेव उवहिं विगिंचेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो चेव णं सातिज्जेज्जा ।[5]

३०—अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठेज्जा ।

१—दुमणे (घ, छ, ब) ।
२—से अणासादए अणा° (अ) ।
३—उम्मुग्ग (घ, च, ब) ।
४—° णिम्मुग्गिय (घ, च) ।
५—सातिज्जेज्ज वा (छ) ।

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा।

३२—अह पुण एवं जाणेज्जा विगओदए मे काए, वोच्छिन्न-सिणेहे[1] मे काए,
तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा (जाव ३।३१) पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

३३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं
परिजविय-परिजविय गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

जंघासंतारिम-उदग-पदं

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से जंघा-संतारिमे उदए सिया,
से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे य पमज्जेज्जा, २ त्ता °सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, २ त्ता° एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए[2] अहारियं रीएज्जा।

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदगे अहारियं रीयमाणे, णो 'हत्थेण हत्थं'[3] पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा। 'से अणासायमाणे'[4], तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा।

१—छिन्न ° (क, घ, च, ब)।
२—उदगंसि (क, घ, च)।
३—हत्थेण वा हत्थ (अ) (सर्वत्र)।
४—से अणासादए अणा ° (अ)।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे णो साय-वडियाए[1], णो परदाह-वडियाए, महइ महालयंसि उदगंसि काय विउसेज्जा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए अहारिय रीएज्जा ।

३७—अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ सजयामेव उदउल्लेण वा ससणिद्धेण[2] वा काएण दगतीरए[3] चिट्ठेज्जा ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं, ससणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा ।

३९—अह पुणेवं जाणेज्जा—विगतोदए मे काए, छिण्णसिणेहे मे काए,

तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा °पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज वा णिल्लिहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा आयावेज्ज वा° पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो मट्टियामएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, विकुज्जिय-विकुज्जिय, विफालिय-विफालिय, उम्मग्गेणं हरिय-वहाए गच्छेज्जा । "जहेयं[4] पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु" ।

माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१–साया° (अ) ।
२–ससिणिद्धेण (च) ।
३–उदगतीरए (घ) ।
४–जमेतं (छ) ।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

४१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा। सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा।

४२–केवली बूया—आयाण मेयं। से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा।

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा रुक्खाणि वा, गुच्छाणि वा, गुम्माणि वा, लयाओ वा, वल्लीओ वा, तणाणि वा, गहणाणि वा, हरियाणि वा, अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा[1], जे तत्थ पाडिपहिया[2] उवागच्छंति, ते पाणी जाएज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा[3], तओ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

४३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से जवसाणि वा, सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा, परचक्काणि वा, सेणं वा विरूव-रूवं सण्णिविट्ठं[4] पेहाए, सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जुयं गच्छेज्जा।

अभिणिचारिय-पदं

४४–से णं परो सेणागओ वएज्जा—आउसंतो! एस णं समणे सेणाए अभिणिचारियं[5] करेइ। से णं बाहाए गहाय

१–उत्तारेज्जा (अ)।
२–पाडिवघेया (क); पडिवाहेया (घ); पाडिपडिया (छ)।
३–उत्तारेज्जा (अ)।
४–सणिरुद्ध (ब)।
५–अभिणिवारियं (अ, क, घ, च, ब)।

आगसह । से णं परो बाहाहिं गहाय आगसेज्जा । तं णो सुमणे सिया, °णो दुम्मणे सिया, णो उच्चावयं णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाणं घाताए वहाए समुट्ठेज्जा । अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज’ समाहीए। तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

पाडिपहिय-पदं

४५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो! समणा! केवइए एस गामे वा, °णगरे वा, खेडे वा, कब्बडे वा, मडंबे वा, पट्टणे वा, आगरे वा, दोणमुहे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा°, रायहाणी वा ?

केवइया एत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा परिवसंति ?

से बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे ?

से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ?

‘एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो नो आइक्खेज्जा,

एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा’[१] ।

४६–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—ति बेमि° ।

१–× (व) ; एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (क, च, छ) ; एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एय पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (घ)।

तइओ उद्देसो

अंगचेट्ठापुव्वं निज्झाण-पदं

४७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे–अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, °तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल पासगाणि वा, गड्डाओ वा,° दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय–कडं, थूमं वा चेइय–कडं, आएसणाणि वा, °आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा°, भवणगिहाणि वा णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय, णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे–अंतरा कच्छाणि वा, दवियाणि वा, णूमाणि वा, वलयाणि वा, गहणाणि वा, गहण-विदुग्गाणि वा, वणाणि वा, वण-विदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वय-विदुग्गाणि वा, अगडाणि वा, तलागाणि वा, दहाणि वा, णदीओ वा, वावीओ वा, पोक्खरिणीओ वा; दीहियाओ वा, गुंजालियाओ वा,

सराणि वा; सर-पंतियाणि वा, सर-सर-पंतियाणि वा णो बाहाओ पगिज्भिय-पगिज्भिय (जाव ३।४७) णिज्भाएज्जा ।

४९—केवली बूया 'आयाण मेयं' जे तत्थ मिगा वा, पसुया[1] वा, पक्खी वा, सरीसिवा[2] वा, सीहा वा, जलचरा वा, थलचरा वा, खहचरा वा सत्ता । ते उत्तसेज्ज वा, वित्तसेज्ज वा, वाडं वा सरणं वा कंखेज्जा,

चारे त्ति मे अयं समणे ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं णो बाहाओ पगिज्भिय-पगिज्भिय (जाव ३।४७) णिज्भाएज्जा, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्भाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आयरिय-उवज्भाय-सद्धिं-विहार-पद

५०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्भाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे, णो आयरिय-उवज्भायस्स हत्थेण हत्थं, •पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा ।

से° अणासायमाणे, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्भाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्भाएहिं सद्धिं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं पाडिपहिया एवं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा गच्छिहिह?

१—पसू (अ) ।

२—सिरीसिवा (अ, ब, च) ।

जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासेज्ज वा, वियागरेज्ज वा। आयरिय-उवज्झायस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं करेज्जा। तओ संजयामेव आहारातिणिए[1] दूइज्जेज्जा।

आहारातिणिय-सद्धि-विहार-पदं

५२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं गामाणुगामं दूइज्जमाणे, णो रातिणियस्स हत्थेण हत्थं, •पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा।

से० अणासायमाणे, तओ संजयामेव आहारातिणियं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

५३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा। ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—

आउसंतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा गच्छिहिह?

जे तत्थ सव्वरातिणिए[2] से भासेज्ज वा, वियागरेज्ज वा। रातिणियस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं भासेज्जा। तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

पाडिपहिय-पदं

५४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा[3]। ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—

१-°राइणियाए (अ, ब); अहा° (घ, च)।

२-रातिणिए (घ)।

३-आगच्छेज्जा (अ, च, छ)।

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह, तंजहा–मणुस्सं वा, गोणं वा, महिसं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं[1] वा, जलयरं वा ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं[2] तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा[3] । ते णं पाडिपहिया एवं वएज्जा–

आउसंतो! समणा! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह–उदगपसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, 'तयाणि वा, पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा'[4], उदगं वा संणिहियं, अगणिं वा संणिक्खित्तं? से आइक्खह, °दंसेह । त णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं° दूइज्जेज्जा ।

५६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह–जवसाणि वा, °सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा,

१—सिरीसिव (अ, छ, ब) ; सिरीसव (च) ।
२—तस्स (क, च, छ) ।
३—आगच्छेज्जा (अ, छ) ।
४—तया पत्ता पुप्फा फला बीया हरिया (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

परचक्काणि वा°, सेणं वा विरूव-रूवं संणिविट्ठं? से आइक्खह, दंसेह। तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

५७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया •उवागच्छेज्जा। तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा°—

आउसंतो! समणा! केवइए एत्तो गामे वा, •णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मडंबे वा, पट्टणे वा, आगरे वा, दोणमुहे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा°, रायहाणी वा? से आइक्खह, दसेह। तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्ण परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

५८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा। ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा–

आउसंतो! समणा! केवइए एत्तो गामस्स वा, णगरस्स वा, •खेडस्स वा, कव्वडस्स वा, मडंबस्स वा, पट्टणस्स वा, आगरस्स वा, दोणमुहस्स वा, णिगमस्स वा, आसमस्स वा, सण्णिवेसस्स वा°, रायहाणीए वा मग्गे? से आइक्खह, दसेह। तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

वियाल-पदं

५९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से गोणं वियालं पडिपहे पेहाए, °महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थिं, सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं, अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोल-सुणयं, कोकंतियं,° चित्ताचिल्लडं—

वियालं पडिपहे पेहाए, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कखेज्जा, अप्पुस्सुए °अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमोसग-पद

६०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा उवगरण-पडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

६१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा। ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा–आउसंतो! समणा! 'आहर एयं'[1] वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुंछणं वा–देहि, णिक्खिवाहि। तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा।

ते णं आमोसगा 'सयं करणिज्जं'[2] त्ति कट्टु अक्कोसंति वा, °बंधंति वा, रुंभंति वा°, उद्दवंति वा। वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुंछणं वा अच्छिंदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज[3] वा।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया–आउसंतो! गाहावइ। एए खलु आमोसगा उवगरण-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्टु अक्कोसंति वा (जाव) परिभवेंति[4] वा। एयप्पगारं मणं वा वइं[5] वा णो पुरओकट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए °अबहिल्लेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

६२–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि।

१—आहारं एवं (छ); आहर एत्थ (अ, क, व)।
२—सयं करणिज्जा करणिज्जं (च)।
३—परिट्ठ° (अ, क, घ, च, छ, व)।
४—परिट्ठ° (अ, क, घ, च, छ, व)।
५—वाय (च); वयं (छ, व)।

चउत्थं अज्झयणं

भासा

पढमो उद्देसो

वइ-अणायार-पदं

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इमाइं वइ-आयाराइं सोच्चा णिसम्म इमाइं-अणायाराइं अणायरियपुव्वाइं जाणेज्जा—जे कोहा वा वायं विउंजंति, जे माणा वा वायं विउंजंति, जे मायाए वा वायं विउंजंति, जे लोभा वा वायं विउंजंति, जाणओ वा फरुसं वयंति, अजाणओ वा फरुसं वयंति, सव्वमेयं[1] सावज्जं वज्जेज्जा विवेग मायाए।

२—धुवं चेयं जाणेज्जा, अधुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा (४) लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, अदुवा आगए अदुवा णो आगए; अदुवा एइ अदुवा णो एइ, अदुवा एहिति अदुवा णो एहिति, एत्थवि आगए एत्थवि णो आगए, एत्थवि एइ एत्थवि णो एइ, एत्थवि एहिति एत्थवि णो एहिति।

सोडस-वयण-पदं

३—अणुवीइ[2] णिठ्ठाभासी, समियाए संजए भासं भासेज्जा, तंजहा—एगवयणं, दुवयणं, वहुवयण, इत्थीवयणं[3], पुरिसवयणं, णपुंसगवयणं, अज्झत्थवयणं, उवणीयवयणं, अवणीयवयणं, उवणीय-अवणीयवयणं, अवणीय-उवणीयवयणं,

---

१—सव्व वेय (क, च, व) ; सव्व चेयं (घ)।
२—अणुवीय (छ)।
३—इत्थि ० (अ)।

तीयवयणं, पडुप्पन्नवयणं, अणागयवयणं, पच्चक्खवयणं, परोक्खवयणं ।

४—से एगवयणं वदिस्सामीति एगवयणं वएज्जा,
°दुवयणं वदिस्सामीति दुवयणं वएज्जा,
बहुवयणं वदिस्सामीति बहुवयणं वएज्जा,
इत्थीवयणं वदिस्सामीति इत्थीवयणं वएज्जा,
पुरिसवयणं वदिस्सामीति पुरिसवयणं वएज्जा,
णपुंसगवयणं वदिस्सामीति णपुंसगवयणं वएज्जा,
अज्झत्थवयणं वदिस्सामीति अज्झत्थवयणं वएज्जा,
उवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीयवयणं वएज्जा,
अवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीयवयणं वएज्जा,
उवणीय-अवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीय-अवणीयवयणं वएज्जा,
अवणीय-उवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीय-उवणीयवयणं वएज्जा,
तीयवयणं वदिस्सामीति तीयवयण वएज्जा,
पडुप्पन्नवयणं वदिस्सामीति पडुप्पन्नवयण वएज्जा,
अणागयवयणं वदिस्सामीति अणागयवयणं वएज्जा,
पच्चक्खवयणं वदिस्सामीति पच्चक्खवयणं वएज्जा°,
परोक्खवयणं वदिस्सामीति परोक्खवयणं वएज्जा ।

अणुवीइ-णिट्ठाभासि-पदं

५—'इत्थी वे'स पुरिस वे'स, णपुंसग वे'स'[1], एवं[2] वा चेयं,

१—इत्थीवेद पुवेय णपुसगवेय (घ, छ, ब) ।
२—एयं (घ, छ) ।

अण्णं[1] वा चेयं, अणुवीइ णिट्ठाभासी, समियाए संजए भासं भासेज्जा, इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म ।

भासाजात-पदं

६—अह भिक्खू जाणेज्जा चत्तारि भासज्जायाइं, तंजहा—सच्च-मेगं[2] पढमं भासजायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चामोसं, जं णेव सच्चं णेवमोसं नेव सच्चामोसं—असच्चामोसं णाम तं चउत्थं भासजातं ।

७—से बेमि—जे अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य अणागया अरहंता भगवंतो सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु वा, भासंति वा, भासिस्संति वा, पण्णविंसु वा, पण्णवेंति वा, पण्णविस्संति वा ।

८—सव्वाइं च णं एयाणि अचित्ताणि वण्णमंताणि गंधमंताणि रसमंताणि फासमंताणि चयोवचइयाइं[3] विपरिणामधम्माइं[4] भवंतीति अक्खायाइं[5] ।

९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पुव्वं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयविइक्कंता[6] भासिया भासा अभासा ।

सावज्ज-असावज्ज-पदं

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
जा य भासा सच्चा, जा य भासा मोसा, जा य भासा सच्चामोसा, जा य भासा असच्चामोसा,

१—अण्णहा (अ, च. छ, ब) ।
२—°मेय (अ, घ. छ), °मेत (क) ।
३—चओवचए (अ), चयोवचया: (छ) ; चयोवचयमनाणि (ब) ।
४—विविहपरिणाम° (च, छ) ।
५—समक्खायाइ (अ) ।
६—°विइक्कतं च ण (क, घ, च, छ) ।

तहप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं कक्कसं कडुयं निठ्ठुरं फरुसं अण्हयकरि छेयणकरिं भेयणकरि परितावणकरि उद्दवणकरि भूतोवघाइयं अभिकंख 'णो भासेज्जा'[1]।

११–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा–

जा य भासा सच्चा सुहुमा, जा य भासा असच्चामोसा, तहप्पगारं भासं असावज्जं अकिरियं •अकक्कसं अकडुयं अनिट्ठुरं अफरुसं अणण्हयकरिं अछेयणकरिं अभेयणकरि अपरितावणकरिं अणुद्दवणकरिं° अभूतोवघाइयं अभिकंख[2] भासेज्जा।

आमंतणीभासा-पदं

१२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिते वा अपडिसुणेमाणे णो एवं वएज्जा–

'होले ति वा, गोले ति वा'[3], वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा घडदासे ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा 'इच्चेयाइं तुमं एयाइं'[4] ते जणगा वा–

एतप्पगारं[5] भासं सावज्जं सकिरियं (जाव ४।१०) अभिकंख नो भासेज्जा।

१३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अपडिसुणेमाणे एवं वएज्जा–

१—णो भास भासेज्जा (अ, ब) ; भास णो भासेज्जा (घ)।
२—अभिकख भासं (अ, घ, छ)।
३—होले इ वा गोले इ वा (घ) ; होलि त्ति वा गोलि त्ति वा (छ)।
४—इतियाइं तुम इतियाइ (अ) ; एयाइं तुम° (क, च) ; एतिया तुम° (ब)।
५—तहप्पगार (छ)।

अमुगे ति वा, आउसो ति वा, आउसंतो[1] ति वा, सावगे ति वा, उपासगे ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये ति वा—
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।११) अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ।

१४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थि आमंतेमाणे आमंतिए य अपडिसुणेमाणी नो एवं वएज्जा–
होले ति वा, गोले ति वा, °वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा, घडदासी ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा, इच्चेयाइं तुम एयाइं ते जणगा वा–
एतप्पगारं भास सावज्जं (जाव ४।१०) अभिकंख णो भासेज्जा° ।

१५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थियं आमंतेमाणे आमंतिए य अपडिसुणेमाणी एवं वएज्जा–
आउसो ति वा, 'भगिणी ति वा'[2], भगवई ति वा, साविगे ति वा, उवासिए ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये[3] ति वा—
एतप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।११) अभिकंख भासेज्जा ।

विधि-निसिद्ध भासा-पद

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो एवं वएज्जा—
णभोदेवे[4] ति वा, गज्जदेवे[5] ति वा, विज्जुदेवे ति वा,

१—आउसतारो (क, घ, छ) ।
२—भगिणि ति वा भोई ति वा (क, घ, च) ।
३—धम्मिणिए (क) ।
४—णभ देवे (घ) ।
५—गज्ज देवे (व) ।

पवुट्ठदेवे[1] ति वा, निवुट्ठदेवे ति वा, पडउ वा वासं मा वा पडउ, णिप्फज्जउ वा सस्सं[2] मा वा णिप्फज्जउ, विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ, उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ, सो वा राया जयउ मा वा जयउ—णो एतप्पगारं भासं भासेज्जा पण्णवं ।

१७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतलिक्खे ति वा, गुज्झाणुचरिए ति वा, संमुच्छिए ति वा, णिवइए[3] ति वा 'पओए, वएज्ज'[4] वा वुट्ठबलाहगे ति वा ।

१८—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—ति बेमि ।

बीओ उद्देसो

कक्कस-भासा-पद

१९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

गंडी गंडी ति वा, कुट्ठी कुट्ठी ति वा, •रायंसी रायंसी ति वा, अवमारियं अवमारिए ति वा, काणियं काणिए ति वा, झिमियं झिमिए ति वा, कुणियं कुणिए ति वा, खुज्जियं खुज्जिए ति वा, उदरी उदरी ति वा, मूयं मूए ति

१—पवुट्ठो ° (अ)।
२—सासं (अ, ब)।
३—णिवडिए (च)।
४—तओ एवं वदेज्जा (छ)।

वा, सूणियं सूणिए ति वा, गिलासिणी गिलासिणी ति वा, वेवई वेवई ति वा, पीढसप्पी पीढसप्पी ति वा, सिलिवयं सिलिवए ति वा०, महुमेहणी महुमेहणी[1] ति वा, हत्थछिन्नं हत्थछिन्ने ति वा, •'पादछिन्नं पादछिन्ने ति वा, नक्कछिन्नं नक्कछिन्ने ति वा, कण्णछिन्नं कण्णछिन्ने ति वा, ओट्ठछिन्नं॰ ओट्ठछिन्ने ति वा'[2] जे यावण्णे तहप्पगारे तहप्पगाराहिं[3] भासाहि बुइया-बुइया[4] कुप्पंति माणवा, तेयावि तहप्पगाराहिं भासाहि अभिकंख णो भासेज्जा ।

अकक्कस-भासा-पदं

२०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं एवं वएज्जा[5] तंजहा—

ओयंसी ओयंसी ति वा, तेयंसी तेयसी ति वा, वच्चसी वच्चंसी ति वा, जससी जसंसी ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा, पासाइयं पासाइए ति वा, दरिसणिज्जं दरिसणीए ति वा, जे यावण्णे तहप्पगारा तहप्पगाराहिं[6] भासाहिं बुइया-बुइया णो कुप्पंति माणवा, ते यावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं[7] भासाहिं अभिकंख भासेज्जा[8] ।

१—महुमेही (छ) ।
२—एव पाद नक्क कण्ण ओट्ठ ° (अ); एव पाद कण्ण नक्क ° (छ, व) ।
३—एयप्प ° (क, छ) ।
४—× (अ) ।
५—भासेज्जा (छ) ।
६—एयप्प ° (अ, घ, च) ।
७—पूर्व सूत्रे 'तहप्पगाराहिं' विद्यते किन्तु अत्र प्रतिषु नास्ति ।
८—भासेज्जा । तहप्पगार भास असावज्ज जाव भासेज्जा (अ, व) ।

सावज्ज-असावज्ज-भासा-पद

२१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तंजहा—

वप्पाणि वा, •फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गलपासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-कडं, थूभं वा चेइय-कडं, आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा,० भवण-गिहाणि वा—तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, 'साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा'[1], करणिज्जे ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं •सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं भूतोवघाइयं अभिकंख० णो भासेज्जा।

२२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तंजहा—

१—साहुकल्लाण ति वा (अ, छ)।

वप्पाणि वा (जाव ४।२१) भवणगिहाणि वा—तहावि ताइं एव वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, पासादियं पासादिए ति वा, दरिसणीयं दरिसणीए ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं °अकिरियं अकक्कसं अकडुयं अनिट्ठुरं अफरुसं अणण्हयकरिं अछेयणकरिं अभेयणकरिं अपरितावणकरिं अणुद्दवणकरिं अभूतोवघाइयं अभिकंख° भासेज्जा।

२३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए तहावि[1] तं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा, करणिज्जे ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा।

२४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, भद्दयं भद्दए ति वा, ऊसढं ऊसढे ति वा, रसियं रसिए ति वा, मणुण्ण मणुण्णे ति वा—

एयप्पगारं[2] भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा।

२५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं[3] वा, गोणं वा, महिसं वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं वा, जलयरं वा,

१—तहाविह (घ, ब)।
२—तहप्प° (अ, च)।
३—माणुस्स (घ, छ)।

से त्तं[1] परिवूढकायं पेहाए णो एवं वएज्जा—थूले ति[2] वा, पमेइले ति वा, वट्टे ति वा, वज्झे ति वा, पाइमे ति वा— एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं (जाव ४।२५) जलयरं वा, से त्तं परिवूढकायं पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा— परिवूढकाए ति वा, उवचियकाए ति वा, थिरसंघयणे ति वा, चियमंससोणिए ति वा, बहुपडिपुण्णइंदिए ति वा— एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए णो एवं वएज्जा, तंजहा—
गाओ दोज्झाओ[3] ति वा, दम्मे[4] ति वा, गोरहे[5] ति वा, 'वाहिमा ति वा, रहजोग्गाति वा'[6]—
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा—
जुवंगवे ति वा, धेणू ति वा, रसवती ति वा, हस्से[7] ति वा, महल्लए[8] ति वा, महव्वए ति वा, संवहणे ति वा—
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिकंख भासेज्जा।

१—त (छ)।
२—थुल्ले (अ, क, च, छ)।
३—दोज्झा (अ, क, च, छ, ब)।
४—दम्मा (अ, च, ब)।
५—गोरहा (अ, च, ब)।
६—वाहनयोग्यो रथयोग्य- (वृ)।
७—ह्रस्से (घ, छ); रहस्से (ब)।
८—महल्ले (छ, ब)।

२९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाइं वणाणि य[1] रुक्खा महल्ला पेहाए णो एवं वएज्जा, तंजहा–
पासायजोग्गा ति वा, 'गिहजोग्गा ति वा, तोरणजोग्गा'[2] ति वा, 'फलिहजोग्गा ति वा, अग्गल'[3]-नावा-उदगदोणि-पीढ-चंगवेर[4]-णंगल-कुलिय-जंतलट्ठी-णाभि-गंडी-आसण-सयण-जाण-उवस्सय-जोग्गा ति वा–
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा।

३०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाणि वणाणि य रुक्खा महल्ला पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा–
जातिमंता ति वा, दीहवट्टा ति वा, महालया ति वा, पयायसाला ति वा, विडिमसाला ति वा, पासाइया ति वा, दरिसणीयाति वा, अभिरूवा ति वा, पडिरूवा ति वा–
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिकंख भासेज्जा।

३१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया वणफला पेहाए तहावि ते णो एवं वएज्जा, तंजहा–
पक्का ति वा, पायखज्जा ति वा, वेलोचिया[5] ति वा, टाला ति वा, वेहिया ति वा–
एयप्पगारं भासं सावज्ज (जाव ४।२१) णो भासेज्जा।

३२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया 'वणफला अंबा'[6] पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा–

१–वा (च, ब)।
२–तोरणजोग्गा ति वा गिहजोग्गा (अ. ब)।
३–अग्गलजोग्गा ति वा फलिह (च)।
४–सिंगवेर (अ, ब)।
५–वेलोविगा (अ); वेलोतिया (क, घ, च), वेलोविया (ब)।
६–वणफणा (क, च, ब), फलअंबा (वृ)।

असंथडा इ वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसंभूया इ वा, भूयरूवा ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए तहावि ताओ णो एवं वएज्जा, तंजहा—
पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छवीया[1] ति वा, लाइमा ति वा, भज्जिमा ति वा, बहुखज्जा ति वा—
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा—
रूढा ति वा, बहुसंभूया ति वा, थिरा ति वा, ऊसढा ति वा, गब्भिया ति वा, पसूया ति वा, ससारा[2] ति वा—
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा, तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—
सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दे ति वा'[3]—
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा[4], ताइं एवं वएज्जा, तंजहा—

१–छवी (अ) ।
२–ससारा (अ, छ) ।
३–× (च, छ) ।
४–× (अ, क, च, छ, ब) ।

सुसद्दं सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दं दुसद्दे ति वा'[1]—
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३७–एवं···रूवाइं·····कण्हे ति वा, णीले ति वा, लोहिए ति वा, हालिद्दे ति वा, मुकिल्ले ति वा,
गंधाइं·····सुब्भिगंधे ति वा, दुब्भिगंधे ति वा,
रसाइं·····तित्ताणि वा, कडुयाणि वा, कसायाणि वा, अंबिलाणि वा, महुराणि वा,
फासाइं·····कक्खडाणि वा, मउयाणि वा, गुरुयाणि वा, लहुयाणि वा, सीयाणि वा, उसिणाणि वा, णिद्धाणि वा, रुक्खाणि वा ।

अणुवीइ-णिट्ठा-भासि-पदं

३८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वंता 'कोहं च माणं च मायं च लोभं च'[2], अणुवीइ णिट्ठाभासी णिसम्म-भासी अतुरिय-भासी विवेग-भासी समियाए संजए भासं भासेज्जा ।

३९–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

१–X (च, छ)।
२–कोहवयणं माण वा ४ (क, घ, च,

पंचमं अज्झयणं

वत्थेसणा

पढमो उद्देसो

वत्थजाय-पदं

१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं एसित्तए, सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा—
जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तगं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा–तहप्पगारं वत्थं—

२–जे णिग्गथे तरुणे जुगवं[1] बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एग वत्थं धारेज्जा, णो बितियं।

३–जा णिग्गंथी, सा चत्तारि संघाडीओ धारेज्जा–एगं दुहत्थ-वित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ, एगं चउहत्थवित्थारं। तहप्पगारेहिं[2] वत्थेहिं असंविज्जमाणेहिं[3] अह पच्छा एगमेगं संसीवेज्जा।

अद्धजोयण-मेरा-पदं

४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणमेराए वत्थ-पडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

अस्सिपडियाए-पद

५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, °भूयाइं,

१—जुवं (घ)।
२—एएहिं (अ, च, ब)।
३—अविज्ज ° (अ, ब)।

जीवाइं, सत्ताइ, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, वहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा— अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ।

६–°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा— अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, वहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा— अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा— अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, वहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा— अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा–

अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएंति।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पद

९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा–

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

१०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा–

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ।

तं तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठिय, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

११—अह पुण एवं जाणेज्जा—
पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा।°

भिक्खु-पडियाए-कीयमाइ-पदं

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—
असंजए भिक्खु-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्टं वा, मट्टं वा, संमट्टं[1] वा, संपधूमियं[2] वा—तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं, °अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

१३—अह पुणेवं जाणेज्जा—
पुरिसंतरकडं, °बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा।

वत्थ-पद

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण वत्थाइं जाणेज्जा विरूवरूवाइं महद्धणमोल्लाइं तंजहा—
आजिणगाणि[3] वा, सहिणाणि[4] वा, सहिण-कल्लाणाणि वा, आयकाणि[5] वा, कायकाणि[6] वा, खोमयाणि वा, दुगुल्लाणि

१—ससट्ठ (क)।
२—° धूवितं (अ, छ)।
३—आतिणाणि (अ); अजिणमाणि (क, च)।
४—सहृणाणि (छ)।
५—आयाणाणि (अ, क, घ, च); आयाण (ब)।
६—कायाणाणि (घ, ब)।

वा, मलयाणि वा, पत्तुण्णाणि वा अंसुयाणि वा, चीणंसुयाणि वा, देसरागाणि[1] वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि वा, फालियाणि[2] वा, कोयहा(वा?)णि[3] वा, कंबलगाणि वा, पावाराणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं वत्थाइं महद्धणमोल्लाइं—°अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण आईणपाउरणाणि वत्थाणि[4] जाणेज्जा, तंजहा—

उट्टाणि[5] वा, पेसाणि[6] वा, पेसलेसाणि वा, किण्हमिगाईणगाणि वा, णीलमिगाईणगाणि वा, गोरमिगाईणगाणि वा, कणगाणि वा, कणगकताणि[7] वा, कणगपट्टाणि वा, कणगखइयाणि वा, कणगफुसियाणि वा, वग्घाणि वा, विवग्घाणि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं आईणपाउरणाणि वत्थाणि—°अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थपडिमा-पद

१६–इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म, अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं पडिमाहिं वत्थं एसित्तए ।

१—वेसरागाणि (अ), देसर गि (छ) ; वेसराणि (व) ।
२—फलियाणि (क, च, छ, ब) ।
३—कायहाणि (अ), कोहयाणि (घ) ; निशीथस्य १७ उद्देशकस्य चूर्णौ 'कोनवाणि' इति पाठो लभ्यते ।
४—वा वत्थाणि वा (क, छ) ।
५—उट्टाणि (अ, क, च, व, वृ), उट्टवाणि (व) - आट्टाणि (छ) ।
६—पेसणाणि (छ) ।
७—कणगकताणि (अ, क, घ, च, छ, व), कनककान्तीनि (वृ) ।

१७–तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा–

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय वत्थं जाएज्जा, तंजहा–

जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तयं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा। पढमा पडिमा।

१८–अहावरा दोच्चा पडिमा–

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए-पेहाए वत्थं जाएज्जा, तंजहा–

गाहावइं वा, °गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणि वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा,

से पुव्वामेव आलोएज्जा, आउसो! त्ति वा, भगिणि! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णतरं वत्थं? तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं °एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा। दोच्चा पडिमा।

१९–अहावरा तच्चा पडिमा–

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा–

अंतरिज्जगं वा उत्तरिज्जगं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, °परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा। तच्चा पडिमा।

२०–अहावरा चउत्था पडिमा–

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं वत्थं जाएज्जा,

जं चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से[1] देज्जा—फासुयं °एसणिज्जं[2] ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा। चउत्था पडिमा।

२१—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं °अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवण्णे।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति।°

संगार-वयण-पदं

२२—सियाणं एयाए एसणाए एसमाणं परो वएज्जा—आउसंतो! समणा! एज्जाहि तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे[3] वा, तो ते वयं आउसो! अण्णयरं वत्थं दाहामो[4]।

एयप्पगारं[5] णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे[6] संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं? इयाणिमेव दलयाहि।

१—ण (अ, ब)।
२—°य (अ)।
३—°तराए (घ, च, छ, ब)।
४—दासामो (अ, च, ब)।
५—तहप्प° (अ)।
६—°गार (छ)।

से सेवं[1] वयंतं परोवएज्जा आउसंतो! समणा! अणुगच्छाहि, तो ते वयं अण्णतरं वत्थं दाहामो।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे सगार-वयणे पडिसुणेत्तए, अभिकंखसि मे दाउं? इयाणिमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो। अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स (वत्थं[2]) चेइस्सामो।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते॰ णो पडिगाहेज्जा।

वत्थ-आघसण-पद

२३—सिया णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सिणाणेण वा, •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा॰ आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो।"

एयप्पगार णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिणाणेण वा (जाव) पघंसाहि वा। अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पघंसित्ता वा

१—णेव (क, घ, च, छ), एव (व)।
२—जाव (अ, क, घ, च, छ, व)।

दलएज्जा। तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते॰ णो पडिगाहेज्जा।

वत्थ-उच्छोलण-पद

२४–से णं परो णेत्ता वएज्जा–"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा[1], पधोवेत्ता[2] वा समणस्स णं दासामो।"

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा–"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा। अभिकंखसि •मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा। तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते॰ णो पडिगाहेज्जा।

वत्थ-विसोहण-पदं

२५–से णं परो णेत्ता वएज्जा–"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं वत्थं–कंदाणि वा, •मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा॰, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स णं दासामो।"

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा–"आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयाणि

१—× (छ)।
२—पच्छोलेत्ता (छ)।

तुमं कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहेहि। णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे वत्थे पडिगाहित्तए।"

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा। तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

वत्थ-पडिलेहण-पद

२६—सिया से परो णेत्ता वत्थं णिसिरेज्जा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा तुमं चेव णं संतियं वत्थं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि।

२७—केवली बूया—आयाण मेयं 'वत्थंतेण उ'[1] बद्धे सिया कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, •मोत्तिए वा, हिरण्णे वा, सुवण्णे वा, कडगाणि वा, तुडयाणि वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा°, रयणावली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा।

सअडाइ-वत्थ-पदं

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—

सअंडं •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं—

तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

१—वत्थे ते उ (च); वत्थेण उ (घ, व)।

अप्पंडाइ-वत्थ-पदं

२९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण वत्थ जाणेज्जा–
अप्पंडं •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रुच्चइ—.
तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

३०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ५।२९) संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं रोइज्जंतं रुच्चइ–
तहप्पगारं वत्थं—फासुयं •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा।

वत्थ-परिकम्म-पद

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण[1] सिणाणेण वा, •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा°, पघंसेज्ज वा।

३२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, •उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा°, पधोएज्ज वा।

३३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा।

१—निशीथे (१४।१५) 'बहुदेवसिएण' पाठो लभ्यते। आचारागस्य चूर्णावपि (पृ० ३६४) 'बहुदेवसिएण' पाठोस्ति, किन्तु तस्य वृत्तौ (पृ० ३६४) 'बहुदेसिएण' पाठो व्याख्यातोस्ति। प्रतिषु चापि एष एव लभ्यते तेनात्र अयमेव पाठः स्वीकृत।

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।°

वत्थ-आयावण-पद

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा। तहप्पगारं वत्थं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससणिद्धाए[1] पुढवीए, °णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंत्ताए सिलाए, णो चित्तमंत्ताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणाए आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा। तहप्पगारं वत्थं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि वा, उसुयालंसि[2] वा, कामजलंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

३७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा। तहप्पगार वत्थं कुलियंसि वा, भित्तिंसि वा, सिलंसि वा, 'लेलुसि वा'[3] अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए °दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा ।

१—ससिणि° (क, च)।
२—ऊसु° (अ)।
३—(जाव) (अ); × (छ)।

३८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा। तहप्पगारे वत्थे—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए •दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा।

३९–से त्तमादाए एगंतमवक्कमेज्जा, २ त्ता अहे झामथंडिलंसि वा, •अट्ठिरासिंसि वा, किट्टरासिंसि वा, तुसरासिंसि वा, गोमयरासिंसि वा° अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव वत्थं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा।

४०–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि°।

बीओ उद्देसो

णो धोएज्जा-रएज्जा-पदं

४१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा। अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, णो धोएज्जा णो रएज्जा, णो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलिउंचमाणे गामंतरेसु, ओमचेलिए। एयं खलु वत्थधारिस्स सामग्गियं।

सव्वचीवरमायाए-पदं

४२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।

४३–•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं चीवरमायाए बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।

४४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं चीवरमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

४५–अह पुणेवं जाणेज्जा–तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए।

से एवं णच्चा णो सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा।°

पाडिहारिय-वत्थ-पद

४६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ 'मुहुत्तगं-मुहुत्तगं'[1] पाडिहारियं वत्थं जाएज्जा—एगाहेण[2] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा,

तहप्पगारं वत्थं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु[3] एव वदेज्जा—"आउसंतो! समणा।

१—मुहुत्तग (घ, च, छ, ब)।
२—जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब), एकाह यावत् पचाहम् (वृ)।
३—° मित्ता (घ, च, छ, ब)।

अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्ठवेज्जा।
तहप्पगारं 'वत्थं ससंधियं'[1] तस्स चेव णिसिरेज्जा, 'णो णं'[2] साइज्जेज्जा।

४७–से एगइओ एयप्पगारं[3] णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म–
जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि 'मुहुत्तगं-मुहुत्तगं'[4] जाइत्ता[5] एगाहेण[6] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति,
तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स अणुवयंति, °णो[7] पामिच्चं करेंति, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेंति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेंति—"आउसंतो! समणा! अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्ठवेंति, तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेंति°, णो णं सातिज्जंति,
'से हंता' अहमवि मुहुत्तगं[8] पाडिहारियं वत्थं जाइत्ता

१—ससंधिय वत्थ (अ) ; वत्थ ससंधिय वत्थ (च, छ)।
२—णो अत्ताण (अ, क, छ), न अत्ताण (ब)।
३—तह° (ब)।
४—मुहुत्तग (छ)।
५—जाएज्जा (छ)।
६—जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब)।
७—त चेव जाव णो साइज्जति बहुवयणेण भासियव्वं (क, च, छ)।
त चेव जाव णो साइज्जति बहुमाणोए भासियव्व (अ)।
त चेव जाव णो साइज्जति बहुवयणेण भाणियव्व (घ)।
त चेव जाव णो साइज्जति बहुमाणेण भासियव्व (ब)।
८—मुहुत्त (अ, छ, ब)।

एगाहेण[1] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि। अवियाइं एयं ममेव सिया। माइट्ठाणं संफासे। णो एवं करेज्जा।

वत्थ-विक्किया-पद

४८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, "अन्नं वा वत्थं लभिस्सामि" त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा[2], णो परं उवसकमित्तु एवं वदेज्जा—"आउसंतो! समणा! अभिकंखसि मे वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संत णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्ठवेज्जा।

जहा चेय[3] वत्थं पावगं परो मन्नइ। परं च णं अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, °णो मग्गाओ मग्ग संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाड वा, सरण वा, सेण वा, सत्थं वा कंखेज्जा°, अप्पुस्सुए °अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए°, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

आमोसग-पद

४९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अतरा

१—जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब)।
२—कुज्जा (च)।
३—वेय (अ, च), मेवं (क, घ, व)।

से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा–इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा वत्थ-पडियाए संपिंडिया[1] गच्छेज्जा, •णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जा समाहीए, तओ संजयामेव° गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

५०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से आमोसगा संपिंडिया[2] गच्छेज्जा। तेणं आमोसगा एवं वदेज्जा—

आउसंतो! समणा! आहरेयं वत्थं, देहि, निक्खिवाहि। •तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवहेज्जा।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं ति कट्टु, अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, वत्थं अच्छिंदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा वत्थ-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, वत्थं

१—संपडिया (क, च, ब)।
२—पडिया (अ); सपडिया (क, घ, च); सपडिया (छ)।

अच्छिंदेति वा, अवहरेति वा, परिभवेति वा। एयप्पगारं मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा। अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा।°

५१–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि।°

छट्ठं अज्झयणं

पाएसणा

पढमो उद्देसो

पायजाय-पद

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकखेज्जा पायं एसित्तए, सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा, तंजहा—
अलाउपायं[1] वा, दारुपायं वा, मट्टिया पायं वा—तहप्पगारं पायं—

एगपाय-पदं

२—जे निग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं पायं धारेज्जा, णो बीयं[2]।

अद्धजोयण मेरा-पद

३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए पाय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

अस्सपडियाए-पद

४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए एगं साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति।
तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा, अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं

१—लाउयपाय (क, च, छ); अलाउयपाय (घ)।
२—वितियं (च, छ, ब)।

वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा–

अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहड आहट्टु चेएति ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा–

अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहड आहट्टु चेएति ।

तं तहप्पगारं पाय पुरिसंतरकड वा अपुरिसतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा–

अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा— अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पाय-पदं

८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा— बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा— अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

९—से[1] भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा— बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति ।

१—यद्यपि प्राप्तप्रतिषु "बहवे समण-माहण" इति सूत्रात् पूर्वं "अस्सजए भिक्खु-पडियाए" एतत् सूत्र लभ्यते, किन्तु वस्त्रैषणाया- (१०-१३) क्रमेण पूर्वं "बहवे समण-माहण °" सूत्र तत्पश्चात् "अस्संजए भिक्खु-पडियाए" एतत् सूत्र युज्यते, अत एव ग्व क्रमोऽत्र स्वीकृत ।
सूत्रस्य विपर्ययो लिपिदोषेण जात इति प्रतीयते । चूर्णौ वृत्तौ च न व्याख्य.ते इमे सूत्रे । प्राप्तविपर्ययं परिलक्ष्यैव जयाचार्येण सूत्रस्य विचित्रा गतिरिति सकेतितम् ।

तं तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, वहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

भिक्खु-पडियाए कीयमाइ-पदं

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्ठं वा, मट्ठं वा, संमट्ठं वा, संपधूमियं वा—तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकडं, अवहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।

१२—अह पुण एव जाणेज्जा—पुरिसतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुय एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।०

पाय-पद

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पादाइं जाणेज्जा विरूव-रूवाइं महद्धणमुल्लाइं, तंजहा—
अय-पायाणि वा, तउ[1]-पायाणि वा, तब-पायाणि वा, सीसग-पायाणि वा, हिरण्ण-पायाणि वा, सुवण्ण-पायाणि वा, रीरिय-पायाणि वा, हारपुड-पायाणि वा, मणि-काय-कंस-पायाणि वा, संख-सिंग-पायाणि वा, दंत-चेल-सेल-पायाणि वा, चम्म-पायाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं

१—तउय (घ) ।

विरूव-रूवाइं महद्धणमुल्लाइं पायाइं—अफासुयाइं •अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

पाय-बंधण-पदं

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा विरूव-रूवाइं महद्धणबंधणाइं तंजहा—
अयबंधणाणि वा, •तउबंधणाणि वा, तंबबंधणाणि वा, सीसगबंधणाणि वा, हिरण्णबंधणाणि वा, सुवण्णबंधणाणि वा, रीरियबंधणाणि वा, हारपुडबंधणाणि वा, मणि-काय-कंस-बंधणाणि वा, संख-सिंग-बंधणाणि वा, दंत-चेल-सेल-बंधणाणि वा°, चम्मबंधणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं महद्धणबंधणाइं—अफासुयाइं •अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

पाय-पडिमा-पद

१५—इच्चेयाइं आयतणाइं[1] उवातिकम्म अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं पडिमाहि पायं एसित्तए।

१६—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय पायं जाएज्जा, तंजहा—
लाउय-पायं वा, दारु-पायं वा, मट्टिया-पायं वा—तहप्पगारं पायं सयं वा णं जाएज्जा, •परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा।

१७—अहावरा दोच्चा पडिमा—
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पायं जाएज्जा, तंजहा—

१—आया° (च)।

गाहावइं वा, •गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणि वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दास वा, दासि वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा,

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं पायं? तंजहा—लाउय-पायं वा, दारु-पायं वा मट्टिया-पायं वा—तहप्पगार पायं सयं वा णं जाएज्जा, •परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा।

१८—अहावरा तच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—संगतियं वा, वेजयंतियं[1] वा—तहप्पगारं पायं सयं वा •णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा।

१९—अहावरा चउत्था पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं पायं जाएज्जा, जं चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं पायं सयं वा णं •जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा।

२०—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं •पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छापडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने,

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे

१—वेजयति (अ, ब, क, घ, च, छ)।

ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति।°

संगार-वयण-पदं

२१–से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वएज्जा—आउसंतो! समणा! एज्जासि तुमं मासेण वा, °दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे वा तो ते वयं आउसो! अण्णयरं पायं दाहामो।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं? इयाणिमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा आउसंतो! समणा! अणुगच्छाहि तो ते वयं अण्णतरं पायं दाहामो।

से पुव्वामेव आलोएज्जा–आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए अभिकंखसि मे दाउं? इयाणिमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा–आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं पायं समणस्स दाहामो। अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स पायं[1] चेइस्सामो।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं पायं–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।°

पाय-अब्भंगण-पदं

२२–से णं परो णेत्ता वएज्जा–आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा

१—जाव (अ, क, घ, च, छ, ब)।

आहरेयं पायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, 'वसाए वा'[1] अब्भंगेत्ता वा, मक्खेत्ता वा समणस्स णं दासामो।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं पायं तेल्लेण वा (जाव) अब्भगाहि वा मक्खाहि वा अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो तेल्लेण वा (जाव) मक्खेत्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पाय—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा।

पाय-आघसण-पद

२३—से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेय पाय सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सिणाणेण वा (जाव) आघंसाहि वा पघंसाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पघंसित्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

पाय-उच्छोलण-पदं

२४—से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा

[1] १—× (क, च, ब)।

आहरेयं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा समणस्स णं दासामो।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा–आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा, अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा–तहप्पगारं पायं–अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

पाय-विसोहण-पदं

२५–से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं पाय कदाणि वा, मूलाणि वा (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स णं दासामो।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा–आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयाणि तुमं कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे पाये पडिगाहित्तए।

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा—तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।°

सपाण भोयण-पडिग्गह-पदं

२६–से णं परो णेत्ता वएज्जा–आउसंतो! समणा! मुहुत्तगं-मुहुत्तगं अच्छाहि जाव ताव अम्हे असणं वा ४ उवकरेंसु वा,

उवक्खडेसु वा, तो ते वयं आउसो! सपाणं सभोयणं पडिग्गहगं दासामो, तुच्छए पडिग्गहए दिण्णे समणस्स णो सुट्ठु साहु भवइ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा, पाणे वा, खाइमे वा, साइमे वा भोत्तए वा, पायए वा, मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि, अभिकंखसि मे दाउ? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो असणं वा४ उवकरेत्ता उवक्खडेत्ता सपाणगं सभोयणं पडिग्गहग दलएज्जा—तहप्पगारं पडिग्गहगं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

पडिग्गह-पडिलेहण-पद

२७—सिया से परो णेत्ता[1] पडिग्गहं णिसिरेज्जा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा तुमं चेव णं संतिय पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि।

२८—केवली बूया—आयाणमेयं अंतो पडिग्गहंसि पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, •एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिज्जा।

सअडाइ-पाय-पदं

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—सअंडं •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं— तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

१—उवणेत्ता (घ, च, ब)।

अप्पंडाइ-पाय-पदं

३०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रुच्चइ—तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

३१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ६।३०) संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं रोइज्जंतं रुच्चइ—तहप्पगारं पायं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा।

पाय-परिकम्म-पद

३२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा।

३३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा।

३४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीतोदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा।

३५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा।

३६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा।

३७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीओदगवियडेण वा, उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा।

पाय-आयावण-पदं

३८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणाए आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा।

३९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि वा, उसुयालंसि वा, कामजलंसि वा—अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा।

४०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं कुलियंसि वा, भित्तिंसि वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा—अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा।

४१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारे पाये खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा—अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा।

४२–से त्तमादाए एगंतमवक्कमेज्जा, २ त्ता अहे झामथंडिलंसि वा, अट्ठिरासिंसि वा, किट्टरासिंसि वा, तुसरासिंसि वा, गोमयरासिंसि वा°—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव पायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा।

४३–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि।

बीओ उद्देसो

पडिग्गह-पेहा-पदं

४४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए, पविसमाणे[1] पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहगं, अवहट्टु पाणे, पमज्जिय रयं, ततो संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा।

४५–केवली बूया—आयाण मेयं अंतो पडिग्गहगंसि पाणे वा, बीए वा, रए वा परियावज्जेज्जा।

अह भिक्खूणं पुव्वोदिट्ठा एस पइन्ना, °एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहं, अवहट्टु पाणे,

---

१—पविट्ठे° (क, च, चू)।

पमज्जिय रयं, तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

सोओदग-पदं

४६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सिया से परो आहट्टु[1] अंतो पडिग्गहगंसि सीओदगं परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सते० णो पडिगाहेज्जा ।

उदउल्ल-पदं

४७–से य आहच्च पडिग्गहिए सिया[2] खिप्पामेव उदगंसि साहरेज्जा[3], सपडिग्गहमायाए पाणं[4] परिट्ठवेज्जा, ससणिद्धाए वण-[5]भूमीए णियमेज्जा ।

४८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा, ससणिद्धं वा पडिग्गहं णो आमज्जेज्ज वा, •पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा० पयावेज्ज वा ।

४९–अह पुण एवं जाणेज्जा—विगतोदए मे पडिग्गहए, छिण्ण-सिणेहे मे पडिग्गहए—तहप्पगारं पडिग्गहं तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा (जाव ६।४८) पयावेज्ज वा ।

सपडिग्गह मायाए-पदं

५०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए

१—अभिहट्टु (अ, क, च, छ, ब) ।
२—सिया से (अ) ।
३—आहरेज्जा (च) ।
४—वण (अ) , एवं (छ) ।
५—वण (घ, च) ; च ण (छ) ।

पविसिउकामे सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा।

५१–•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा सपडिग्गहमायाए बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा।

५२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सपडिग्गहमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

५३–अह पुणेवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए,

से एवं णच्चा णो सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा। बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा।

पडिहारिय-पडिग्गह-पदं

५४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ मुहुत्तगं-मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाएज्जा, एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा,

तहप्पगारं पडिग्गहं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा— "आउसंतो! समणा! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा,

परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संत णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्ठवेज्जा।

तहप्पगारं पडिग्गहं ससंधियं तस्स चेव णिसिरेज्जा, णो णं साइज्जेज्जा।

५५–से एगइओ एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म—जे भयंतारो तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं-मुहुत्तग जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति,

तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्ण-मण्णस्स अणुवयंति, णो पामिच्चं करेति, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेंति—"आउसंतो! समणा! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्ठवेंति।

तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेंति, णो णं सातिज्जंति,

'से हंता' अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि।

आवियाइं एयं ममेव सिया। माइट्ठाणं संफासे। णो एवं करेज्जा।

पायविक्किया-पदं

५६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं पडिग्गहाइं विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, "अन्नं वा पडिग्गहगं लभिस्सामि" त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स

देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—"आउसंतो! समणा! अभिकंखसि मे पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा।

जहा चेयं पडिग्गहं पावगं परो मन्नइ। परं च णं अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स पडिग्गहस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

आमोसग-पदं

५७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा पडिग्गह-पडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसि भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जा समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

५८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे–अंतरा

से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा। ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—"आउसंतो! समणा! आहरेयं पडिग्गहं देहि, निक्खिवाहि। तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं त्ति कट्टु अक्कोसंति वा, वंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अच्छिंदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा पडिग्गह-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अच्छिंदेति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा। एयप्पगारं मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा। अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।०

५९–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि।

सत्तमं अज्झयणं

ओग्गह-पडिमा

पढमो उद्देसो

अदिन्नादाण-पदं

१–समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परदत्तभोई पावं कम्मं णो करिस्सामि त्ति समुट्ठाए सव्वं भंते! अदिण्णादाणं पच्चक्खामि।

२–से अणुपविसित्ता गामं वा, •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, रायहाणिं वा°–णेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा, णेवण्णेणं[1] अदिण्णं गिण्हावेज्जा, णेवण्णं अदिण्णं गिण्हंतं पि समणुजाणेज्जा।

ओग्गह-पदं

३–जेहिं वि सद्धिं संपव्वइए, तेसिं पि याइं भिक्खू छत्तयं[2] वा, मत्तयं वा, दंडगं वा, •लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेलं वा, चिलमिलिं वा, चम्मयं वा, चम्मकोसयं वा°, चम्मछेदणगं वा–तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणणुण्णविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो गिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज[3] वा।

तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय, तओ संजयामेव ओगिण्हेज्ज[4] वा, पगिण्हेज्ज वा।

१–णेवण्णेहिं (घ, छ)।
२–छत्त (घ, च)।
३–परिगिण्हेज्ज (अ)।
४–उ° (घ); उव° (छ)।

४–से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[1] ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो।

५–से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि? जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियाए[2] असणं वा ४ तेण ते साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-पडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा।

६–से आगंतारेसु वा, °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो।°

७–से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि? जे तत्थ साहम्मिया अण्णसंभोइया समणुन्ना उवागच्छेज्जा, जे तेणं सयमेसियाए[3] पीढे वा, फलए वा, सेज्जा संथारए वा, तेण ते साहम्मिए अण्णसंभोइए समणुन्ने उवणिमतेज्जा, णो चेव णं पर-वडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा।

८–से आगंतारेसु वा, °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा,

१—एतावता (अ, क, घ, च, छ, ब)।

२,३— ° सित्तए (अ, क, घ, च, छ)।

पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा।

१६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णं अक्कोसंति वा, °बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवेंति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा।

१७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेति वा, मक्खेति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा।

१८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसंति वा पघंसंति वा, उव्वलेंति वा, उव्वट्टेंति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा।

१९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा

अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पधोवेंति वा, सिंचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा।

२०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा– इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति, रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा।°

२१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा– आइण्णसंलेक्खं, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए (सेवं णच्चा ?) तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा।

२२–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि°।

बीओ उद्देसो

२३–से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा, अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा–जे[1] तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा[2]। कामं

१—× (अ)।
२—° वित्ता (अ, क, च, ब)।

खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[1] ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो।

२४–से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा, °मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, नालिया वा, चेलं वा, चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा°, चम्मछेदणए वा, तं णो अंतोहिंतो बाहिं णीणेज्जा, बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा, सुत्तं[2] वा णं पडिबोहेज्जा, णो तेसिं किंचि[3] अप्पत्तियं पडिणीयं करेज्जा।

अंब-पदं

२५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा। कामं खलु °आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं° विहरिस्सामो।

२६–से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि?

अह भिक्खु[4] इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, (पायए वा?)। सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—

सअंडं °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-

१—एताव (अ, व, च, ब), एतावता (क, छ)।
२—णो सुत्तं वा णं (अ, ब)।
३—किंचिवि (क, घ, च, ब)।
४—भिक्खुण (छ)।

दग-मट्टिय-मक्कडा-०संताणगं। तहप्पगारं अंबं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा।

२७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—
अप्पंडं •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-०संताणगं अतिरिच्छछिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा।

२८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० पडिगाहेज्जा।

२९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबभित्तगं वा, अंबपेसियं वा, अंबचोयगं वा, अंबसालगं वा, अंबडगलं[1] वा भोत्तए वा, पायए वा। सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अंबभित्तगं वा (जाव) अंबडगलं वा सअंडं (जाव ७।२६) संताणगं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा।

३०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अबभित्तगं वा (जाव ७।२९) अंबडगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा।

३१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अंबभित्तगं[2] वा (जाव ७।२९) अंबडगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० पडिगाहेज्जा।

१— ० डालग (अ, क, घ, च, छ, ब)।
२—अंब वा अवचित्तगं (घ, च, छ)।

उच्छु-पदं

३२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, °जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो।

३३–से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि° एवोग्गहियंसि?
अह भिक्खू इच्छेज्जा उच्छुंभोत्तए वा, पायए वा। सेज्जं (पुण?) उच्छुं जाणेज्जा—
सअंडं (जाव ७।२६) °संताणगं। तहप्पगारं उच्छुं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

३४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं °अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

३५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा।°

३६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा[1] अंतरुच्छुयं वा, उच्छुगंडियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुसालगं वा, उच्छुडगलं वा भोत्तए वा, पायए वा। सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अंतरुच्छुयं वा (जाव) डगलं वा सअंडं (जाव ७।२६)

१—सेज्जं पुण अभिकखेज्जा (अ)।

•संताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते°
णो पडिगाहेज्जा ।

३७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अंतरुच्छुयं वा (जाव ७।३६) डगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७)
•संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

३८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अंतरुच्छुयं वा (जाव ७।३६) डगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७)
संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।°

लसुण-पद

३९–•से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणवणं
उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं
अणुजाणावेज्जा। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं
वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव
साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं
विहरिस्सामो ।

४०–से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि?
अह भिक्खू इच्छेज्जा ल्हसुणं भोत्तए वा, (पायए वा ?) सेज्जं
पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—
सअंडं (जाव ७।२६) संताणगं तहप्पगारं ल्हसुणं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—

अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

४२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं-फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा।°

४३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणं[1] वा, ल्हसुण-कंदं वा, ल्हसुण-चोयगं वा, ल्हसुण-णालगं[2] वा भोत्तए वा, पायए वा। सेज्जं पुण जाणेज्जा—
ल्हसुणं वा (जाव) ल्हसुण-णालगं[3] वा सअंडं (जाव ७।२६) °संताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

४४–°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
ल्हसुणं वा (जाव ७।४३) ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

४५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
ल्हसुणं वा (जाव ७।४३) ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं–फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा।

ओग्गह-पदं

४६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आगंतारेसु वा, °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाणेज्जा—जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठए, ते ओग्गहं

१—लहसुण (च); लसण (ब)।
२—° डालग (अ, घ)।
३— -बीयं (क्वचित्)।

अणुण्णविज्जा। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो।

४७–से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि° एवोग्गहियंसि? जे तत्थ गाहावईण वा, गाहावइ पुत्ताण वा इच्चेयाइं आयतणाइं[1] उवाइकम्म।

ओग्गह-पडिमा-पद

४८–अह भिक्खू जाणेज्जा इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं ओग्गहं ओगिण्हित्तए।

४९–तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा—•जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं° विहरिस्सामो—पढमा पडिमा।

५०–अहावरा दोच्चा पडिमा—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूणं 'ओग्गहे ओग्गहिए'[2] उवल्लिस्सामि"—दोच्चा पडिमा।

५१–अहावरा तच्चा पडिमा—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि,

---

१—आयाणार (क, च); आययाणाई (घ), आयणाइ (छ), आययणा (व)।
२—ओग्गहिए ओग्गहे (म)।

अण्णेसि भिक्खूणं च ओग्गहे ओग्गहिए णो उवल्लिस्सामि"– तच्चा पडिमा ।

५२–अहावरा चउत्था पडिमा–जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं णो ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसि च ओग्गहे ओग्गहिए उवल्लिस्सामि"—चउत्था पडिमा ।

५३–अहावरा पंचमा पडिमा—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ, "अहं च खलु अप्पणो अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, णो दोण्हं, णो तिण्हं, णो चउण्हं, णो पंचण्हं—पंचमा पडिमा ।

५४–अहावरा छट्ठा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सेव ओग्गहे उवल्लिएज्जा, जे तत्थ अहा समण्णागए, तंजहा– इक्कडे वा, •कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा°, पलाले वा । तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए[1] वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—छट्ठा पडिमा ।

५५–अहावरा सत्तमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंथडमेव ओग्गहं जाएज्जा, तंजहा–पुढविसिलं वा, कट्ठसिलं वा । अहासंथडमेव तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा, णेसज्जिओ वा विहरेज्जा—सत्तमा पडिमा ।

५६–इच्चेतासिं सत्तण्हं पडिमाणं अण्णयरं •पडिसं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा–मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं

१—उक्कडए (अ, ब) ।

विहरंति, जो य अहमसि एं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्टिया अन्नोन्न-समाहीए, एव च ण विहरति ।°

पंचविह-ओग्गह-पद

५७—सुयं मे आउस। ते णं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहि भगवंतेहि पंचविहे ओग्गहे पण्णत्ते, तजहा—देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारिय-ओग्गहे, साहम्मिय-ओग्गहे ।

५८—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ।

अट्ठमं अज्झयणं

ठाण-सत्तिक्कयं

ठाण-एसणा-पदं

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा[1] ठाणं ठाइत्तए, से अणुपविसेज्जा 'गामं वा, णगरं वा, •खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा°, रायहाणिं वा'[2],

से अणुपविसित्ता गामं वा (जाव) रायहाणिं वा, सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

सअंडं[3] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय°-मक्कडा-संताणयं,

तं तहप्पगारं ठाणं—अफासुयं अणेसणिज्जं •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा।

२—•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं।

तहप्पगारे ठाणे पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा।

अस्सि पडियाए-ठाण-पदं

३—सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,

१—°कंखेइ (अ, घ); °कखे (च, ब)।

२—गाम वा जाव सण्णिवेसं वा (अ, क, घ, च, छ, ब)।

३—°यड (अ, च)।

जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्टं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्ज वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

४–सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा–

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्टं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेवित्ते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

५–सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा–

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्टं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

६–सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा–

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,

भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

समण-माहणाइ समुद्दिस्स-ठाण-पद

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—
बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।
तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—
बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे), अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

९–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे), अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

परिकम्मिय-ठाण-पदं

१०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा–
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा।
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे), अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

११–अह पुणेवं जाणेज्जा–पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे), अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

१२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा–
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा,
महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा, बहिं वा, ठाणस्स हरियाणि छिंदिय-छिंदिय दालिय-दालिय संथारग संथरेज्जा, बहिया णिण्णक्खु।
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे), अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा।

१३–अह पुणेवं जाणेज्जा–पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे), अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

बहियानिस्सारिय-ठाण-पदं

१४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए, उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु।
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे), अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

१५–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे), अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए, पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा।°

ठाण-पडिमा-पदं

१६–इच्चेयाइं आयतणाइं[1] उवातिकम्म, अह भिक्खू इच्छेज्जा चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए।

१७–तत्थिमा पढमा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा[2], अवलंबेज्जा, काएण विपरिकम्मादी, सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति पढमा पडिमा।

१८–अहावरा दोच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, अवलंबेज्जा, काएण विपरिकम्मादी, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति दोच्चा पडिमा।

१९–अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, णो अवलंबेज्जा, णो काएण विपरिकम्मादी, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति तच्चा पडिमा।

१—आयाणाइ (क, घ, च)।
२—अवसज्जिस्सामि (चू)।

२०–अहावरा चउत्था पडिमा—अचित्तं खलु[1] उवसज्जेज्जा, णो अवलंबेज्जा, णो काएण विपरिकम्मादी, णो सवियारं ठाण ठाइस्सामि, वोसट्ठकाए वोसट्ठकेस-मंसु-लोम-णहे सण्णिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामि त्ति चउत्था पडिमा।

२१–इच्चेयासि चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति।

संथारग-पच्चप्पण-पद

२२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए। सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा।

२३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए। सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं संथारगं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धुणिय-विणिद्धुणिय, तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा।

१—खलु णो (क, ब)।

उच्चार-पासवणभूमि-पदं

२४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, समाणे वा वसमाणे वा, गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहिज्जा ।

२५–केवली बूया—आयाण मेयं अपडिलेहियाए उच्चार-पासवणं-भूमिए, भिक्खू वा भिक्खुणी वा, राओ वा विआले वा, उच्चार-पासवणं परिट्ठवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,
से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अन्नयरं वा, कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ ववरोवेज्ज वा ।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ।

ठाण-विहि-पदं

२६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमिं पडिलेहित्तए, णण्णत्थ आयरिएण वा उवज्झाएण वा, पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा, गणावच्छेइएण वा, बालेण वा, बुड्ढेण वा, सेहेण वा, गिलाणेण वा, आएसेण वा,
अंतेण वा, मज्झेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा तओ संजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिए, पमज्जिय-पमज्जिय बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेज्जा ।

२७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेत्ता अभिकंखेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहित्तए,
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारगे दुरुहेज्जा, २ त्ता, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए चिट्ठेज्जा।

२८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए चिट्ठमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा।
से अणासायमाणे, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए चिट्ठेज्जा।

२९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसय वा, पोसयं वा, पाणिणा परिपिहित्ता, तओ संजयामेव ऊससेज्ज वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा, वायणिसग्गं वा, करेज्जा।

३०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—
समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया

सेज्जा भवेज्जा, सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा,

सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, तहप्पगाराहि सेज्जाहिं संविज्जमाणाहिं° पग्गहिय-तरागं विहरेज्जा, णेव किंचिवि वएज्जा[1]।

३१–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि।

—त्ति बेमि।

१–चरेज्जा (अ)।

नवमं अज्झयणं

णिसीहिया-सत्तिक्कयं

णिसीहिया-एसणा-पदं

१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए, सेज्जं[1] पुण णिसीहियं जाणेज्जा–
संअंडं °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारं णिसीहियं–अफासुयं अणेसणिज्जं °ति मण्णमाणे° लाभे संते णो चेतिस्सामि[2] (चेएज्जा ?) ।

२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए, सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–
अप्पंडं °अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारं णिसीहियं—फासुयं एसणिज्जं °ति मण्णमाणे° लाभे संते चेतिस्सामि[3] (चेएज्जा ?) ।

अस्सिं पडियाए-णिसीहिया-पदं

३–°सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–
अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

१—से (अ, क, घ, च, ब) ।

२—वृत्तौ 'परिगृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः । प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गत पाठो युज्यते ।

३—वृत्तौ 'गृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गत पाठो युज्यते ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

४–सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–

अस्सिं पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

५–सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–

अस्सिं पडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा–

अस्सिं पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,

भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पदं

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण णिसीहियं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया णीहडाए), अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

९–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा (बहिया णीहडा), अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया, पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं

१०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा— अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा। तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया णीहडाए), अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

११–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा (बहिया णीहडा), अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।

१२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा— अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा,
महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा बहिं वा णिसीहियाए हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय संथारगं संथरेज्जा, बहिया वा णिण्णक्खु।
तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया

णीहडाए), अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१३–अह पुणेवं जाणेज्जा––पुरिसंतरकडा, (वहिया णीहडा), अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहिय वा चेतेज्जा ।

वहियानिस्सारिय-णिसीहिया-पदं

१४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसतरकडाए, (अवहिया णीहडाए), अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

१५–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, (वहिया णीहडा), अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।०

१६–जे तत्थ दुवग्गा वा तिवग्गा वा चउवग्गा वा पंचवग्गा वा अभिसंधारेति णिसीहिय गमणाए, ते णो अण्णमण्णस्स कायं आलिंगेज्ज वा, विलिंगेज्ज वा, चुंबेज्ज वा, दंतेहिं णहेहिं वा अच्छिंदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज[1] वा ।

१७–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जा सेयमिण मणेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

१—वोच्छि° (च) ।

दसमं अज्झयणं

उच्चारपासवण-सत्तिक्कयं

पाय-पुंछण-पदं

१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपासवण-किरियाए उव्वाहिज्जमाणे[1] सयस्स पाय-पुंछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मियं जाएज्जा।

थंडिल-पदं

२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा–
सअंडं सपाणं •सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा–
अप्पमाणं अप्पबीअं •अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणय,
तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा–
अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स •पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ,
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, (बहिया णीहडं वा अणीहडं वा), अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं

१–उप्पा° (क)।

वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा।

५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सिं पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं (जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ।
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा।

६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सिं पडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं (जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ।
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा।

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सिं पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं (जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ।
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा।

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सिं पडियाए बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय, समुद्दिस्स पाणाइं (जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।°

९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
बहवे समण-माहण-किवण-वणीमग-अतिही[1] समुद्दिस्स पाणाइं (जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ ।
तहप्पगारं थंडिलं अपुरिसंतरकडं, (बहिया अणीहडं), °अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं ।° अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।

१०–अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, (बहिया णीहडं), °अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं° । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।

११–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सिं पडियाए कयं वा, कारियं वा, पामिच्चयं[2] वा, छण्णं वा, घट्ठं वा, मट्ठं वा, लित्तं वा, संमट्ठं वा, संपधूमियं वा ।
अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१२–से भिक्खू भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, गाहावइपुत्ता वा कंदाणि वा, मूलाणि वा, °(तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा°, हरियाणि वा अंतातो वा बाहिं णीहरंति, बहियाओ[3] वा अंतो साहरंति । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१—पूर्वपाठेभ्य (१।१७, २।८, ५।१०) अस्य शब्द-विन्यासो भिन्नोऽस्ति ।
२—पामाच्चियं (अ, क, घ, च) ।
३—बाहीतो (अ, क) ।

१३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा– खंधंसि वा, पीढंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, अट्टंसि[1] वा, पासायंसि वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

१४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा— अणंतरहियाए पुढवीए, ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, मट्टियाकडाए[2], चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुयाए, कोलावासंसि वा[3] दारुयंसि जीवपइट्ठियंसि •सअंडसि सपाणंसि सबीअंसि सहरियंसि सउसंसि सउदयंसि सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-० मक्कडा संताणयंसि। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

१५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा— इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा, •मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा०, बीयाणि वा परिसाडेंसु वा, परिसार्डिति वा, परिसाडिस्संति वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

१६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण थंडिलं जाणेज्जा-- इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा सालीणि वा, वीहीणि वा, मुग्गाणि वा, मासाणि वा, तिलाणि वा, कुलत्थाणि वा, जवाणि वा, जवजवाणि वा, 'पतिरिंसु वा,

---

१—हम्मियतलंसि (घ)।

२—एष पाठो निशीथस्य (१४।२३) सूत्रानुसारेण स्वीकृतः। सर्वासु आचाराङ्गप्रतिपु 'मट्टिया मक्कडाए' इति पाठोस्ति। असौ न शुद्ध प्रतिभाति।

३—अस्मिन् सूत्रे प्रतिपु 'वा' शब्दस्य प्रयोगा अधिका दृश्यन्ते, यथा 'वा दारुयंसि वा जीवपइट्ठियसि वा' किन्तु १।५१ सूत्रानुसारेण 'वा' शब्द सकृदेव युज्यते।

पतिरिति वा[1] पतिरिस्संति वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

१७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा— आमोयाणि वा घसाणि वा, भिलुयाणि वा, विज्जलाणि वा, खाणुयाणि वा, कडवाणि[2] वा, पगत्ताणि वा, दरीणि वा, पदुग्गाणि वा, समाणि वा, विसमाणि वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

१८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा— माणुस-रंधणाणि वा, महिस-करणाणि वा, वसभ-करणाणि वा, अस्स-करणाणि वा, कुक्कुड-करणाणि वा, लावय-करणाणि वा, वट्टय-करणाणि वा, तित्तिर-करणाणि वा, कवोय-करणाणि वा, कपिजल-करणाणि वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

१९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा— वेहाणस-ट्ठाणेसु वा, गिद्धपिट्ठ-ट्ठाणेसु वा, तरुपडण-ट्ठाणेसु[3] वा, 'मेरुपडण-ट्ठाणेसु'[4] वा, विसमक्खण-ट्ठाणेसु वा, अगणिफंडण-ट्ठाणेसु[5] वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि (थंडिलंसि?) णो उच्चारपासवसणं वोसिरेज्जा।

२०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा– आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

१—पइरसु वा पऽरति वा (घ, च, छ)।
२—कडंबाणि (अ, ब)।
३—°पवडण-° (अ, च, छ)।
४—× (छ)।
५—°फडय-° (क, ख, घ, च); °पडण° (छ)।

२१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा।

२२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउमुहाणि वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा।

२३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इंगालडाहेसु वा, खारडाहेसु वा, मडयडाहेसु वा, मडय-थूभियासु वा, मडयचेइएसु वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

२४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
णदीआययणेसु वा, पंकाययणेसु वा, ओघाययणेसु वा, सेयणपहंसि[1] वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

२५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
णवियासु वा मट्टियखाणियासु, णवियासु वा गोप्पलेहियासु, गवायणीसु[2] वा, खाणीसु वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

२६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
डागवच्चंसि वा, सागवच्चंसि वा, मूलगवच्चंसि वा,

१—°वहंसि ( ); °पथ (छ)।
२—गवा म (अ, घ)।

हत्थंकरवच्चंसि वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।

२७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा–असणवणंसि वा, सणवणंसि वा, धायइवणंसि वा, केयइ-वणंसि वा, अंबवणंसि वा, असोगवणंसि वा, णागवणंसि वा, 'पुण्णागवणंसि वा'[1]। अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु पत्तोवएसु वा, पुप्फोवएसु वा, फलोवएसु वा, बीओवएसु वा, हरिओवएसु वा णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा।[2]

२८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सपाययं वा परपाययं वा गहाय से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा अणावायंसि असंलोयंसि[3] अप्पपाणंसि °अप्पबीअंसि अप्पहरियंसि अप्पोसंसि अप्पुदयंसि अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडा-संताणयंसि अहारामंसि वा उवस्सयंसि, तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा[4]।

से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि (जाव) मक्कडा-संताणयंसि अहारामंसि वा, झामथंडिलंसि[5] वा। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि अचित्तंसि, तओ संजयामेव उच्चारपासवणं परिट्ठवेज्जा।

२९–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि।

—त्ति बेमि।

१—पुण्णागवणंसि वा पुण्णगवणंसि वा (अ)।

२—अस्मिन् सूत्रे चूर्णौ 'गुत्तागारादय' अनेके शब्दा व्याख्याता सन्ति। ते वृत्तौ प्रतिषु च नोपलभ्यन्ते।

३—° लोइयंसि (अ)।

४—वोसिरेज्जा उच्चारपासवण वोसिरित्ता (क्वचित्)।

५—द्रष्टव्यम् १।१।३।

एगारसमं अज्झयणं

सद्द-सत्तिक्कयं

वितत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पद

१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा (अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा?) मुइंगसद्दाणि वा, 'नंदीमुइंगसद्दाणि वा'[1], झल्लरीसद्दाणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि विरूव-रूवाणि विततादं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

तत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पद

२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तंजहा—वीणासद्दाणि वा, विपंची-सद्दाणि वा, बद्धीसग[2]-सद्दाणि वा, तुणय-सद्दाणि वा, पणव[3]-सद्दाणि वा, तुंबवीणिय-सद्दाणि वा, ढंकुण[4]-सद्दाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं तताइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

ताल-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—ताल-सद्दाणि वा, कंसताल-सद्दाणि वा, लत्तिय-सद्दाणि वा, गोहिय-सद्दाणि वा, किरिकिरिय-सद्दाणि वा—

१—× (क, च)।
२—वप्पी° (घ, च), पप्पी° (छ), वव्वी° (क्वचित्)।
३—पणय (अ, छ, ब)।
४—ढकुण (अ)।

अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं तालसद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

झुसिर-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—संख-सद्दाणि वा, वेणु-सद्दाणि वा, वंस-सद्दाणि वा, खरमुहि-सद्दाणि वा, पिरिपिरिय[1]-सद्दाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं झुसिराइं[2] कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

विविह-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, •उप्पलाणि वा, पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा॰, सराणि वा, सागराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसर-पंतियाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१—परि ° (अ, वृ), परिपरिय (क, च, छ, ब) ।

२—प्रथम-तृतीय-सूत्रयो 'विततइ सद्दाइं, तालसद्दाइं' इति पाठोस्ति तथा द्वितीय-चतुर्थ-सूत्रयो 'सद्दाइ तताइं, सद्दाइ झुसिराइ' इति पाठोस्ति । एवं विशेष्य-विशेषणयो-र्व्यत्ययोस्ति ।

७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं, सुणेति, तंजहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं •विरूव-रूवाइं° सद्दाइं •कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा—अण्णयाराइं वा तहप्पगाराइं •विरूव-रूवाइं° सद्दाइं •कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं •विरूव-रूवाइं° सद्दाइं •कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१०–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा; चउम्मुहाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं •विरूव-रूवाइं° सद्दाइं •कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

११–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा, अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, •कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-

करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा°, कविंजलट्ठाण-करणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं° सद्दाइं °कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१२–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा, °कुक्कुड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा°, कविंजल-जुद्धाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—'जूहिय-ट्ठाणाणि'[1] वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१४–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तंजहा—अक्खाइय-ट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणि वा, महया ऽहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्प-वाइय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१५–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तंजहा—कलहाणि वा, डिंबाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा—अण्णयराइं वा

१—निशीथे १२ उद्देशके २६ सूत्रे 'उज्जूहिया ठाणाणि' इति पाठो विद्यते।

तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं° सद्दाइं °कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१६–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °अहावेगइयाइं° सद्दाइं सुणेति, तंजहा—खुड्डियं दारियं परिवुत्तं[1] मंडियालंकियं[2] निवुज्झमाणिं पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए णीणिज्जमाणं पेहाए—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१७–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१८–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा–इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि[3] वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणिं वा–अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

सद्दासत्ति-पदं

१९–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं सद्देहिं, णो

१—परिभुय (क्वचित्); मण्डितालकृता बहुपरिवृता (वृ)।
२—मडिय° (घ, छ)।
३—मज्झ° (छ, व)।

परलोइएहिं सद्देहिं, णो सुएहि सद्देहिं, णो असुएहिं सद्देहि, णो दिट्ठेहिं सद्देहिं, णो अदिट्ठेहिं सद्देहि, णो इट्ठेहि सद्देहिं, णो कंतेहिं सद्देहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा।

२०–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया॰ जएज्जासि।

—त्ति बेमि।

बारसमं अज्झयणं

रूव-सत्तिक्कयं

विविह-रूव-चक्खुदंसण-पडिया-पद

१–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा–गंथिमाणि वा, वेढिमाणि वा, पूरिमाणि वा, संघाइमाणि वा, कट्ठकम्माणि[1] वा, पोत्थकम्माणि वा, चित्तकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, 'दतकम्माणि वा'[2], पत्तच्छेज्जकम्माणि वा, 'विहाणि वा, वेहिमाणि वा'[3]—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं (रूवाइं ?) चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

२–°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, उप्पलाणि वा, पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा, सराणि वा, सागराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसरपंतियाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

३–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,

१—कट्ठाणि (क, घ, च)।

२—दंतकम्माणि वा मालकम्माणि वा (अ, क, घ, च, छ, ब); वृत्तौ चूर्ण्यां च न व्याख्यातम् अतो न गृहीतम्।

३—विविहाणि वा वेढिमाइं (अ, क, घ, छ, ब)। निशीयस्य १२ उद्देशकस्य १७ सूत्रानुसारेण अय पाठ स्वीकृत। आचाराङ्ग-प्रतिषु लिपिदोषाद् वर्ण-विपर्ययो जात इति प्रतीयते।

तंजहा——कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणाणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ तंजहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा; चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा——तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा,

अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा, कविंजलट्ठाण-करणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा, कुक्कुड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा, कविंजल-जुद्धाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव—रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसधारेज्जा गमणाए।

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तजहा—जूहिय-ट्ठाणाणि वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—अक्खाइयट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाऽऽहय-णट्टगीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—कलहाणि वा, डिंबाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि

वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—खुड्डियं दारियं परिवुतं मंडियालंकियं निवुज्झमाणिं पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए णीणिज्जमाणं पेहाए—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि, वा विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुंजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

रूवासत्ति-पदं

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं रूवेहिं, णो परलोइएहिं रूवेहिं, णो सुएहिं रूवेहिं, णो असुएहिं रूवेहिं,

णो दिट्ठेहिं रूवेहिं, णो अदिट्ठेहि रूवेहि, णो इट्ठेहि रूवेहिं, णो कंतेहि रूवेहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा।

१७–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि।°

—त्ति बेमि।

तेरसमं तह चउद्दसमं अज्झयणं

परकिरिया-सत्तिक्कयं[1]

अन्नुन्नकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पदं

१–(परकिरियं) (अण्णमण्णकिरियं)[2] अज्झत्थियं संसेसियं–णो तं साइए[3], णो तं णियमे ।

पाद-परिकम्म-पदं

२–('से से'[4] परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं आमज्जेज्ज वा, 'पमज्जेज्ज वा'[5]–णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३–(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा–णो तं साइए, णो तं णियमे ।

४–(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा–णो तं साइए, णो तं णियमे ।

५–(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए[6] वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज[7] वा–णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१–द्वितीय कोष्ठकं मुक्त्वा पठ्यते, तदा त्रयोदशमध्ययन भवति ।
प्रथम कोष्ठक मुक्त्वा पठ्यते, तदा चतुर्दशमध्ययन भवति ।

२–अण्णोण्ण ° (वृ) । त्रयोदशाध्ययने 'से भिक्खु वा २' इति पाठो नास्ति । चतुर्दशाध्ययने प्रतिपु विद्यते । किन्तु वृत्तो उभयत्रापि नास्ति व्याख्यात ।

३–सायए (घ) ।

४–सिया से (क, घ, च) सर्वत्र ।

५–× (अ, क, च. छ, ब) ।

६–निशीथे सर्वत्रापि 'तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा, णवणीएण वा' इति पाठो विद्यते ।

७–भिल ° (छ) ।

६–(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वन्नेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

७–(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

८–(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

९–(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

१०–(से से परो) (से अण्णमण्ण) पादाओ खाणु[1] वा, कंटय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

११–(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाओ पूयं वा, सोणियं वा, णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

काय-परिकम्म-पद

१२–(से से परो) (से अण्णमण्ण) कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो तं णियमे।

१३–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो त णियमे।

१४–(से से परो) (से अण्णमण्ण) कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज[2] वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

१—खाणुयं (क, घ, च, ब)।

२—मिल्लगेज्ज (च)।

१५–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं लोद्धेण[1] वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा–णो तं साइए, णो तं णियमे।

१६–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा–णो तं साइए, णो तं णियमे।

१७–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

१८–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा–णो तं साइए, णो तं णियमे।

वण-परिकम्म-पदं

१९–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा–णो तं साइए, णो तं णियमे।

२०–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा–णो तं साइए, णो तं णियमे।

२१–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

२२–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा–णो तं साइए, णो तं णियमे।

२३–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं सीओदग-वियडेण

१—लोद्देण (अ, क)।

वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

२४–'(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

२५–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।'[1]

२६–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं सत्थ-जाएण अच्छिदेज्ज वा—विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

२७–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा, पूयं वा, सोणियं वा, नीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो तं णियमे।

गड-परिकम्म-पदं

२८–(से से परो) (से अण्णमण्ण) कायंसि गंड वा, अरइयं वा, पिडयं[2] वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

२९–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा,

१—२४-२५ सूत्रे कोष्ठकोल्लिखित-प्रतिपु न विद्येते (अ, क, घ, च, छ)।

२—पुलय (अ, च); पुलइय (क, छ, व), पुलइ (घ)। एवं नर्वासु प्रतिपु 'पिडय' पाठ नोपलभ्यते, किन्तु उपलब्ध-पाठाना नार्थोऽवगम्यते। निशीथे तृतीयोद्देशके चतुस्त्रिंशत्तम-सूत्रे 'पिडय' पाठ। अस्मिन् प्रकरणे स सम्यग्, इति स पाठ स्वीकृत। उक्तप्रतिपाठा लिपिदोपेण विकृता इति प्रतीयते

पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

३०–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, °अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

३१–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, °अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

३२–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, °अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा सीओदग्ग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

[(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अन्नयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अन्नयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।][1]

३३–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, °अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा अन्नयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

३४–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता

१—२४-२५ सूत्राङ्कानुसारेण अत्रापि कोष्ठकान्तर्गते सूत्रे युज्येते, परन्तु प्रतिषु नोपलभ्येते।

वा, विच्छिदित्ता वा पूय वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो तं णियमे।

मल-णीहरण-पद

३५–(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो तं णियमे।

३६–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमल वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

वाल-रोम-पद

३७–(से से परो) (से अण्णमण्ण) दीहाइ वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइ ममुहाइं, दीहाइ कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज[1] वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

लिक्ख-जूया-पदं

३८–(से से परो) (से अण्णमण्णं) सीसाओ लिक्ख वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

पाद-परिकम्म-पदं

३९–(से से परो) (से अण्णमण्ण) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

४०–•(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

१—संवद्धेज्ज (च), सवज्जेज्ज (छ)।

५५–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

वण-परिकम्म-पदं

५६–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

५७–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

५८–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

५९–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

६०–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

६१–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

६२–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा–णो तं साइए, णो तं णियमे।

६३–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

६४–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा, पूयं वा, सोणियं वा नीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

गंड-परिकम्म-पदं

६५–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

६६–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

६७–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

६८–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं

वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

६९–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

[(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।]

७०–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

७१–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता वा, विच्छिंदित्ता वा, पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

मल-णीहरण-पदं

७२–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, यंकंसि वा

तुयट्टावेत्ता कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

७३–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

वाल-रोम-पदं

७४–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

लिक्ख-जूया-पदं

७५–(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।०

आभरण-आविंधण-पद

७६–(से से परो) (से अणमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावित्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, गेवेयं[1] वा, मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा आविंधेज्ज[2] वा, पिणिधेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

१—सुवण्णगेवेय (घ)।
२—आवंधेज्ज (ध, च)।

पाद-परिकम्म-पदं

७७–(से से परो) (से अण्णमण्णं) आरामंसि वा, उज्जाणंसि वा णीहरेत्ता वा, पविसेत्ता वा पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।[1]

(एवं णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि।)[2]

७८–(से से परो) (से अण्णमण्णं) सुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे,

(से से परो) (से अण्णमण्णं) असुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे,

(से से परो) (से अण्णमण्णं) गिलाणस्स सचित्ताणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा, कड्ढेत्तु वा, कड्ढावेत्तु वा तेइच्छं आउट्टेज्जा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

तिगिच्छा-पदं

७९–कडुवेयणा[3] कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति।

८०–एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिणं मण्णेज्जासि।

—त्ति बेमि।

१,२—अस्मात् सूत्रात् पुरतोऽपि 'पादाइ सवाहेज्ज वा' (सू० ३) अत प्रभृति 'सीसाओ लिक्ख वा' (सू० ३८) पर्यन्तं सूत्राणि युज्यन्ते परन्तु नात्र कश्चित् पूरणीय संकेत प्रतिषु प्राप्यते। "एवं णेयव्वा अण्णमण्ण किरियावि" इति सूत्रमत्रानावश्यकं प्रतिभाति, किन्तु वृत्तावस्ति व्याख्यातम्। सम्भाव्यते प्रस्तुत-सूत्रस्य पूरणीय-संकेतो लिपिदोषेण अन्यथा जातः। इत्यपि सम्भाव्यते 'एव णेयव्वा अण्णमण्ण किरियावि' इति सूत्रं वाचनान्तरगतमस्ति। एकस्यां वाचनाया उक्तसूत्रेणैव त्रयोदशाध्ययनस्य पाठ प्रवेदितः, अपरस्या च त्रयोदशाध्ययनस्य संक्षिप्तपाठः पृथग्रूपेण प्रतिपादित। वर्तमाने समुपलब्ध पाठो द्वयोरपि वाचनयोर्मिश्रणं प्रतीयते। तेनाऽस्माभिरुक्तसूत्र कोष्ठक एव स्वीकृतम्।

३—कम्मकय० (च)।

पनरसमं अज्झयणं

भावणा

भगवओ चवणादि-णक्खत्त-पदं

१–तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे पंचहत्थुत्तरे यावि होत्था—

(१) हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,

(२) हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए,

(३) हत्थुत्तराहिं जाए,

(४) हत्थुत्तराहिं सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,

(५) हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अव्वाघाए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ।

२–साइणा भगवं परिनिव्वुए ।

गब्भ-पदं

३–समणे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिणीए—सुसमसुसमाए समाए वीइक्कंताए, सुसमाए समाए वीतिक्कंताए, सुसम-दुसमाए समाए वीतिक्कंताए, दुसमसुसमाए समाए बहु वीतिक्कंताए—पण्णहत्तरीए[1] वासेहिं, मासेहि य अद्धणवमेहिं[2] सेसेहिं, जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे, अट्ठमे पक्खे—आसाढ-सुद्धे, तस्सणं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहि नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं[3], महाविजय-सिद्धत्थ-पुप्फुत्तर-पवर-

---

१—पण्णत्तरीए (अ, क, घ, च)।

२—° णवमसेसेहिं (क, घ, च)।

३—जोगोवगएण (अ, च)।

पुंडरीय-दिसासोवत्थिय-वद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीसं सागरोवमाइं आउयं[1] पालइत्ता आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चुए चइत्ता इह खलु जंबुद्दीवे[2] दीवे, भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसंसि[3] उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए सीहोब्भवभूएणं अप्पाणेणं कुच्छिंसि गब्भं वक्कंते।

चवण-पदं

४—समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए यावि होत्था—चइस्सामित्ति जाणइ, चुएमित्ति जाणइ, चयमाणे न जाणेइ—सुहुमे णं से काले पन्नत्ते।

गब्भसाहरण-पदं

५—तओ णं समणे भगवं महावीरे अणुकंपए[4] णं देवे णं "जीयमेयं" ति कट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे, पंचमे पक्खे—आसोयबहुले, तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेहिं जोगमुवागएणं बासीतिहिं राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसाओ उत्तरखत्तिय-कुंडपुर-सन्निवेसंसि णायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठ-सगोत्ताए असुभाणं पुग्गलाणं अवहारं करेत्ता, सुभाणं पुग्गलाणं पक्खेवं करेत्ता, कुच्छिंसि गब्भं साहरइ।

१—अहाउयं (क, घ, च)।
२—° द्दीवेण (क, घ, च, छ, ब)।
३—° वेसंमि (छ)।
४—हियअणु° (छ)।

६–जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भे, तंपि य दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए कुच्छिंसि साहरइ।

७–समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था— साहरिज्जिस्सामि त्ति जाणइ, साहरिएमि त्ति जाणइ, साहरिज्जमाणे वि[1] जाणइ, समणाउसो!

जम्म-पदं

८–तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसला खत्तियाणी अह अण्णया कयाइ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं, अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीतिक्कंताणं, जे से गिम्हाणं पढमे मासे, दोच्चे पक्खे— चेत्तसुद्धे, तस्सणं चेत्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं, हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगएणं समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया।

९–जण्णं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया[2] अरोयं पसूया, तण्णं राइं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहिं य देवीहि य ओवयंतेहिं य, उप्पयंतेहि य[3] एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते[4] देव-कहक्कहे उप्पिंजलगभूए यावि होत्था।

१०–जण्णं[5] रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं[6] रयणिं बहवे देवाय देवीओ य

१—वि न (च); न (छ)। अशुद्धं प्रतिभाति।
२—आरोया° (क, घ, च)।
३—य सपयतेहि य (क, घ, च)।
४—°वाते णं (अ, क, च, छ)।
५—ज (च, छ)।
६—त (च, छ)।

एगं महं अमयवासं च, गंधवासं च, 'चुण्णवासं च'[1], हिरण्णवासं च, रयणवासं च वासिंसु ।

११—जण्णं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं रयणिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स कोउगभूइकम्माइं[2] तित्थयराभिसेयं च करिंसु ।

नामकरण-पदं

१२—जओ णं पभिइ भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भं आहुए[3], तओ णं पभिइ तं कुलं विपुलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ[4] ।

१३—तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं जाणेत्ता णिव्वत्त-दसाहंसि वोक्कंतंसि सुचिभूयंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति, विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेंति, मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेत्ता बहवे समण-माहण-किवण-वणिमग-भिच्छुंडग-पंडरगातीण विच्छड्डेंति, विगोवेंति[5], विस्साणेंति, दातारेसु णं दायं[6] पज्जभाएंति, विच्छड्डित्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता,

---

१—चुण्णवासं च पुप्फवासं च (क, घ, ब) ।
२—°सुइ° (छ) ।
३—आहए (क्वचित्) ।
४—पवि° (अ) ।
५—विग्गो° (अ, क, घ, च) ।
६—दाणं (घ, छ) ।

दायारेसु णं दायं पज्जभाएत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेंति, मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गेणं इमेयारूवं णामधेज्जं करेंति[1]—
जओ णं पभिइ इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भे आहुए[2], तओ णं पभिइ इमं कुलं विउलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ, तो होउ णं कुमारे "वद्धमाणे"।

वाल-पदं

१४–तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधातिपरिवुडे, तंजहा—
खीरधाईए, मज्जणधाईए, मंडावणधाईए, खेल्लावणधाईए, अंकधाईए–अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकोट्टिमतले गिरिकंदरमल्लीणे[3] व चंपयपायवे अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ।

विवाह-पदं

१५–तओ णं समणे भगवं महावीरे विण्णायपरिणये[4] विणियत्तबाल-भावे[5] अप्पुस्सुयाइं[6] उरालाइं माणुस्सगाइं पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं परियारेमाणे, एवं च णं विहरइ।

नाम-पदं

१६–समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते। तस्स णं इमे तिण्णि

१—कारवेंति (क, च); करावेंति (घ)।
२—आहूते (च)।
३—समल्लीणे (अ, घ)।
४—° परिणय (घ, च, छ, ब)।
५—विणिवित्त ° (च)।
६—अणुस्सुयाइं (अ, ब)।

णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
अम्मापिउसंतिए "वद्धमाणे",
सह-सम्मुइए "समणे",
"भीमं भयभेरवं उरालं अचेलयं परिसहं सहइ" त्ति कट्टु
देवेहिं से णामं कयं "समणे भगवं महावीरे"।

परिवार-पदं

१७–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिआ कासवगोत्तेणं।
तस्स णं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
सिद्धत्थे ति वा,
सेज्जंसे ति वा,
जसंसे ति वा।

१८–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिट्ठ-सगोत्ता।
तीसेणं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
तिसला ति वा,
विदेहदिण्णा ति वा,
पियकारिणी ति वा।

१९–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पित्तियए 'सुपासे' कासवगोत्तेणं।

२०–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठे भाया 'णंदिवद्धणे' कासवगोत्तेणं।

२१–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा[1] भइणी 'सुदंसणा' कासवगोत्तेणं[2]।

१—कणिट्ठा (घ, च)।
२—कासवो° (च)।

२२—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा 'जसोया' कोडिण्णागोत्तेणं।

२३—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं। तीसेणं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
अणोज्जा ति वा,
पियदसणा ति वा।

२४—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेणं[1]।
तीसेणं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
सेसवती ति वा,
जसवती ति वा।

माउ-पिउ-काल-पदं

२५—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि होत्था। तेणं बहूइं वासाइं समणोवासग-परियागं पालइत्ता, छण्हं जीवनिकायाणं संरक्खणनिमित्तं[2] आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्ता पडिक्कमित्ता, अहारिहं उत्तरगुणं पायच्छित्तं पडिवज्जित्ता, कुससंथारं दुरुहित्ता भत्तं पच्चक्खाइंति, भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए मारणंतियाए सरीर-संलेहणाए सोसियसरीरा[3] कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णा।

तओ णं आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चुए चइत्ता महाविदेहवासे चरिमेणं उस्सासेणं सिज्झिस्संति,

१—कोसिया° (घ)।
२—सारक्खण° (घ, च)।
३—सुसिय° (अ, घ), झुसिय° (च), झोसिय° (व)।

बुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति, परिणिव्वाइस्संति, सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पदं

२६–तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे णाते णायपुत्ते णायकुलविणिव्वत्ते विदेहे विदेहदिण्णे विदेहजच्चे विदेहसुमाले तीसं वासाइं विदेहत्ति कट्टु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिऊहिं कालगएहिं देवलोगमणुपत्तेहिं समत्तपइण्णे चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा वाहणं, चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रयण-संत-सार-सावदेज्जं, विच्छड्डेत्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता, दायारेसु णं 'दायं पज्जभाएत्ता'[1], संवच्छरं दलइत्ता, जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे—मग्गसिरबहुले, तस्सणं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगएणं अभिणिक्खमणाभिप्पाए यावि होत्था—

[संवच्छरेण होहिति, अभिणिक्खमणं तु जिणवरिंदस्स[2]।
तो अत्थ - संपदाणं, पव्वत्तई पुव्वसूराओ ॥१॥
एगा हिरण्णकोडी, अट्ठेव अणूणया सयसहस्सा ।
सूरोदयमाईयं, दिज्जइ जा पायरासो त्ति[3] ॥२॥
तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ ।
असितिं[4] च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं ॥३॥
वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिड्ढीया ।
बोहिंति य तित्थयरं, पण्णरससु कम्म-भूमिसु ॥४॥

१—दाइत्ता परिभाइत्ता (छ) ।
२—° दाण (अ) ।
३—उ (घ) ।
४—असिय (अ, घ, छ, ब) ।

बंभंमि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कण्हराइणो मज्झे ।
लोगंतिया विमाणा, अट्ठसुवत्था असंखेज्जा ॥५॥
एए देवणिकाया, भगवं वोहिंति जिणवरं वीरं ।
सव्वजगजीवहियं, अरहं तित्थं पव्वत्तेहि ॥६॥]

देवागमण-पद

२७—तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिक्खमणाभिप्पायं जाणेत्ता भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहि, सएहिं-सएहिं णेवत्थेहिं, सएहिं-सएहिं चिंधेहिं, सव्विड्ढीए, सव्वजुतीए, सव्वबलसमुदएणं, सयाइं-सयाइं जाण विमाणाइं दुरुहंति, सयाइं-सयाइ जाणविमाणाइं दुरुहित्ता, अहावादराइं पोग्गलाइं परिसाडेति, अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेत्ता, अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइंति, अहामुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइत्ता, उड्ढं उप्पयंति, उड्ढं उप्पइत्ता, ताए उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहेणं ओवयमाणा-ओवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुद्दाइं वीतिक्कममाणा-वीतिक्कममाणा जेणेव जंवुद्दीवे दीवे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता, जेणेव उत्तरखत्तिय-कुंडपुर सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता, जेणेव उत्तरखत्तिय-कुंडपुर सन्निवेसस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तेणेव झत्तिवेगेण उवट्ठिया ।

अलंकरण-सिवियाकरण-पद

२८—तओ णं सक्के देविंदे देवराया सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेति, सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेत्ता, सणियं-सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरति, सणियं-सणियं जाणविमाणाओ

पच्चोत्तारित्ता, एगंतमवक्कमेति, एगंमवक्कमेत्ता, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणति, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणित्ता, एगं महं णाणामणिकणयरयण-भत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं देवच्छंदयं विउव्वति। तस्सणं देवच्छंदयस्स बहुमज्झ देसभाए एगं महं सपायपीढं णाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं सिंहासणं विउव्वइ, विउव्वित्ता, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ता, समणं भगवं महावीरं वंदति, णमंसति, वंदित्ता, णमंसित्ता, समणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ, सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेत्ता सयपाग-सहस्स-पागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेति, अब्भंगेत्ता, गंधकसाएहिं[1] उल्लोलेति, उल्लोलित्ता, सुद्धोदएणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता, जस्स जंतपलं[2] सयसहस्सेणंति पडोलतित्तएणं साहिएणं सीतएणं[3] गोसीसरत्तचंदणेणं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता ईसिंणिस्सासवातवोज्झं वरणगरपट्टणुग्गयं कुसलणरपसंसितं अस्सलालपेलवं[4] छेयायरियकणगखचियंतकम्मं[5] हंसलक्खण पट्टजुयलं णियंसावेइ, णियंसावेत्ता, हारं अद्धहारं उरत्थं

१—°कासायिएहिं (च, छ)।
२—ण मुल्ल (अ, घ, च, ब)।
३—सरसीएण (क, घ, च)।
४—°लालपेसिय (घ); °लालपेलव (छ); °लालप्पेसलवं (ब)।
५—मसूरियकणयकणयत° (घ)।

एगावलिं पालंबसुत्त-पट्ट-मउड-रयणमालाइ आविंधावेति, आविंधावेत्ता गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेणं मल्लेणं कप्परुक्खमिव समालंकेति, समालंकेत्ता दोच्चंपि महया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता एगं महं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं विउव्वइ, तंजहा—

ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मकर-विहग-वाणर-कुंजर-रुरु-सरभ-चमर-सद्दूलसीह-वणलय-विचित्तविज्जाहरमिहुण-जुयल-जंत-जोगजुत्तं, अच्चीसहस्समालिणीयं, सुणिरूवित-मिसिमिसिंत-रूवगसहस्सकलियं, ईसिंभिसमाणं, भिब्भिसमाणं, चक्खुल्लोयणलेस्सं, मुत्ताहलमुत्तजालंतरोवियं, तवणीय-पवर-लंबूस-पलंबंतमुत्तदामं, हारद्धहारभूसणसमोणय, अहियपेच्छ-णिज्जं, पउमलयभत्तिचित्तं, 'असोगलयभत्तिचित्तं, कुंदलय-भत्तिचित्तं[1]',[2] णाणालयभत्ति-विरइयं सुभ चारुकंतरूवं णाणामणि-पंचवण्णघंटापडाय-परिमंडियग्गसिहरं पासादीयं[3] दरिसणीयं सुरूवं।

[सीया उवणीया, जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स।
ओसत्तमल्लदामा, जलथलयदिव्वकुसुमेहिं ॥७॥

सिवियाए मज्झयारे, दिव्वं वररयणरूवचेवइयं[4]।
सीहासण महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ॥८॥

आलइयमालमउडो, भासुरबोंदी वराभरणधारी।
खोमयवत्थणियत्थो[5], जस्स य मोल्लं सयसहस्सं ॥९॥

१—कद° (च)।
२—× (अ), अमोगलयभत्तिचित्त (क)।
३—सुभं चारुकत रूवं पासादीय (अ, क, घ, च, ब)।
४—°चिचइय (घ)।
५—खोमिय° (क, छ, ब)।

छट्ठेण उ भत्तेणं, अज्झवसाणेण सोहणेण[1] जिणो।
लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहइ उत्तमं सीयं ॥१०॥
सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहिं पासेहिं।
वीयंति चामराहिं, मणिरयणविचित्तदंडाहिं ॥११॥
पुव्वि उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्टरोमपुलएहिं[2]।
पच्छा वहंति देवा, सुरअसुरगरुलणागिंदा ॥१२॥
पुरओ सुरा वहंतो, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि।
अवरे वहंति गरुला, णागा पुण उत्तरे पासे ॥१३॥
वणसंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१४॥
सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपगवणं वा।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१५॥
वरपडहभेरिज्झल्लरि-संखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं।
गयणतले धरणितले, तूर-णिणाओ परमरम्मो ॥१६॥
ततविततं घणझुसिरं, आउज्जं चउविहं बहुविहीयं।
वायंति तत्थ देवा, बहूहिं आणट्टगसएहिं ॥१७॥]

अभिणिक्खमण-पदं

२९–तेणं कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे—मग्गसिरबहुले, तस्सणं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं, सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, 'हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं'[3] जोगोवगएणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए[4] पोरिसीए, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, एगसाडगमायाए,

१—सुदरेण (क, घ, च, ब)।
२—साहट्टु° (अ, क, च, ब)।
३—हत्थुत्तर° (अ, घ, छ)।
४—बीयाए (छ)।

चंदप्पहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए[1], सदेवमणुयासुराए परिसाए समणिज्जमाणे-समणिज्जमाणे उत्तरखत्तिय-कुंडपुर संणिवेसस्स मज्झंमज्झेणं णिगच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव णायसंडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ईसिंरयणिप्पमाणं अच्छुप्पेणं भूमिभागेणं सणियं सणियं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ, ठवेत्ता सणियं-सणियं चंदप्पभाओ सिवियाओ सहस्सवाहिणीओ पच्चोयरइ, पच्चोयरित्ता सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयइ, आभरणालंकारं ओमुयइ। तओ णं वेसमणे देवे जन्नु-व्वाय-पडिए समणस्स भगवओ महावीरस्स हंसलक्खणेणं पडेणं[2] आभरणालंकारं पडिच्छइ।

लोय-पदं

३०–तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पचमुट्ठियं लोयं करेइ।

३१–तओ णं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जन्नु-व्वाय-पडिए वयरामएणं थालेणं केसाइं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता "अणुजाणेसि भंते" त्ति कट्टु खीरोयसायरं साहरइ।

समाइय-गहण-पद

३२–तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाणं णमोक्कारं करेइ, करेत्ता, "सव्वं मे अकरणिज्ज पावकम्मं" ति कट्टु समाइयं चरित्त पडिवज्जइ, सामाइयं चरित्तं पडिवज्जेत्ता देवपरिसं मणुयपरिसं च आलिक्ख-चित्तभूयमिव ठवेइ।

१—°वाहिणीयाए (क घ. व)।

२—पडिनाडएण (छ)।

[दिव्वो मणुस्सघोसो, तुरियाणिणाओ य सक्कवयणेण।
खिप्पामेव णिलुक्को, जाहे पविज्जइ चरित्तं ॥१८॥

पडिवज्जित्तु चरित्तं, अहोणिसिं सव्वपाणभूतहितं।
साहट्टु[1] लोमपुलया, पयया देवा निसामिंति ॥१९॥]

मणपज्जवनाण-लद्धि-पदं

३३—तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खाओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे समुप्पन्ने—अड्ढाइज्जेहिं दीवेहिं दोहि य समुद्देहि सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं[2] मणोगयाइं भावाइं जाणेइ।

अभिग्गह-पदं

३४—तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता इमं[3] एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—"बारसवासाइं वोसट्ठकाए चत्तदेहे[4] जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति[5], तंजहा—दिव्वा वा, माणुसा वा, तेरिच्छिया[6] वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे समाणे 'स अणाइले अव्वहिते अद्दीणमाणसे तिविह मणवयण-कायगुत्ते'[7] सम्मं सहिस्सामि, खमिस्सामि अहियासइस्सामि।"

१—साहट्टु (अ, क, ब)।
२—° मणुस्साण (छ)।
३—तओण इमं (छ)।
४—चियत्त° (च, छ, ब)।
५—समुप्पज्जति (च, छ, ब)।
६—तेरिच्छा (च, ब)।
७—× (अ, क, घ, च, ब)।

विहार-पदं

३५–तओ णं समणे भगवं महावीरे इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता 'वोसट्ठकाए चत्तदेहे'[१] दिवसे मुहुत्तसेसे कम्मारं[२] गामं समणुपत्ते।

३६–तओ णं समणे भगवं महावीरे वोसट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेणं आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, अणुत्तरेणं संजमेणं, अणुत्तरेणं पग्गहेणं, अणुत्तरेणं संवरेणं, अणुत्तरेणं तवेणं, अणुत्तरेणं बंभचेरवासेणं, अणुत्तराए खंतीए, अणुत्तराए मोत्तिए, अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तराए समितीए, अणुत्तराए गुत्तीए, अणुत्तरेण ठाणेणं, अणुत्तरेणं कम्मेणं[३], अणुत्तरेणं सुचरिय-फलणिव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

३७–एवं विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुपज्जिसु[४]—दिव्वा वा माणुसा[५] वा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे अणाइले अव्वहिए अदीण-माणसे[६] तिविहमणवयण-कायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ।

केवलनाण-लद्धि-पद

३८–तओ ण समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स बारसवासा विइक्कंता, तेरसमस्स य वासस्स परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे—वइसाहसुद्धे, तस्सणं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं,

१—वोसट्ठचत्तदेहे (क, घ), वोसट्ठचियत्तदेहे (छ)।
२—कुमार (क, घ, च, छ, ब)।
३—कम्मेण (क, घ, च, छ)।
४—°पज्जति (क, व. त्र)।
५—माणुस्सा (च)।
६—अहीण-° (अ, घ, च)।

सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगतेणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए पोरिसीए, जंभियगामस्स णगरस्स बहिया णईए उजुवालियाए[1] उत्तरे कूले, सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि, वेयावत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, सालरुक्खस्स अदूरसामंते, उक्कुडुयस्स, गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, उड्ढंजाणुअहोसिरस्स, धम्म-ज्झाणोवगयस्स, झाणकोट्ठोवगयस्स, सुक्कज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स, निव्वाणे, कसिणे, पडिपुण्णे, अव्वाहए, णिरावरणे, अणंते, अणुत्तरे, केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे ।

३९–से भगवं अरिहं[2] जिणे जाए[3], केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी, सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाए जाणइ, तंजहा—आगतिं गतिं ठिंतिं चयणं उववायं भुत्तं पीयं कडं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइं[4] जाणमाणे पासमाणे, एवं च णं विहरइ ।

देवागमण-पदं

४०–जण्णं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स णिव्वाणे कसिणे °पडिपुण्णे अव्वाहए णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरणाण-दंसणे° समुप्पण्णे, तण्णं दिवसं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य ओवयंतेहि[5] य, °उप्पयंतेहि

१—उज्जु ° (घ, ब)।
२—अरहा (अ, छ, ब), अरहं (क, घ)।
३—जाणए (घ, च)।
४— ° भावेण (अ)।
५—ओवयंतेहि २ (अ, ब)।

य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते देव-कहक्कहे° उप्पिंजलगभूए यावि होत्था।

धम्मोवदेस-पदं

४१–तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अप्पाणं च लोगं च अभिसमेक्ख पुव्वं देवाणं धम्ममाइक्खति, तओ पच्छा मणुस्साणं।

४२–तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे गोयमाईणं समणाणं णिग्गंथाणं पंच महव्वयाइं सभावणाइं छज्जीवनिकायाइं आइक्खइ भासइ[1] परूवेइ, तंजहा—पुढविकाए °आउकाए, तेउकाए, वाउकाए, वणस्सइकाए°, तसकाए।

सभावण-महव्वय-पदं

४३–पढमं भंते! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं—से सुहुमं वा बायरं वा, तसं वा थावरं वा–णेवसयं पाणाइवायं करेज्जा, णेवण्णेहिं पाणाइवायं कारवेज्जा, णेवण्णं पाणाइवायं करंतं समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं–मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

४४–तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति।

तत्थिमा पढमा भावणा—

इरियासमिए से णिग्गंथे, णो 'इरिया-असमिए'[2] त्ति। केवली बूया—इरिया-असमिए से णिग्गंथे, पाणाइं भूयाइं जीवाइं

१—भासइ पण्णवइ (ब)।
२—अइरियासमिए (अ), अणइरियासमिते (छ)।

सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा। इरियासमिए से णिग्गंथे, णो इरिया-असमिए त्ति पढमा भावणा।

४५–अहावरा दोच्चा भावणा—

मणं परिजाणाइ से णिग्गंथे, जे य मणे पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेदकरे अधिकरणिए[1] पाओसिए, पारिताविए पाणाइवाइए भूओवघाइए—तहप्पगारं मणं णो पधारेज्जा। मणं परिजाणाति से णिग्गंथे, 'जे य मणे अपावए'[2] त्ति दोच्चा भावणा।

४६–अहावरा तच्चा भावणा—

वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई पाविया सावज्जा सकिरिया *अण्हयकरा छेयकरा भेदकरा अधिकरणिया पाओसिया पारिताविया पाणाइवाइया° भूओवघाइया—तहप्पगारं वइं णो उच्चारिज्जा। जे वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई अपावियत्ति तच्चा भावणा।

४७–अहावरा चउत्था भावणा—

आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेणाअसमिए। केवली बूया—आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए से णिग्गंथे पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, *वत्तेज्ज वा; परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्दवेज्ज वा, तम्हा आयाणभंडमत्त-णिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेवणा-असमिए त्ति चउत्था भावणा।

१—अहिगरणकरे कलहकरे (ब, वृ)।
२—णो जे अमणे पावए (च)।

४८–अहावरा पंचमा भावणा—

आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाण-भोयणभोई। केवली बूया—अणालोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, °वत्तेज्ज परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्दवेज्ज वा, तम्हा आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाण-भोयणभोई त्ति पंचमा भावणा।

४९–एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए आराहिए यावि भवइ।

पढमे भन्ते! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं।

५०–अहावरं दोच्चं भन्ते! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं वइदोसं—से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, णेव सयं मुसं भासेज्जा, णेवन्नेणं मुसं भासावेज्जा, अण्णं पि मुसं भासंतं ण समणुजाणेज्जा, तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि °निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि।

५१–तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति। तत्थिमा पढमा भावणा—

अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासी। केवली बूया—अणणुवीइभासी से णिग्गंथे समावदेज्जा[1] मोसं वयणाए। अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासि त्ति पढमा भावणा।

५२–अहावरा दोच्चा भावणा—

कोहं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो कोहणे सिया। केवली

१—° वज्जेज्जा (क, घ, च, छ, व)।

बूया—कोहपत्ते कोही समावदेज्जा मोसं वयणाए। कोहं[1] परिजाणइ, से णिग्गंथे, णय कोहणे सिय त्ति दोच्चा भावणा।

५३—अहावरा तच्चा भावणा—

लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सिया। केवली बूया—लोभपत्ते लोभी समावदेज्जा मोसं वयणाए। लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सिय त्ति तच्चा भावणा।

५४—अहावरा चउत्था भावणा—

भयं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो भयभीरुए सिया। केवली बूया—भयप्पत्ते भीरू समावदेज्जा मोसं वयणाए। भयं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य भयभीरुए सिय त्ति चउत्था भावणा।

५५—अहावरा पंचमा भावणा—

हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सिया। केवली बूया—हासपत्ते हासी समावदेज्जा मोसं वयणाए। हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सिय त्ति पंचमा भावणा।

५६—एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए °पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए° आणाए आराहिए या वि भवति।

दोच्चे भंते! महव्वए °मुसावायाओ वेरमणं° ।

५७—अहावरं तच्चं भंते! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं अदिण्णादाणं—से गामे वा, णगरे वा, अरण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं

१—कोवं (च, ब)।

ण, अचित्तमंतं वा णेव सयं अदिण्णं गेण्हेज्जा, णेवण्णेहिं अदिण्णं गेण्हावेज्जा, अण्णंपि अदिण्णं गेण्हंतं न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

५८—तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—

अणुवीइमिओग्गहजाई से निग्गंथे, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया—अणणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, अदिण्णं गेण्हेज्जा । अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई त्ति पढमा भावणा ।

५९—अहावरा दोच्चा भावणा—

अणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाण-भोयणभोई । केवली बूया—अणणुण्णवियपाणभोयणभोई से निग्गंथे अदिण्णं भुंजेज्जा[1], तम्हा अणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोई त्ति दोच्चा भावना ।

६०—अहावरा तच्चा भावणा—

णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव ओग्गहण-सीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे ण ओग्गहंसि अणोग्गहियंसि एतावताव अणोग्गहणसीलो अदिण्णं ओगिण्हेज्जा । णिग्गंथेणं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव ओग्गहणसीलए सिय त्ति तच्चा भावणा ।

१—गिण्हेज्जा (घ)।

६१—अहावरा चउत्था भावणा—

णिग्गंथेणं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सिया। केवली बूया—णिग्गंथेणं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अणोग्गहणसीले अदिण्णं गिण्हेज्जा। णिग्गंथे ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सिय त्ति चउत्था भावणा।

६२—अहावरा पंचमा भावणा—

अणुवीइमितोग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई। केवली बूया—अणणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु अदिण्णं ओगिण्हेज्जा। अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई—इइ पंचमा भावणा।

६३—एतावताव महव्वए सम्मं °काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्टिए° आणाए आराहिए यावि भवइ।

तच्चे भन्ते महव्वए °अदिण्णादाणाओ वेरमणं°।

६४—अहावरं चउत्थं भन्ते! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं—से दिव्वं वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोणियं वा, णेव सयं मेहुणं गच्छेज्जा, °णेवण्णेहिं मेहुणं गच्छावेज्जा, अण्णंपि मेहुणं गच्छंतं न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि।

६५—तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति तत्थिमा पढमा भावणा—

णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहइत्तए सिया। केवली बूया—णिग्गंथेणं अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं

कहं कहमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहित्तए सिय त्ति पढमा भावणा।

६६—अहावरा दोच्चा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं[1] इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिया। केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएमाणे णिज्झाएमाणे, संतिभेया संतिविभंगा °संतिकेवलीपण्णत्ताओ° धम्माओ भंसेज्जा। णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिय त्ति दोच्चा भावणा।

६७—अहावरा तच्चा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए[2] सिया। केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे, संतिभेया °संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा। णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए सिय त्ति तच्चा भावणा।

६८—अहावरा चउत्था भावणा—

णाइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो पणीयरसभोयणभोई। केवली बूया—अइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पणीयरसभोयणभोई त्ति, संतिभेदा °संतिविभंगा संतिकेवली-पण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा। णो अतिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे णो पणीयरसभोयणभोई त्ति चउत्था भावणा।

१—मणोहराइ २ (क, ब), मणोहराइ रूवाइ मणोहराइं (छ)।
२—सुमरित्तए (अ, क, घ, छ, ब)।

६९–अहावरा पंचमा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिया। केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेमाणे, संतिभेया °संतिविभंगा संतिकेवली-पण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा। णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिय त्ति पंचमा भावणा।

७०–एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए °पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए° आराहिए या वि भवइ।

चउत्थे भंते! महव्वए °मेहुणाओ वेरमणं°।

७१–अहावरं पंचमं भंते! महव्वयं—

सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि–से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा णेव सयं परिग्गहं गिण्हेज्जा, णे ... हिं परिग्गहं गिण्हावेज्जा, अण्णंपि परिग्गहं गिण्हंतं ण सम ... ज्जा, °जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा ... ा, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्प ... वोसिरामि।

७२–तस्सिमाओ ... पंच भावणाओ भवंति। तत्थिमा पढमा भावणा—

सोयओ ... वि मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ। मणुण्णामणुण्णे ... सद्देहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, ... मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो विणिग्घायमाव ... ज्जेज्जा।

केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं सद्देहिं सज्जमाणे

—पच्चाइक्खामि (अ, क, ... घ, च)।
—सोतत्तेणं (अ, क, छ, ...)।

रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलि-पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा।

ण सक्का ण सोउं सद्दा, सोयविसयमागता।
रोगदोसा उ जे तत्थ, ते[1] भिक्खू परिवज्जए॥

सोयओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ त्ति पढमा भावणा।

७३–अहावरा दोच्चा भावणा–

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ। मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, •णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा।

केवली बूया–मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे •गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घाय-मावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा •संतिकेवलि-पण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का रूवमदट्ठुं, चक्खुविसयमागयं।
'रागदोसा उ जे तत्थ, ते'[2] भिक्खू परिवज्जए॥

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ त्ति दोच्चा भावणा।

७४–अहावरा तच्चा भावणा–

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायइ। मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, •णो

१—तं (अ, क, घ, ब)।
२—रागोदोसो उ जो तत्थ, तं (अ, क)।

गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया—मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे °गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घाय-मावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा °संतिकेवलि-पण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा ।

णो सक्का[1] ण[2] गंधमग्घाउं, णासाविसयमागयं ।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायति त्ति तच्चा भावणा ।

७५–अहावरा चउत्था भावणा—

जिब्भाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ । मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं णो सज्जेज्जा, °णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं सज्जमाणे °रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा °संतिविभंगा संतिकेवलि-पण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा ।

णो सक्का रसमणासाउं, जीहाविसयमागयं ।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ त्ति चउत्था भावणा ।

१—सक्को (छ) ।
२—× (अ, क, च, ब) ।

७६–अहावरा पंचमा भावणा–

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेइ। मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा।

केवली बूया–णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे °रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलि-पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा।

णो सक्का ण संवेदेउं, फासविसयमागयं।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति त्ति पंचमा भावणा।

७७–एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए[1] आणाए आराहिए यावि भवइ।

पंचमे भंते! महव्वए °परिग्गहाओ वेरमणं°।

७८–इच्चेतेहिं महव्वएहिं, पणुवीसाहि[2] य भावणाहि संपण्णे अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएण फासित्ता, पालित्ता, तीरित्ता, किट्टित्ता, आणाए आराहिए यावि भवइ।

—त्ति बेमि।

१–अहिट्ठिए (अ, ब, क, घ, च, छ), प्रथममहाव्रतसूत्रे (४९) 'किट्टिए अवट्ठिए' इति पाठोऽस्ति, अत्र 'किट्टिए अहिट्ठिए' इति पाठो लभ्यते, किन्तु उक्त सूत्रस्य वृत्तेश्चानुसारेणात्रापि 'अवट्ठिए' इति पाठो युज्यते, तेन स स्वीकृत।

२–पण° (छ, ब)।

सोलसमं अज्झयणं

विमुत्ती

अणिच्च-पद

१–अणिच्चमावासमुवेंति जंतुणो,
पलोयए सोच्चमिदं अणुत्तरं।
विऊसिरे[1] विन्नु अगारबंधणं,
अभीरु आरंभपरिग्गहं चए॥

पव्वय-दिट्ठंत-पद

२–तहागअं भिक्खुमणंतसंजयं,
अणेलिसं विन्नु चरंतमेसणं।
तुदंति वायाहिं अभिद्दवं णरा,
सरेहिं संगामगयं व कुंजरं॥

३–तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए,
ससद्दफासा फरुसा उदीरिया।
तितिक्खए णाणि अदुट्ठचेयसा,
गिरिव्व वाएण ण संपवेवए॥

रुप्प-दिट्ठंत-पद

४–उवेहमाणे कुसलेहिं संवसे,
अकंतदुक्खी तसथावरा दुही।
अलूसए सव्वसहे महामुणी;
तहा हि से सुस्समणे समाहिए॥

१–विउ° (क, च, ब); वियो° (घ); °विओ (छ)।

५–विदू णते धम्मपयं अणुत्तरं,
विणीयतण्हस्स मुणिस्स झायओ।
समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा,
तवो य पण्णा य जसो य वड्ढइ ॥

६–दिसोदिसंऽणंतजिणेण ताइणा,
महव्वया खेमपदा पवेदिता।
महागुरू णिस्सयरा उदीरिया,
तमं व नेजोतिदिसं पगासया ॥

७–सितेहि भिक्खू असिते परिव्वए,
असज्जमित्थीसु चएज्ज पूअणं।
अणिस्सिओ लोगमिणं तहा परं,
णमिज्जति कामगुणेहि पंडिए ॥

८–तहा विमुक्कस्स परिण्णचारिणो,
धिईमओ दुक्खखमस्स भिक्खुणो।
विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं,
समीरियं रुप्पमलं व जोइणा[1] ॥

भुजंगतय-दिट्ठंत-पद

९–से हु प्परिण्णा समयमि वट्टइ,
णिरासते उवरय-मेहुणे[2] चरे।
भुजंगमे जुण्णतयं जहा जहे[3],
विमुच्चइ से दुहसेज्ज माहणे ॥

१–जोइणो (अ, घ, व)।
२–° मेहुणा (क, वृ)।
३–चए (घ)।

१०–जमाहु ओह सलिलं अपारगं,
महासमुद्दं व[1] भुयाहि दुत्तरं।
अहे य णं परिजाणाहि पंडिए,
से हू मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥
११–जहा हि बद्धं इह 'माणवेहि य'[2],
जहा य तेसिं तु विमोक्ख आहिओ।
अहा तहा बंधविमोक्ख जे विऊ,
से हु मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥
१२–इमंमि लोए 'परए य दोसुवि'[3],
ण विज्जइ बंधण जस्स किंचिवि।
से हु णिरालंबणे अप्पइट्ठिए,
कलंकली भावपहं विमुच्चइ ॥
—त्ति बेमि।

१–व (अ, क, ब)।
२–माणवेहिं (अ, क)
३–परलोय ते सु वि (...

परिशिष्ट-१

आयारो

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
आगममाणे (जाव) सम्मत्तमेव	८।९५-९६,१२३-१२४	८।७८-८०
एव दक्खिणाओ वा पच्चत्थिमाओ वा उत्तराओ वा उड्ढाओ वा (जाव) अन्नयरीओ	१।३	१।१
एवं परिघेतव्वं ति, उद्दवेयव्वंति	५।१०१	१०१
एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिंजाए अट्ठाए अणट्ठाए	१।१४०	१।१४०
गाम वा (जाव) रायहाणिं	८।१२६	८।१०६
धारेज्जा (जाव) गिम्हे	८।८८-९२	८।४६-५०
परक्कमेज्ज वा (जाव) हुरत्था	८।२३	८।२१
पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसी (जाव) अन्नयरीओ	१।३	१।१
वत्थाइं जाएज्जा (जाव) एयं	८।६४-६७	८।४४-४८
समारम्भ (जाव) चेएइ	८।२४	८।२३

परिशिष्ट-२

आयार-चूला

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतलिक्ख जाए (जाव) णो	५।३७,३८	५।३६
अकिरियं (जाव) अभूतोवघाइयं	४।११	४।१०
अक्कोसंति वा (जाव) उद्दवंति	३।६१	२।२२
अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदग वियडादि णिगिणाइ य जहा सिज्जाए आलावगा णवरं ओग्गहवत्तव्वया	७।१६-२०	२।५१-५५
अक्कोसेज्ज वा (जाव) उद्दवेज्ज	३।६	२।२२
अणंतरहियाए पुढवीए (जाव) संताणए	१।१०२	१।५१
अणेगाह गमणिज्जं (जाव) णो गमणाए	३।१३	३।१२
अणेसणिज्जं (जाव) णो	१।१७,६३,१०६,१३६	१।४
अणेसणिज्जं (जाव) लाभे	१।१०८,१२१	१।४
अणेसणिज्जं· णो	१।२१	१।४
अणेसणिज्जं ··लाभे	१।८५,९७; ८।१, ६।१	१।४
अणेसणिज्जं···लाभे सते 'जाव*' णो	१।१३५	१।४
अण्णमण्णमक्कोसंति वा (जाव) उद्दवेंति	२।५१	२।२२
अण्णयरं जहा पिंडेसणाए	७।५६	१।१५५
अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७।३४,३५	७।२७,२८

---

* अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते ।

एग वयणं वएज्जा (जाव) परोक्खवयणं	४।४	४।३
एवं अनिरिन्धच्छिन्ने वि तिरिन्धच्छिन्ने (जाव) पडिगाहेज्जा	८।४४,४५	७।३०,३१
एवं णायव्वं जहा सद्द-पडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूव पडियाए वि	१२।१२-१७	११।१५-२०
एवं तनकाए वि	१।६८	१।६२
एवं पाद णक्कण्ण उट्ठन्धिन्नेनि वा	४।१६	४।१६
एवं वहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणि वहवे साहम्मिणीओ	२।४,५,६	२।३
एवं वहवे साहम्मिया एग साहम्मिणि वहवे साहम्मिणीओ वहवे समणमाहणस्स तहेव; पुरिसंतर जहा पिंडेसणाए	५।६-११	१।१३,१८
एवं वहवे साहम्मिया एग साहम्मिणि वहवे साहम्मिणीओ··· समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा	१।१३-१५	१।१२
एवं वहिया विचारभूमि वा विहारभूमि वा गामाणुगाम दूइज्जेज्जा अहपुणेवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वा वास वाससावं पेहाए जहापिंडेसणाए णवरं सव्व चीवर मायाए	५।४३-४५	१।३८-४०
एवं वहिया वियारभूमि वा विहारभूमि वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। तिव्वदेसियादि जहा विइयाए वत्थेसणाए णवरं एत्थ पडिग्गहे	६।५१-५८	५।४३,५०
एवं सेज्जा गमेणं णेयव्वं (जाव) उदग पसूयाइं ति	८।२-१५	२।२-१५

एवं सेज्जा गमेणं णेयव्वं (जाव) उदग प्पसूयाइंति	९।३-१५		२।३-१५
एवं हिट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो	१३।४०-७५		१३।३३-३८
एसणिज्ज (जाव) पडिगाहेज्जा	१।१८,२३,२।६४		१।५
एसणिज्जं (जाव) लाभे	१।७,१४३		१।५
एसणिज्जं ··लाभे	२।६३,९।२		१।५
एस पइन्ना···जं	६।२८,४५		१।५६
ओवयंतेहि य (जाव) उप्पिजलगभूए	१५।४०		१५।९
कदाणि वा (जाव) बीयाणि	१०।१५		२।१४
कंदाणि वा (जाव) हरियाणि	५।२५		२।१४
कसिणे (जाव) समुप्पण्णे	१५।४०		१५।३८
कुट्टीति वा (जाव) महुमेहणी	४।१९	आयारो	६।८
कुलियंसि वा (जाव) णो	७।१२		५।३७
खंधंसि वा···अण्णयरे वा तहप्पगारे (जाव) णो	७।१३		५।३८
खलु (जाव) विहरिस्सामो	७।२५		७।२३
गंडं वा (जाव) भगदलं वा	१३।३०-३३		१३।२८
गच्छेज्जा (जाव) अप्पुस्सुए···तओ संजयामेव	५।४८		३।५९
गच्छेज्जा (जाव) गामाणुगामं	५।४९		३।६०
गच्छेज्जा तं चेव अदिण्णादाण वत्तव्वया भाणियव्वा (जाव) वोसिरामि	१५।६४		१५।५७
गामं वा (जाव) ·	७।२		१।२८
गामं वा (जाव) रायहाणिं	१।३४,१२२,२।१;३।२,८।१		१।२८
गामंसि वा (जाव) रायहाणिंसि	१।३४,१२२,३।२		१।२८
गामे वा (जाव) रायहाणी	३।४५,५७		१।२८
गाहावइं वा (जाव) कम्मकरिं	१।६३;५।१८;६।१७		१।२५
गाहावइ-कुलं (जाव) पविट्ठे	१।१६,१७		१।१
गाहावइ-कुलं (जाव) पविसितुकामे	१।८,४४		१।१

* अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

• अत्र जाव शब्दस्य व्यत्ययोऽपि वर्तते ।

सामग्गियं...	१।४८,६०,८६,१०३,१२०,१२९,१३७; २।२६,४३	१।२०
सामग्गियं	३।४६;५।४०,५१,७।२२,५८	२।७७
सामग्गियं (जाव) जएज्जासि	८।३१;१०।२९;११।२०	२।७७
सावज्जं (जाव) णो भासेज्जा	४।२१	४।१०
सिणाणेण वा (जाव) आघंसित्ता	५।२३	३।२०
सिणाणेण वा (जाव) पघंसेज्ज	५।३१	३।२१
सिणाणेण वा तहेव सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा आलावओ	५।३३,३४	५।३१,३२
सिलाए (जाव) मक्कडा संताणए	१।८२	१।५१
सिलाए (जाव) संताणए	१।८३	१।५१
सीओदग-वियडेण वा (जाव) पधोएज्ज	५।३२	३।२१
सीलमंता (जाव) उवरया	२।३८	१।१२१
सुमणे सिया (जाव) समाहीए	३।४४	३।२६
से आगंतारेसु वा (जाव)	७।६,८	७।४
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुण वण उवागच्छित्तए\ तहेव तिन्निवि आलावगा णवर ल्हसुणं	७।३९-४२	७।२५-२८
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा'''असणं वा ४ आउकाय पइट्ठियं तह चेव। एवं अगणिकाय पइट्ठियं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा	१।६३,६४	१।६२
सेसं तं चेव	१४।३-७९	१३।३-७६
हत्थं (जाव) अणासायमाणे	३।५०-५२	२।७४
हत्थं वा (जाव) सीसं	२।१९	१।८८
हत्थि जुद्धाणि वा (जाव) कविंजल	११।१२	१०।१८
हत्थिट्ठाण करणाणि वा (जाव) कविंजल	११।११	१०।१८

परिशिष्ट-३

वाचनान्तर तथा आलोच्य-पाठ

वाचनान्तर

स्थानाङ्गसूत्रे महापद्मप्रकरणे (९।६१) वृत्तिकारप्रदर्शिते वाचनान्तरे "कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेतिव तेयसा जलंते" इतिपाठे आचारचूलाया भावनाध्ययनस्य समर्पणं सूचितमस्ति। वृत्तिकृता श्रीमदभयदेवसूरिणाऽपि एतत् संवादि समुल्लिखितम्—"यथा भावनायामाचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्ध-पञ्चदशाध्ययने तथा अयं वर्णको वाच्य इति भाव, कियद्दूरं यावदित्याह—'जाव सुहुये'त्यादि" (वृत्ति, पत्र ४४०)।

औपपातिकसूत्रे (सूत्राङ्क २७, वृत्ति पृष्ठ ६६) "वक्ष्यमाणपदानां च भावनाध्ययनाद्युक्ते इमे संग्रहगाथे—

कंसे संखे जीवे, गयणे वाए य सारए सलिले।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए॥"

इति वृत्तिकृता भावनाध्ययनगतसंग्रहगाथयो सूचनं कृतमस्ति।

एतयोर्द्वयो. समर्पण-सूचनयो सन्दर्भे भावनाध्ययनं दृष्टं तदा क्वापि समर्पित पाठो नोपलब्ध। भावनाध्ययनस्य वृत्तिरत्यन्तं संक्षिप्ताऽस्ति, तत्र तस्य पाठस्य नास्ति कोपि सकेत आदर्शेषु चापि तस्यानुपलब्धिरेव। चूर्णौ उक्तपाठस्य व्याख्या समुपलब्धा तेनेति निर्णय कर्तुं शक्यते—चूर्णिव्याख्यातात् पाठात् आदर्शगतः पाठो भिन्नोस्ति। अयं वाचनाभेद चूर्णिकारस्य समक्षमासीन्नवेति नानुमानं कर्तुं किञ्चित् साधनं लभ्यते।

स्थानाङ्गस्य वाचनान्तर-पाठे भावनाध्ययनस्य समर्पणमस्ति तस्य सम्बन्ध. चूर्ण्यनुसारि-पाठेनैव विद्यते, तथैव औपपातिकवृत्ते सूचनस्यापि सम्बन्धस्तेनैव।

स्थानाङ्गे महापद्मप्रकरणे एव स्वीकृतपाठेपि 'जहा भावणाते' इति समर्पणमस्ति। तस्यापि सम्बन्धश्चूर्ण्यनुसारिपाठेन विद्यते।

आलोच्यमानपाठ किञ्चिद् भेदेनानेकेषु आगमेषु लभ्यते। तस्य तुलनात्मकमध्ययनमत्र प्रस्तूयते। आचाराङ्गचूर्णौ पूर्ण पाठोः विवृतो नास्ति। स स्थानाङ्गस्य, कल्पसूत्रस्य, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः, आचाराङ्गचूर्णेश्च सम्बन्ध-समीक्षा-पूर्वकं संयोजित। स च इत्थं सम्भाव्यते—

संयोजित पाठ :

तए णं से भगवं अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नसोते निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए संखो इव निरंगणे जीवो विव अप्पडिहयगई जच्चकणगं पिव जायरूवे आदरिसफलगे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिंदिए पुक्खरपत्त व निरुवलेवे गगणमिव निरालंबणे अणिलो इव निरालए चंदो इव सोमलेसे सूरो इव दित्ततेए सागरो इव गभीरे विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के मंदरो इव अप्पकंपे सारय-सलिल व सुद्धहियए खग्गविसाणं व एगजाए भारुंडपक्खी व अप्पमत्ते कुंजरो इव सोंडीरे वसभे इव जायत्थामे सीहो इव दुद्धरिसे वसुंधरा इव सव्वफासविसहे सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते।

[कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥]

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—अंडए वा पोयए वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए मुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोवचिय-फल-परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्ट-माणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने।

तए णं से भगवं अरहे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सनेरइयतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तंजहा—आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी, तं तं कालं मणसवयसकाइएहिं जोगेहिं वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे अजीवाण य जाणमाणे पासमाणे विहरइ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुयासुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छज्जीवनिकाए धम्मं अक्खाइ (देसमाणे विहरइ), तंजहा—पुढविकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए।

स्थानाङ्ग (९।६१) :

तस्स णं भगवंतस्स[1] साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिर्हिति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ, खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ।

तए णं से भगव अणगारे भविस्सइ इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाण-भडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगथे [वृ० पा० किन्नगथे] निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणे तिव तेयसा जलते।

कसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे।
चदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबन्धे भविस्सइ, सेय पडिबन्धे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—

अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ त णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवतस्स अणुत्तरेण नाणेणं अणुत्तरेणं दसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एव आलएणं विहारेणं अज्जवेण मद्दवेण लाघवेणं खंतिए मुत्तीए गुत्तीए सच्च-सजम-तव-गुण-सुचरिय-सोय-विय-(चिय ?)-फल-परिनिव्वाणमग्गेण अप्पाणं भावेमाणस्स भाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदसणे समुप्पज्जिहिति।

तए णं से भगव अरहे जिणे भविस्सति, केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियाग जाणइ पासइ सव्वलोए सव्व जीवाण आगइं गतिं ठियं चयण उववायं तक्कं मणोमाणसिय भुत्त कडं परिसेवियं आवीकम्म रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं काल मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ।

तए ण से भगव तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुआसुरं लोग अभिसमिच्चा समणाणं निग्गथाणं सणेरइए जाव पंचमहव्वयाइ सभावणाइं छज्जीवनिकाया धम्म देसेमाणे विहरिस्सति।

१—अस्य स्थाने 'से णं भगवं' युज्यते'.

कल्पसूत्र :

तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए, मण-समिए, वइसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिदिए, गुत्तबंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोभे, संते, पसंने, उवसंते परिनिव्वुडे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्नगथे, निरुवलेवे, कंसपाई इव मुक्कतोये १, संखो इव निरंजणे २, जीवो इव अप्पडिहयगई ३, गगणं पिव निरालंबणे ४, वायुरिव अप्पडिबद्धे ५, सारयसलिलं व सुद्धहियए ६, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे ७, कुम्मो इव गुत्तिदिए ८, खग्गिविसाणं व एगजाए ९, विहग इव विप्पमुक्के १०, भारुंडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुजरो इव सोडीरे १२, वसभो इव जायथामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मंदरो इव अप्पकंपे १५, सागरो इव गंभीरे १६, चंदो इव सोमलेसे १७, सूरो इव दित्ततेए १८, जच्चकणगं व जायरूवे १९, वसुधरा इव सव्वफासविसहे २०, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते २१। एतेसिं पदाणं इमातो दुन्नि संघयणगाहाओ—

कंसे संखे जीवे, गगणे वायू य सरयसलिले य।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खगे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसभे सीहे, णगराया चेव सागरमखोभे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव हूयवहे ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधो भवति। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—

दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु। खेत्तओ णं गामे वा नगरे वा अरण्णे वा खित्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा णहे वा। कालओ णं समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा खणे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊ वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालसंजोगे वा। भावओ णं कोहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भये वा हासे वा पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरती वा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा। तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवइ।

से णं भगवं वासावासवज्जं अट्ठ गिम्हहेमंतिए मासे गामे एगराईए नगरे पंचराईए वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समदुक्खसुहे इहलोगपरलोगअपडिबद्ध जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगनिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए एवं च णं विहरइ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेण चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्दवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए तुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरियसोवचइयफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स दुवालस-संवच्छराइं विइक्कंताइं। तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स णं वइसाहसुद्धस्स दसमीए पक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरिसीए अभिनिविट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं जंभियगामस्स नगरस्स वहिया उजुवालियाए नईए तीरे वियावत्तस्स चेइयस्स अदूरसामंते सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुयनिसिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने।

तए णं से भगवं अरहा जाए जिणे केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणइ पासइ, सव्वलोए सव्वजीवाण आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणो माणसियं भुत्तं कडं पडिसेवियं आविकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ।

४—जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, वक्ष २ (पत्र १४९)

तए णं से भगवं समणे जाए ईरिआसमिए जाव परिट्ठावणिआसमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते जाव गुत्तबंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव निरंजणे जच्चकणगं व जायरूवे आदरिसपडिभागे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवे गगणमिव निरालंवणे अणिले इव णिरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरो इव तेअंसी विहग इव अपडिवद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकंपे पुढवी विव सव्वफासविसहे जीवो विव अप्पडिहयगइत्ति। णत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिवंधे, से पडिवंधे चउव्विहे भवंति, तंजहा—

दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह खलु माया मे पिया मे भाया मे भगिणी मे जाव संगंथसंथुआ मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे जाव उवगरणं मे, अहवा समासओ सचित्ते वा अचित्ते वा मीसए वा दव्वजाए सेवं तस्स ण भवइ, खित्तओ गामे वा णगरे वा अरण्णे वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे वा एवं तस्स ण भवइ, कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊए वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालपडिवंधे एवं तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगवं वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए णगरे पंचराइए ववगयहा

ससोगभरइभयपरित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अदुट्ठे चंदणाणुलेवणे अरत्ते लेट्ठुंमि कंचणंमि असमे इह लोए अपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए विहरइ। तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते समाणे पुरिमतालस्स नगरस्स बहिआ सगडमहंसि उज्जाणंसि णिग्गोहवरपायवस्स अहे झाणंतरिआए वट्टमाणस्स फग्गुणबहुलस्स इक्कारसिए पुव्वण्ह कालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरासाढाणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं अणुत्तरेणं नाणेणं जाव चरित्तेणं अणुत्तरेणं तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं विहारेणं भावणाए खंतीए गुत्तीए मुत्तीए तुट्ठीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सुचरिअसोवचिअफलनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवल-वरनाणदंसणे समुप्पण्णे जिणे जाए केवली सवन्नू सव्वदरिसी सणेरइअतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तंजहा—आगइं गइं ठिइं उववायं भुत्तं कडं पडिसेविअं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवयकायजोगे एवमादी जीवाणवि सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसिं च जीवाणं हियसुहणिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परम सुहसमाणणे भविस्सइ। तते णं से भगवं समणाणं निग्गंथाणं य णीग्गंथीण य पंच महव्वयाइं सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसमाणे विहरति, तंजहा—

पुडविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वयाइं सभावणगाइं भाणिअव्वाइंति।

५-सूत्रकृतांगे (२।२) प्रश्नव्याकरणे (संवरद्वार ५) रायपसेणइयसूत्रे (सूत्रांक ८१०-८१२) औपपातिक सूत्रे (सूत्र : २७-२९,५५२,१५३,१६४) चालोच्यमानपाठेनांशिकी क्वचिच्च तदधिकापि तुलना जायते। किन्तु एतेषां सूत्राणां पाठाः अनगार-वर्णन-संबद्धाः सन्ति, ततः पूर्णातुलना प्रस्तुतपाठेन न नाम जायते।

आलोच्य-पाठ

(१) हण पाणे—(आयारो ६।५।११, पृ० ७४)।

'छ' प्रतौ 'हयमाणे' इति पाठान्तरं लभ्यते। अस्याधारेण 'हणमाणे' इति पाठस्य कल्पना जायते। अर्थसमीक्षयाऽपि 'हणमाणे' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति। 'घायमाणे' अत्र कारितस्य 'हणओयावि समणुजाणमाणे' अत्रानुमोदनस्यार्थोऽस्ति अस्मिन् संदर्भे यदि 'हणमाणे' पाठः स्यात् तदा कृतकारितानुमोदनस्य संगतिर्जायते। चूर्णावपि (पृ० २३०) अस्य पाठस्य संवादिविवरणं लभ्यते—'पुढविकाइयादि जीवे हणसि हणावेसि हणंतोवि' योगत्रिककरणत्रिगेण।

(२) एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए—(आयार-चूला १।२।२९, पृ० १२१)।

आचारचूलायाः पाठ-संशोधने षड् आदर्शाः प्रयुक्ताः, चूर्णिर्वृत्तिश्च। तत्र पञ्चादर्शेषु

उक्तपाठस्य ये पाठ-भेदास्ते तत्रैव पादटिप्पणे प्रदर्शिताः सन्ति। वृत्तौ (पत्र ३००) 'एस विलुगयामो सेज्जाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—"गृहस्थश्चानेनाभिसन्धानेन संस्कुर्याद्—यथैष साधु शय्याया. संस्कारे विधातव्ये 'विलुगयामो' त्ति निर्ग्रन्थः अकिञ्चन इत्यत स गृहस्थ कारणे सयतो वा स्वयमेव संस्कारयेदिति।" अस्माभिः 'घ' प्रत्यनुसारी पाठ स्वीकृत । चूर्णावपि (पृ० ३३२) 'एस खलु भगवया' इति पाठो लभ्यते। 'सेज्जाए अक्खाए' अत्र दोषशब्द अध्याहर्त्तव्यः। वस्तुत उक्तपाठ व्याख्यागत प्रतीयते। 'संथरेज्जा' इति पाठस्यानन्तरं 'तम्हा से संजए' इत्यादि पाठ स्यात्तदानीमपि स खण्डितो न प्रतिभाति। वृत्तिकृता उक्तपाठस्य या व्याख्या कृता, तथापि पूर्वानुमानस्य पुष्टि-र्जायते। वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'विलुगयामो' पाठ आसीत् स केषुचिदेव आदर्शेषु उपलभ्यते, नतु सर्वेषु।

शुद्धि-पत्रम्

१–आयारो मूल-पाठ

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	*दक्खिणाओ'''अहमंसि•	•दक्खिणाओ'''अहमंसि °
८	४१	सत्थं–	सत्थं
८	४६	समुट्ठाए	समुट्ठाए
९	५५	पास	पासा
११	७३	° त्ता	° त्ता
१६	११६	णेवणे	णेवण्णे
२४	५	अभिकंत	अभिकंतं
३४	११३	जेह' यं	जहे' यं
३४	११५	आलाभो	अलाभो
३५	१३०	देहं तराणि	देहंतराणि
३६	१५९	° जासि	° ज्जासि
३९	७	° च्चाइ	° च्चाई
४१	२५	णिकम्म-	णिक्कम्म-
४२	४५	उवायं	उववायं
४२	४५	पच्चा	णच्चा
४२	४९	लहू °	लहु °
४३	५४	अन्न मन्न-	अन्नमन्न-
४३	५८	उज्झइ	इज्झइ
४३	५९	तीतं किं ?	तीतं ? किं
४६	८६	सगडिब्भि	सगडब्भि
४८	११	वीर	वीरे
४८	१३	विन्नाणं-	विन्नाण-
५१	२९	दुक्खमिणं त्ति	दुक्खमिणं ति
५२	४४	दवीए	दविए
५३	५२	जहा-	अहा-

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
५५	१७	एह	इह
६०	६४	मुज्फति	मुज्झति
६३	१०१	परिघेतव्वं ० ···सच्चेव	परिघेतव्वं···सच्चेव ०
६३	१०६	० वेसणे	० वेसणे
६४	१२०	आगर्ति	आगति गर्ति
६७	८	-महंणि	-मेहुंणि
६६	३३	अपरि-···माणाए	अपरिमाणाए
६६	३८	अत्थित्ति	अत्थित्ति
७०	४७	वुत्ता	वुत्ता
७०	४८	अणाए	आणाए
७१	६१	फुंसति	फुसंति
७२	७४	-पोय	-पोए
७३	७६	बिडज्फ ०	विडज्झ ०
७३	७६	अज्भो	अज्झो
७३	७६	माद्याय	माघाय
७३	७६	सत्थारमेउ	सत्थारमेव
७३	८२	० माइक्खंति	माइक्खंति
७४	६४	पंडि ०	पडि ०
७५	६६	-विब्भंतें	-विब्भंते
७६	१०२	संति	संति
७६	१०५	दीवे	दीवे
७६	१०८	त्ति	ति
७७	११३	० वयट्ठि	० वयट्ठि
७६	१०	वओ-	वओ-
८०	१७	समारभे	समारंभे
८०	२१	० रायाणंसि	० रायातणंसि
८२	२४	अच्छेज्ज	अच्छेज्जं
८२	२४	० समारब्भ	समारब्भ०
८३	२६	संमणु ०	समणु ०
८४	४१	संचाएमि	अहं संचाएमि
८४	४१	कप्पति-	कप्पति

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
८८	७६	अथं	अयं
८८	७७	आहडं च	आहडं च णो
९३	१२३	तवे से अभिसमण्णागए ०	०तवे से अभिसमण्णागए
९३	१२६	णगरं वा ··· णिगमं वा	०णगरं वा ··· णिगणं वा ?
१००	१५।१	एवमन्नेंसि	एवं मन्नेंसि
१०२	६।३	-दुब्भि-	-दुब्भि-

२—आयार-चूला (मूल-पाठ)

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
१२०	२६	० मेराए	० मेराए
१२२	३२	सम्मिस्सि ०	सम्मिस्सि ०
१२७	४३	अप्पमाणा	अप्पपाणा
१३४		परिमायण-पदं	परिभायण-पद
१४७	१०१	पडिग्गाहेण	पडिग्गहेण
१५१	११०	णो ०	० णो
१६२	१३८	-जाएसु	-जाए
१६७	१४४	भुंजिजयं	भुज्जियं
१६७		अहावरा	१४६-अहावरा
१६८		१४६-१४७-१४८- १४९-१५०-	१४७-१४८-१४९- १५०-१५१-
१६९		१५१-१५२-१५३- १५४-१५५-	१५२-१५३-१५४- १५५-१५६
१६९	१५५	पिंडसेणाणं	पिंडेसणाण
१६९	१५५	एंते	एते
१७७	२२	वंधंतु,	वंधंतु
१८०	२७	पडिलोभे	पडिलोमे
१८७	४१	महया संरंभेणं,	महया संरंभेण,महया समारभेणं
२०१	२	चित्ताए	चिंताए
२०३	११	भिक्खं	भिक्खु
२०५	१४	० गापिणि,	० गामिणि,

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
२०५	१६	वाहाओ	बाहाओ
२०७	२१	तुसोणिओ	तुसिणीओ
२११	३६	जव्वट्टेज्ज	उवट्टेज्ज
२१४	४७	थूमं	थूभं
२१४	४८	अंतरा	अंतरा से
२२०	६१	करणिज्जं त्ति	करणिज्जं ति
२२१		भासा	भासज्जातं
२३८	१५	उट्ठाणि	उद्दाणि
२३६	१७	मंगियं	भंगियं
२५०	५०	० ज्जं त्ति	० ज्जं ति
२५६	२२	अब्भगाहि	अब्भंगाहि
२६४	४५	पुव्वोदिट्ठा	पुव्वोवदिट्ठा
२६५	४७	वण-	वा णं
२६८	५६	मगाओ	मग्गाओ
२६६	५८	० ज्जं त्ति	० ज्जं ति
२७१	६	अणुवोइ	अणुवीइ
२७२	६	०ज्जति	० ज्जं ति
२७६	२४	सुतं	णो सुत्तं
२८३	५६	एं	एयं
२६८	३	अप्पमाणं	अप्पपाणं
३००	८	उक्चार-	उच्चार-
३०८	१४	माणुममाणिय-ट्ठाणि	माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि
३१७	१०	खाणु	खाणुं
३२१	३७	ममुहाइं	भमुहाइं
३३६	२६	हिरणं	हिरण्णं
३३६	पं० १	-भउड-	-मउड-
३४०	श्लो० ११।१	णिविट्टो	णिविट्ठो
३४२	१८।२	तुरिया ०	तुरिय ०
३४२	३४	स अणाइले	अणाइले
३४४	३६	ठित्ति	ठिंति
३४७	४८	वत्तेज्ज	वत्तेज्ज वा
३५८	श्लो० १०।१	ओह	ओहं

३–आयारो पाठान्तर

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	चते	चुते
२	५	अण °	अणु॰
२	६	—×	६—×
२	७	° वेस्सं (च),	° वेस्सुं (च);
३	४	° सवेयइ	° सवेदयइ
७	५	° हूडसि	° हुडसि
८	२	(च)	(चू)
६	सू० ५०-५२	-से बेमि—···उद्दवए	'—से बेमि–···उद्दवए'[१]
६	पा० ४	४—···	४—··· ५–×(क,ख,ग,घ,च,छ,वृ)।
६	पा० ८	(वपा)	(वृपा)
१०	सू० ६५	से[२]	'से बेमि'[२]
१६	पा० १	° त्तो	° त्ति
२७	सू० ४०	य[५]राओ य	य राओ य[५]
२७	सू० ४२	-समायाणं[९]।	-समायाणं।
२७	सू० ४३	सपेहाए	सपेहाए[९]
२७	सू० ४३	कज्जति[१०]	कज्जति'[१०]
२७	पा० ६	६-दंडं···	६-सपेहाए (क,ख,ग, घ,च,छ)।
२७	१०	दंड-समायाण···	१०-दडं समारभति (चू); दंड-समायाणं····कज्जइ (चूपा)।
२८	सू० ५२	भूएहिं[७]	'भूएहिं···सातं'[७]
२८	पा० ६	एयं	एवं
२८	७	दुक्खुव्वये	दुक्खुव्वेय
२६	सू० ५६	'हतोवहते···अणुपरि-यट्टमाणे'[३]	हतोवहते[३] ···अणुपरियट्ट-माणे
३२	पा० ६	(वपा)	(वृपा)

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्धि
३३	सू० १०४	सत्थेहिं[1]लोगस्स कम्म-समारंभा	'सत्थेहिं लोगस्स कम्म-समारंभा'[1]
३५	पा० ४	अट्टमेत्तं···	अट्टमेत्तं तु ··
३५	९	विलंपित्ता	विलुंपित्ता
३९	३	(चपा)	(चूपा)
४६	४	(च)	(चू)
४८	९	मणुस्सवभत्याणं	मणुस्सभवत्थाणं
४८	९	(च,व)	(च,वृ)
५२	४	अघंस्स	अंधस्स
५४	४	(च,च)	(च,चू)
५४	५	(चपा)	(चूपा)
५५	३	परिच्चमाणे	परिपच्चमाणे
५८	८	०मए	०भए
६७	सू० ८	कुलेहिं[2]आयत्ताए	कुलेहि आयत्ताए[2]
६९	पा० १२	(च)	(चू)
७३	सू० ७६	तेहि[1]महावीरेहि	'तेहिं महावीरेहिं'[1]
७३	सू० ७७	फारुसियं[4]समादियंति	'फारुसियं समादियंति'[4]
७३	७	(च)	(चू)
७४	सू० ९१	हण[3]पाणे	'हण पाणे'[3]
७५	सू० ९९	जणवयंतरेसु[6] वा,	'जणवयंतरेसु वा'[6],
७५	पा० ८	आघवितए'	आघवित्तए'
७६	८	सिज्जा	सिज्जा
७८	२	विवत्तण (शू) (चिन्तनीय)।	विवत्तूण (शू)।
८०	सू० १७	जीवेहिं[5]कम्म-समारंभेणं	'जीवेहिं कम्म-समारंभेणं'[5]
८६	पा० ३	(च)	(चू)
८८	२	२-चूर्णि···	२-परिण्णं (क,ख,ग,घ,च,छ); चूर्णि···
८८	४	प्रतीषु	प्रतिपु

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
८६	३	एगाणियं ०	एगाणिय ०
६६	१२	(च)	(चू)
१०२	श्लो० ६	आसि सु[१] भगवं उट्ठाए	'आसिसु भगवं उट्ठाए'[१]
१०४	पा० ७	-वृत्तिचर्ण्य ..	वृत्तिचूर्ण्य ..
१०५	८	(...चू)	(.. च)
१०६	१	दिगिच्छत्ता	दिगिंच्छित्ता

४–आयार-चूला पाठान्तर

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
११२	पा० ३	थंडिल्लं	थंडिल्लंसि
११२	पा० ६	(अ० दुवृयंति वृत्तौऽभि)	×
११६	सू० १७	अवहिया[१] णीहड	'अबहिया णीहडं' [१]
११७	सू० १६	णितिए[१] पिंडे दिज्जइ, णितिए	णितिए पिंडे दिज्जइ, णितिए[१]
१२१	१	१८।	१।८।
१२१	८	विलंगयामो	विलुगयामो
१२६	२	(अ,च,क,छ,ब)	(क,छ,व) ; च (अ)।
१२८	४	उक्खडि०	उवक्खडि०
१४०	१	उक्किट्ठा	उक्किट्ठ
१४२	१	दुहेज्जा	द्रु हेज्जा
१५३	६	वेत्तग	वेत्तग
१६०	सू० १३०	'से णेवं वयतं'[४]	'से णेव'[४] वयंतं
१६७		४	१
१७०	पा० १		१–एसितए से (अ,व)।
१८३	१	० तिणिता	० तिणित्ता
१६६	१	विद्धणिय २	विद्धुणिय २
२१२	२	पाडिवघेया (क) ; पडि ०	पाडिवघेया (क) ; पाडि ०
२३०	सू० २५	थूले ति[२]	थुल्ले[२] ति
२३१	पा० ३	फलिह	फलिह ०

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
२३२	सू० ३६	से भिक्खु…सुणेज्जा[४]	'से भिक्खु…सुणेज्जा'[४]
२३४	पा० १	जुवव	जुववं
२३८	पा० ५	उद्दाणि (अ,क,च,व,वृ)	×
२६५	सू० ४७	वण-[५]	'वा णं'[५]
२७६	सू० २४	सुत्तं[२]	सुत्तं
२७६	पा० २	णा सुत्तं……	×
२८०	पा० १	-लंहसुण	लहसुण
२८१	१	० णारं	० णाइं
३०१	१	( )	(अ)
३०२	२	गवा सु	गवाणीसु
३११	३	वण-	वर्ण-
३१७	२	मिल्लं ०	भिल्लं ०
३२१	सू० ३७	संठवेज्ज[२]	संठवेज्ज[१]

५–परिशिष्ट-२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	६	१।६०	१।६७
५	२१	वासमावं	वासमाणं
६	३	१३।३३-३८	१३।३-३८
१०	१४	२।४	२।२४

आयारो शब्द-सूची

[प्रथम संख्या अध्ययन और पहली खडी पाई के वाद की संख्या सूत्र-क्रमाङ्क का संसूचन करती है। जैसे—अइअच्च ६।३८ अर्थात् अध्ययन ६ सूत्र-क्रमाङ्क ३८।

जहाँ पहली खडी पाई के अनन्तर संख्या हो और दूसरी खडी पाई के वाद भी संख्या हो, वहाँ सर्वप्रथम संख्या को अध्ययन, दूसरी संख्या को उद्देशक तथा तीसरी संख्या को श्लोक-क्रमाङ्क समझना चाहिए। जैसे—अइवत्तई ९।१।८ अर्थात् अध्ययन ९ उद्देशक १ श्लोक ८।]

य

र

ह

*

आयार-चूला : शब्द-सूची

अ

ख

शुद्धि और आपूरक पत्र-१

आयारो शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२		अट्टिमिजा	अट्ठिमिजा
३	अणुधम्मिय	६।१।१२	६।१।२
४	अणेलिस	६२	६।२
४	अणेगरूव	८२,	—
४	अतिअच्च	६।१।६	६।१।९
६	अप्पाण		+१००,
९	-आइक्खामो	२।२३	४।२३
११	आय	६।४।६	६।४।१६
१६		कव्वड ८।१०६,१२६	—
१७	काम	५।३	५।२
१७	कुसल	१२१	१७१
१८			+गहावही ८।२१ ७५
१९	गुरु	५।३	५।२
२०	छिंद	-अच्छे १।२७ २८,५०,५१.८१,८२. ११०,१११,१३७,१३८,१६१,१६२	—
२१	—जाणई	१।४७	१।१४७
२५		तिरियं	तिरिय
२६		दुक्खसह ६।३।१२	—
२६	दुल्लह	४।४९	५।४९
२९	पडिलेहिय	९।	८।
२९	पन्नाणमंत	६।३,०९	६।३,७९
३०	परिघासेउं	८।३३	८।२३
३१		परिवदण	परिवंदण
३१	—परिवयंति	२।७६	२।७,७६
३२	—परिहरंति	२।०२	२।२०
३२	पवा	६।२।२१	६।२।२

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
३२	पसंसिअ	२।१६१	२।१०१
३३	पाण (प्राण)	८।७	८।८।७
३३		पाय (पात्र)	पाय (पात्र)
३५	बहिया	२।	१।
३५			+बहुतर ८।८।२३
३७	भो		+६।२४
४१		लूहदेसिया	लूहदेसिय
४४	–विहिंसति	१०२	१०१
४६	संपव्वयमाण	८६	९६
४६			+संवट्टेत्ता ८।१०५,१२५
४६		सवस	संवस
४६	सत्त (सत्व)	४।२०	४।१,२०
४७			+सत्थपरिण्णा १
४७		सन्नियय	सन्निचय
४७	समणुन्न	३।७९	६।७९
४९	सयं	१०६	११६
४९		सययं	सयय
४९	सव्वतो	१७५	१७९
५०		सुब्भ (म्ह) भूमि	सुब्भ (म्ह) भूमि

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

आचार-चूला शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
५७	अण्णतर (यर)	३६,३६	३६ से ३६
५८	अण्णत्थ	२।१७	२।१८
५८		अत्तट्ठियं	अत्तट्ठिय
५६	अप्प (आत्मन्)	४६,४६	४६ से ४६
६३	असण	३६ से ४१	३६,४१
६४	आउस	२।३४,४२	२।३४ से ४२
६४	आउसंत	५।१३,२२	४।१३,५।२२
६५		आगसह	आगस
६५		आविंघ	आविंच
६८	इतरेतर	३।	२।
		उट्ट	उट्ट
७०	-उद्दवेति	से	,
७०		उदघट्टु	उद्धट्टु
७१	-उवक्खडेसु	६।२,६	६।२६
७२		उवेहमाए	उवेणमाण
७२	-उव्वट्टेज्ज		+३।२१,३६
७२	उसिणोदग	१।६२	१।६३
७३	एग	१४,१५।२६ गा० २	—
७३	एगंत	३।१४	३।१५
७३	एयप्पगार	२।२५,३६	२।२५,३८
७४		ओद्धट्टु	ओद्धट्टु
७५	कट्टु	१।२२	१।३२
७५	कठ्ठसिल्ला		+२।३६
७६		कणपूयल्लिय	कणपूयल्लिया
७६	कण्डुय	१।१४	१।१०४
७८	-किणेज्ज	३.१४	३।१५

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
७८	कीय	१।१२,१७	१।१२ से १७
७८		कंभीमुह	कुंभीमुह
७९	खंध	७।३८	५।३८
८०	खाइम	१२।१६	१२।१५
८०		खड्ड	खुड्ड
८०		खड्डाय	खुड्डाय
८०		खुड्डिया	खुड्डिया
८०		-गच्छवेज्जा	-गच्छावेज्जा
८९	गण	१७।	१५।
८९		गति	गति
९०	गाहावइ	२।२१,२५,५०,५५	२।२१ से २५,५० से ५५
९१	चउत्थ १५।५४		+६१,
९२	चरित्त	१५।३२;३३ गा० १८;१९।३३	१५।३२ गा० १८,१९;१५।३३
९२		चिध	चिंध
९२	-चिट्ठेज्जा	से	,
९४	-जएज्जासि	८।२१	८।३१
९४	-जाणेज्जा	४९ से ५२	४९,५२
९६	णगर	३।२३	३।२,३
९७			+णाणत्त १।१३४
९७		णांति १४	णाति ३४
९७	णावा		+६।५३
९७	णिगम	३।२३	३।२,३
९८	णिरावरण	से	,
९८		णिजम्मभासि	णिसम्मभासि
९९		णिसीहियाखत्तिकय	णिसीहियासत्तिकय
९९		णीपुरपवाल	णीपूरपवाल
९९	तंजहा	३६,४२	३६ से ४२

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१००		तक्कलिमत्थय	तक्कलिमत्थय
१००	तत्थ		+८।५;६।५
१००	तहप्पगार	२।४६,५६	२।४६ से ५६
१०१	तिरिक्खजोणिय	५४	६४
१०३		दम्भ	दम्म
१०३	-देज्जा	१४८,१५२	१४८ से १५२
१०३	दाउं	५।२२,२४	५।२२ से २४
१०४		दुग्गध	दुग्गंध
१०४	दुण्णि (न्नि)क्खित्त	३६,४१	३६ से ४१
१०५	दोणमुह	३।१ से ३	३।१,३।२,३
१०६	-पडिगाहेज्जा	२।७४	२।६४
१०६	पडिग्गाहिय	२।२	१।२
१०६	पडिया	५।४२ से ४५	५।४२,४५
११०		पडिवज्जमाण	पडिवज्जमाण
११०		पडुप्पवाइयट्ठाण	पडुप्पवाइयट्ठाण
१११	-पधूवेज्ज	१३।६२ से ६६	१३।६२,६६
१११			+पमज्जमाण १।८५
११२	पयावेत्तए	२।१६	२।२६
११२	परिएसिज्जमाण	१।२१ से २४	१।२१,२४
११३	परियारणा	२।५५	२।२५
११५	पससित	१५।३८	१५।२८
११५	पाण (पान) १।१४५,		+१४८,
११८	पुव्व	गा० १,४१	गा० १.१५।४१
११८		पुव्व	पुव्वि
१२०	वहुसभूय	१।	४।
१२१	-वेमि	१५५	१५६
१२२		भासिज्जभाणी	भासिज्जमाणी
१२४		भिल्लुग (य)	भिल्लुगा (या)

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१२४	भूय (त)	५।५ से १०	५।५ से १०,२२
१२५	भोयणजात (य)	१३५	१३४
		१४९	१४७
१२६		मडंव	मडंव
१२६	मण्ण (न्न)माण २।६१,		+६३,
१२६			+मलीण १५।१४
१२८	मिलक्खु	११।१८	११।१७
१२८	मुसावाय	२।५०	१५।५०
१२९		रहकम्म	रहोकम्म
१२९	रुप्प	५।६८	१६।८
१२९	रुरु	५।२८	१५।२८
१३३			+वाइत्तवज्जा १२।२
१३३	वास (वर्ष) १५।३४,		+३६,
१३४	विउ (दु)	५६।५	१६।५
१३४	विचित्त	२८।२८ गा० ११	१५।२८ गा० ५
१३४			विज्जल १।५३
१३५	वियड	५।३४,३४	५।३४
१३६		विसमक्खणट्ठाण	+विसमक्खणट्ठाण
१३६	विसम	१५।७२ से ७६	—
१३६			+विसय १५।७२ से ७६
१३७		संखोमिय	सखोमिय
१३८	सजय	८।२६,२९	८।२६ से २९
१३८	संताणग (य)		+७।१०
१३९		सपव्वइय	संपव्वइय
१४०	सगड	१२।२४	१२।१४
१४०	सत्थजाय	१३।२६।२७	१३।२६,२७
१४३	सयं	१४१,१४७	१४१ से १४७
१४३		सल्लइपवास	सल्लइपवाल
१४५	साहम्मिय	७४६ से ४९	७४६,४९

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१४५	सिया	६५,६७	६५ से ६७
१४६		सिओ ७ से १६	सीओ ७.१६
१४७		सुइ	सूई
१४७		सुणिय	सूणिय
१४८	हरिय	६।२६,३१	६।२६ से ३१
१४८		हिगुलय	हिंगुलय
१४८		हिगोल	हिंगोल
१४८	हेउ	८।३५	८।२५

नोट :—शब्द-सूची में पृष्ठ ७९ के स्थान पर ८९ छपा है और पृष्ठ १३४ के स्थान पर २३४। कृपया सुधार करें।